भगत सिंह
जेल डायरी

प्रस्तुति

यादविंदर सिंह संधु

(शहीद भगतसिंह के सुपौत्र)

Downloaded from www.PDFshala.com

भगत सिंह

जेल डायरी

प्रस्तुति

यादविंदर सिंह संधु

(शहीद भगतसिंह के सुपौत्र)

Downloaded from www.PDFshala.com

भगत सिंह

जेल डायरी

जेल डायरी की मूल प्रति शहीद-ए-आजम भगतसिंह

''वे मुझे मार सकते हैं, मेरे विचारों को नहीं''

प्रस्तुति

यादविंदर सिंह संधु

(शहीद भगतसिंह के सुपौत्र)

प्रभात प्रकाशन, दिल्ली
ISO 9001:2008 प्रकाशक

Downloaded from www.PDFshala.com

स्वर्गीय श्री बाबर सिंह संधु

(शहीद भगतसिंह के भतीजे और श्री कुलबीर सिंह के पुत्र)

"मेरे प्रिय पिताजी श्री बाबर सिंह संधु की मधुर स्मृति में। शहीद भगतसिंह के बलिदान को जेल में लिखे शहीद ए आजम के विचारों को सामने लाना, उनका सपना था। मेरी कामना है कि उनके बलिदान की यादें लोगों के दिल में फिर से ताजा हो जाएँ।"

Downloaded from www.PDFshala.com

प्रस्तावना

भगतसिंह के बारे में हम जब भी पढ़ते हैं, तो एक प्रश्न हमेशा मन में उठता है कि जो कुछ भी उन्होंने किया, उसकी प्रेरणा, हिम्मत और ताकत उन्हें कहाँ से मिली? उनकी उम्र 24 वर्ष भी नहीं हुई थी और उन्हें फाँसी पर चढ़ा दिया गया। इस पुस्तक से हमें इस प्रश्न का उत्तर पाने में काफी हद तक मदद मिल सकेगी।

लाहौर (पंजाब) सेंट्रल जेल में आखिरी बार कैदी रहने के दौरान (1929-1931) भगतसिंह ने आजादी, इनसाफ, खुद्दारी और इज्जत के संबंध में महान् दार्शनिकों, विचारकों, लेखकों तथा नेताओं के विचारों को खूब पढ़ा और आत्मसात् किया। इसी के आधार पर उन्होंने जेल में जो टिप्पणियाँ लिखीं, यह पुस्तक उन्हीं का संकलन है। भगतसिंह ने यह सब भारतीयों को यह बताने के लिए लिखा कि आजादी क्या है, मुक्ति क्या है और इन अनमोल चीजों को बेरहम तथा बेदर्द अंग्रेजों से कैसे छीना जा सकता है, जिन्होंने भारतवासियों को बदहाल और मजलूम बना दिया था।

'जेल टिप्पणियाँ' एक सुंदर (लाल) कपड़े के आवरण वाली नोटबुक में लिखी गई हैं। इसके 206 लीव्स (404 पृष्ठ) हैं, जिनका आकार 21 से.मी.×16 से.मी. है।

यह एक लंबे टैग से बँधे हुए हैं। प्रत्येक पृष्ठ पर पृष्ठ संख्या काले रंग से ऊपर के दाएँ कोने पर अंकित है। मौसम, धूल आदि के प्रभाव से बचाने के लिए पृष्ठों को लेमिनेट किया गया है। दुर्भाग्य से इसके कारण स्केनिंग की गुणवत्ता प्रभावित हुई है। नोटबुक के पृष्ठ-1 पर निम्न प्रविष्टि से पता चलता है कि यह जेल के अधिकारियों द्वारा भगतसिंह को 12 सितंबर, 1929 को दी गई थी।

यह नोटबुक भगतसिंह की अन्य वस्तुओं के साथ उनके पिता सरदार किशन सिंह को भगतसिंह की फाँसी के बाद सौंपी गई थी। सरदार किशन सिंह की मृत्यु के बाद यह नोटबुक (भगतसिंह के अन्य दस्तावेजों के साथ) उनके (सरदार किशन सिंह) पुत्र श्री कुलबीर सिंह और उनकी मृत्यु के पश्चात् उनके पुत्र श्री बाबर सिंह के पास आ गई। श्री बाबर सिंह का सपना था कि भारत के लोग भी इस जेल डायरी के बारे में जानें। उन्हें पता चले कि भगतसिंह के वास्तविक विचार क्या थे। भारत के आम लोग भगतसिंह की मूल लिखावट को देख सकें। आखिर वे प्रत्येक जाति, धर्म के लोगों, गरीबों, अमीरों, किसानों, मजदूरों, सभी के हीरो हैं।

भगतसिंह के चिंतन की गहराई और दृष्टि तथा मानवता के प्रति उनके प्रेम को उनके इन शब्दों से समझा जा सकता है कि "हमारे सियासी दलों में ऐसे लोग हैं, जिनके पास सिर्फ एक विचार है कि विदेशी हुक्मरानों से लड़ना है। यह विचार बहुत काबिले तारीफ है, लेकिन इसे 'क्रांतिकारी विचार' नहीं कहा जा सकता। हमें यह स्पष्ट करना होगा कि क्रांति का मतलब सिर्फ उथल-पुथल या खूनी संघर्ष नहीं है। क्रांति का सही मतलब ऐसा कार्यक्रम है, जिससे नई और बेहतर बुनियाद पर समाज का व्यवस्थित पुनर्निर्माण किया जा सके। यह कार्य मौजूदा हालात (यानी शासन) को पूरी तरह खत्म करके किया जाना चाहिए।"

जेल डायरी के पृष्ठ-43 पर मनुष्य और मानव जाति के विषय में उन्होंने लिखा है कि "मैं एक इनसान हूँ और मानव जाति को प्रभावित करनेवाली हर चीज से मेरा सरोकार है।"

भगतसिंह जोशो-खरोश से लबरेज क्रांतिकारी थे और उनकी सोच तथा नजरिया एकदम साफ था। वे भविष्य की ओर देखते थे। वास्तव में भविष्य उनकी रग-रग में बसा था।

Downloaded from www.PDFshala.com

पूछा जा सकता है कि भगतसिंह ने किस तरह के भविष्य का सपना देखा था? वे इसे किस तरह हकीकत में बदलना चाहते थे? मौजूदा हालात में भगतसिंह की जेल नोटबुक की टिप्पणियाँ ही इन सवालों का जवाब दे सकती हैं।

यह पुस्तक अखिल भारतीय खत्री सभा के अध्यक्ष श्री जितेंदर मेहराजी (बाबाजी), मेरी माताजी श्रीमती सुरिंदर कौर, मेरी बहन श्रीमती मंजुला तूर तथा मेरे जीजाजी श्री भूपेंदर सिंह तूर के आशीर्वाद के बिना पूरी नहीं हो सकती थी।

मैं इस पुस्तक को साकार रूप देने की प्रेरणा और सहयोग के लिए एडवोकेट तरिषि महाजन का अत्यंत आभारी हूँ।

निरंतर सहयोग के लिए मैं सर्वश्री एस.के. शर्मा, उमेद सिंह, शरीफ चौधरी, विपिन झा, दीपक शर्मा, (वरिष्ठ पत्रकार), ओमप्रकाश (वरिष्ठ संपाददाता) व अनीता भाटी (वरिष्ठ संवाददाता) का आभारी हूँ।

—यादविंदर सिंह संधु

Downloaded from www.PDFshala.com

जिंदगी का मकसद

"जिंदगी का मकसद अब मन पर काबू करना नहीं, बल्कि इसका समरसतापूर्ण विकास है। मौत के बाद मुक्ति पाना नहीं, बल्कि दुनिया में जो है, उसका सर्वश्रेष्ठ उपयोग करना है। सत्य, सुंदर और शिव की खोज ध्यान से नहीं, बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी के वास्तविक अनुभवों से करना भी है। सामाजिक प्रगति सिर्फ कुछ लोगों की नेकी से नहीं, बल्कि अधिक लोगों के नेक बनने से होगी। आध्यात्मिक लोकतंत्र अथवा सार्वभौम भाईचारा तभी संभव है, जब सामाजिक, राजनीतिक और औद्योगिक जीवन में अवसरों की समानता हो।"

(भगतसिंह)

Downloaded from www.PDFshala.com

भूमिका

अमर शहीद भगतसिंह की जेल डायरी का हिंदी में प्रकाशन एक ऐतिहासिक घटना है। भारत के लोग 20वीं शती के अपने जिन महान् वीर सपूतों और सुपुत्रियों को गहरे प्यार एवं आत्मीय भाव से गौरवपूर्वक याद करते हैं, उनमें से एक मुख्य सपूत हैं 'शहीद-ए-आजम भगतसिह'।

ब्रिटिश राज्य ने लगभग आधे भारत में सन् 1858 में सीधे शासन सँभाला। जैसा ब्रिटिश कूटनीति का स्वभाव था और है, पहले तो वे लोग 'ईस्ट इंडिया कंपनी' की लानत-मलामत करते रहे, उसकी असत्यपूर्ण और घिनौनी करतूतों को 'अन ब्रिटिश' अनैतिक तथा असत्य से भरी बताकर उसके अफसरों पर अभियोग लगाते रहे। क्लाइव, हेस्टिंग्ज आदि पर आपराधिक मुकदमे चलाए, जिसके बचाव में उन्हें कहना पड़ा कि हम वहाँ ब्रिटिश आचरण का पालन न कर, मुनाफे के लिए जो कुछ जरूरी है, वह सब कर रहे हैं, इसमें बिना कानून पढ़े हुए लोगों को जाली जज बनाना भी शामिल है तथा फर्जी मुकदमे चलाकर भारत के धनियों एवं राजपुरुषों को दंडित करने का प्रयास भी शामिल है। परंतु बाद में जब कंपनी की काली करतूतों के कारण भारतीय लोग उन्हें मार भगाने लगे तो एक झूठी अफवाह उड़ाकर कि भारत में निर्दोष अंग्रेजों स्त्रियों-बच्चों का अकारण कत्ल किया जा रहा है, उनकी रक्षा की आड़ लेकर सन् 1857 में ब्रिटिश फौज की एक टुकड़ी पहली बार भारत के उस हिस्से पर कब्जा करने आ गई, जिस पर कंपनी छलपूर्ण दावे कर रही थी। उन दिनों ब्रिटेन एक पूर्ण नेशन-स्टेट बनने की प्रक्रिया में था, पर बना नहीं था। उसके पास बहुत व्यवस्थित और बड़ी सेना नहीं थी। इसलिए उसने भारत के उन राजाओं और नवाबों से संधियाँ की थीं, जो इस बीच इंग्लैंड के मैत्रीपूर्ण संपर्क में आ गए थे। इन संधियों के बाद ब्रिटिश राज्य सन् 1858 में कलकत्ता को मुख्यालय बनाकर आ तो गया, परंतु तब भी अगले 50 वर्षों तक उसे दिल्ली में राजधानी बनाने की हिम्मत नहीं हुई।

लगभग आधे भारत में ब्रिटिश राज्य होने के 50वें वर्ष में सन् 1907 में भारत के इस भाग्यवान सपूत का जन्म हुआ। उसी दिन उनके पिता किशन सिंहजी और चाचा अजीत सिंहजी जेल से छूटकर घर आए थे। इसलिए दादी ने बच्चे को भाग्यवान कहकर उसका नाम भगतसिंह किया। वे सचमुच भाग्यवान थे। देश के लिए जीवन अर्पित कर 24 वर्ष की आयु में ही वे अमर हो गए। इससे बड़ा सौभाग्य क्या होगा?

सन् 1905 में कर्जन ने बंगाल को बाँटने की घोषणा की, जबकि बंगाल के भी अनेक राजाओं एवं रानियों से ब्रिटेन ने संधि की थी। उस कुचाल के विरोध में भारतीय देशभक्ति एवं वीरता की प्रचंड ज्योति जल उठी। श्री अरविंदजी एवं श्री रासबिहारी घोषजी आदि ने उस ज्योति को निरंतर तीव्र बनाए रखा। स्वदेशी सत्याग्रह एवं

Downloaded from www.PDFshala.com

देशभक्ति का विराट् राष्ट्रीय परिवेश बन गया। भगतसिंहजी के चाचा अजीत सिंहजी भी महान् क्रांतिकारी थे, जिन्हें अंग्रेजी शासन ने देश-निकाला दे दिया था।

वस्तुत: 18वीं शती का भारत समस्त यूरोप के बराबर था। स्वयं भगतसिंहजी ने पृष्ठ 277 (जेल नोट्स 287) पर नोट किया है कि भारत ग्रेट ब्रिटेन से 20 गुना बड़ा है (इंग्लैंड से भारत लगभग 36 गुना बड़ा था)। इसलिए इस विशाल क्षेत्र में अनेक राजनैतिक कार्य साथ-साथ हो रहे थे। भगतसिंह ने इसी जेल नोट्स 287 (पुस्तक के पृष्ठ 277) में यह भी स्मरण दिलाया है कि भारत में 600 राज्य हैं। बंबई और मद्रास जैसे राज्य इटली से बड़े राज्य हैं। बर्मा भी उन दिनों भारत का एक राज्य था, जो फ्रांस नेशन-स्टेट से अधिक बड़े आकार का था। वे यह भी स्मरण दिलाते हैं कि भारतीय लोग समस्त मानव जाति का पंचमांश हैं। अत: यहाँ ब्रिटिश भारत क्षेत्र में स्वशासन की आशा जागते ही अंग्रेजी पढ़े-लिखे ठंडे लोग राजनैतिक जोड़-तोड़ में जुट गए, वहीं देश के वीर युवक-युवती इन बाहरी अजनबी फिरंगियों को मार भगाने में जुट गए। ठंडी धारा के सबसे बड़े नेता हैं गांधीजी, जिन्होंने सन् 1908 में ही 'हिंद स्वराज' लिखी, जो वस्तुत: भारतीयों को अहिंसा के मार्ग पर चलने की प्रेरणा देती है, वहीं लोकमान्य तिलकजी, रामप्रसाद बिस्मिलजी, जोगेशचंद्रजी, शचींद्रनाथ सान्यालजी, श्री अरविंदजी, चित्तरंजनदासजी, वीर सावरकरजी, राजगुरुजी आदि ने वीरतापूर्ण देशभक्ति की प्रेरणा देने वाला साहित्य रचा। वस्तुत: ये दोनों धाराएँ एक गहरे अर्थ में परस्पर पूरक थीं, परंतु कई स्तरों पर इनमें परस्पर विरोध भी था।

अंग्रेजों ने स्वयं के न्यायप्रिय, शांतिप्रिय होने का प्रचार ऐसी खूबी से किया कि लोकमान्य तिलकजी के नेतृत्व में भारत के वीर एवं तेजस्वी युवक-युवतियाँ भी कांग्रेस से जुटने लगे। आज लोग भूल जाते हैं कि चित्तरंजनदासजी, सूर्यसेनजी, जतिनदासजी, जोगेशचंद्र चटर्जीजी, शचींद्रनाथ सान्यालजी, चंद्रशेखर आजादजी, भगतसिंहजी, सुखदेवजी, भगवतीचरण बोहराजी, शिव वर्माजी, जयदेय कपूरजी आदि सभी ने कांग्रेस के सत्याग्रह आंदोलन में सक्रिय भाग लिया था। जब चौरी-चौरा की एक मामूली घटना का बहाना लेकर अंग्रेजों की मित्रता के प्रभाव में आए गांधीजी ने आंदोलन स्थगित कर दिया, तब क्रांतिकारियों ने क्रांतिकारी दल गठित किया।

भाई परमानंदजी, रामप्रसाद बिस्मिलजी, ठा. रोशनसिंहजी आदि आर्यसमाज के सक्रिय सदस्य थे, स्वयं भगतसिंह पंजाब के समाज-सुधार आंदोलन से जुड़े परिवार के थे। जब गांधीजी ने अचानक 'सत्याग्रह बंद करो' की घोषणा की, तब पहली बार 'हिंदुस्तान रिपब्लिक संघ' बनाकर क्रांतिकारियों ने काम प्रारंभ किया। सन् 1924 में शचींद्रनाथ सान्याल ने इस संघ की रूपरेखा तैयार कर काम शुरू किया। बाद में यह 'हिंदुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसोसिएशन' बना। इस एसोसिएशन की स्थापना सन् 1928 में चंद्रशेखर आजादजी, भगतसिंहजी आदि ने की। इन तथ्यों का स्मरण आवश्यक है।

लाला लाजपत रायजी पर लाठियाँ बरसाने वाले क्रूर अंग्रेज पिशाच का बदला लेने के लिए सांडर्स का वध किया गया। अगले वर्ष असेंबली में परचा फेंककर भारत का पक्ष प्रस्तुत किया गया। स्पष्ट रूप से यह एक सामान्य घटना थी। बटुकेश्वर दत्तजी एवं भगतसिंहजी ने केवल ध्यान खींचने के लिए मामूली विस्फोट किया था, न कोई मरा, न बुरी तरह घायल हुआ। पर इतने से काम को भीषण अपराध बताकर फाँसी दे दी गई। यह है पापपूर्ण ब्रिटिश न्याय का एक उदाहरण। दुर्भाग्यवश भारत में आज वही गलत न्यायिक एवं कानूनी ढाँचा कायम है।

सन् 1948 के बाद कांग्रेस ने अपने दोषों को छिपाने के लिए हिंसा-अहिंसा की झूठी बहस खड़ी की, जो इस विषय में निरर्थक है। मुख्य बात यह है कि तेजस्वी वीर युवक-युवतियों को अंग्रेज एक बाहरी आततायी दिखते थे, ठंडी धारा के नेता उनसे मधुर संबंध बनाकर धीरे से स्वशासन का सूत्र स्वयं सँभाल लेना चाहते थे। इस प्रकार वे भारत के नए राजा बनने की कूटनीति कर रहे थे। यही कारण है कि उन्होंने अकारण भारतीय राजाओं

Downloaded from www.PDFshala.com

की निंदा शुरू कर दी थी। क्रांतिकारियों के लिए यह भारतमाता की आन-बान-शान का प्रश्न था। ठंडी धारा के नेताओं के लिए समस्त स्वाधीनता आंदोलन राजनैतिक चालों का अंग था। ये दो नितांत भिन्न प्रवृत्तियाँ हैं। इनकी तुलना असंभव है और इसमें परस्पर विरोध दिखाना भी व्यर्थ है। क्योंकि ये दोनों धाराएँ परस्पर विजातीय हैं। दोनों की प्रेरणाएँ भी अलग हैं। पहली की प्रेरणा है, शुद्ध देशभक्ति तो दूसरी की प्रेरणा है राजनैतिक राष्ट्रवाद की आड़ में सत्ता पर कब्जा करना। हिंसा-अहिंसा आदि राजनीति के लिए केवल नारे होते हैं। क्योंकि हम सभी जानते हैं कि अहिंसावादी धारा ने भी लाखों भारतीयों को मरवाया है, जेलों में सड़ाया है, घायल किया है। विभाजन की जिम्मेदारी अहिंसावादी धारा की ही थी और उसमें लाखों भारतीयों की हत्या हुई, इसकी जिम्मेदारी भी इसी धारा की बनती है।

सन् 1948 के बाद भारतीय वीरों एवं विभूतियों को वैचारिक टकराव के झूठे मुहावरों में देखा-दिखाया जाता है। यह गलत है। भगतसिहजी की देशभक्ति, तेजस्विता, साहस, पुरुषार्थ, प्रेरणा एवं वीरता को समझने की आवश्यकता है, क्योंकि भारत की नई पीढ़ी के लिए ऊर्जा एवं प्रकाश का स्रोत हैं।

हमें भूलना नहीं चाहिए कि भगतसिंहजी को 24 वर्ष की आयु में फाँसी दे दी गई थी। 24 वर्ष के युवक को वैचारिक मतवाद के चश्मे से देखना मूढ़ता है। महत्त्वपूर्ण है वह ऊर्जा और प्रकाश, जो उन्होंने देश में फैलाया। 22वें वर्ष में तो वे बंदी बना लिए गए थे। इतनी कम उस के युवक में वैचारिक पंथवाद ढूँढ़ना अटपटा है।

इस 'जेल डायरी' को पढ़ना ऊर्जा और प्रकाश के उस दिव्य स्रोत को समझना है। 'जेल डायरी' के पन्नों से हमें पता चलता है कि भगतसिंहजी जहाँ गुरुनानक देव महाराजजी, गुरु गोविंदसिंहजी, समर्थ गुरु रामदासजी, रवींद्रनाथ टैगोरजी, विलियम वर्ड्सवर्थजी आदि के जीवन एवं विचारों से प्रभावित थे, वहीं वे मार्क्स, एंजेल्स, बुखारिन लेनिन, बर्टेंड रसेल के विचारों से भी आकर्षित थे।

'भगतसिंह जेल डायरी' के नोट्स 47 (पृष्ठ 91) में संयुक्त राज्य अमेरिका एवं इंग्लैंड की विषमता तथा लूट के तथ्य लिखते हैं। वे बताते हैं कि उन दिनों भयंकर लूट-पाट के बावजूद संयुक्त राज्य अमेरिका में 1 करोड़ 50 लाख लोग भयंकर गरीबी में जी रहे थे; जबकि वहाँ 30 लाख बाल-मजदूर थे। (उन दिनों संयुक्त राज्य अमेरिका की कुल जनसंख्या 4 करोड़ थी) इसी प्रकार वे इंग्लैंड में दो-तिहाई लोगों को भयंकर गरीबी में जी रहे दरशाते हैं। जबकि नवमांश लोगों के पास इंग्लैंड की कुल संपदा का 50 प्रतिशत है। इंग्लैंड, फ्रांस, संयुक्त राज्य अमेरिका के राजपुरुष एवं संपन्न लोग बीसवीं शती के पूर्वार्ध में किस प्रकार आपस में बुरी तरह लड़ रहे थे और मार-काट कर रहे थे, यह भी भगतसिंह की जेल डायरी में 184वें नोट्स (पृष्ठ 229) सहित अनेक स्थानों पर सप्रमाण दरशाया गया है।

भगतसिंहजी के जेल नोट्स 286 (पृष्ठ 275) से पता चलता है कि 20वीं शती के पूर्वार्ध में भी इंग्लैंड में खेती करने वाले लोगों का प्रतिशत आबादी के 12वें हिस्से से भी कम था, जबकि भारत में लगभग तीन-चौथाई लोग किसान थे। उसी पृष्ठ में वे मांटफोर्ड की रिपोर्ट का उद्धरण देकर बताते हैं कि भारत के 32 करोड़ लोगों में से 22 करोड़ लोग कृषि पर निर्भर हैं। वस्तुत: तथ्य यह है कि 20वीं शती के पूर्वार्ध में भी इंग्लैंड अपनी जिस आबादी को उद्योगों में लगा दरशा रहा था, वे सभी लोग शहरों में 18-18 घंटे जीतोड़ मेहनत कर रहे मजदूर थे। उन दिनों भी वहाँ उद्योग का मुख्य अर्थ बढ़ईगिरी, लोहारी, कपड़ा बुनना, रंगाई, सिलाई-कढ़ाई आदि ही था। कारखाने के नाम पर मुख्यत: कपड़ा मिलें शुरू हुई थीं। इंग्लैंड का सघन औद्योगीकरण तो 20वीं शती के उत्तरार्ध में ही हुआ है। रेलें, बिजली, बड़े उद्योग व्यापक रूप में उसी समय फैले। 19वीं शती में तो वे नाममात्र को शुरू भर हुए थे।

Downloaded from www.PDFshala.com

ऐसे अडिग वीरता, प्रचंड देशभक्ति, साहस, उदारता, तेजस्विता और विराट् आत्मीयता जीवन के एक बड़े सत्य के आंतरिक-आध्यात्मिक बोध से आती है, किसी वैचारिक पंथवाद से नहीं। सन् 1948 के बाद का राजनैतिक भारतीय नेतृत्व इस तथ्य का स्वयं प्रमाण है। वह मतवादों में बढ़ा-चढ़ा है, पर आंतरिक सत्य से रहित है। इसीलिए उसमें भगतसिंह के बड़प्पन की छींट भी नहीं दिखती। उसी बड़प्पन में से उनकी बड़ी जिज्ञासाएँ उपजीं—न्याय, गौरव, स्वाधीनता, राज्य और समाज तथा मानव जीवन एवं जगत् के सत्य-स्वरूप की जिज्ञासाएँ। इसी बड़प्पन के कारण शहीद-ए-आजम भगतसिंह भारत के हर देशभक्त के हृदय का स्पंदन हैं, चाहे वह किसी भी समूह, पंथ, वर्ग, जाति या श्रेणी का नर-नारी-युवा-वृद्ध कोई भी हों।

यह जेल-डायरी उस महान् हुतात्मा के बड़े व्यक्तित्व की झलक देती है। इसके हिंदी संस्करण की प्रस्तावना लिखते हुए मुझे गौरव का अनुभव हो रहा है। अमर शहीद की स्मृति में मैं प्रणत हूँ। उनके सभी परिजनों को हृदय की गहराइयों से श्रद्धापूर्ण प्रणाम निवेदित है। शहीद भगतसिंह के सुपौत्र श्री यादविंदर सिंह संधु इस महत् कार्य के लिए विशेष साधुवाद के पात्र हैं। 'शहीद भगतसिंह ब्रिगेड' और 'शहीद भगतसिंह स्मारक न्यास' ने स्तुत्य कार्य किया है। मेरी दृष्टि में मुमकिन है कि किन्हीं महान् ऐतिहासिक विभूतियों के तथ्यात्मक मूल्यांकन में त्रुटि हो सकती है, जिसके लिए मैं क्षमा प्रार्थना के साथ इतना जरूर कहना चाहूँगा कि मेरी भावना निर्दोष है। व्यक्तिगत रूप से मैं इस बात का प्रबल पक्षधर हूँ कि इतिहास के मूल्यांकन व पुनर्लेखन की महती आवश्यकता पर बहस अवश्य होनी चाहिए।

—कौशलेंद्र सिंह (बड़े राजा)

चंदापुर भवन,

रायबरेली -229001 (उ . प्र .)

Downloaded from www.PDFshala.com

संपादकीय

कहते हैं 'पूत के पैर पालने में ही दिख जाते हैं।' ऐसा ही हुआ जाँबाज देशभक्त शहीद–ए–आजम भगतसिंह के साथ, जिनके बचपन में ही उनके बारे में एक ज्योतिषी ने भविष्यवाणी कर दी थी कि सरदार किशन सिंह का बेटा या तो फाँसी के फंदे पर चढ़ेगा या फिर गले में नौ लखा हार पहनेगा।

भगतसिंह देश की आजादी के लिए फाँसी के फंदे पर भी चढ़े और इतने उच्च रुतबे पर पहुँचे कि आज भी वे हर देशवासी के दिल पर राज कर रहे हैं। भगतसिंह का नाम उनकी दादी ने रखा था। 28 सितंबर, 1907 को शहीद–ए–आजम के जन्मवाले दिन उनके पिता किशन सिंह और चाचा अजीत सिंह जेल से रिहा हुए।

दादी श्रीमती जयकौर के मुँह से निकला कि 'ए मुंडा तो बड़ा भागा वाला है'। तभी परिवार के लोगों ने फैसला किया कि भागा वाला होने की वजह से लड़के का नाम इन्हीं शब्दों से मिलता-जुलता होना चाहिए। लिहाजा उसका नाम भगतसिंह रख दिया गया। भगतसिंह पर जहाँ अपने चाचा स्वर्ण सिंह का गहरा प्रभाव था, वहीं वे अपने चाचा अजीत सिंह से काफी प्रभावित थे, जिन्होंने किसानों से लगान वसूलने के विरोध में 'पगड़ी सँभाल जट्टा' आंदोलन चलाया था। इस आंदोलन से अंग्रेज इतना डर गए थे कि उन्होंने अजीत सिंह को 40 साल के लिए देश-निकाला दे दिया।

पाँच साल की उम्र में भगतसिंह पिता किशन सिंह के साथ गन्ने के खेत पर गए। गन्ने की बुआई देख कहा कि एक-एक गन्ना बोने से क्या होगा? पिता ने जवाब दिया कि एक गन्ने की बुआई पर पाँच गन्ने होंगे। इतना सुनकर वे घर आ गए। घर से एक खिलौने की बँदूक खेत पर लेकर गए और उसे जमीन में दबाने लगे। पिता ने पूछा तो कहा कि एक बंदूक से पाँच बंदूकें पैदा होंगी जो आजादी के काम आएँगी।

भगतसिंह सैनिकों जैसी शहादत चाहते थे और वे फाँसी की बजाय सीने पर गोली खाकर वीरगति प्राप्त करना चाहते थे। यह बात भगतसिंह द्वारा लिखे पत्र में थी, जिसमें उन्होंने 20 मार्च, 1931 को पंजाब के तत्कालीन गवर्नर से माँग की थी कि उन्हें युद्धबंदी माना जाए और फाँसी पर लटकाने की बजाय गोली से उड़ा दिया जाए। ब्रिटिश सरकार ने उनकी माँग नहीं मानी और सारे नियम-कानून का उल्लंघन कर निर्धारित तिथि से एक दिन पहले ही 23 मार्च को फाँसी दे दी। गोरी सरकार ने सुबह की बजाय संध्या के वक्त फाँसी दी जो कि कानून का घोर उल्लंघन था। अंग्रेजों को डर था कि भगतसिंह की फाँसी से हिंदुस्तान में बड़े पैमाने पर जन-विद्रोह भड़क उठेगा, इसलिए उन्होंने एक दिन पहले ही चुपके से भगतसिंह, राजगुरु और सुखदेव को फाँसी के फंदे पर चढ़ा दिया।

जेल से भगतसिंह ने अपने पिता किशन सिंह को एक पत्र लिखा था, जिसमें वतन के नाम उनकी मोहब्बत किसी को भी अपना बना लेती है।

भगतसिंह ने इसमें लिखा था : 'जनाब वालिद साहब, मेरी जिंदगी का मकसद आजाद–ए–हिंद के सिद्धांत के लिए दान हो जाना है, इसलिए मेरी जिंदगी में आराम और दुनियादारी का आकर्षण नहीं है। आपको याद होगा कि जब मैं छोटा था तो बापू (दादा अर्जुन सिंह) ने मेरे नामकरण के वक्त ऐलान किया था कि मुझे देशसेवा के लिए दान कर दिया है। लिहाजा मैं उस वक्त की प्रतिज्ञा पूरी कर रहा हूँ। आपका ताबेदार भगतसिंह।'

फाँसी के एक दिन पहले, 22 मार्च, 1931 को शहीद–ए–आजम ने अपने सास्थियों को पत्र लिखा और अपने दिल की बात बेबाकी से कही, "जीने की इच्छा मुझमें भी होनी चाहिए, जिसे मैं छुपाना नहीं चाहता, लेकिन एक

Downloaded from www.PDFshala.com

शर्त पर जिंदा रह सकता हूँ कि मैं कैद या पाबंद होकर जीना नहीं चाहता। मेरा नाम हिंदुस्तान क्रांति का प्रतीक बन चुका है और क्रांतिकारी दल के आदर्शों व कुर्बानियों ने मुझे ऊँचा उठा दिया। इतना ऊँचा मैं हरगिज नहीं हो सकता। अगर मैं फाँसी से बच गया तो क्रांति का प्रतीक-चिह्नमद्‌धम पड़ जाएगा, लेकिन दिलेराना ढंग से हँसते-हँसते मेरे फाँसी पर चढ़ने की सूरत में हिंदुस्तानी माताएँ अपने बच्चों के भगतसिंह बनने की आरजू किया करेंगी और देश के लिए कुरबानी देनेवालों की तादाद इतनी बढ़ जाएगी कि क्रांति को रोकना तमाम शैतानी शक्तियों के बूते की बात नहीं रह जाएगी। देश के लिए जो कुछ करने की हसरत मेरे दिल में थी, उसका हजारवाँ हिस्सा भी अदा नहीं कर सका। अगर स्वतंत्र जिंदा रह सकता, तब शायद उन्हें पूरा करने का अवसर मिलता।"

अंतिम समय में जब माता विद्यावती उनसे लाहौर जेल में मिलने गईं तो उन्होंने कहा, 'बेटा भगत, तू इतनी छोटी उम्र में मुझे छोड़कर चला जाएगा।'

इस पर भगतसिंह ने कहा, "बेबे, मैं देश में एक ऐसा दीया जला रहा हूँ, जिसमें न तो तेल है और न ही घी। उसमें मेरा रक्त और विचार मिले हुए हैं। अंग्रेज मुझे मार सकते हैं, लेकिन मेरी सोच व मेरे विचारों को नहीं, और जब भी अन्याय व भ्रष्टाचार के खिलाफ जो भी शख्स तुम्हें लड़ता हुआ नजर आए, वह तुम्हारा भगत होगा।'

अपने पिता व दादा कुलबीर सिंह (जो भगतसिंह के छोटे भाई थे) से सुनी बातों में से एक बात आपको बताता हूँ कि एक दिन भगतसिंह से मिलने कुलबीर सिंह व माता विद्यावती लाहौर जेल गए। भगतसिंह को बैरक से बाहर निकाला गया। उनके साथ पुलिस अफसर सहित कई जवान थे। भगतसिंह के चेहरे पर परेशानी के भाव नहीं थे। उन्हें पता था कि परिजनों से यह उनकी आ खिरी मुलाकात है। उन्होंने माँ से कहा, 'बेबे, दादाजी अब ज्यादा दिन तक नहीं जाएँगे। आप बंगा जाकर उनके पास ही रहें।' उन्होंने सभी को सांत्वना दी।

माँ को पास बुलाकर हँसते–हँसते कहा, 'बेबे, लाश लेने आप मत आना। कुलबीर को भेज देना। कहीं आप रो पड़ीं तो लोग कहेंगे कि भगतसिंह की माँ रो रही है।' यह कह इतनी जोर से हँसे कि जेल अधिकारी उन्हें देखते रह गए। भगतसिंह हमेशा कहते थे कि अंग्रेज मुझे मार सकते हैं पर मेरी सोच और विचारों को नहीं।

शहीद–ए–आजम का लिखा हुआ शेर

तुझे जिबह करने की खुशी और मुझे मरने का शौक है

है मेरी भी मरजी वही जो मेरे सैयाद की है।

इन पंक्तियों का एक-एक शब्द उस महान् देशभक्त की वतन पर मर-मिटने की इच्छा जाहिर करता है, जिसने आजादी की राह में हँसते-हँसते फाँसी के फंदे को चूम लिया। देशभक्त की यह तहरीर भगतसिंह की इस डायरी का हिस्सा है, जो उन्होंने जेल मे लिखी थी। शहीद–ए–आजम ने आजादी का सपना देखते हुए जेल में जो दिन गुजारे, उन्हें पल-पल अपनी डायरी में दर्ज किया। इसी जेल डायरी में भगतसिंह ने विश्व में कानून व न्याय व्यवस्था पर एक जगह विस्तृत नोट्स लिखे हैं, जो लगता है कि अपने मुकदमे की कानूनी लड़ाई खुद ही लड़ले के लिए तैयारी के रूप में लिखे गए हैं। ये नोट्स पुस्तकों के उद्धरण न होकर भगतसिंह की न्याय व्यवस्था की समझदारी को इंगित करनेवाले हैं। इसी प्रकार एक जगह राज्य का विज्ञान (साइंस ऑफ द स्टेट) शीर्षक से भी सुकरात से लेकर आधुनिक चिंतकों तक के नोट्स एक ही जगह मिलते हैं, जिससे फ्रांसीसी क्रांति और रूसी बोल्शेविक प्रयोग तक को समाहित किया गया है।

—यादविंदर सिंह सिंधु

सुपौत्र शहीद भगतसिंह

Downloaded from www.PDFshala.com

पुत्र स्व. श्री बाबर सिंह

Downloaded from www.PDFshala.com

संदेश

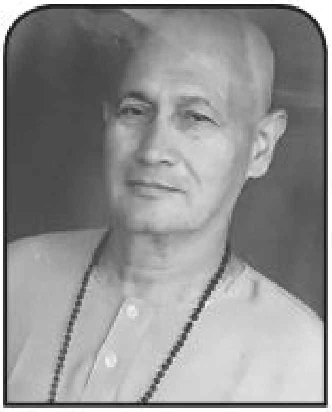

शहीद भगतसिंहजी एक ऐसे व्यक्तित्ववाले व्यक्ति थे, जिन्होंने अपने कार्यों से यह दिखाया कि अँधेरे से उजाले में, गुलामी से आजादी और दु:ख-तकलीफ को कैसे खुशी में बदला जा सकता है। हमारे देश की आजादी की लड़ाई में उनका बलिदान एक मील का पत्थर साबित हुआ। उन्होंने मात्र 23 साल की आयु में ऐसी उपलब्धियों को प्राप्त किया, जिसके कारण वे आज 'शहीद-ए-आजम' के नाम से जाने जाते हैं।

मुझे बहुत खुशी व गर्व हो रहा है कि मैं इस पुस्तक, जिसके अंदर जेल की काल-कोठरी में अंग्रेजों द्वारा दी गई यातनाएँ सहते हुए शहीद भगतसिंह ने आजादी पर अपने विचारों क्रांति क्या होती है और मानव किन विचारों को ग्रहण करके एक खुशहाल जीवन व्यतीत कर सकता है, को लाहौर सेंट्रल जेल में लिखा था।

शहीद भगतसिंह की यह जेल डायरी पढ़कर यह पता चलता है कि वे सिर्फ एक स्वतंत्रता सेनानी ही नहीं, बल्कि दूरदृष्टि रखनेवाले विचारक भी थे, जिन्होंने आजादी के बाद कैसा हिंदुस्तान होना चाहिए, उस पर भी अपने विचार लिखे। जेल के दौरान लगभग 110 किताबों को उन्होंने पढ़ा और उसका सार अपनी इस 'जेल डायरी' में लिखा, उन्हें पता था कि अंग्रेज उन्हें ज्यादा समय तक जीने नहीं देंगे, इसलिए उन्होंने अपने विचारों को डायरी में लिखा, ताकि देशवासी इसे पढ़ सकें और एक खुशहाल समाज व देश बना सकें। मैं उम्मीद और आशा करता हूँ कि यह किताब शहीद भगतसिंह के असली विचारों से भारतीयों को जोड़ेगी।

मैं यादविंदर सिंह, (सुपौत्र शहीद भगतसिंह) को इस प्रस्तुति के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ, क्योंकि इस माध्यम से शहीद भगतसिंह के हस्तलिखित लेख व उनका अनुवाद शहीद भगतसिंह के शब्दों में ही उनके चाहने वालों को देखने-पढ़ने को मिलेंगे। इस ऐतिहासिक कार्य के लिए मेरी शुभकामनाएँ।

—जितेंद्र मेहरा

राष्ट्रीय अध्यक्ष

अखिल भारतीय खत्री महासभा

Downloaded from www.PDFshala.com

संदेश

शहीद-ए-आजम भगतसिंह सिर्फ एक नाम नहीं, मैं तो उन्हें एक संस्था बोलूँगा, क्योंकि शहीद भगतसिंह का व्यक्तित्व इतना बड़ा है कि उसका एक-एक आचरण अपने आप में देशभक्ति का उदाहरण है। एक बेटा कैसा होता है, एक छात्र कैसा होता है, एक भाई कैसा होता है, एक मित्र कैसा होता है व देश का नागरिक कैसा होता है और देशभक्ति व राष्ट्रभक्ति मेरे लिए शहीद भगतसिंह है। बचपन से ही **अपनी माताजी से देश के सच्चे सपूत के बारे में सुना करता था,** उनकी हिम्मत को सुनकर उत्साहित हुआ करता था और उनका त्याग-बलिदान सुनकर आँखों में आँसू आ जाते थे। भारत माँ आज भी भगतसिंह जैसा वीर सपूत ढूँढ़ रही है। मैं उम्मीद और आशा करता हूँ, 'शहीद भगतसिंह जेल डायरी' इस पुस्तक के माध्यम से एक बार फिर से भगतसिंह की यादें नौजवानों में जागेंगी और वे अच्छे-सच्चे नागरिक बनकर देश की सेवा में योगदान करेंगे।

मैं **(यादविंद्र सिंह सुपौत्र शहीद भगतसिंह)** को इस प्रस्तुति के लिए बधाई और शुभकामनाएँ देता हूँ।

—धर्मेंद्र

प्रसिद्ध फिल्म अभिनेता

Downloaded from www.PDFshala.com

संदेश

मैं नौ साल का था। मुझे याद है, मथुरा की उन गलियों में हम लोग 'भगतसिंह भगतसिंह' ड्रामा खेलते थे। शहीद फिल्म देखने के बाद भगतसिंहजी का जुनून सिर पर सवार हो गया था। 'मेरा रंग दे बसंती चोला' गाने को गाते हुए हम फाँसी वाले एक्ट को हँसते-हँसते खेलते थे। फाँसी नहीं जैसे फंदे को गले लगाना, उससे लटकना एक बड़ा आनंद हो। ऐसा असर था शहीदे आजम के किरदार का।

कुछ दिन पहले जब यादवेंद्रजी ऑफिस पधारे और शहीदे आजम की यह जेल में लिखी डायरी मुझे दिखाई तो मुझे उस डायरी को स्पर्श करने का अवसर मिला, मेरे रोमांच की सीमा अपार हो गई थी। जिन पन्नों को भगतसिंहजी ने छुआ, जिन शब्दों को भगतसिंहजी ने लिखा, उनको मैं छू सका—उफ अनंत...अथाह आनंद! उनका ज्ञान, उनका ध्यान, उनका देशप्रेम, उस नन्ही सी 13 वर्ष की उम्र में उनका व्यक्तित्व अतुलनीय है। मेरा उनको शत-शत प्रणाम।

ईश्वर से प्रार्थना है, हमें इतनी शक्ति दे कि हम उनके इन विचारों का अनुसरण कुछ अंश मात्रा में भी कर सकें।

जयहिंद!

—अनिल शर्मा

निर्देशक

Downloaded from www.PDFshala.com

सरदार अर्जुन सिंह

(शहीद भगतसिंह के दादाजी)

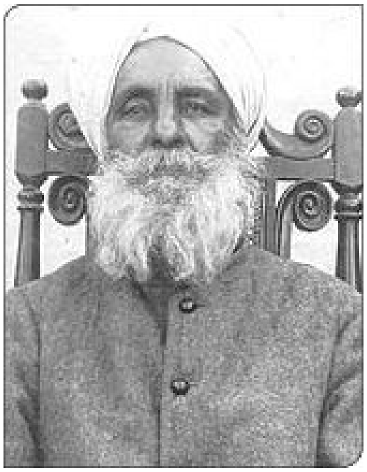

सरदार किशन सिंह

(शहीद भगतसिंह के पिताजी)

Downloaded from www.PDFshala.com

सरदार सवर्ण सिंह

(शहीद भगतसिंह के चाचाजी)

सरदार अजीत सिंह

(शहीद भगतसिंह के चाचाजी)

Downloaded from www.PDFshala.com

श्रीमती विद्यावती

(शहीद भगतसिंह की माताजी, 'पंजाब माता के रूप में विख्यात')

सरदार कुलबीर सिंह

(शहीद भगतसिंह के सगे छोटे भाई)

Downloaded from www.PDFshala.com

सरदार कुलबीर सिंह व श्रीमती विद्यावती

बालक शहीद भगतसिंह

Downloaded from www.PDFshala.com

तरुण शहीद भगतसिंह

शहीद भगतसिंह का एक प्रभावी चित्र

Downloaded from www.PDFshala.com

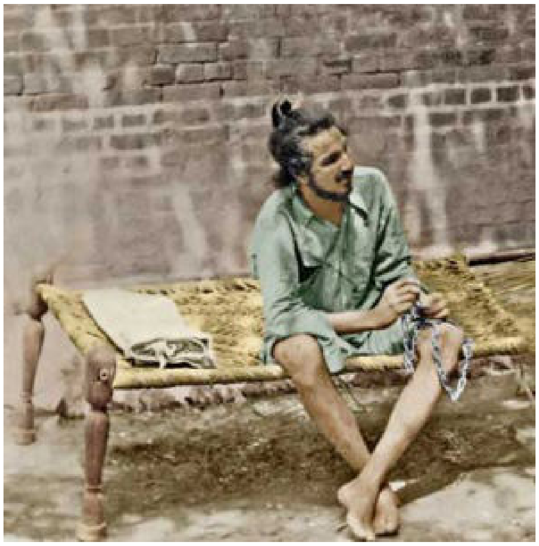

शहीद भगतसिंह

(पहली बार गिरफ्तार होने के बाद जेल में)

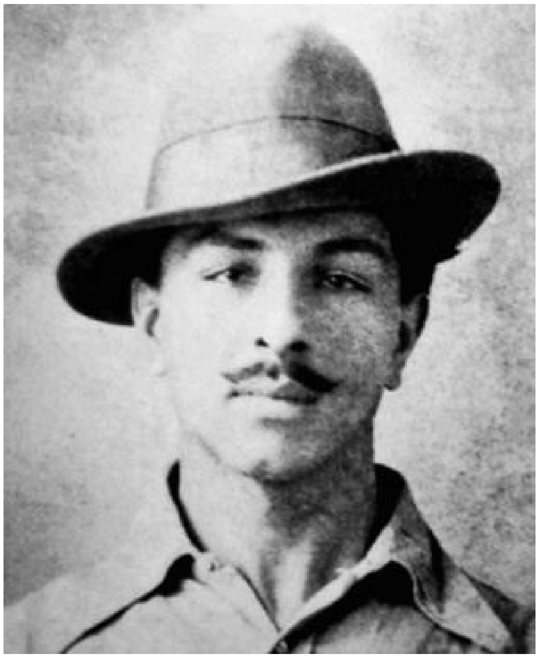

शहीद भगतसिंह का अत्यंत लोकप्रिय चित्र

Downloaded from www.PDFshala.com

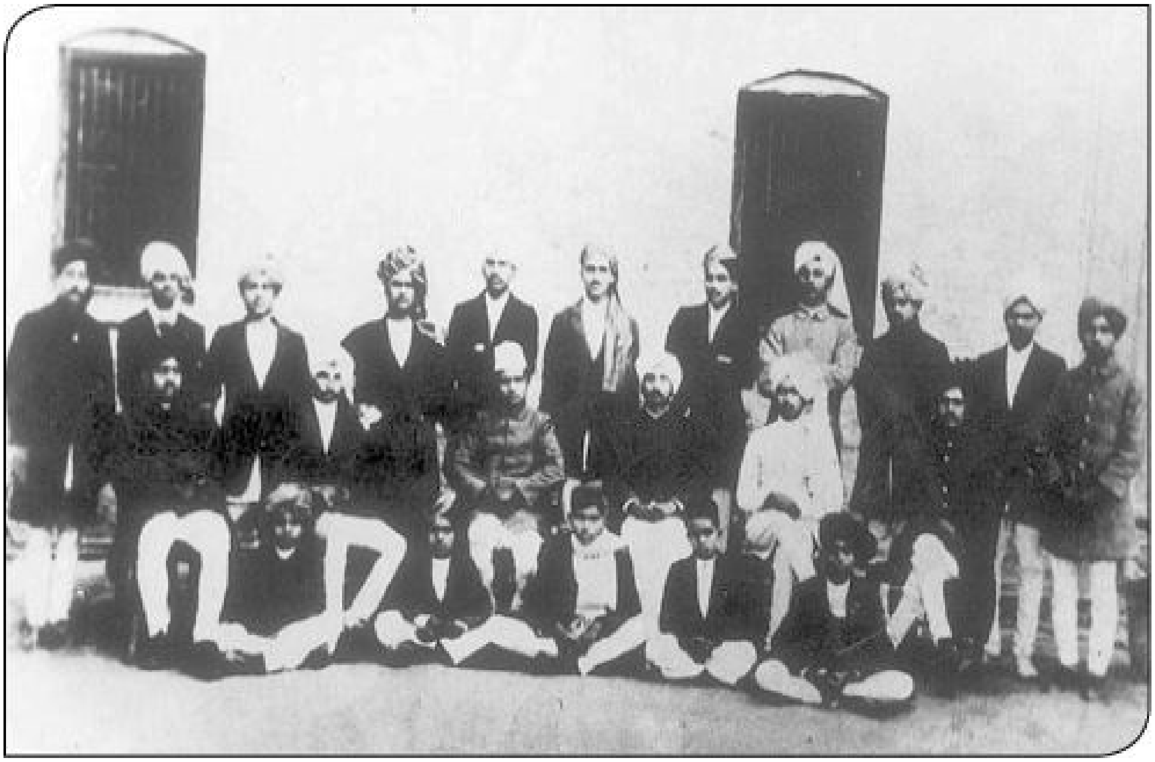

शहीद भगतसिंह

(कॉलेज का एक समूह चित्र, भगतसिंह गोले में हैं)

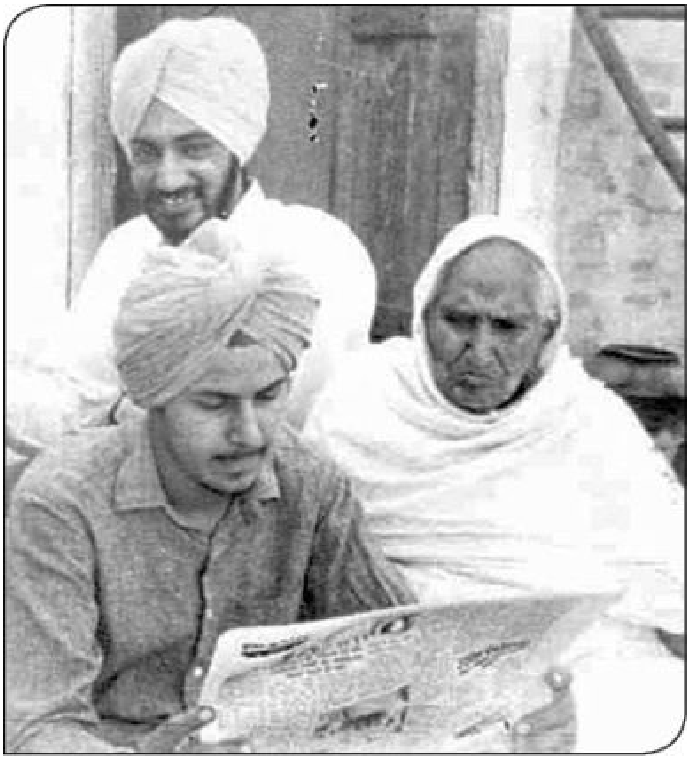

Downloaded from www.PDFshala.com

युवा स्व. श्री बाबर सिंह

(अपनी दादीजी श्रीमती विद्यावती के साथ)

शहीद भगतसिंह को श्रद्धांजलि देते स्व. बाबर सिंह

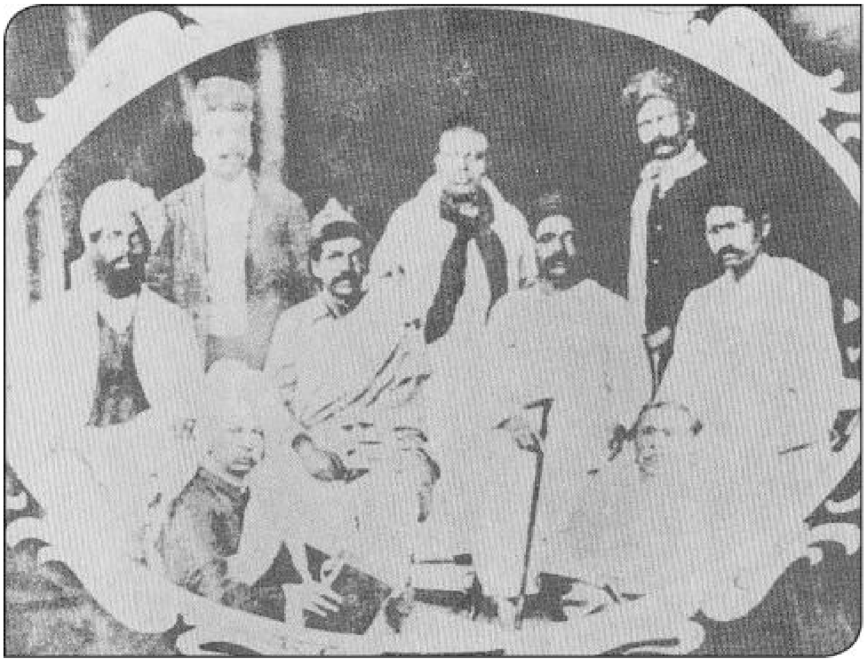

1907 में सूरत कांग्रेस में लोकमान्य तिलक व अरविंद घोष के साथ सरदार अजीत सिंह

Downloaded from www.PDFshala.com

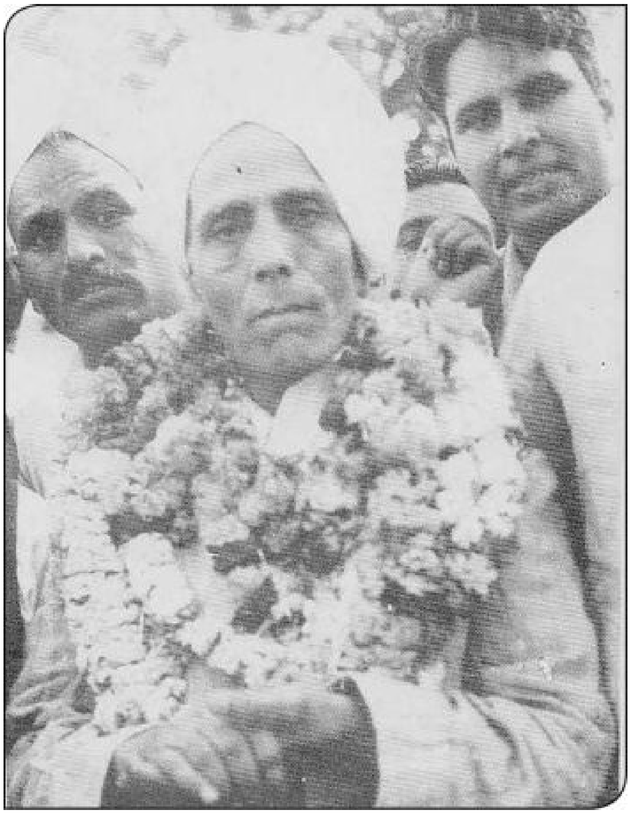

सरदार अजीत सिंह व सरदार कुलबीर सिंह

लाहौर में कांग्रेस कमेटी की ओर से सरदार अजीत सिंह के सम्मान में वक्तव्य देते श्री पूरन चंद आजाद

Downloaded from www.PDFshala.com

सरदार कुलबीर सिंह अपने पिताजी सरदार किशन सिंह के साथ

शहीद चंद्रशेखर आजाद

Downloaded from www.PDFshala.com

गोली लगने के बाद शहीद चंद्रशेखर आजाद इलाहाबाद के एल्फ्रेड पार्क में

शहीद भगतसिंह पर भारत सरकार द्‌वारा जारी डाक टिकट

Downloaded from www.PDFshala.com

दुर्गा भाभी अपने पुत्र सचिन के साथ, लाहौर से बचकर निकलने में उन्होंने शहीद भगतसिंह की ममद की थी

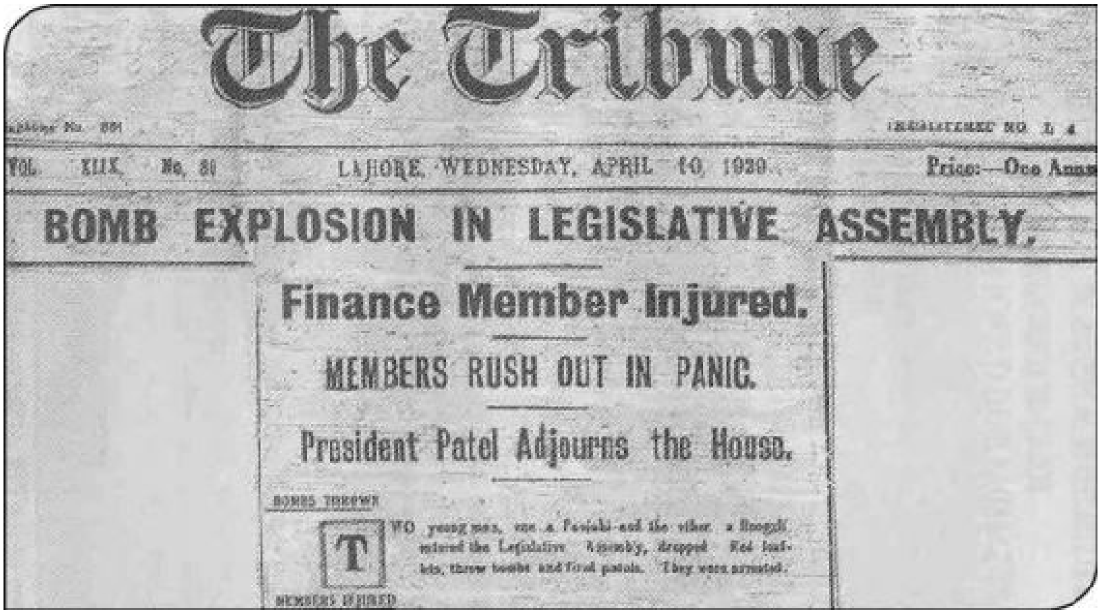

The Tribune

LAHORE, WEDNESDAY, APRIL 10, 1929

BOMB EXPLOSION IN LEGISLATIVE ASSEMBLY.

Finance Member Injured.

MEMBERS RUSH OUT IN PANIC.

President Patel Adjourns the House.

BOMBS THROWN

TWO young men, one a Punjabi and the other a Bengali entered the Legislative Assembly, dropped Red leaflets, threw bombs and fired pistols. They were arrested.

MEMBERS INJURED

असेंबली में बम फेंकने की रिपोर्ट का प्रकाशन

Downloaded from www.PDFshala.com

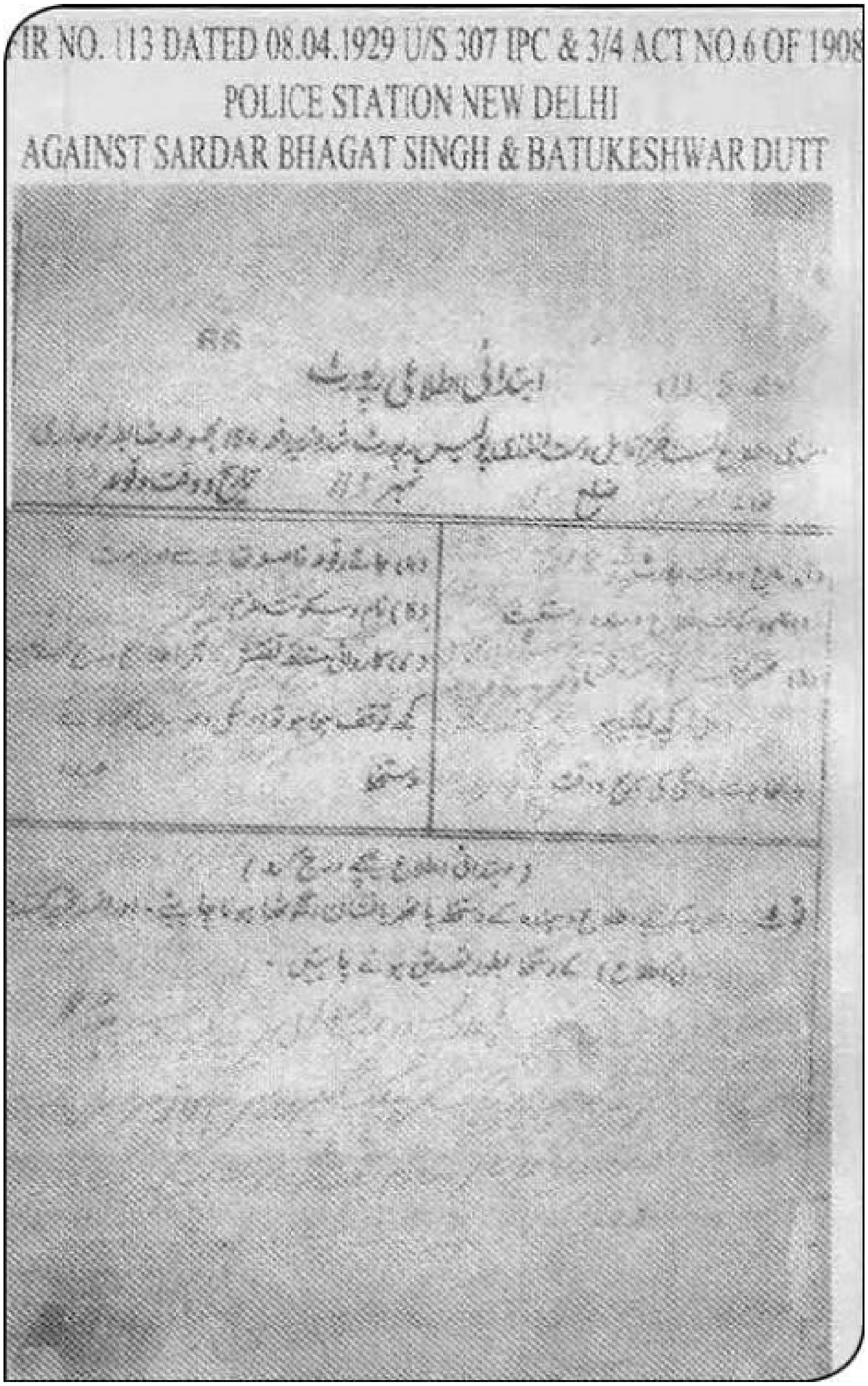

FIR NO. 113 DATED 08.04.1929 U/S 307 IPC & 3/4 ACT NO.6 OF 1908
POLICE STATION NEW DELHI
AGAINST SARDAR BHAGAT SINGH & BATUKESHWAR DUTT

'बम फेंकने' की यथाक स्थित घटना की एफ.आई.आर. की प्रति

Downloaded from www.PDFshala.com

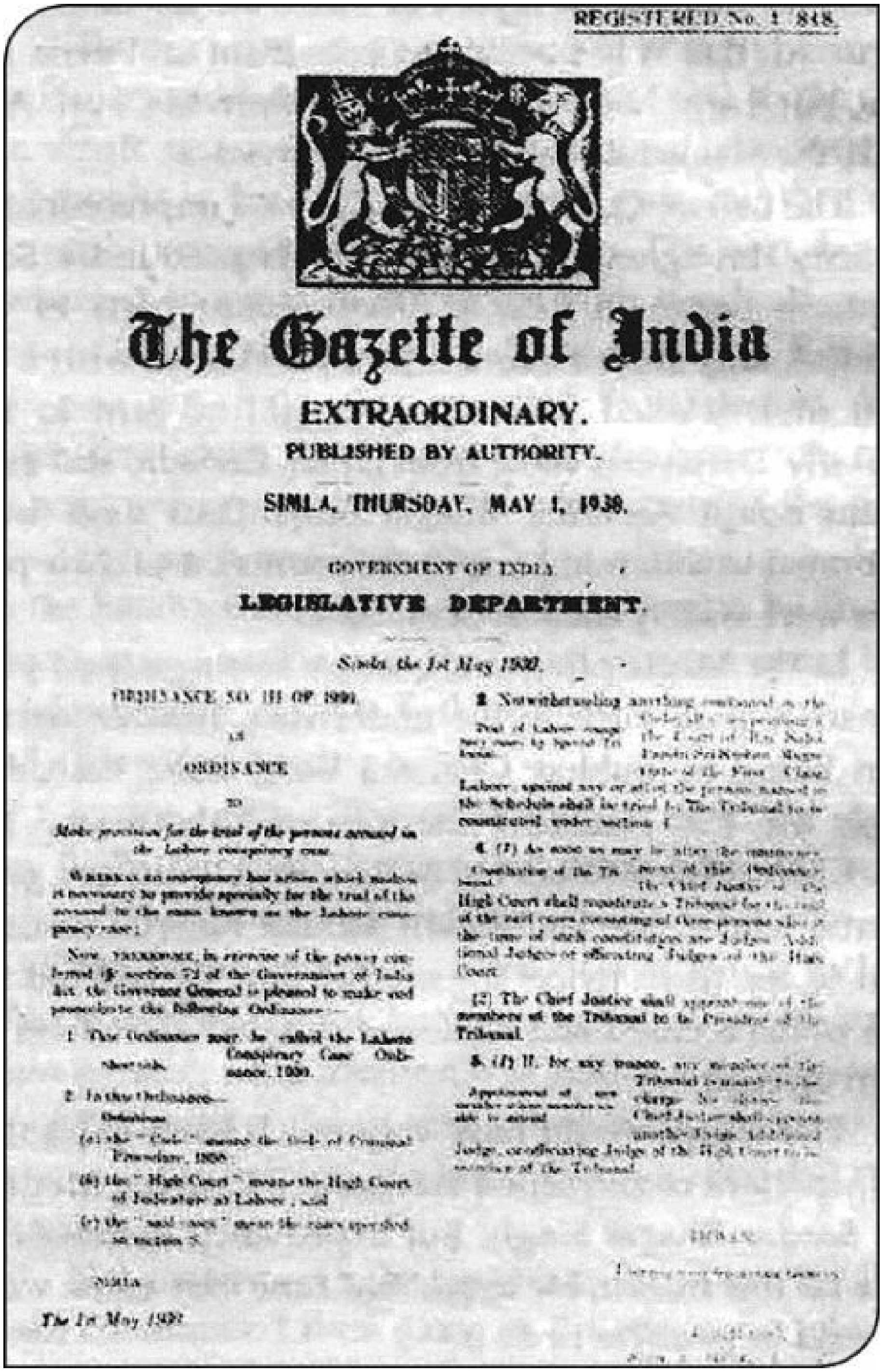
REGISTERED No. L 848.

The Gazette of India

EXTRAORDINARY.

PUBLISHED BY AUTHORITY.

SIMLA, THURSDAY, MAY 1, 1930.

GOVERNMENT OF INDIA

LEGISLATIVE DEPARTMENT.

Simla, the 1st May 1930.

ORDINANCE NO. III OF 1930.

AN

ORDINANCE

TO

Make provision for the trial of the persons accused in the Lahore conspiracy case.

WHEREAS an emergency has arisen which makes it necessary to provide specially for the trial of the accused in the case known as the Lahore conspiracy case;

NOW, THEREFORE, in exercise of the power conferred by section 72 of the Government of India Act, the Governor General is pleased to make and promulgate the following Ordinance:—

1. This Ordinance may be called the Lahore Conspiracy Case Ordinance, 1930.

2. In this Ordinance—

(a) the "Code" means the Code of Criminal Procedure, 1898;

(b) the "High Court" means the High Court of Judicature at Lahore; and

(c) the "said cases" means the cases specified in section 3.

3. Notwithstanding anything contained in the Code ... the Court of ... Magistrate of the First Class, Lahore, against any or all of the persons named in the Schedule shall be tried by the Tribunal to be constituted under section 4.

4. (1) As soon as may be after the commencement of this Ordinance, the Chief Justice of the High Court shall constitute a Tribunal for the trial of the said cases consisting of three persons who at the time of such constitution are Judges, Additional Judges or officiating Judges of the High Court.

(2) The Chief Justice shall appoint one of the members of the Tribunal to be President of the Tribunal.

5. (1) If, for any reason, any member of the Tribunal is unable to discharge his duties, the Chief Justice shall appoint another Judge, Additional Judge, or officiating Judge of the High Court to be a member of the Tribunal.

SIMLA

The 1st May 1930.

मई 1930 में ट्रिब्यून की गजट सूचना

Downloaded from www.PDFshala.com

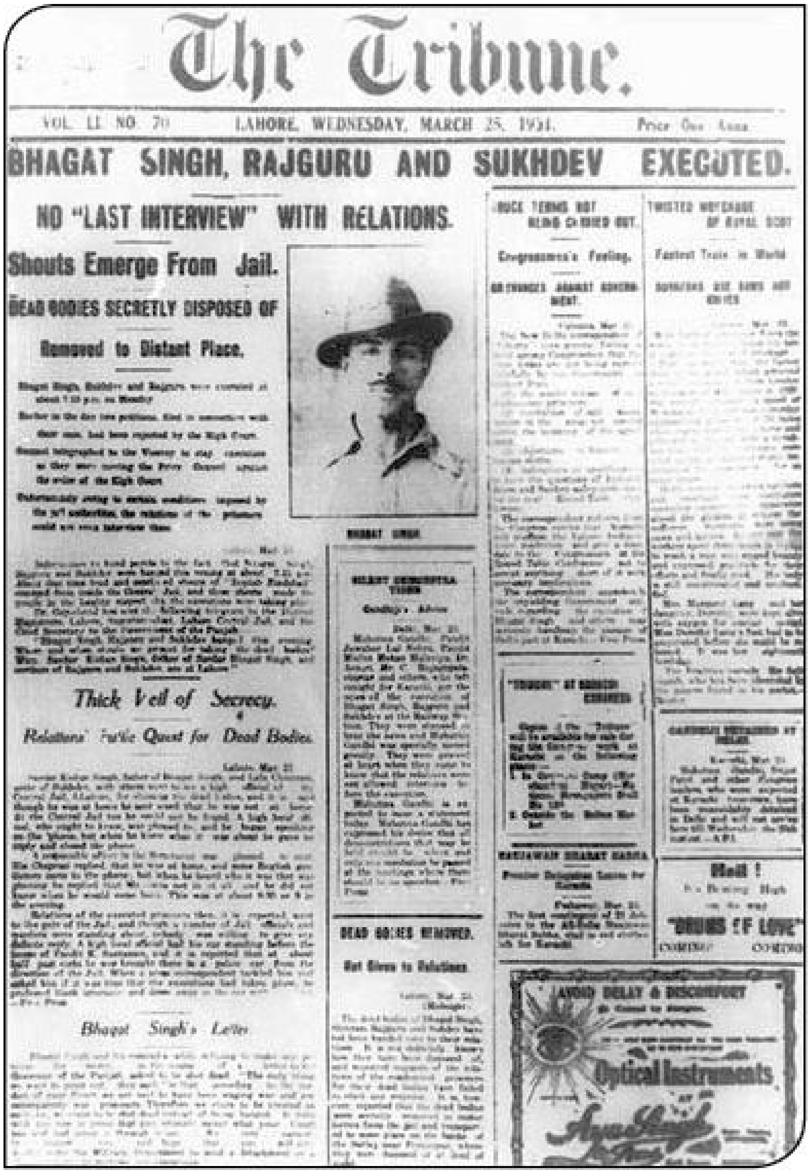

The Tribune.

VOL. LI NO. 70 LAHORE, WEDNESDAY, MARCH 25, 1931. Price One Anna

BHAGAT SINGH, RAJGURU AND SUKHDEV EXECUTED.

NO "LAST INTERVIEW" WITH RELATIONS.

Shouts Emerge From Jail.

DEAD BODIES SECRETLY DISPOSED OF

Removed to Distant Place.

BHAGAT SINGH

Thick Veil of Secrecy.

Relations' Futile Quest for Dead Bodies.

Bhagat Singh's Letter

DEAD BODIES REMOVED.

Not Given to Relations.

Congressmen's Feeling.

Fastest Train in World

Optical Instruments

"DRUMS OF LOVE"

शहीद भगतसिंह को फाँसी देने के अगले दिन प्रकाशित अंग्रेजी समाचार-पत्र 'ट्रिब्यून'

Downloaded from www.PDFshala.com

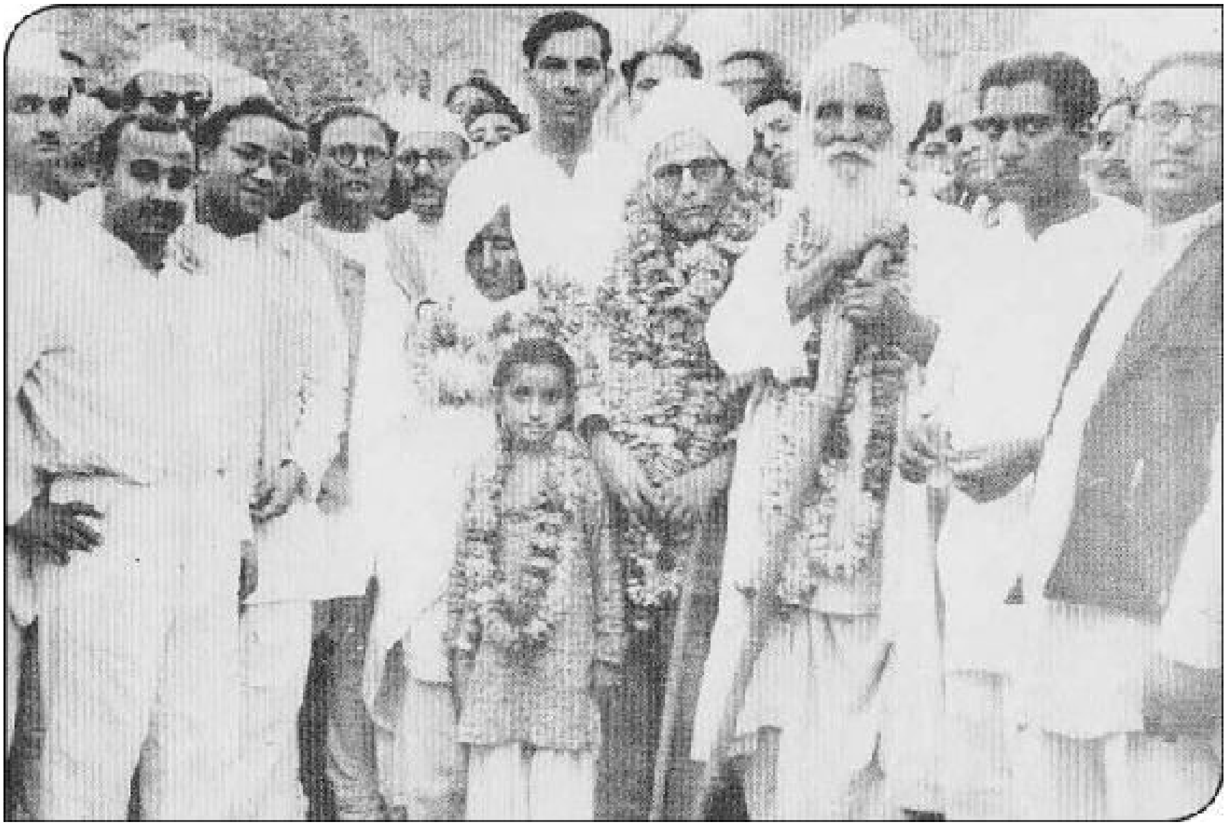

38 वर्षों के निर्वासन के बाद लाहौर पहुँचे सरदार अजीत सिंह का स्वागत यश एवं कुलबीर सिंह, माता हरनाम कौर व सरदार किशन सिंह ने किया

Downloaded from www.PDFshala.com

हमें गोली से उड़ाया जाए

20 मार्च, 1931

प्रति

गवर्नर पंजाब, शिमला

महोदय,

उचित सम्मान के साथ हम नीचे लिखी बातें आपकी सेवा में दे रहे हैं। भारत की ब्रिटिश सरकार के सर्वोच्च अधिकारी वाइसराय ने एक विशेष अध्यादेश जारी करके लाहौर षड्यंत्अभियोग की सुनवाई के लिए एक विशेष न्यायाधिकरण ट्रिब्यूनल स्थापित किया था, जिसने अक्तूबर 1930 को हमें फाँसी का दंड सुनाया। हमारे विरुद्ध सबसे बड़ा आरोप यह लगाया गया है कि हमने सम्राट जार्ज पंचम के विरुद्ध युद्ध किया है। न्यायालय के निर्णय से दो बातें स्पष्ट हो जाती हैं। पहली यह कि अंग्रेज जाति और भारतीय जनता के मध्य एक युद्ध चल रहा है। दूसरे यह कि हमने निश्चित रूप से इस युद्ध में भाग लिया है। अत: हम युद्धबंदी हैं। हम यह कहना चाहते हैं कि युद्ध छिड़ा हुआ है और यह लड़ाई तब तक चलती रहेगी, जब तक कि शक्तिशाली व्यक्तियों ने भारतीय जनता और श्रमिकों की साँस के साधनों पर अपना एकाधिकार कर रखा है। निश्चित ही यह युद्ध उस समय तक समाप्त नहीं होगा, जब तक कि समाज का वर्तमान ढाँचा समाप्त नहीं हो जाता। प्रत्येक वस्तु में परिवर्तन या क्रांति समाप्त नहीं हो जाती और मानवीय सृष्टि में एक नवीन युग का सूत्रपात नहीं हो जाता है।

हम आपसे केवल यह प्रार्थना करना चाहते हैं कि आपकी सरकार के ही न्यायालय के निर्णय के अनुसार हमारे विरुद्ध युद्ध जारी रखने का अभियान है। इस दृष्टि से हम युद्धबंदी हैं। अत: इस आधार पर हम आपसे माँग करते हैं कि हमारे प्रति युद्धबंदियों जैसा ही व्यवहार किया जाए और हमें फाँसी देने के बदले गोली से उड़ा दिया जाए।

भवदीय

भगतसिंह, सुखदेव, राजगुरु

Downloaded from www.PDFshala.com

भाई कुलबीर सिंह के नाम भगतसिंह का अंतिम पत्र फाँसी लगने से बीस दिन पहले लिखा गया।

सेंट्रल जेल, लाहौर

3 मार्च, 1931

प्रिय कुलबीर सिंह,

तुमने मेरे लिए बहुत कुछ किया। मुलाकात के समय तुमने अपने खत के जवाब में कुछ लिख देने के लिए कहा था। कुछ शब्द लिख दूँ। देख, मैंने किसी के लिए कुछ न किया। तुम्हारे लिए भी कुछ न कर सका। आज तुम सबको विपदाओं में छोड़कर जा रहा हूँ। तुम्हारी जिंदगी का क्या होगा? गुजर किस तरह करोगे? विपदाओं से न घबराना, इसके सिवाय और क्या कह सकता हूँ! अमेरिका जा सकते तो बहुत अच्छा होता, लेकिन अब तो यह नामुमकिन जान पड़ता है। धीरे-धीरे हिम्मत से पढ़ लो। अगर कोई काम सीख सको तो बेहतर होगा, लेकिन सब कुछ पिताजी की सलाह से करना। जहाँ तक हो सके, प्यार-मोहब्बत से रहना। इसके सिवाय और क्या कहूँ? जानता हूँ कि आज तुम्हारे दिल में गम का समुद्र ठाठें मार रहा है। तुम्हारे बारे में सोचकर मेरी आँखों में आँसू आ रहे हैं, लेकिन क्या किया जा सकता है? हौसला रख मेरे अजीज, मेरे प्यारे भाई, जिदंगी बड़ी बेरहम। लोग भी बहुत बेरहम हैं । सिर्फ हिम्मत और प्यार से ही गुजारा हो सकेगा। कुलतार की पढ़ाई की चिंता भी तुम्हें करनी है। बहुत शर्म आती है और अफसोस के सिवाय मैं कर भी क्या सकता हूँ? साथ वाला खत हिंदी में लिखा है। खत बी.के. की बहन को दे देना। अच्छा नमस्कार, अजीज भाई, अलविदा।

तुम्हारा शुभाकांक्षी

भगतसिंह

Downloaded from www.PDFshala.com

विद्यार्थियों के नाम पत्र

(भगतसिंह और बटुकेश्वर दत्त की ओर से जेल से भेजा गया यह पत्र 19 अक्तूबर, 1929 को पंजाब छात्र संघ, लाहौर के दूसरे अधिवेशन में पढ़कर सुनाया गया था। अधिवेशन के सभापति थे नेताजी सुभाषचंद्र बोस)।

इस समय नौजवानों से हम यह नहीं कह सकते कि वे बम और पिस्तौल उठाएँ। आज विद्यार्थियों के सामने इससे भी अधिक महत्त्वपूर्ण काम है। आने वाले लाहौर अधिवेशन में कांग्रेस देश की आजादी के लिए जबरदस्त लड़ाई की घोषणा करने वाली है। राष्ट्रीय इतिहास के इन कठिन क्षणों में नौजवानों के कंधों पर बहुत बड़ी जिम्मेदारी आ पड़ी है।

क्या परीक्षा की इस घड़ी में वे उसी प्रकार की दृढ़ता और आत्मविश्वास का परिचय देने से हिचकिचाएँगे? नौजवानों को क्रांति का संदेश देश के कोने-कोने में पहुँचाना है। फैक्टरी, कारखानों के क्षेत्रों में, गंदी बस्तियों और गाँवों की जर्जर झोंपड़ियों में रहने वाले करोड़ों लोगों में इस क्रांति की अलख जगानी है, जिससे आजादी आएगी और तब एक मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य का शोषण अंसकद हो जाएगा। आज देश के प्रति अपनी श्रद्धा और शहीद यतींद्रनाथ दास के बलिदान से प्रेरणा लेकर यह सिद्ध कर दें कि स्वतंत्रता के इस संघर्ष में दृढ़ता से टक्कर ले सकते हैं।

22 अक्तूबर, 1929 के ट्रिब्यून (लाहौर) में प्रकाशित

Downloaded from www.PDFshala.com

घर को अलविदा पिताजी के नाम पत्र

पूज्य पिताजी, नमस्ते।

मेरी जिंदगी का मकसदे आला ऊँचा उद्देश्य यानि आजादी हिंद के असूल सिद्धांत के लिए वक्फ (दान) हो चुकी है। इसलिए मेरी जिंदगी में आराम और दुनियांनी वाहशात (सांसारिक इच्छा) वामसे क शिश (आकर्षक) नहीं है।

आपको याद होगा कि जब मैं छोटा था तो बापूजी ने मेरे यज्ञोपवीत के वक्त ऐलान किया था कि मुझे खिदमते वतन (देश सेवा) के लिए वक्फ कर दिया गया है। लिहाजा मैं उस वक्त की प्रतिज्ञा पूरी कर रहा हूँ। उम्मीद है, आप मुझे माफ फरमाएँगे।

आपका ताबेदार
भगतसिंह

Downloaded from www.PDFshala.com

बलिदान से पहले साथियों को अंतिम पत्र

22 मार्च, 1931

साथियो,

स्वाभाविक है कि जीने की इच्छा मुझमें भी होनी चाहिए, जिसे मैं छुपाना नहीं चाहता, लेकिन एक शर्त पर जिंदा रह सकता हूँ कि मैं कैद या पाबंद होकर जीना नहीं चाहता। मेरा नाम हिंदुस्तानी क्रांति का प्रतीक बन चुका है और क्रांतिकारी दल के आदर्शों व कुर्बानियों ने मुझे ऊँचा उठा दिया, इतना ऊँचा कि जीवित रहने की स्थिति में इससे ऊँचा मैं हरगिज नहीं हो सकता। आज मेरी कमजोरियाँ जनता के सामने नहीं हैं। अगर मैं फाँसी से बच गया तो वे जाहिर हो जाएँगी और क्रांति का प्रतीक चिह्नमद्धम पड़ जाएगा या संभवत: मिट ही जाए। लेकन दिलेराना ढंग से हँसते-हँसते मेरे फाँसी चढ़ने की सूरत में हिंदुस्तानी माताएँ अपने बच्चों के भगतसिंह बनने की आरजू किया करेंगी और देश के लिए कुर्बानी देने वालों की तादाद इतनी बढ़ जाएगी कि क्रांति को रोकना साम्राज्यवाद या तमाम शैतानी शक्तियों के बूते की बात नहीं रहेगी। हाँ, एक विचार आज भी मेरे मन में आता है कि देश और मानवता के लिए जो कुछ करने की हसरतें मेरे दिल में थीं, उनका हजारवाँ भाग भी पूरा नहीं कर सकता। अगर स्वतंत्र, जिंदा रह सकता, तब शायद उन्हें पूरा करने का अवसर मिलता और मैं अपनी हसरतें पूरी कर सकता। इसके सिवाय मेरे मन में कोई लालच फाँसी से बचने का नहीं आया। मुझसे अधिक भाग्यशाली कौन होगा? आजकल मुझे स्वयं पर बहुत गर्व है। अब तो बड़ी बेताबी से अंतिम परीक्षा का इंतजार है। कामना है कि यह और नजदीक हो जाए।

आपका साथी
भगतसिंह

Downloaded from www.PDFshala.com

यह भगतसिंह का पहला खत है, जब वह छठी कक्षा में पढ़ रहे थे। उनका यह पत्र दादा अर्जुन सिंह को संबोधित है।

लाहौर 22 जुलाई, 1918

पूज्य बाबाजी,

नमस्ते।

अर्ज यह है कि आपका खत मिला, पढ़कर दिल खुश हुआ। इम्तिहान की बात ये है कि मैंने पहले इसलिए नहीं लिखा था, क्योंकि हमें बताया नहीं गया था। अब हमें अंग्रेजी और संस्कृत का नतीजा बताया गया है। उनमें मैं पास हूँ। संस्कृत में मेरे 150 नंबरों में 110 नंबर हैं। अंग्रेजी में 150 में से 68 नंबर हैं। जो 150 में से 50 नंबर ले जाए, वह पास होता है। 68 नंबरों को लेकर मैं अच्छी तरह पास हो गया हूँ। किसी किस्म की चिंता न करना। बाकी नहीं बताया गया। छुट्टियाँ—8 अगस्त को पहली छुट्टी होगी। आप कब आएँगे, लिखना।

आपका आज्ञाकारी,

भगतसिंह

Downloaded from www.PDFshala.com

काकोरी के शहीदों को फाँसी

जनवरी 1928 के 'किरती' में भगतसिंह ने एक और लेख काकोरी के शहीदों के बारे में 'विद्रोही' के नाम से लिखा।

'किरती' के पाठकों को पहले किसी अंक में हम काकोरी के मुकदमे के हालात बता चुके हैं। अब इन चार वीरों को फाँसी दिए जाने का हाल बताते हैं।

17 दिसंबर, 1927 को श्री राजिंद्रनाथ लाहिड़ी को गोंडा जेल में फाँसी दी गई और 19 दिसंबर, 1927 को श्री राम प्रसाद 'बिस्मिल' को गोरखपुर जेल में, श्री अशफाक उल्ला को फैजाबाद जेल में और श्री रोशन सिंहजी को इलाहाबाद जेल में फाँसी पर चढ़ा दिया गया।

इस मुकदमे के सेशन जज मि. हेमिल्टन ने फैसला देते हुए कहा था कि ये नौजवान देशभक्त हैं और इन्होंने अपने किसी लाभ के लिए कुछ भी नहीं किया और यदि यह नौजवान अपने किए पर पश्चात्ताप करें तो उनकी सजाओं में रियायत की जा सकती है, लेकिन उन्हें फाँसी दिए बगैर डायन नौकरशाही को चैन कैसे पड़ता? अपील में बहुत से लोगों की सजाएँ बढ़ा दी गईं। फिर न तो गवर्नर और न ही वायसरॉय ने उसके यौवन की ओर ध्यान दिया और प्रिवी कौंसिल ने तो उनकी अपील सुनने से पहले ही खारिज कर दी। यू.पी. कौंसिल के बहुत से सदस्यों, असेंबली और कौंसिल और स्टेट के बहुत से सदस्यों ने वायसरॉय को उनकी जवानी पर दया करने की दरखास्त दी, लेकिन होना क्या था? उनके इतने हाथ-पाँव मारने का कोई परिणाम न निकला। यू.पी. कौंसिल के स्वराज पार्टी के नेता श्री गोविंद वल्लभ पंत उनके मामले पर बहस के लिए अपना मत वायसरॉय और लाट साहब को भेजने के लिए शोर मचा रहे थे। पहले तो प्रेजीडेंट साहब ही अनुमति नहीं दे रहे थे, लेकिन बहुत से सदस्यों ने मिलकर कहा तो सोमवार को बहस के लिए इजाजत मिली, लेकिन फिर छोटे अंग्रेज अध्यक्ष, जो उस समय अध्यक्ष का काम कर रहा था, ने सोमवार को कौंसिल की छुट्टी ही कर दी। होम मेंबर नवाब छतारी के दर पर जा चिल्लाए, लेकिन उनके कानों पर जूँ तक न सरकी और कौंसिल में उनके संबंध में एक शब्द भी न कहा जा सका और उन्हें फाँसी पर लटका ही दिया गया। इसी क्रोध में नीचता के साथ रूसी जार और फ्रांसीसी लुइस बादशाह होनहार युवकों को फाँसी पर लटका-लटकाकर दिलों की भड़ास निकालते रहे, लेकिन उनके राज्यों की नींवें खोखली हो गई थीं और उनके तख्ते पलट गए। इसी गलत तरीके का आज फिर इस्तेमाल हो रहा है। देखें, यदि इस बार इनकी मुरादें पूरी हों। नीचे हम उन चारों वीरों के हालात संक्षेप में लिखते हैं, जिससे यह पता चले कि यह अमूल्य रत्न मौत के सामने खड़े होते भी किस बहादुरी से हँस रहे थे।

Downloaded from www.PDFshala.com

श्री राजिंद्रनाथ लाहिड़ी

आप हिंदू विश्वविद्यालय बनारस के एम.ए. के छात्र थे। 1925 में कलकत्ते के पास दक्षिणेश्वर बम फैक्टरी पकड़ी गई थी, उसमें आप भी पकड़े गए थे और आपको सात बरस की कैद हो गई थी। वहीं से आपको लखनऊ लाया गया और काकोरी केस में आपको फाँसी की सजा दे दी गई। आपको बाराबंकी और गोंडा जेलों में रखा गया। आप मौत को सामने देख घबराते नहीं थे, बल्कि हमेशा हँसते रहते थे। आपका स्वभाव बड़ा हँसमुख और निर्भय था। आप मौत का मजाक उड़ाते रहते थे।

आपने 14 दिसंबर को एक मित्र के नाम लिखा था—

कल मुझे पता चला है कि प्रिवी कौंसिल ने मेरी अपील खारिज कर दी है। आप लोगों ने हमें बचाने की कोई कोशिश की, लेकिन लगता है कि देश की बलिवेदी पर हमारे प्राणों के बलिदान की ही जरूरत है। मौत क्या है? जीवन की दूसरी दिशा के सिवाय कुछ नहीं। जीवन क्या है? मौत की ही दूसरी दिशा का नाम है। फिर डरने की क्या जरूरत है? यह तो प्राकृतिक बात है, उतनी ही प्राकृतिक जितना कि प्रात: में सूर्योदय। यदि हमारी यह बात सच है कि इतिहास पलटा खाता है तो मैं समझता हूँ कि हमारा बलिदान व्यर्थ नहीं जाएगा। मेरा नमस्कार। सबको अंतिम नमस्कार।

—आपका राजिंद्रनाथ लाहिड़ी

Downloaded from www.PDFshala.com

श्री रोशन सिंहजी

आपको 19 दिसंबर को इलाहाबाद में फाँसी दी गई। उनका एक आखिरी पत्र 13 दिसंबर का लिखा हुआ है। आप लिखते हैं—

इस हफ्ते फाँसी हो जाएगी। ईश्वर के आगे विनती है कि आपके प्रेम का आपको फल दे। आप मेरे लिए कोई गम न करना। मेरी मौत तो खुशीवाली है। चाहिए तो यह कि कोई बदफैली करके बदनाम होकर न मरे और अंत समय ईश्वर याद रहे। तो यही दो बातें हैं। इसलिए कोई गम नहीं करना चाहिए। दो साल बाल-बच्चों से अलग रहा हूँ। ईश्वर भजन का खूब अवसर मिला। इसलिए मोह-माया सब टूट गई। अब कोई चाह बाकी न रही। मुझे विश्वास है कि जीवन की दु:ख भरी यात्रा खत्म करके सुख के स्थान पर जा रहा है। शास्त्रों में लिखा है, युद्ध में मरने वालों की ऋषियों जैसी जमात (श्रेणी) होती है।

जिंदगी जिंदादिली को जानिए रोशन, वरना कितने मरे और पैदा होते जाते हैं। आखिरी नमस्कार।

श्री रोशन सिंह रायबरेली के काम करनेवालों में थे। किसान आंदोलन में जेल जा चुके थे। सबको विश्वास था कि हाईकोर्ट से आपकी मौत की सजा टूट जाएगी, क्योंकि आपके खिलाफ कुछ भी नहीं था। लेकिन फिर भी वे अंग्रेजशाही का शिकार ही हो गए और फाँसी पर लटका दिए गए। तख्ते पर खड़े होने के बाद आपके मुँह से जो आवाज निकली, वह यह थी—'वंदेमातरम्'।

आपकी अरथी के जुलूस की इजाजत नहीं दी गई। लाश की फोटो लेकर दोपहर में आपका दाह-संस्कार कर दिया गया।

Downloaded from www.PDFshala.com

श्री अशफाक उल्ला

यह मस्ताना शायर भी हैरान करनेवाली खुशी से फाँसी चढ़ा। बड़ा सुंदर और लंबा-चौड़ा जवान थ, तगड़ा बहुत था। जेल में कुछ कमजोर हो गया था। आपने मुलाकात के समय बताया कि कमजोर होने का कारण गम नहीं, बल्कि खुदा की याद में मस्त रहने की खातिर रोटी बहुत कम खाना है। फाँसी से एक दिन पहले आपकी मुलाकात हुई। आप खूब सजे-सँवरे थे। बड़े-बड़े कढ़े हुए केश खूब सजते थे। बड़ा हँस-हँसकर बातें करते रहे। आपने कहा, कल मेरी शादी होनेवाली है। दूसरे दिन सुबह छह बजे आपको फाँसी दी गई। कुरआन शरीफ का बस्ता लटकाकर हाजियों की तरह वजीफा पढ़ते हुए बड़े हौसले से चल पड़े। आगे जाकर तख्ते पर रस्सी को चूम लिया। वहीं आपने कहा—

"मैंने कभी किसी आदमी के खून से अपने हाथ नहीं रँगे और मेरा इनसाफ खुदा के सामने होगा। मेरे ऊपर लगाए सभी इल्जाम गलत हैं।" खुदा का नाम लेते ही रस्सी खींची गई और वे कूच कर गए। उनके रिश्तेदारों ने बड़ी मिन्नतों-खुशामदों से उनकी लाश ली और उन्हें शाहजहाँपुर ले आए। लखनऊ स्टेशन पर मालगाड़ी के एक डिब्बे में उनकी लाश देखने का अवसर कुछ लोगों को मिला। फाँसी के दस घंटे बाद भी चेहरे पर वैसी ही रौनक थी। ऐसा लगता था कि अभी ही सोए हों, लेकिन अशफाक तो ऐसी नींद सो गए थे कि जहाँ से वे कभी नहीं जागेंगे। अशफाक शायर थे और उनका शायद उपनाम 'हसरत' था। मरने से पहले आापने ये दो शेर कहे थे —

'फना हैं हम सबके लिए, हम पै कुछ नहीं मौकूफ!
वका है एक फकत जाने की ब्रिया के लिए।'

(नाश तो सभी होंगे, कोई हम अकेले थोड़े होंगे। न मरने वाला तो सिर्फ एक परमात्मा है) और

'तंग आकर हम उनपके जुल्म से बेदाद से,
चल दिए सूए अदम जिंदाने फैजाबाद से।'

Downloaded from www.PDFshala.com

श्री राम प्रसाद ‘बिस्मिल’

श्री राम प्रसाद ‘बिस्मिल’ बड़े होनहार नौजवान थे। गजब के शायर थे। देखने में भी बहुत सुंदर थे। योग्य बहुत थे। जानने वाले कहते हैं कि यदि किसी और जगह या किसी और देश या किसी और समय पैदा हुऐ होते तो सेनाध्यक्ष बनते। आपको पूरे षड्यंत्र का नेता माना गया है। चाहे बहुत ज्यादा पढ़े हुए नहीं थे, लेकिन फिर भी पंडित जगतनारायण जैसे सरकारी वकील की सुध-बुध भुला देते थे। चीफ कोर्ट में अपनी अपील खुद ही लिखी थी, जिससे कि जजों को कहना पड़ा कि इसे लिखने में जरूर ही किसी बहुत बुद्धिमान व योग्य व्यक्ति का हाथ है।

19 तारीख की शाम को आपको फाँसी दी गई। 12 की शाम को जब आपको दूध दिया गया तो आपने यह कहकर इनकार कर दिया कि अब मैं माँ का दूध ही पिऊँगा। 18 को आपकी मुलाकात हुई। माँ को मिलते समय आपकी आँखों में अश्रु बह चले। माँ बहुत हिम्मतवाली देवी थीं। आपसे कहने लगी—हरीशचंद्र, दधीचि आदि बुजुर्गों की तरह वीरता, धर्म व देश के लिए जान दे। चिंता करने और पछताने की जरूरत नहीं। आप हँस पड़े। कहा, “माँ, मुझे क्या चिंता और क्या पछतावा? मैंने कोई पाप नहीं किया। मैं मौत से नहीं डरता। लेकिन माँ आग के पास रखा घी पिघल ही जाता है। तेरा-मेरा संबंध ही कुछ ऐसा है कि पास होते ही आँखों से अश्रु उमड़ पड़े। नहीं तो मैं बहुत खुश हूँ।” फाँसी पर ले जाते समय आपने बड़े जोर से कहा, ‘वंदेमातरम्’ ‘भारत माता की जय’ और शांति से चलते हुए कहा—

‘मालिक तेरी रजा रहे और तू ही तू रहे
बाकी न मैं रहूँ न मेरी आरजू रहे
जब तक कि तन में जान रगों में लहू रहे
तेरा ही जिक्रे यार, तेरी जुस्तजू रहे।’

फाँसी के तख्ते पर खड़े होकर आपने कहा—
I wish the downfall of the British Empire.
मैं ब्रिटिश साम्राज्य का पतन चाहता हूँ।

फिर यह शे’र पढ़ा—
अब न अहले वलवले हैं और न अरमानों की भीड़,
एक मिट जाने की हसरत, अब दिले-बिस्मिल में है।

फिर ईश्वर के आगे प्रार्थना की और फिर एक मंत्र पढ़ना शुरू किया। रस्सी खींची गई। रामप्रसादजी फाँसी पर लटक गए। आज वह वीर इस संसार में नहीं है। उसे अंग्रेजी सरकार ने अपना खौफनाक दुश्मन समझा। आम खयाल यह है कि उसका कसूर यही था कि वह इस गुलाम देश में जन्म लेकर भी एक बड़ा भारी बोझ बन गया था और लड़ाई की विद्या से खूब परिचित था। 7 बजे आपकी लाश मिली और बड़ा भारी जुलूस निकला। स्वदेश प्रेम में आपकी माता ने कहा—

“मैं अपने पुत्र की इस मृत्यु पर प्रसन्न हूँ, दु:खी नहीं। मैं श्री रामचंद्र जैसा ही पुत्र चाहती थी। बोलो, श्री रामचंद्र की जय!”

Downloaded from www.PDFshala.com

इत्र-फुलेल और फूलों की वर्षों के बीच उनकी लाश का जुलूस जा रहा था। दुकानदारों ने उनके ऊपर से पैसे फैंके। 11 बजे आपकी लाश श्मशान भूमि में पहुँची और अंतिम क्रिया समाप्त हुई।

आपके पत्र का आखिरी हिस्सा आपकी सेवा में प्रस्तुत है—

मैं खूब सुखी हूँ। 19 तारीख को प्रात: जो होना है, उसके लिए तैयार हूँ। परमात्मा काफी शक्ति देंगे। मेरा विश्वास है कि मैं लोगों की सेवा के लिए फिर जल्द ही जन्म लूँगा। सभी से मेरा नमस्कार कहें। दया कर इतना काम और भी करना कि मेरी ओर से पंडित जगतनारायण (सरकारी वकील, जिसने इन्हें फाँसी लगवाने के लिए बहुत जोर लगाया था) को अंतिम नमस्कार कह देना। उन्हें हमारे खून से लथपथ रुपयों से चैन की नींद आए। बुढ़ाने में ईश्वर उन्हें सद्‍बुद्‍धि दे।'

रामप्रसादजी की सारी हसरतें दिल-ही-दिल में रह गईं। आपने एक लंबा-चौड़ा ऐलान किया है, जिसे संक्षेप में हम दूसरी जगह दे रहे हैं। फाँसी से दो दिन पहले सी.आई.डी. के मि. हैमिल्टन आप लोगों की मिन्नतें करते रहे कि आप मौखिक रूप से सब बातें बता दो, आपको पाँच हजार रुपए नकद दे दिया जाएगा और सरकारी खर्चे पर विलायत भेजकर बैरिस्टर की पढ़ाई करवाई जाएगी, लेकिन आप कब इन बातों की परवाह करते थे? आप हकूमतों को ठुकराने वाले व कभी-कभार जन्म लेने वाले वीरों में से थे। मुकदमे के दिनों आपसे जज ने पूछा था, "आपके पास क्या डिग्री है?" तो आपने हँसकर जवाब दिया था, "सम्राट् बनाने वालों को डिग्री की कोई जरूरत नहीं होती, क्लाइव के पास भी कोई डिग्री नहीं थी।" आज वह वीर हमारे बीच नहीं है। आह!!

Downloaded from www.PDFshala.com

फाइल

नोटबुक

भारती भवन
बुकसेलर्स ऐंड पब्लिशर्स
लाहौर

Downloaded from www.PDFshala.com

For S. Bhagat Singh
four hundred & four pages
[404 pages]

12/9/29

Downloaded from www.PDFshala.com

हस्ताक्षर (अस्पष्ट)

(जेल अधिकारी, लाहौर)

12.9 (19) 29

हस्ताक्षर (भगतसिंह)

हस्ताक्षर (भगतसिंह)

संक्षिप्त नाम (बी.एस.)

संक्षिप्त नाम (बी.एस.)

(नोट : जैसे ही हम डायरी खोलते हैं, पहले पृष्ठ पर अंग्रेजी में लिखा है—भगतसिंह के लिए चार सौ चार (404 पृष्ठ)। नीचे एक हस्ताक्षर है और उस पर 12/9/29 की तिस्थि दी गई है। स्पष्ट है कि यह प्रविष्टि जेल अधिकारियों द्वारा भगतसिंह को कॉपी देते समय की गई थी। इसके नीचे भगतसिंह के दो पूरे और दो लघु हस्ताक्षर हैं। पृष्ठ के ऊपरी दाएँ किनारे पर भी अंग्रेजी में भगतसिंह का नाम लिखा है।)

(पेज 2 खाली)

Downloaded from www.PDFshala.com

हस्ताक्षर (अस्पष्ट)

(जेल अधिकारी)

12.09.29

(पेज 4 खाली)

Downloaded from www.PDFshala.com

Land measurements :-

German 20 hectares = 50 acres. i.e. 1 hectare = 2½ acre

भूमि का माप

(जर्मन 20 हेक्टेयर : 50 एकड़, अर्थात् 1 हेक्टेयर = 2) एकड़

Downloaded from www.PDFshala.com

8 *Freedom from Poverty*

The "freedom of property" ... as far as the small capitalists and peasant-proprietors are concerned, became "freedom from property."

Marriage itself remained, as before, the legally recognized form, the official cloak of prostitution ...

[Sim Scientific and Utopian]

—— . o . ——

Mental Bondage

"An eternal being created human society as it is today, and submission to 'superiors' and 'authority' is imposed on the 'lower' classes by divine will." This suggestion, coming from pulpit, platform and press, has hypnotised the minds of men and proves to be one of the strongest pillars of exploitation."

{Translator's Preface to Origin of the Family}

गरीबी से आजादी

"'संपत्ति की आजादी'...जहाँ तक छोटे पूँजीपतियों और किसान संपत्ति मालिकानों का सवाल है, 'संपत्ति से आजादी' बन गई।"

Downloaded from www.PDFshala.com

शादी खुद, पहले की तरह, कानूनन मंजूर वेश्यावृत्ति का सरकारी चौंगा बना रहा...

(सिस्म साइंटिफिक ऐंड यूटोपियन)

: * :

मानसिक बंधन

"किसी शाश्वत शक्ति ने वह मानव समाज बनाया, जो आज हमारे सामने है, और 'श्रेष्ठ लोगों' तथा 'अधिकारी' को 'निम्न' वर्गों पर ईश्वरीय इच्छा से थोपा गया है।"

उपदेश मंचों, सभा मंचों तथा अखबारों द्वारा कही जानेवाली इसी बात ने लोगों के दिमाग को सम्मोहित किया है और यही शोषण के सबसे मजबूत स्तंभों में एक स्तंभ बन गया है।

('परिवार की उत्पत्ति' में अनुवादक की प्रस्तावना)

Downloaded from www.PDFshala.com

The Origin of the Family
by Engels.

Morgan was the first to make an attempt at introducing a logical order into the history of primeval society.

He divides it into three main epochs:—
1. Savagery 2. Barbarism. 3. Civilization

1. Savagery re-divided into three stages.
1. Lower 2. middle 3. Higher.

1. Lower Stage of savagery:—
Infancy of human race. 1) Living in trees. 2) Fruits, nuts and roots serving as food. 3) The formation of articulated speech is the principal result of that period.

2. Middle Stage:—
Venison = animal flesh taken in hunting
1. Fire discovered. 2. Fish being used food. 3. Hunting stone implements invented. 4. Cannibalism comes into existence.

3. Higher Stage:—
1. Bow and arrow. No pottery. 2. Village settlements. 3. Timber used for building. 4. Cloth weaver.

Bow and arrows were for the stage of savagery what the sword was for barbarism and the fire arm for civilization the weapon of supremacy.

परिवार की उत्पत्ति

लेखक एंगेल्स

मोरगन ने आदिम समाज के इतिहास में सुसंगत व्यवस्था लाने की सबसे पहली कोशिश की।

वह इसे तीन मुख्य युगों (epochs) में विभाजित करता है—

1. असभ्यता (Savagery); (2) बर्बरता (Barbarianism) और (3) सभ्यता (Civilization)
2. असभ्यता का तीन अवस्थाओं में उप-विभाजन किया गया—

Downloaded from www.PDFshala.com

(1) निम्न (2) मध्य (3) उच्च

1. असभ्यता की निम्न अवस्था

मानव जाति का शिशुकाल। वृक्षों में निवास। (2) फलों, काष्ठ-फलों एवं कंद-मूल का भोजन। (3) इस कालावधि की मुख्य उपलब्धि स्पष्ट उच्चारण वाली भाषा का विकास है।

2. मध्य अवस्था

1. आग की खोज, 2. मछली का भोजन के रूप में उपयोग, 3. शिकार के लिए पत्थर के हथियारों का निर्माण, 4. नरभक्षण अस्तित्व में आया

3. उच्च अवस्था

1. तीर और कमान। (मिट्टी के बरतन नहीं), 2. गाँव में बसाहट, 3. भवन निर्माण के लिए लकड़ी का उपयोग, 4. कपड़ों की बुनाई।

असभ्यता की अवस्था में तीर और कमान का वही उपयोग था, जो बर्बरता की अवस्था में तलवार का और सभ्य अवस्था में आग्नेय अस्त्रों का। ये श्रेष्ठता सिद्ध करनेवाले हथियार बन गए।

Downloaded from www.PDFshala.com

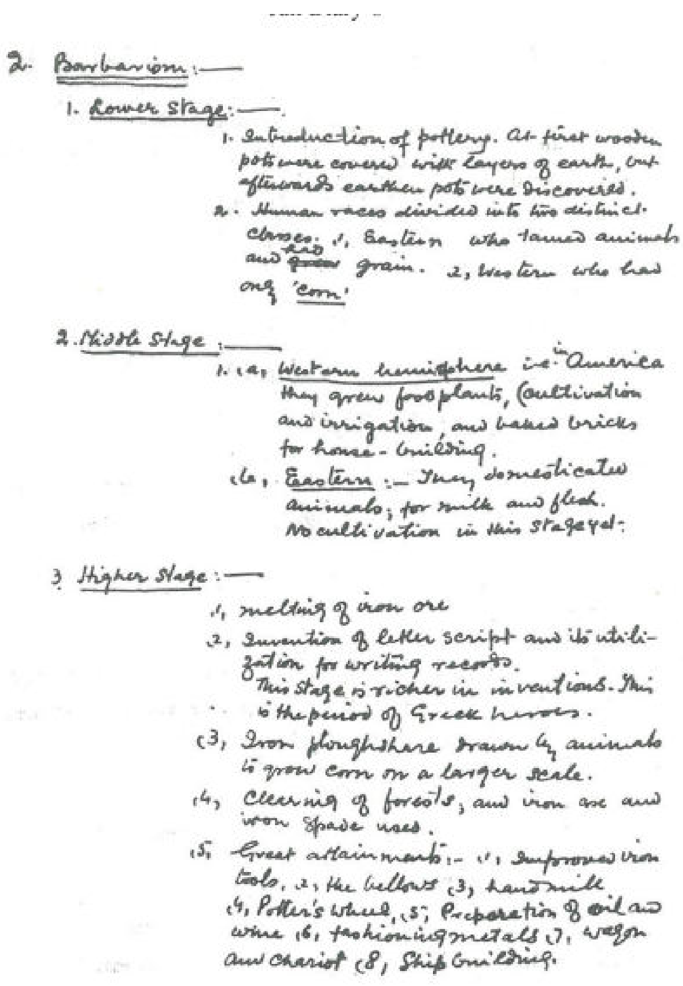

2. Barbarism:—

1. Lower Stage:—

1. Introduction of pottery. At first wooden pots were covered with layers of earth, but afterwards earthen pots were discovered.
2. Human races divided into two distinct classes. (1) Eastern who tamed animals and had grain. (2) Western who had only 'corn'.

2. Middle Stage:—

1. (a) Western hemisphere i.e. in America they grew food plants, (cultivation and irrigation, and baked bricks for house-building.
(b) Eastern:— They domesticated animals; for milk and flesh. No cultivation in this stage yet.

3. Higher Stage:—

(1) melting of iron ore
(2) Invention of letter script and its utilization for writing records.
This stage is richer in inventions. This is the period of Greek heroes.
(3) Iron ploughshare drawn by animals to grow corn on a larger scale.
(4) Clearing of forests, and iron axe and iron spade used.
(5) Great attainments:— (1) improved iron tools, (2) the bellows (3) hand mill (4) Potter's wheel, (5) Preparation of oil and wine (6) fashioning metals (7) wagon and chariot (8) Ship building.

2. बर्बरता

1. निम्न अवस्था—

1. मिट्टी के बरतनों का उपयोग शुरू हुआ। पहले काष्ठ के बरतनों पर मिट्टी की परत चढ़ाई जाती थी। बाद में मिट्टी के बरतन बनाए जाने लगे।

2. मानवीय नस्लों का दो स्पष्ट श्रेणियों में विभाजन—

(1) पूर्वी, जो पशुपालन करते थे और जिनके पास अनाज था।

(2) पश्चिमी, जिनके पास सिर्फ 'अन्न' था।

2. मध्य अवस्था—

1. (अ) पश्चिमी गोलाद्र्ध अर्थात् अमेरिका में वे खाद्यान्न के पौधे उगाते थे (कृषि सिंचाई) और भवन-निर्माण के लिए ईंटें पकाते थे।

Downloaded from www.PDFshala.com

(ब) पूर्वी : वे दूध और मांस के लिए पशु रखते थे। वहाँ इस अवस्था में कृषि की शुरुआत नहीं हुई थी।

3. उच्च अवस्था—

- लौह अयस्क को पिघलाना।
- लिपि का आविष्कार तथा अभिलेखों के लेखन के लिए इसका प्रयोग। इस अवस्था में खूब आविष्कार हुए। यह काल यूनानी नायकों का था।
- बड़े पैमाने पर अन्न उपजाने के लिए लोहे के हल को जानवरों से खींचा जाने लगा।
- वनों को काटकर खेती, लोहे की कुल्हाड़ी तथा फावड़े का उपयोग।
- **बड़ी उपलब्धियाँ :** (1) लोहे के उन्नत औजार, (2) धौंकनी, (3) हाथ चक्की, (4) कुम्हार का चाक, (5) तेल और मदिरा तैयार करना, (6) धातुओं को आकार देना, (7) चौपहिया गाड़ी और रथ, (8) पानी के जहाज का निर्माण,

Downloaded from www.PDFshala.com

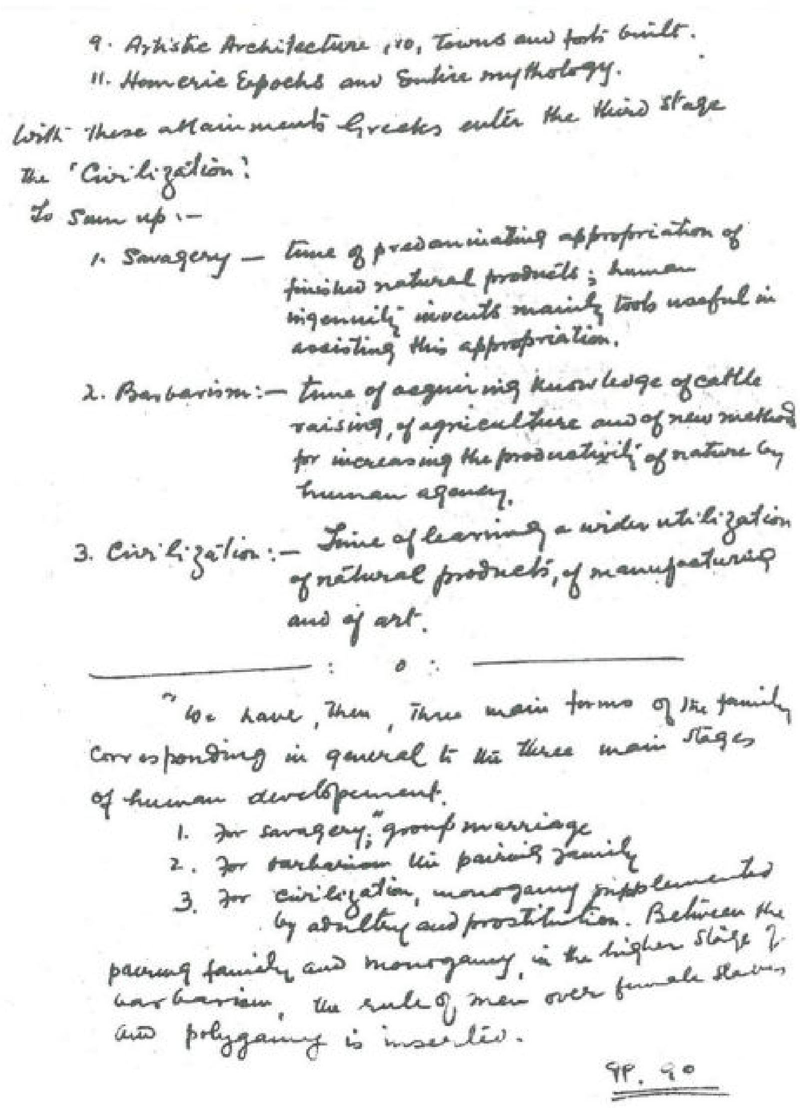

9. Artistic Architecture, 10. Towns and forts built.
11. Homeric Epochs and Entire mythology.

With these attainments Greeks enter the third stage the 'Civilization'.

To sum up:—

1. Savagery — time of predominating appropriation of finished natural products; human ingenuity invents mainly tools useful in assisting this appropriation.

2. Barbarism:— time of acquiring knowledge of cattle raising, of agriculture and of new methods for increasing the productivity of nature by human agency.

3. Civilization:— Time of learning a wider utilization of natural products, of manufacturing and of art.

—— : o : ——

"We have, then, three main forms of the family corresponding in general to the three main stages of human development.

1. For savagery, group marriage
2. For barbarism the pairing family
3. For civilization, monogamy supplemented by adultery and prostitution. Between the pairing family and monogamy, in the higher stage of barbarism, the rule of men over female slaves and polygamy is inserted.

pp. 90

(9) कलाकृतिपूर्ण वास्तु, (10) नगर और दुर्ग-निर्माण, (11) होमर युगारंभ और संपूर्ण मायथोलॉजी

इन उपलब्धियों के साथ यूनानियों ने तीसरी अवस्था 'सभ्यता' में प्रवेश किया।

सार-संक्षेप—

1. **असभ्यता :** वह समय, जब तैयार प्राकृतिक उत्पादों को मुख्य रूप से उपयोग में लाया जाता था; मानव ने अपनी बुद्धि से इन्हें प्राप्त करने में सहायक औजारों का निर्माण किया।

2. **बर्बरता :** पशुपालन, कृषि और मानव के द्वारा प्रकृति की उत्पादकता में वृद्धि के नए तरीकों को जानने का समय।

3. **सभ्यता :** प्राकृतिक उत्पादों के अधिक व्यापक उपयोग, विनिर्माण और कलाओं को सीखने का समय

—— : * : ——

"मानव विकास की इन तीन प्रमुख अवस्थाओं के अनुरूप परिवार के तीन मुख्य रूप रहे—

Downloaded from www.PDFshala.com

1. असभ्यता की अवस्था में, सामूहिक विवाह
2. बर्बर अवस्था में, युगल परिवार
3. सभ्य अवस्था में, एक-विवाह। इसमें व्यभिचार और वेश्यावृत्ति भी होने लगी। युगल परिवार और एक-विवाह के बीच, बर्बरता की उच्च अवस्था में महिला दासियों पर पुरुषों की सत्ता तथा बहुविवाह भी होते रहे।

Downloaded from www.PDFshala.com

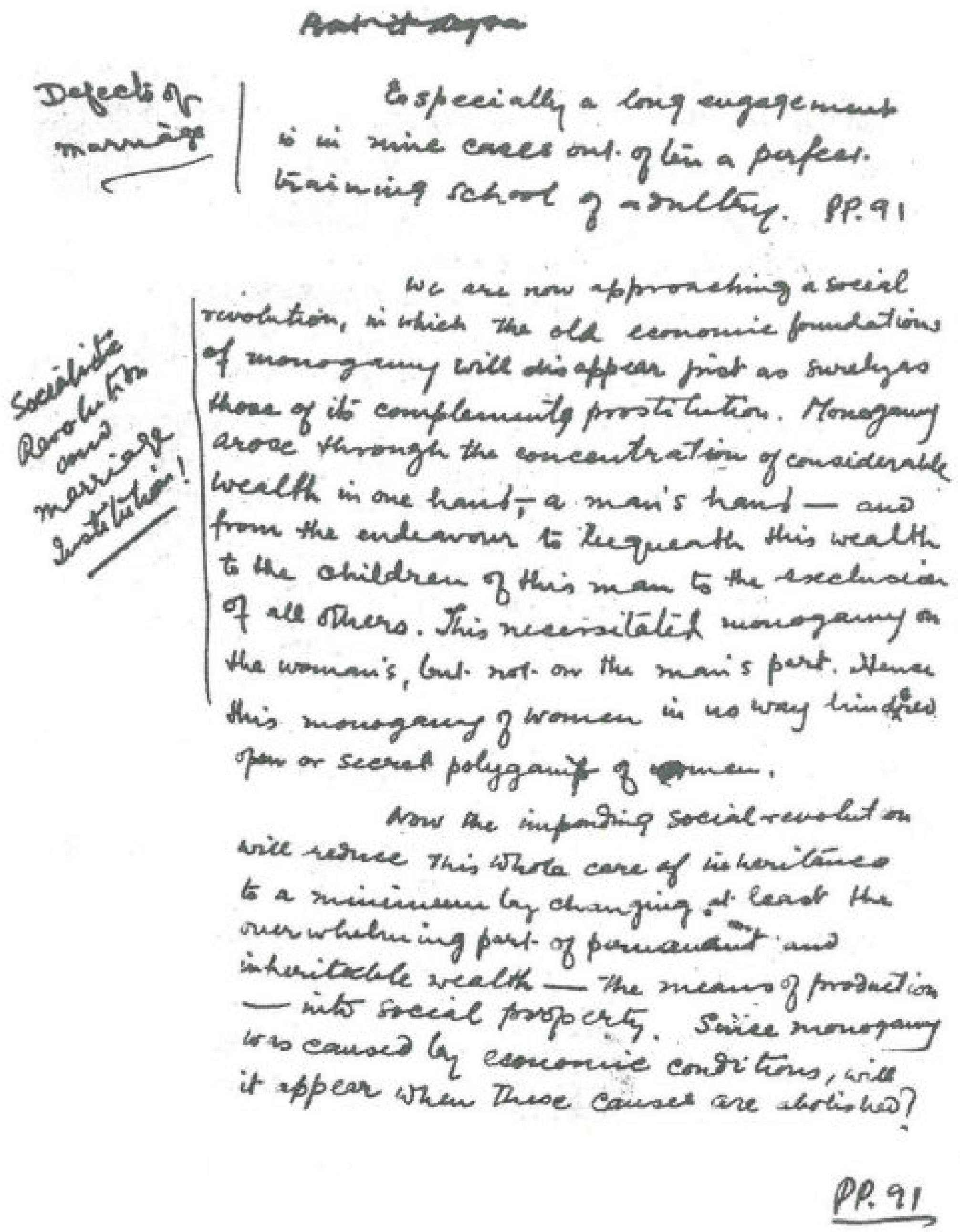
Defects of marriage

Especially a long engagement is in nine cases out of ten a perfect training school of adultery. PP.91

Socialist Revolution and marriage Institution!

We are now approaching a social revolution, in which the old economic foundations of monogamy will disappear just as surely as those of its complement, prostitution. Monogamy arose through the concentration of considerable wealth in one hand — a man's hand — and from the endeavour to bequeath this wealth to the children of this man to the exclusion of all others. This necessitated monogamy on the woman's, but not on the man's part. Hence this monogamy of women in no way hindered open or secret polygamy of men.

Now the impending social revolution will reduce this whole care of inheritance to a minimum by changing at least the overwhelming part of permanent and inheritable wealth — the means of production — into social property. Since monogamy was caused by economic conditions, will it disappear when these causes are abolished?

PP.91

विवाह के दोष

दस में से नौ मामलों में, विशेषकर लंबे समय तक साथ रहने से यह व्यभिचार की परिपूर्ण प्रशिक्षण शाला बन जाता है। *(पृष्ठ-91)*

सामाजिक क्रांति और विवाह संस्था

अब हम एक ऐसी सामाजिक क्रांति की ओर बढ़ रहे हैं, जिसमें एक विवाह की पुरानी आर्थिक बुनियादें इसकी पूरक वेश्यावृत्ति की तरह ही विलुप्त हो जाएँगी। एक विवाह की शुरुआत काफी धन-संपत्ति के एक ही

Downloaded from www.PDFshala.com

हाथ में, एक व्यक्ति के हाथ में जाने तथा उस व्यक्ति द्वारा यह संपत्ति अपनी ही संतानों को देने के कारण हुई। इससे स्त्री के लिए एक विवाह आवश्यक हो गया, लेकिन पुरुष के साथ ऐसा नहीं हुआ। लिहाजा महिलाओं के इस एक-पति विवाह से पुरुषों के खुले अथवा गुप्त बहु-पत्नी विवाह पर किसी भी तरह रोक नहीं लगी।

अब आनेवाली सामाजिक क्रांति से विरासत का पूरा मसला ही बदल जाएगा, क्योंकि स्थायी और विरासत में दी जानेवाली धन-संपदा, उत्पादन का साधन सामाजिक संपत्ति बन जाएगा। चूँकि एक-पति विवाह का कारण आर्थिक स्थितियाँ थीं, अत: क्या इसके कारण समाप्त हो जाने पर यह विलुप्त हो जाएगा? *(पृष्ठ-91)*

Downloaded from www.PDFshala.com

"Ah, my Beloved, fill the Cup that clears
To-day of past Regrets and future Fears —
To-morrow? — Why, To-morrow I may be
Myself with Yesterday's Sev'n Thousand Years.

—— : o : ——

Here with a Loaf of Bread beneath the Bough,
A Flask of Wine, a Book of verse — and Thou
Beside me singing in the Wilderness —
And Wilderness is Paradise enow.

—— : o : —— "Umar Khayyam"

State :— The State presupposes a public power of coercion seperated from the aggregate body of its members. (Engels) PP. 116

Origin of State :— ..... Degeneration of the old feuds between tribes to regular mode of existing by systematic plundering on land and sea for the purpose of acquiring cattle, slave, and treasures. In short wealth is praised and respected as the highest treasure, and the old gentile institutions are abused in order to justify the forcible robbery of wealth. Only one thing was missing: an institution that not only secured the newly acquired property of private individuals against the communistic traditions of the gens, that not only declared as sacred the formerly so despised private property and represented the protection of this sacred property as the highest purpose of human society, but that also stamped the gradually developing new forms of acquiring property of constantly increasing wealth with the universal function of the society: An institution

P.T

Downloaded from www.PDFshala.com

मेरे महबूब, तू आकर ये मेरा जाम तो भर दे
जो मुझे माजी औ' कल के दु:खों से परे कर दे
इक कल का ही दिवस क्यों कल होंगे मेरे साथ
हजारों बीते हुए साल, गमों-दर्दों-अलम परदे

—————————— : ✻ : ——————————

शुगल-ए-मयनोशी का सामाँ हो, बियाबाँ की बहार
लौ-ए-जज्बात हो हेजान में मैदाँ का गुबार
दिलसबा जीनत-ए-हलू हो कोई जाम बदस्त
ताए-ए-सुल्तीनी भी इस ऐश पे कर दूँ मैं निसार

—उमर खय्याम

राज्य

राज्य में जोर-जबरदस्ती करने की राजकीय शक्ति होती है, जो इसके सदस्यों के संपूर्ण समूह से पृथक् होती है। [*एंगेल्स (पृष्ठ-116) नोट : एंगेल्स की रचना परिवार व्यक्तिगत संपत्ति और राज्य सत्ता की उत्पत्ति*]

राज्य की उत्पत्ति

जनजातियों के बीच पुराने झगड़ों का विकृत रूप—मवेशी, गुलामों तथा खजानों को हथियाने के लिए जमीन और समुद्र पर बाकायदा लूट। संक्षेप में, दौलत की सबसे ज्यादा तारीफ और इज्जत की जाती है और दौलत की जबरदस्ती लूट को सही ठहराने के लिए सामान्य जन की पुरानी संस्थाओं का बेजा इस्तेमाल किया जाता है—एक ऐसी संस्था, जिसने ईमानदार लोगों की सामुदायिक परंपरा के विरुद्ध निजी व्यक्तियों की नई हासिल संपत्ति को न केवल हथिया लिया, जिसने न केवल पूर्व में तिरस्कृत निजी संपत्ति को पवित्र घोषित कर दिया और इस पवित्र संपत्ति की रक्षा को मानव समाज का सबसे बड़ा मकसद बना दिया, बल्कि जिसने क्रमिक रूप से बढ़ते तरीकों को समाज की सामान्य स्वीकृति से सही भी घोषित कर दिया।

Downloaded from www.PDFshala.com

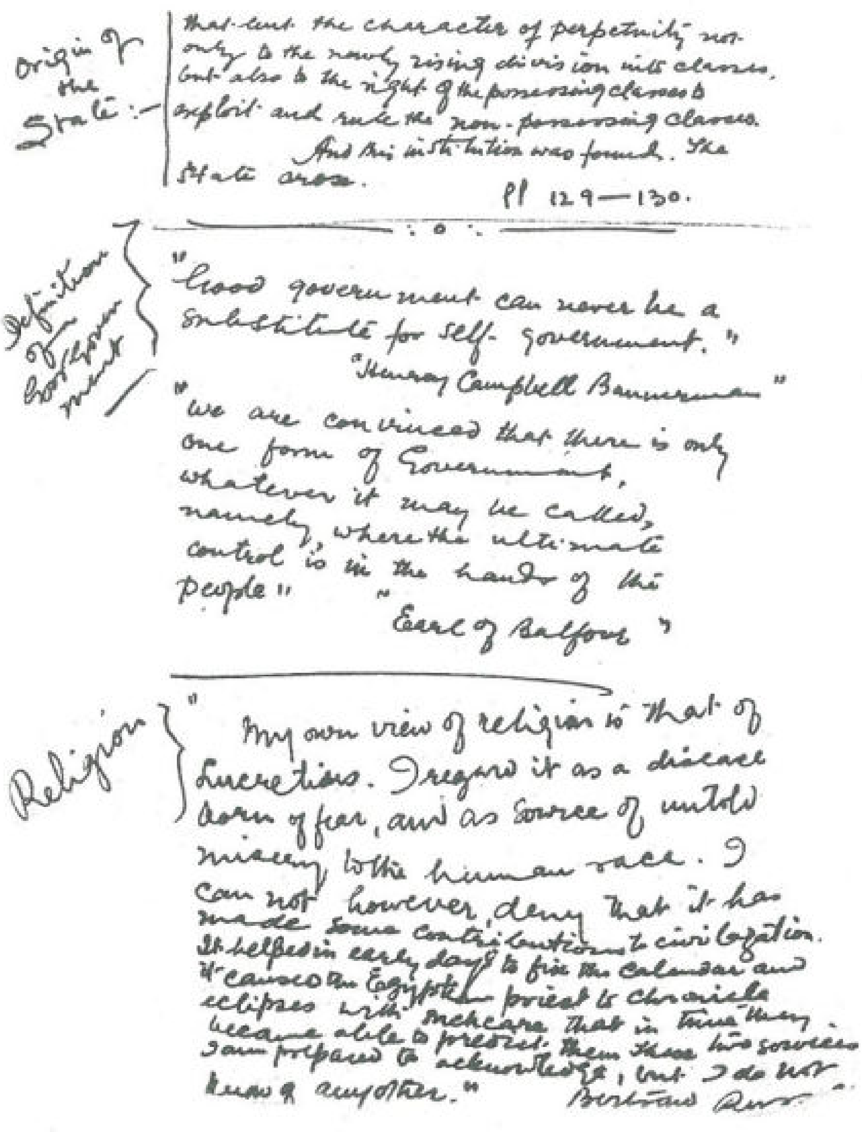
Origin of the State :- that lent the character of perpetuity not only to the newly rising division into classes, but also to the right of the possessing classes to exploit and rule the non-possessing classes. And this institution was found. The State arose.
Pp 129—130.

Definition of Good Government
"Good government can never be a substitute for self-government."
"Henry Campbell Bannerman"

"We are convinced that there is only one form of Government, whatever it may be called, namely, where the ultimate control is in the hands of the people."
"Earl of Balfour"

Religion
"My own view of religion is that of Lucretius. I regard it as a disease born of fear, and as source of untold misery to the human race. I can not however deny that it has made some contributions to civilization. It helped in early days to fix the calendar and it caused the Egyptian priest to chronicle eclipses with such care that in time they became able to predict them. These two services I am prepared to acknowledge, but I do not know of any other."
Bertrand Rus-

राज्य की उत्पत्ति

एक संस्था, जिसने वर्गों के बीच नए रूप से बढ़ते विभाजनों को न केवल स्थायी स्वरूप दे दिया, बल्कि जिन वर्गों के पास दौलत है, उन्हें दौलतहीन वर्गों के शोषण का अधिकार भी दे दिया। और यह संस्था मजबूत थी। राज्य की उत्पत्ति। *(पृष्ठ-129-130)*

——————— : * : ———————

अच्छी सरकार की परिभाषा

"अच्छी सरकार कभी भी स्व-शासन का विकल्प नहीं हो सकती।"

—हैनरी कैंपबेल बेनरमैन

Downloaded from www.PDFshala.com

"हम आश्वस्त हैं कि सरकार का सिर्फ एक रूप है, जिसे कुछ भी नाम दिया जाए, लेकिन इसमें मूल नियंत्रण लोगों के हाथों में होता है।"

—अर्ल ऑफ बालफौर

धर्म

"धर्म के विषय में मेरा अपना विचार ल्यूक्रेशियस है। मैं इसे भय से उत्पन्न बीमारी और मानव जाति के अकथनीय कष्टों की जड़ मानता हूँ। बहरहाल, मैं इस बात से इनकार नहीं कर सकता कि इसने सभ्यता के विकास में कुछ योगदान किया है। इसने प्रारंभिक अवस्था में कलेंडर निर्धारित करने में मदद की और इसने मिस्र के पुरोहितों को ग्रहणों का वृत्तांत इतनी दक्षता से तैयार करने में मदद की कि एक समय वे इसका पूर्वानुमान करने में समर्थ हो गए। मैं इन दो सेवाओं को मान्य करने के लिय तैयार हूँ। उसकी किसी अन्य सेवा के बारे में मुझे नहीं पता।"

—बर्ट्रेंड रसेल

(नोट : महान् गणितज्ञ और दार्शनिक बर्ट्रेंड आर्थर विलियम रसेल (1872-1972))

Downloaded from www.PDFshala.com

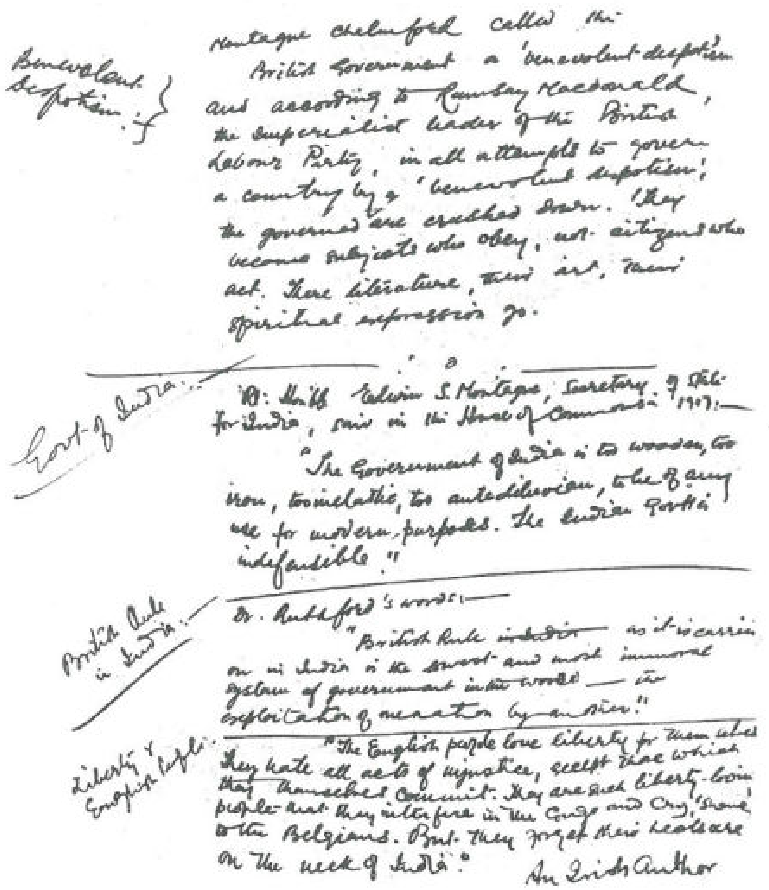

Benevolent despotism.

Montague Chelmsford called the British Government a 'benevolent despotism' and according to Ramsay Macdonald, the imperialist leader of the British Labour Party, in all attempts to govern a country by a 'benevolent despotism' the governed are crushed down. They become subjects who obey, not citizens who act. Their literature, their art, their spiritual expression go.

Govt of India:

Rt. Hon. Edwin S. Montagu, Secretary of State for India, said in the House of Commons in 1917:—

"The Government of India is too wooden, too iron, too inelastic, too antediluvian, to be of any use for modern purposes. The Indian Govt is indefensible."

British Rule in India:

Dr. Rutherford's words:—

"British Rule as it is carried on in India is the worst and most immoral system of government in the world — the exploitation of one nation by another!"

Liberty & English people:

"The English people love liberty for them selves. They hate all acts of injustice, except those which they themselves commit. They are such liberty-loving people that they interfere in the Congo and cry 'Shame' to the Belgians. But they forget their heel is on the neck of India."

An Irish Author

परोपकारी निरंकुशता

मोंटेग-चेम्सफोर्ड ने ब्रिटिश सरकार को एक 'परोपकारी निरंकुशता' कहा और ब्रिटिश लेबर पार्टी के साम्राज्यवादी नेता रेम्जे मैक्डोनॉल्ड के अनुसार, यह देश को 'परोपकारी निरंकुशता' के साथ चलाने की हरचंद कोशिश करती है, जिसमें शासित लोगों को कुचला जाता है। "वे हुक्म मानने वाली प्रजा बन जाते हैं, कार्य करनेवाले नागरिक नहीं। उनका साहित्य, उनकी कला, उनकी आध्यात्मिक अभिव्यक्ति खो जाती है।"

————————— : ✻ : —————————

भारत सरकार

सेक्रेटरी ऑफ स्टेट फॉर इंडिया रिटा. माननीय एड्विन एस. मोनटेग ने 1917 में हाउस ऑफ कॉमंस में कहा —"भारत सरकार इतनी धूर्त, इतनी सख्त, इतनी गैर-लचीली, इतनी पुरातनपंथी है कि यह आधुनिक उद्देश्यों को पूरा करने में उपयोगी हो ही नहीं सकती। भारत सरकार समर्थन के योग्य नहीं है।"

भारत में ब्रिटिश शासन

Downloaded from www.PDFshala.com

डॉ. रुदफोर्ड के शब्दों में—"भारत में ब्रिटिश शासन जैसे चलाया जा रहा है, वह दुनिया में सरकार की सबसे निकृष्ट और सबसे अनैतिक प्रणाली 'एक राष्ट्र द्वारा दूसरे का शोषण' है।"

आजादी और अंग्रेज

"अंग्रेज आजादी को स्वयं अपनी खातिर ही प्यार करते हैं। वे अन्याय की सभी काररवाइयों से घृणा करते हैं, सिवाय उनके जो वे स्वयं करते हैं। वे ऐसे आजादी प्रेमी लोग हैं कि कांगो में दखलंदाजी करते हैं और बेल्जियनों पर 'शर्म-शर्म' चिल्लाते हैं, लेकिन वे भूल जाते हैं कि उनकी एड़ियाँ भारत की गरदन पर हैं।"

—एक आयरिश लेखक

(नोट : जेम्स रेम्जे मैक्डोनॉल्ड (1866-1937) ब्रिटिश राजनयिक और ब्रिटिश लेबर पार्टी का संस्थापक सदस्य, 1923-24 तथा 1929-35 में ब्रिटेन का प्रधानमंत्री रहा।)

Downloaded from www.PDFshala.com

Mob Retaliation

. . . Let us therefore examine how men came by the idea of punishing in this manner.

They learn it from the Governments they live under, and retaliate the punishment they have been accustomed to behold. The heads stuck upon spikes, which remained for years upon Temple Bar, differed nothing in the horror of the scene from those carried about upon spikes at Paris; yet this was done by the English Govt. It may perhaps be said that it signifies nothing to a man what is done to him after he is dead; but it signifies much to the living; it either tortures their feelings or hardens their hearts, and in either case it instructs them how to punish when power falls into their hands. . . .

Lay then the axe to the root, and teach Governments humanity. It is their sanguinary punishments which corrupt mankind. . . . The effect of those cruel spectacles exhibited to the populace is to destroy tenderness or excite revenge; and by the base and false idea of governing men by terror instead of reason, they become precedents.

[Rights of Man. PP. 32, T. Paine]

जन प्रतिशोध

Downloaded from www.PDFshala.com

लिहाजा हमें यह समझना चाहिए कि इस तरह सजा देने का विचार मनुष्यों में कैसे आया?

वे उसे उन्हीं सरकारों से सीखते हैं, जिसके अंतर्गत वे जी रहे होते हैं, बदले में वही सजा देते हैं, जिसको भोगने के वे आदी हो चुके होते हैं। उसी तरह प्रतिशोध लेते हैं। शूल पर टँगे कटे हुए सिर कई वर्षों तक टेंपिल बार बने रहे। यह खौफनाक मंजर किसी भी तरह उस मंजर से अलग नहीं था, जो पेरिस में हुआ था; फिर भी ब्रिटिश सरकार ने किया। शायद उसके लिए यह कोई मायने नहीं रखता, लेकिन जिंदा लोगों के लिए यह मायने रखता है। इससे या तो उनकी भावनाएँ आहत होती हैं या उनके दिल मजबूत हो जाते हैं। दोनों ही हालात में उन्हें यह सीख मिलती है कि जब उनके हाथ में ताकत आए तो सजा किस तरह दी जानी चाहिए।

इसकी जड़ को काटिए और सरकारों को इनसानियत सिखाइए। उसकी ये खूँरेज सजाएँ, जो मानव जाति को कलंकित करती हैं, लोगों के सामने रखे गए ये बेदर्दी के मंजर उनकी कोमलता को नष्ट करते हैं अथवा उनमें प्रतिशोध की भावना जगाते हैं, और विवेक की बजाय आतंक के जरिए शासन करने का नीच और झूठा विचार उनके लिए नजीर बन जाता है।

(राइट्स ऑफ मैन (पृ. 32) टी. पेन)

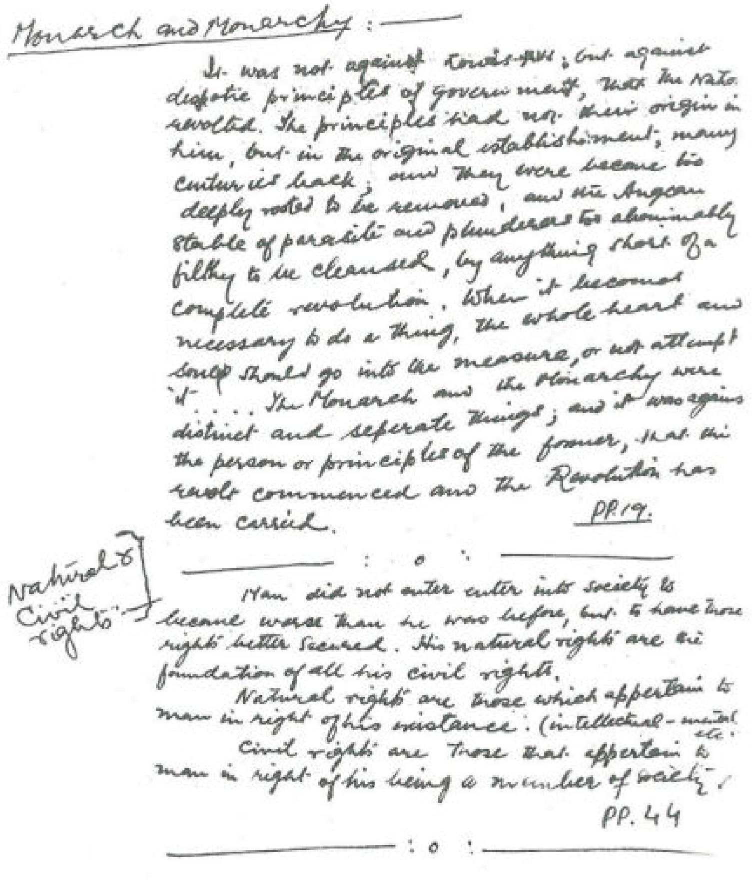

Monarch and Monarchy :

It was not against Louis XVI; but against the despotic principles of government, that the Nation revolted. The principles had not their origin in him, but in the original establishment, many centuries back; and they were become too deeply rooted to be removed, and the Augean stable of parasite and plunderers too abominably filthy to be cleansed, by anything short of a complete revolution. When it becomes necessary to do a thing, the whole heart and soul should go into the measure, or not attempt it . . . . The Monarch and the Monarchy were distinct and seperate things; and it was against the despotism of the former, that the revolt commenced and the Revolution has been carried. PP. 19.

Natural & Civil rights :

Man did not enter into society to become worse than he was before, but to have those rights better secured. His natural rights are the foundation of all his civil rights.

Natural rights are those which appertain to man in right of his existance. (intellectual - mental etc.)

Civil rights are those that appertain to man in right of his being a member of society.

PP. 44

राजा और राजतंत्र

राष्ट्र ने क्रांति लुई सोलहवें के खिलाफ नहीं, बल्कि शासन के निरंकुश सिद्धांतों के खिलाफ की थी। इन सिद्धांतों की उत्पत्ति उसने नहीं, बल्कि सदियों पहले मूल व्यवस्था में हुई थी। इसकी जड़ें इतनी गहरी हो गईं कि

Downloaded from www.PDFshala.com

उन्हें हटाना संभव नहीं था। परजीवी (वियों) और लुटेरों के ऑजियन स्टेबल इतने ज्यादा गंदे हो गए थे कि उन्हें सिर्फ पूर्ण क्रांति से ही साफ किया जा सकता था। जब कुछ करना आवश्यक हो जाता है, तो इसमें पूरे मन और आत्मा को लगाया जाना चाहिए या फिर उसे करना ही नहीं चाहिए—राजा और राजतंत्र विशिष्ट और अलग-अलग चीजें थीं, और यह क्रांति राजा के व्यक्तित्व और सिद्धांतों के विरुद्ध हुई थी।

(पृ. 19)

——————— : * : ———————

प्राकृतिक और नागरिक अधिकार

मनुष्य समाज में इसलिए नहीं आया कि वह पहले से भी बदतर हो जाए, बल्कि इसलिए आया कि उसके अधिकार बेहतर तरीके से सुरक्षित हो जाएँ। उसके प्राकृतिक अधिकार उसके सभी नागरिक अधिकारों की बुनियाद हैं।

प्राकृतिक अधिकार उसके अस्तित्व के अधिकार से संबंधित हैं (बौद्धिक-मानसिक आदि)।

नागरिक अधिकार वे हैं, जिनका संबंध मनुष्य के समाज का सदस्य होने से है।

(पृ. 44)

Downloaded from www.PDFshala.com

6 King's Salary:—

It is inhuman to talk of a million sterling a year, paid out of the public taxes of any country, for the support of an individual, whilst thousands who are forced to contribute thereto, are pining with want and struggling with misery. Govt. does not consist in a contrast between prisons and palaces, between poverty and pomp; it is not instituted to rob the needy of his mite and increase the wretchedness of the wretched.

P. 204

—— : o : ——

"Give me liberty or death"

"It is in vain, Sir, to extenuate the matter. Gentlemen may cry, peace, peace — but there is no peace. The war is actually begun. The next gale that sweeps from the North to our ears the clash of resounding arms. Our brethren are already in the field. Why stand we here idle? What is it that gentlemen wish? What would they have? Is life so dear or peace so sweet as to be purchased at the price of chains and slavery. Forbid it, almighty God! I know not what course others may take; as for me, give me liberty or death."

Patrick Henry.

—— : o : ——

Right of labour. — "Whoever produces anything by weary labour, does not need a revelation from heaven to teach him that he has a right to the thing produced."

Robert G. Ingersoll

राजा का वेतन

एक व्यक्ति के भरण-पोषण के लिए किसी देश के सार्वजनिक टैक्सों में से दस लाख स्टर्लिंग सालाना देने की बात करना अमानवीय है, जबकि हजारों लोग, जो इसमें योगदान करने के लिए मजबूर किए जाते हैं, अभाव से त्रस्त और बदहाली से जूझ रहे हैं। सरकार जेलों और राजमहलों के बीच या कंगाली और शान-शौकत के बीच किसी समझौते के रूप में नहीं होती; यह इसलिए नहीं गठित की जाती कि जरूरतमंद से उसकी दमड़ी भी लूट ली जाए और खस्ताहालों की दुर्दशा और बढ़ा दी जाए। (पृ. 204)

——————— : * : ——————————

मुझे आजादी दो या मौत

"श्रीमान, इस बात के महत्त्व को कम करना फिजूल है। सरकार 'अमन, अमन' भले ही चिल्लाती हो, लेकिन अमन नहीं है। वास्तव में जंग शुरू हो चुकी है। उत्तर की ओर से आनेवाली झंझा से हमारे कानों में हथियारों की टकराहट की तेज आवाज सुनाई देती है। हमारे भाई मैदाने-जंग में हैं। हम यहाँ बेकार क्यों खड़े हैं? आखिर ये भले मानुष चाहते क्या हैं? उन्हें क्या मिलेगा? क्या जिंदगी इतनी प्यारी या अमन इतनी अच्छी चीज है कि जिसे जंजीरों तथा गुलामी की कीमत पर खरीदा जाए? हे परमात्मा! इसे रोको। मुझे नहीं पता कि दूसरे क्या रास्ता अख्तियार करेंगे? जहाँ तक मेरा सवाल है, तो मुझे आजादी दो या मौत।"

—पैट्रिक हेनरी

——————— : * : ——————————

श्रम का अधिकार

"जो कोई भी कठिन श्रम से कोई चीज पैदा करता है, उसे यह बताने के लिए खुदा के किसी पैगाम की जरूरत नहीं कि पैदा की गई चीज पर उसी का अधिकार है।"

—रॉबर्ट जी. इंगरसोल

नोट : पैट्रिक हेनरी (1736-1790) : अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के नेताओं में से एक प्रखर वक्ता और सांसद।)

Downloaded from www.PDFshala.com

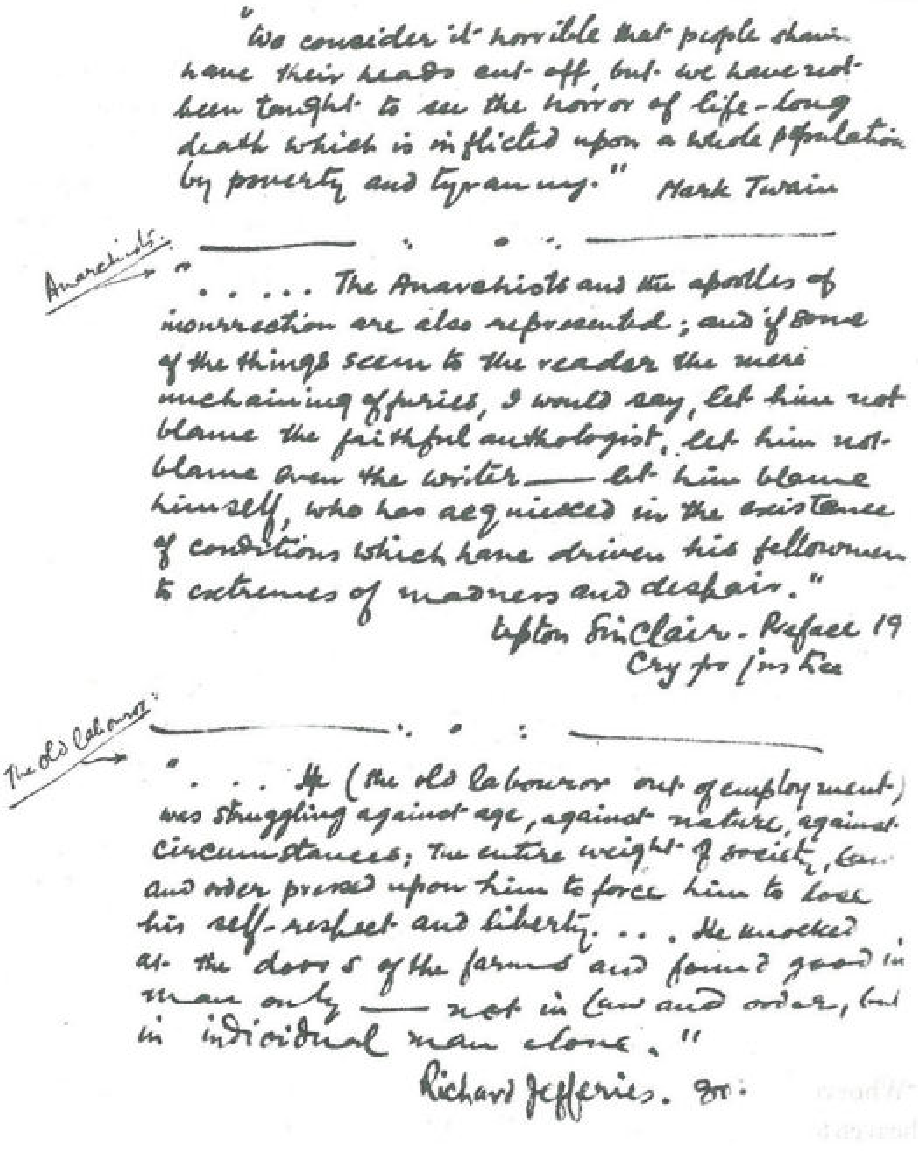
"We consider it horrible that people should have their heads cut off, but we have not been taught to see the horror of life-long death which is inflicted upon a whole population by poverty and tyranny." Mark Twain

Anarchists:
". . . . The Anarchists and the apostles of insurrection are also represented; and if some of the things seem to the reader the mere unchaining of furies, I would say, let him not blame the faithful anthologist, let him not blame even the writer — let him blame himself, who has acquiesced in the existence of conditions which have driven his fellowmen to extremes of madness and despair."
Upton Sinclair - Preface 19
Cry for Justice

The Old Labourer:
". . . He (the old labourer out of employment) was struggling against age, against nature, against circumstances; the entire weight of society, law and order pressed upon him to force him to lose his self-respect and liberty. . . . He knocked at the doors of the farms and found good in man only — not in law and order, but in individual man alone."
Richard Jefferies. 80.

"हम इसे भयानक मानते हैं कि लोगों के सिर कट जाएँ, लेकिन हमें उस मृत्यु के खौफ के बारे में नहीं बताया गया है, जो गरीबी और अत्याचार द्वारा व्यापक आबादी पर थोप दी गई है।"

—मार्क ट्वेन

: * :

अराजकतावादी

" ··· अराजकतावादियों तथा बगावत के उपदेशकों का भी प्रतिनिधित्व है; अगर पाठकों को कुछ चीजें उन्माद फैलाने वाली लगती हैं, तो मैं यही कहूँगा कि उन्हें इसके लिए आस्थावान संकलनकर्ता (anthologist) को दोष नहीं देना चाहिए, और लेखक को भी नहीं। उसे खुद को दोष देना चाहिए, जिसने ऐसी परिस्थितियों को

Downloaded from www.PDFshala.com

खामोश रहकर स्वीकारा, जिनके चलते उसके देश-समाज के लोग पागलपन और निराशा की चरम सीमा पर जा पहुँचे हैं।”

—यूटोपियन सिंक्लेयर,
प्रीफेस क्राई फॉर जस्टिस *(पृ. 19)*

————————— : ✻ : —————————

बूढ़ा मजदूर

“ ⋯ वह (बेरोजगार बूढ़ा मजदूर) अपनी उम्र, कुदरत और हालात से कशमकश कर रहा था। समाज, कानून और व्यवस्था के बोझ ने उसकी खुद्दारी और आजादी छीन ली ⋯ उसने किसानों का दरवाजा खटखटाया और उसे सिर्फ वहाँ भला आदमी मिला (वह सिर्फ मनुष्य में ही अच्छाई पा सका)—न कानून में, न व्यवस्था में, बल्कि सिर्फ व्यक्ति में।”

—रिचर्ड जेफरीज- II

Downloaded from www.PDFshala.com

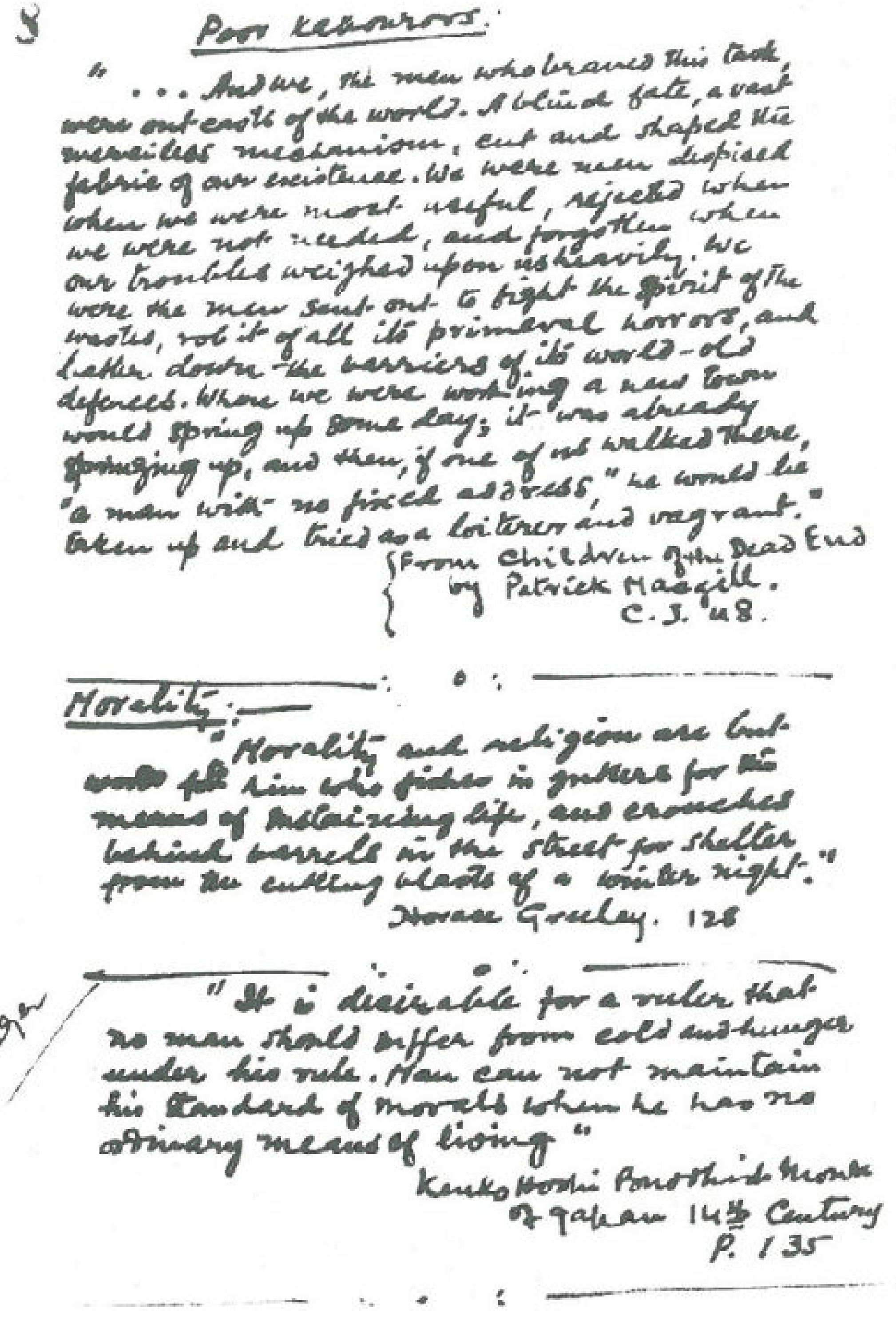

8 Poor Labourers:

" . . . And we, the men who braved this task, were out-casts of the world. A blind fate, a vast merciless mechanism, cut and shaped the fabric of our existence. We were men despised when we were most useful, rejected when we were not needed, and forgotten when our troubles weighed upon us heavily. We were the men sent out to fight the spirit of the wastes, rob it of all its primeval horrors, and batter down the barriers of its world-old defences. Where we were working a new town would spring up some day; it was already springing up, and then, if one of us walked there, "a man with no fixed address," he would be taken up and tried as a loiterer and vagrant."

{From Children of the Dead End
by Patrick MacGill.
C.J. 48.

Morality:

"Morality and religion are but words to him who fishes in gutters for the means of prolonging life, and crouches behind barrels in the street for shelter from the cutting blasts of a winter night."

Horace Greeley. 128

Hunger

"It is desirable for a ruler that no man should suffer from cold and hunger under his rule. Man can not maintain his standard of morals when he has no ordinary means of living."

Kenko Hoshi Buddhist Monk
of Japan 14th Century
P. 135

गरीब मजदूर

" ··· और हम लोग, जिन्होंने इसका अंजाम देने का बीड़ा उठाया, इस दुनिया में कुजात ही रहे। एक अंधी किस्मत, एक विराट् निर्मम तंत्र ने काट-छाँटकर हमारे अस्तित्व का ढाँचा निर्धारित कर दिया। हम उस वक्त

Downloaded from www.PDFshala.com

तिरस्कृत हुए जन हम सबसे अधिक उपयोगी थे। हमें उस वक्त दुत्कार दिया गया, जब हमारी जरूरत नहीं थी और हमें उस वक्त भुला दिया गया, जब हमारे ऊपर विपत्तियों का पहाड़ टूटा हुआ था। हमें बीहड़-बंजर साफ करने के लिए उसकी सारी आदिम भयंकरताओं को दूर करने के लिए तथा उसके विश्व-पुरातन अवरोधों को छिन्न-भिन्न कर डालने के लिए भेज दिया जाता। हम जहाँ भी काम करते, वहाँ एक दिन एक नया शहर जन्म ले लेता; और जब यह जन्म ले ही रहा होता, तब यदि हममें से कोई वहाँ चला जाता, तो उसे 'बिना निश्चित पते का आदमी' कहकर पकड़ लिया जाता और सिरफिरा-आवारा कहकर उस पर मुकदमा चलाया जाता।"

—'चिल्ड्रन ऑफ दि डेड एंड' से
पेट्रिक मेकगिल सी.जे.

: * :

नैतिकता

"उस शख्स के लिए नैतिकता और धर्म महज अल्फाज हैं, जो जिंदगी चलाने के लिए नालियों में से मछली पकड़ता है, और सर्द रात के ठंडे झोंकों से बचने के लिए गली में रखे बैरल्स के पीछे सिकुड़ जाता है।"

—होरेस ग्रीले

((पृ. 128) नोट : अमेरिकी पत्रकार और राजनीतिज्ञ होरेस ग्रीले (1811-1872))

: * :

भूख

"किसी हुक्मरां से यह उम्मीद की जाती है कि उसकी हुकूमत में कोई भी ठंड और भूख से पीड़ित न हो। आदमी के पास जब जिंदगी के लिए जरूरी मामूली चीजें भी न हों तो वह नैतिकता के मापदंड कैसे कायम रख सकता है?"

—कोंको होशी, बौद्ध भिक्षु
जापान, 14वीं शताब्दी

: * :

Downloaded from www.PDFshala.com

Freedom :—   18

Men! whose boast it is that ye
Come of fathers, brave and free,
If there breathe on earth a slave,
Are ye truly free and brave?
If you do not feel the chain
When it works a brother's pain,
Are ye not base slaves indeed,
Slaves unworthy to be freed?

Is true Freedom but to break
Fetters for our own dear sake,
And, with leathern hearts, forget
That we owe mankind a debt?
No! True Freedom is to share
All the chains our brothers wear,
And, with heart and hand, to be
Earnest to make others free!

They are slaves who fear to speak
For the fallen and the weak;
They are slaves who will not choose
Hatred, scoffing and abuse,
Rather than in silence shrink
From the truth they needs must think;
They are slaves who dare not be
In the right with two or three.

"James Russell Lowell"

P. 89

आजादी

मनुष्य, तुम वीर और स्वतंत्र होने का करते हो दावा
यदि धरती पर एक भी गुलाम मौजूद है

Downloaded from www.PDFshala.com

तो तुम कैसे कर सकते हो यह दावा?
यदि तुम्हारे देश में आज भी गुलामी का अस्तित्व है
फिर तुम अपने सीने पर आजादी
और बहादुरी का तमगा कैसे लगा सकते हो?
क्या तुम सचमुच नीच गुलाम नहीं हो
जब तक तुम्हारे अपने भाई तकलीफ में हैं
क्या तुम आजाद होने के काबिल हो?
हमारे अपने लोगों को जंजीरों से
मुक्त कराना ही सच्ची आजादी है
हम मानव जाति के कर्जदार हैं
क्या यह भूल जाना सच्ची आजादी है?
नहीं ! सच्ची आजादी है
अपने जो लोग जंजीर में जकड़े हैं
उनका दर्द महसूस करना
और तन-मन से उन्हें मुक्त कराने में जुट जाना।
गुलाम वे हैं, जो
मजलूमों और कमजोरों के हक में बोलने से डरते हैं,
गुलाम वे हैं, जो
नफरत, उपहास और गाली का
सामना करने के बजाय
सिकुड़े हुए चुपचाप बैठे रहते हैं।
गुलाम हैं वे, जो गलत होने के
बावजूद होंगे बहुमत में
बजाय सही होने के बावजूद अल्पमत में।

—जेम्स रसेल लॉवेल (पृ. 189)

नोट : जेम्स रसेल लॉवेल, अमेरिकी कवि, निबंकार और संपादक (1819-91)

——————— : * : ———————

Downloaded from www.PDFshala.com

Full many a gem of purest ray serene
The dark unfathomed caves of ocean bear;
Full many a flower is born to blush unseen,
And waste its sweetness on the desert air.

—— : o : ——

Invention:—

Hitherto it is questionable if all the mechanical inventions yet made have lightened the day's toil of any human being.

J. S. Mill P. 199

—— : o : ——

Alms:—

"There is no one on earth more disgusting and repulsive than he who gives alms. Even as there is no one so miserable as he who accepts them."

Maxim Gorky.
P. 204

—— : o : ——

Liberty:—

Those corpses of young men,
Those martyrs that hang from the gibbets—
those hearts pierced by the grey lead,
Cold and motionless as they seem, live elsewhere
with unslaughter'd vitality.
They live in other young men, O kings!
They live in brothers again ready to defy you!
They were purified by death— they were taught
and exalted.

सागर की अतल गुफाओं की गहराई में
प्रशांत पवित्रतम रश्मियों की अनंत मणियाँ भरी पड़ी हैं
अदृश्य लालिमा से अनंत फूल खिलते हैं
और रेगिस्तान की हवा में अपनी सुरभि खो देते हैं।

——————— : * : ——————

आविष्कार

Downloaded from www.PDFshala.com

अभी तक यह प्रश्न अनुत्तरित है कि क्या अभी तक जिन यंत्रों का आविष्कार हुआ है, उनसे किसी मनुष्य की मेहनत में कमी आई है।"

—जे.एस. मिल (पृ. 199)

भीख

"धरती पर कोई भी व्यक्ति उस व्यक्ति से अधिक नफरत के काबिल और हमदर्दी के नाकाबिल नहीं है, जो भीख देता है। उससे भी ज्यादा कोई अधर्मी नहीं है, जो उसे स्वीकार करता है।"

—मैक्सिम गोर्की (पृ. 204)

: * :

स्वतंत्रता (Liberty)

उन युवाओं के शव,
वे शहीद, जो फाँसी पर झूल गए
वे हृदय, जो धूसर सीसे से छिद गए
वे भले ही ठंडे और बेजान दिखाई दें,
वे कहीं और जीवित रहते हैं
जीवित, जीवंत।
हे राजा! वे फिर से तुम्हें ललकारने
दूसरे युवाओं में जिंदा रहते हैं,
मृत्यु ने उन्हें कर दिया है पवित्र—
शिक्षित और गौरवान्वित!

नोट : 1. जान स्टुअर्ट मिल, अंग्रेज निबंधकार और उदारवादी दार्शनिक (1803-73)
2. मैक्सिम गोर्की, प्रसिद्ध रूसी सर्वहारा क्रांतिकारी लेखक।

Downloaded from www.PDFshala.com

Not a grave of the murder'd for freedom,
but grows seed for freedom, in its turn to bear seed,
Which the wind carry afar and re-sow, and the rains and the snows nourish.
Not a disembodied spirit can the weapons of tyrants let loose,
But it stalks invisibly over the earth, whispering, counselling, cautioning.

P. 268 "Walt Whitman"

: • :

Free Thought

"If there is anything that cannot bear free thought let it crack."

Wendell Phillips 271

: • :

State:—

"Away with the state! I will take part in that revolution. Undermine the whole conception of a state, declare free choice and spiritual kinship to be the only all important conditions of any union, and you will have the commencement of a liberty that is worth something."

Henrich Ibsen. 273

: • :

Oppression:—

"Surely oppression maketh a wise man mad."

P. 278

स्वतंत्रता के शहीदों की कब्र नहीं होती
उनसे उगते हैं स्वतंत्रता के बीज, फिर बीज से बीज।
जिन्हें हवा ले जाती है दूर और पुन: बो देती है,
वर्षा और बर्फ उनका करते हैं पोषण।
जालिम का कोई हथियार उसे मार नहीं सकता,
उसकी आत्मा धरती पर विचरती है अजेय

Downloaded from www.PDFshala.com

फुसफुसाती, परामर्श देती, खबरदार करती!

—वाल्ट ह्विट्मैन (पृ. 268)

———————— : ✻ : ————————

मुक्त चिंतन

"हर उस चीज पर करारी चोट पड़नी चाहिए, जो मुक्त चिंतन को सहन नहीं कर सकती।"

—वेंडेल फिलिप्स (पृ. 271)

———————— : ✻ : ————————

राज्य

"राज्य से दूर! मैं उस क्रांति में शामिल होऊँगा। राज्य की संपूर्ण धारणा की जड़ खोदी जाने दो, मुक्त विकल्प और आध्यात्मिक धारणा को किसी भी संघ की सबसे महत्त्वपूर्ण स्थिति बनने दो, और तब उस मुक्ति की शुरुआत होगी, जिसका कोई मोल है।"

—हेनरिक इब्सन (पृ. 273)

———————— : ✻ : ————————

दमन

"बेशक दमन किसी समझदार को पागल बना देता है।"

नोट : 1. वॉल्ट ह्विटमैन (1819-92) : प्रसिद्ध अमेरिकी कवि।

2. विंडेल फिलिप्स (1811-1884) : अमेरिकी वक्ता, सुधारक और दासता विरोधी आंदोलन के सक्रिय कार्यकर्ता।

3. हेनरिक इब्सन (1882-1906) : नॉर्वे के प्रसिद्ध नाटककार।

Downloaded from www.PDFshala.com

Martyr! —

The man who flings his whole life into attempt, at the cost of his own life, to protest against the wrongs of his fellow men, is a saint compared to the active and passive upholders of cruelty and injustice, even if his protest destroys other lives besides his own. Let him who is without sin in society cast the first stone at such an one. P. 287

Lower Class

While there is a lower class, I am in it.
While there is a criminal element, I am of it.
While there is a soul in jail, I am not free.

Eugene V. Debs.
144

One against all — [Charles Fourier 1772-1837]

The present social order is a ridiculous mechanism, in which portions of the whole are in conflict and acting against the whole. We see each class in society desire, from interest, the misfortune of the other classes, placing in every way individual interest in opposition to public good. The lawyer wishes litigation and suits, particularly among the rich; the physician desires sickness. (The latter would be ruined if everybody died without disease, as the former would if all quarrels were settled by arbitration.) The soldier wants a war, which will carry off half of his comrades and secure him promotion; the undertaker wants burials; monopolists and forestallers want famine, to double or treble the price of grain; the architect, the carpenter, the mason, want conflagration, that will burn down a hundred houses to give activity to their branches of business.

P. 202

शहीद

Downloaded from www.PDFshala.com

वह शख्स, जो अपने लोगों द्वारा की जानेवाली नाइनसाफियों के खिलाफ जिंदगी लगा देता है, अपनी जिंदगी की भी बाजी लगा देता है, वह संत है, उस शख्स की तुलना में, जो बेरहमी और नाइनसाफी का सक्रिय और निष्क्रिय समर्थन करता है, भले ही उसके विरोध से उसकी अपनी जिंदगी के साथ-साथ अन्य जिंदगियाँ भी क्यों न नष्ट हो जाती हों। ऐसे व्यक्ति पर पहला पत्थर मारने का हकदार वही हो सकता है, जिसने कभी कोई पाप न किया हो। (पृ. 287)

निम्न वर्ग

जब तक निम्न वर्ग है, मैं उसमें हूँ।
जब तक कोई मुजरिम है, मैं उसमें हूँ।
जब तक कोई जेल में बंदी है, मैं मुक्त नहीं हूँ।

—यूजीन बी. डेस (पृ. 144)

———————— : * : ————————

एक बनाम सब

(चार्ल्स फाउरियर : 1772-1837)

मौजूदा सामाजिक व्यवस्था एक हास्यास्पद संरचना है, जिसमें संपूर्ण के अंश इस संपूर्ण के विरुद्ध एक टकराव में सक्रिय हैं। हम समाज के हर एक वर्ग में लालसा देखते हैं, जिसकी इच्छा रहती है कि अन्य वर्गों का बुरा हो। 'सर्वजन हिताय' की जगह हर तरह से अपने हित को ऊपर रखा जाता है। वकील चाहता है कि मुकदमे और नालिश हों, 'खासकर पैसेवालों' के बीच; चिकित्सक चाहता है कि बीमारियाँ हों (यदि हर व्यक्ति बीमारी के बिना मर जाएगा, तो चिकित्सक बरबाद हो जाएगा, और अगर सभी झगड़े समझौते से निपट गए, तो वकील बरबाद हो जाएगा)। फौजी जंग चाहता है, जिसमें उसके आधे साथी मारे जाएँ और उसकी पदोन्नति हो जाए; अंत्येष्टि कराने वाला कफन-दफन की कामना करता है। एकाधिकारवादी और जमाखोर अकाल चाहते हैं, ताकि अनाज की कीमत दोगुनी या तिगुनी हो जाए। वास्तुविद्, बढ़ई, राजगीर अग्निकांड चाहते हैं, ताकि सैकड़ों घर जल जाएँ और उन्हें काम मिले।

———————— : * : ————————

नोट : 1. यूजीन डेब्स (1855-1926) : अमेरिकी समाजवादी नेता।
2. फ्रांस्वा मेरी चार्ल्स फूरिए (1772-1837) : फ्रांसीसी समाजवादी लेखक।

Downloaded from www.PDFshala.com

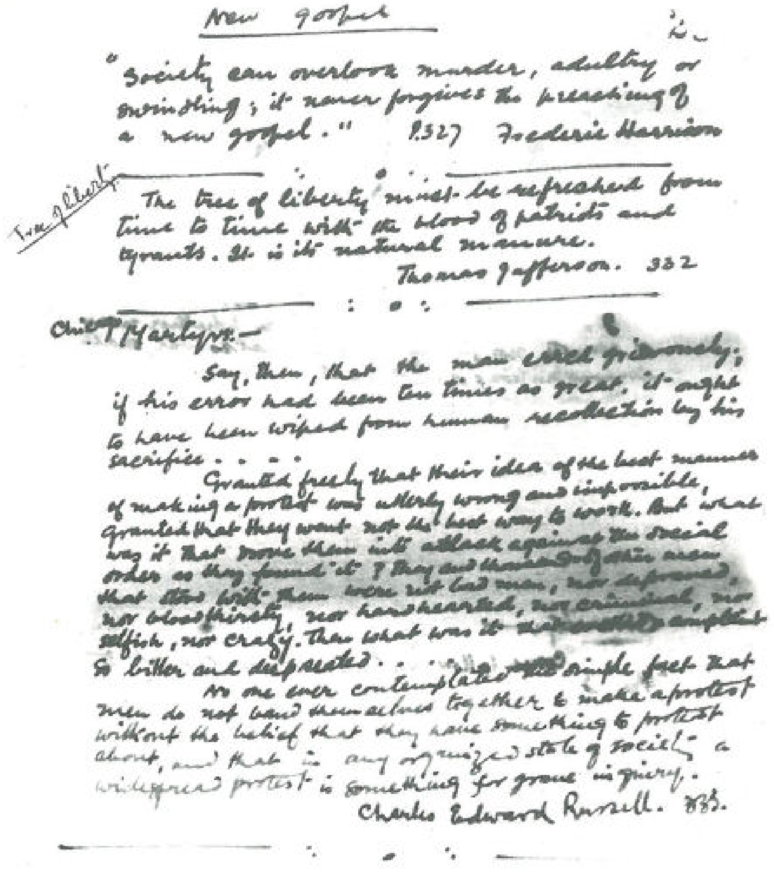

New gospel

"Society can overlook murder, adultery or swindling; it never forgives the preaching of a new gospel." P.327 Frederic Harrison

Tree of liberty

The tree of liberty must be refreshed from time to time with the blood of patriots and tyrants. It is its natural manure.
Thomas Jefferson. 332

: • :

Chi. Martyrs—

Say, then, that the man erred grievously; if his error had been ten times as great, it ought to have been wiped from human recollection by his sacrifice . . .

Granted freely that their idea of the best manner of making a protest was utterly wrong and impossible, granted that they went not the best way to work. But what was it that drove them into attack against the social order as they found it? They and thousands of other men that stood with them were not bad men, nor depraved, nor bloodthirsty, nor hardhearted, nor criminal, nor selfish, nor crazy. Then what was it that made them so bitter and desperate . . .

No one ever contemplates the simple fact that men do not band themselves together to make a protest without the belief that they have something to protest about, and that in any organized state of society a widespread protest is something for grave inquiry.
Charles Edward Russell. 333.

: • :

नया उपदेश

"समाज कत्ल, व्यभिचार अथवा धोखेबाजी की अनदेखी कर सकता है; यह नए उपदेश (नए सिद्धांत) को कभी माफ नहीं कर सकता।"

—**फ्रेडरिक हेरिसन** (पृ. 327)

: ✻ :

आजादी का पेड़

"आजादी के पेड़ को समय-समय पर देशभक्तों और जालिमों के खून से सींचते रहना चाहिए। यह प्राकृतिक खाद है।"

—**थॉमस जेफरसन** (पृ. 332)

: ✻ :

शिकागो के शहीद

Downloaded from www.PDFshala.com

तब कहिए कि मनुष्य ने गंभीर त्रुटि की, यदि उसकी त्रुटि उस त्रुटि से दस गुना ज्यादा है, जो उसके बलिदान के कारण मानव की स्मृति से धुल जानी चाहिए

—खुलकर मंजूर है कि विरोध करने का उनका कोई तरीका, जिसे वे सबसे अच्छा मानते थे, एकदम गलत और असंभव था। माना कि उन्होंने काम का सबसे अच्छा तरीका नहीं अपनाया। लेकिन वह क्या था, जिसने उन्हें मौजूदा सामाजिक व्यवस्था के खिलाफ जाने को प्रेरित किया? वे और उनके साथ खड़े होनेवाले हजारों लोग बुरे नहीं थे, और न दुष्ट, न खून के प्यासे, न बेरहम, न मुजरिम, न खुदगर्ज, न पागल। तब वह क्या चीज थी, जिसने इतने तीखे और गहरे प्रतिवाद को उकसावा दिया?

—किसी ने कभी इस तथ्य पर विचार नहीं किया कि लोग बिना इस विश्वास के खिलाफत की ओर नहीं मुड़ते कि उन्हें किसी चीज की खिलाफत करनी है, और यह कि समाज की किसी भी संगठित स्थिति में किसी भी व्यापक विरोध की गंभीरता से पड़ताल होनी चाहिए।

—चार्ल्स एड्वर्ड रसेल (पृ. 333)

: * :

नोट : 1. फ्रेडरिक हेरिसन (1831-1923) : प्रसिद्ध विधिवेत्ता : इतिहास, राजनीति और साहित्य पर कई पुस्तकों के लेखक।

2. थॉमस जेफरसन (1743-1826) : अमेरिकी के तीसरे राष्ट्रपति, अमेरिकी स्वतंत्रता संग्राम के अग्रणी नेता और संविधान निर्माताओं में प्रमुख।

Downloaded from www.PDFshala.com

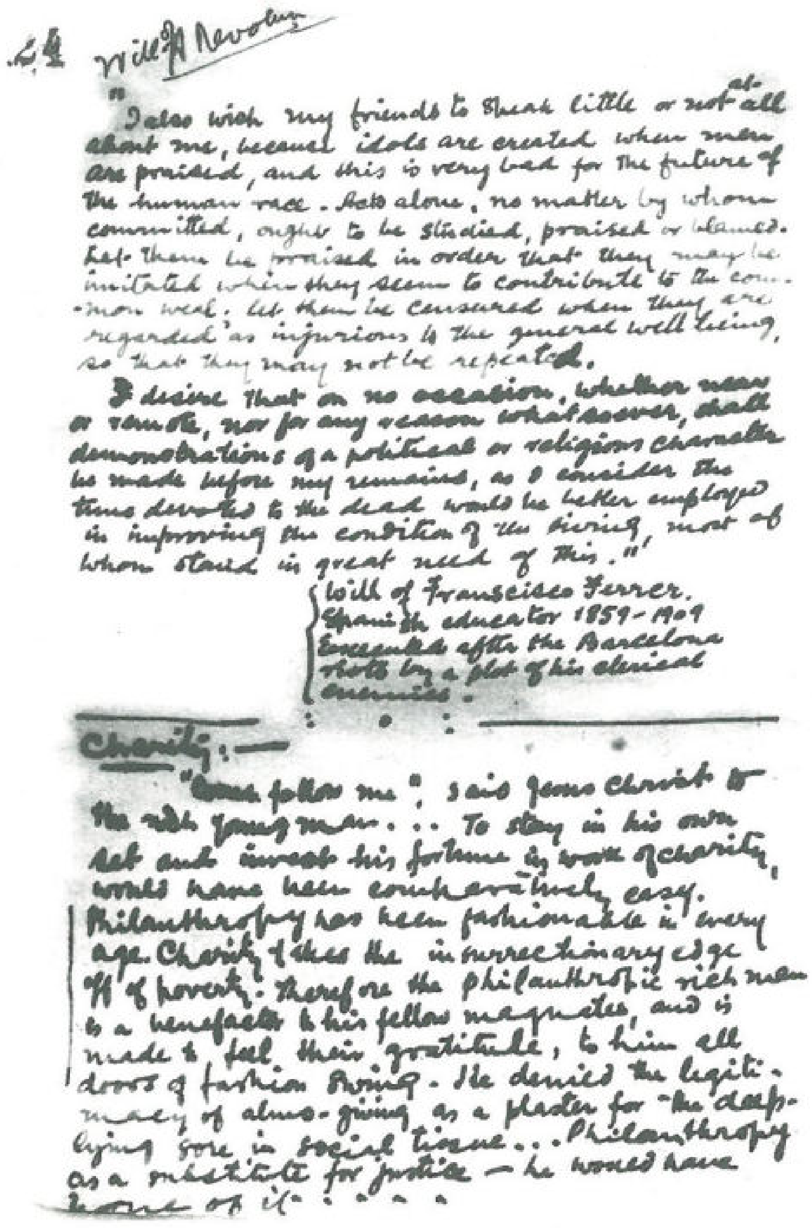

Will of A Revolu[illegible]

"I also wish my friends to speak little or not at all about me, because idols are created when men are praised, and this is very bad for the future of the human race. Acts alone, no matter by whom committed, ought to be studied, praised or blamed. Let them be praised in order that they may be imitated when they seem to contribute to the common weal. Let them be censured when they are regarded as injurious to the general well being, so that they may not be repeated.

I desire that on no occasion, whether near or remote, nor for any reason whatsoever, shall demonstrations of a political or religious character be made before my remains, as I consider the time devoted to the dead would be better employed in improving the condition of the living, most of whom stand in great need of this."

Will of Francisco Ferrer.
Spanish educator 1859-1909
Executed after the Barcelona revolts by a plot of his clerical enemies.

Charity:—

"Come follow me", said Jesus Christ to the rich young man. .. To stay in his own set and invest his fortune in works of charity, would have been comparatively easy. Philanthropy has been fashionable in every age. Charity takes the insurrectionary edge off of poverty. Therefore the philanthropic rich man is a benefactor to his fellow magnates, and is made to feel their gratitude, to him all doors of fashion swing. He denied the legitimacy of alms-giving as a plaster for the deep-lying sore in social tissue... Philanthropy as a substitute for justice — he would have none of it....

एक क्रांतिकारी की वसीयत

"मैं भी चाहता हूँ कि मेरे दोस्त मेरे बारे में बहुत कम या कुछ भी न बोलें, क्योंकि सब इनसानों की तारीफ होती है, तो नकली देवता बन जाते हैं, और यह मानव जाति के भविष्य के लिए बहुत बुरी बात है … सिर्फ काम का अध्ययन, उसकी सराहना या आलोचना की जानी चाहिए। इससे फर्क नहीं पड़ता कि उसे किसने किया? यदि वे जनहित में योगदान करनेवाले हों तो उनकी तारीफ की जाए, ताकि जनहित के किसी कार्य में योगदान के लिए उन्हें दोहराया जा सके।

यदि ये जनसामान्य के लिए नुकसानदेह माने जाएँ तो उनकी आलोचना की जाए, ताकि वे दोहराए न जाएँ।

Downloaded from www.PDFshala.com

"मेरी अपेक्षा है कि किसी भी अवसर पर, चाहे वह पास हो अथवा दूर, किसी भी कारण से मेरे अवशेषों के सामने कोई राजनीतिक प्रदर्शन अथवा धार्मिक कार्य न किए जाएँ, क्योंकि मैं मानता हूँ कि मृतकों के प्रति समर्पित किए जानेवाले समय को जिंदा लोगों के हालात सुधारने में लगाया जाना बेहतर होगा, जिनमें से ज्यादातर को इसकी जरूरत है।"

— फ्रांसिस्को फैरेर की वसीयत

स्पेनिश शिक्षक (1859-1909),
जिसे धर्म पुरोहितों द्वारा बार्सिलोना दंगों के बाद
दुश्मनीवश एक षड्यंत्र के तहत फाँसी दे दी गई।

: * :

खैरात (दान)

"मेरे पीछे आओ," ईसा मसीह ने धनी युवक को कहा, "अपनी जगह रहकर खैराती कामों में पैसा लगाना तुलनात्मक रूप से आसान परोपकारी काम हर युग में बहुत प्रचलन में रहा है। खैरात से गरीबी से उत्पन्न बगावत की धार भोथरी हो जाती है। अत: परोपकारी धनी आदमी अपने सरीखे दौलतमंदों का ही हितैषी होता है, और उन्हीं की एहसानमंदी महसूस करता है। उसके लिए सभ्य समाज के सभी दरवाजे फटाफट खुल जाते हैं। वह खैरात देने को सामाजिक टिश्यू के गहरे घाव पर प्लास्टर के रूप में मानने की बात स्वीकार नहीं करता। परोपकार को न्याय के एक विकल्प के रूप में उन्होंने कतई तरजीह नहीं दी।

Downloaded from www.PDFshala.com

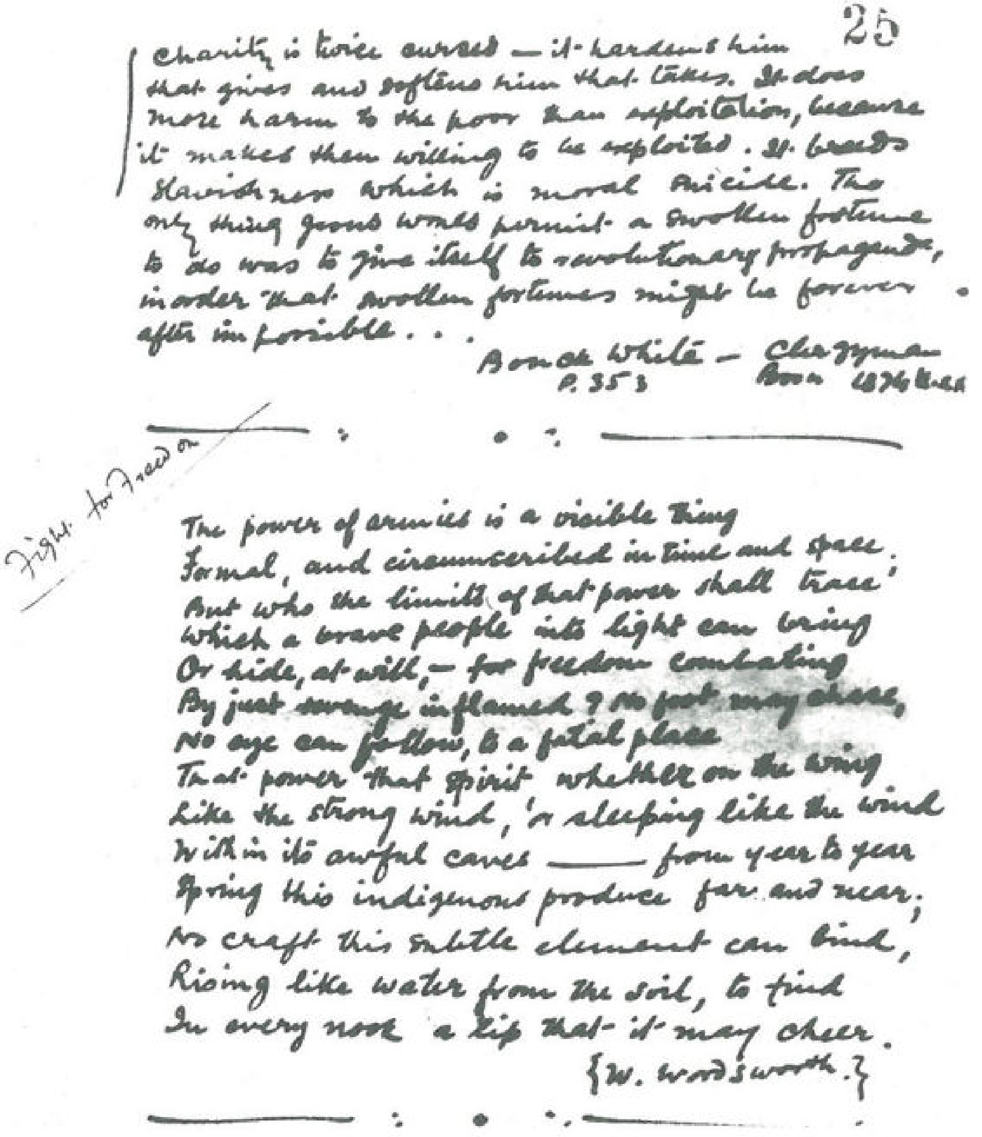

25

Charity is twice cursed — it hardens him that gives and softens him that takes. It does more harm to the poor than exploitation, because it makes them willing to be exploited. It breeds slavishness which is moral suicide. The only thing Jesus would permit a swollen fortune to do was to give itself to revolutionary propaganda, in order that swollen fortunes might be forever after impossible . . .

Bouck White — Clergyman
P. 353 Born 1874 U.S.A.

Fight for Freedom

The power of armies is a visible thing
Formal, and circumscribed in time and space;
But who the limits of that power shall trace
Which a brave people into light can bring
Or hide, at will,— for freedom combating
By just revenge inflamed? No foot may chase,
No eye can follow, to a fatal place
That power, that spirit, whether on the wing
Like the strong wind, or sleeping like the wind
Within its awful caves —— from year to year
Spring this indigenous produce far and near;
No craft this subtle element can bind,
Rising like water from the soil, to find
In every nook a lip that it may cheer.
{W. Wordsworth.}

"खैरात दोहरे रूप में अभिशप्त है, इससे खैरात देने वाले की अकड़ बढ़ जाती है और लेने वाले की विनम्रता। इससे गरीबों का शोषण से ज्यादा नुकसान होता है, क्योंकि इससे वे शोषित होने को राजी हो जाते हैं। इससे दासता बढ़ती है, जो नैतिक आत्महत्या है। ईसा मसीह ने अथाह दौलत के लिए सिर्फ एक ही इजाजत दी थी और वह यह थी कि उसे क्रांतिकरी प्रचार के लिए समर्पित कर दिया जाए, ताकि बाद में अथाह दौलत का जमा होना ही हमेशा के लिए असंभव हो जाए।"

—बाउक व्हाइट, क्लेरगीमेन,
जन्म 1874, अमेरिका (पृ. 353)

: * :

आजादी के लिए लड़ाई

Downloaded from www.PDFshala.com

फौजी ताकत दिखाई देती है
साकार और देश-काल की परिधि में
लेकिन उस ताकत की सीमा कौन बाँधेगा?
जो बहादुर लोग प्रकाश में ला सकते हैं
अथवा इच्छानुसार छुपा सकते हैं—आजादी की लड़ाई के लिए
सिर्फ बदला लेने के लिए कदम आगे नहीं बढ़ सकते,
कोई आँख, किसी घातक स्थान तक नहीं जा सकती
वह ताकत, वह जोश भले ही हवा पर सवार हो,
झंझा की तरह, अथवा सो रहा हो मंद वायु की तरह
इसकी प्रशांत गुफाओं में साल-दर-साल
यहाँ वसंत आएगा और पास;
कोई हुनर इस सूक्ष्म तत्त्व को बाँध नहीं सकता,
मिट्टी से उठते पानी की तरह पाने के लिए
हर कोने में एक होंठ, जो कह सके वाह-वाह!

(डब्ल्यू वड्र्सवर्थ)

: * :

नोट : विलियम वड्र्सवर्थ (1750-1850) : प्रसिद्ध अंग्रेज कवि।

Downloaded from www.PDFshala.com

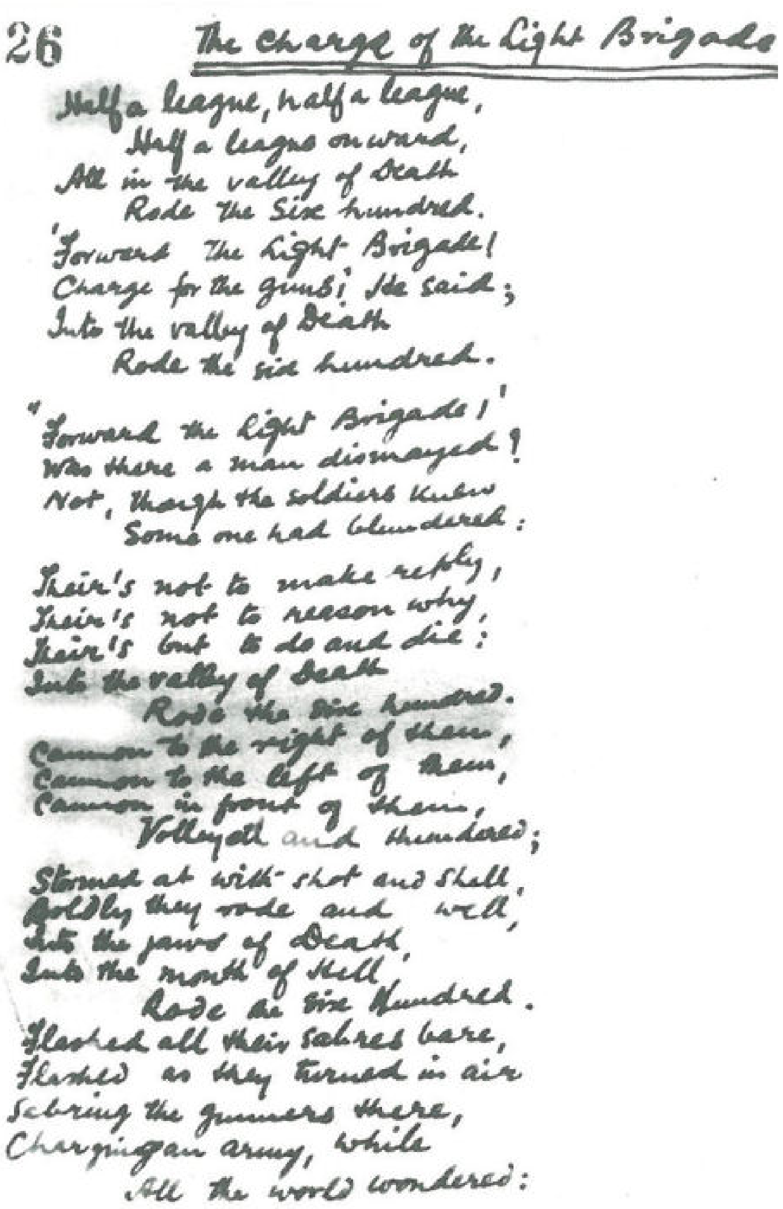
26 The Charge of the Light Brigade

Half a league, half a league,
Half a league onward,
All in the valley of Death
Rode the Six hundred.
'Forward the Light Brigade!
Charge for the guns!' he said;
Into the valley of Death
Rode the six hundred.

'Forward the Light Brigade!'
Was there a man dismayed?
Not, though the soldiers knew
Some one had blundered:

Their's not to make reply,
Their's not to reason why,
Their's but to do and die:
Into the valley of Death
Rode the six hundred.
Cannon to the right of them,
Cannon to the left of them,
Cannon in front of them,
Volleyed and thundered;
Stormed at with shot and shell,
Boldly they rode and well,
Into the jaws of Death,
Into the mouth of Hell
Rode the Six Hundred.
Flashed all their sabres bare,
Flashed as they turned in air
Sabring the gunners there,
Charging an army, while
All the world wondered:

: * :

लाइट ब्रिगेड का धावा

हाफ ए लीग लीग, हाफ ए लीग
हाफ ए लीग आगे
मौत की घाटी में सभी
घोड़े पर सवार छह सौ सैनिकों ने किया प्रवेश
उसने कहा, "लाइट ब्रिगेड, आगे बढ़ो!
तोपों पर धावा बोलो!"
मौत की घाटी में छह सौ

Downloaded from www.PDFshala.com

सैनिकों ने किए प्रवेश।
"आगे बढ़ो, लाइट ब्रिगेड!"
क्या किसी का जोश कम हुआ?
नहीं, हालाँकि सैनिकों को पता था
नहीं, किसी से गलती हुई।
किसी ने नहीं दिया जवाब, वजह ही नहीं थी सिर्फ करो या मरो
मौत की घाटी में छह सौ सैनिकों ने किया प्रवेश।
उनके दाईं ओर तोपें बाईं ओर तोपें, सामने तोपें
उगलतीं आग गर्जना के साथ;
उनके गोलों का सामना करते हुए
वे बहादुरी से आगे बढ़े
मौत के जबड़ों में मौत के मुँह में
छह सौ सैनिकों ने किया प्रवेश।
उन्होंने अपनी नंगी
तलवारें निकालीं
उन्हें हवा में लहराया
सामना करते हुए तोपचियों का
बढ़ते गए आगे
दुनिया उन्हें अचरज से
देखती रही
वे बैटरी के धुएँ में समा गए
पंक्ति तोड़कर सीधे चले गए
कोसेक और रशियन
चकरा गए तलवार के वार से
हो गए तितर-बितर
फिर पीछे हट गए,
लेकिन वे छह सौ सैनिक
नहीं हटे पीछे।
उनके दाईं ओर तोपें
उनके बाईं ओर तोपें
उनके पीछे तोपें
गोले बरसातीं गर्जना के साथ;
गोलियों का सामना करते हुए
जब उनका नायक और घोड़े
गिर गए
जो खूब लड़े, बखूबी लड़े
मौत के जबड़े से निकले
मौत के मुँह से बाहर आए
छह सौ सैनिकों में से
बहुत कम थे बचे।
उनका गौरव कब कम हो सकता है
उन्होंने क्या गजब धावा बोला!
पूरी दुनिया अचरज में थी
सम्मान करो उस आक्रमण का
लाइट ब्रिगेड का सम्मान करो
उन महान् छह सौ सैनिकों का!

Downloaded from www.PDFshala.com

—लॉर्ड टेनीसन

——————————— : ✻ : ——————————

दिल दे तो इस मिजाज का परवरदिगार दे
जो गम की घड़ी को भी खुशी से गुजार दे।

——————————— : ✻ : ——————————

सजाकर मय्यत-ए-उम्मीद नाकामी के फूलों से
किसी हमदर्द ने रख दी मेरे टूटे हुए दिल में

——————————— : ✻ : ——————————

छेड़ न ऐ फरिश्ते! तू जिक्र-ए-गम-ए-जाना ना
क्यों याद दिलाते हो भूला हुआ अफसाना

—————————— : * : ——————————

Downloaded from www.PDFshala.com

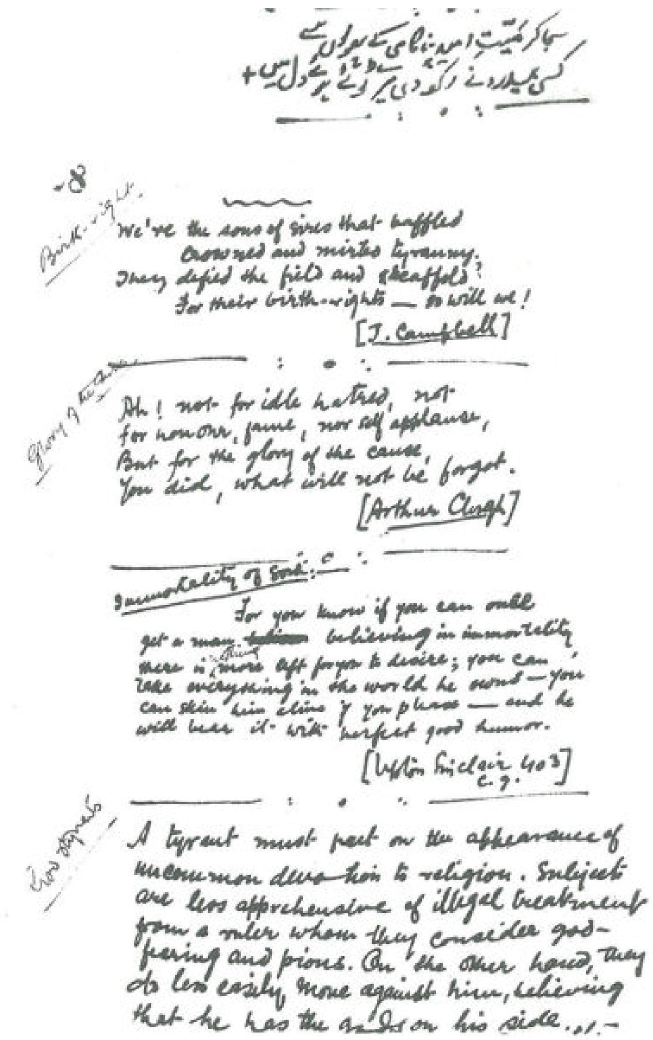

-8

Birth-right

We're the sons of sires that baffled
Crowned and mitred tyranny;
They defied the field and scaffold?
For their birth-rights — so will we!

[J. Campbell]

Glory of the cause

Ah! not for idle hatred, not
for honour, fame, nor self applause,
But for the glory of the cause,
You did, what will not be forgot.

[Arthur Clough]

Immortality of Soul

For you know if you can only
get a man believing in immortality
there is no more left for you to desire; you can
take everything in the world he owns — you
can skin him alive if you please — and he
will bear it with perfect good humor.

[Upton Sinclair. 403
C.G.]

A tyrant must put on the appearance of
uncommon devotion to religion. Subjects
are less apprehensive of illegal treatment
from a ruler whom they consider god-
fearing and pious. On the other hand, they
do less easily move against him, believing
that he has the gods on his side.

जन्मसिद्ध अधिकार

हम उन पुरखों की संतानें जिन्होंने जंग लड़ी और जुल्म
को खत्म कर पहना ताज उन्होंने मैदान और मचान
का लिया नहीं सहारा अपना जन्मसिद्ध अधिकार पाने—
हम भी ऐसा ही करेंगे।

—जे. कैंपबेल

: * :

आदर्श की गरिमा

आह! व्यर्थ घृणा के लिए नहीं,
सम्मान, प्रसिद्धि, आत्मप्रशंसा के लिए नहीं
अपने आदर्श की गरिमा के लिए

Downloaded from www.PDFshala.com

आपने जो किया, वह भुलाया नहीं जाएगा।

— **ऑर्थर क्लोघ**

—————————— : * : ——————————

आत्मा की अमरता

अगर आप जानते हैं कि अमरता में विश्वास रखनेवाला कोई व्यक्ति आपको एक बार मिल जाएगा, तो आपके पास कामना करने के लिए कुछ नहीं रह जाएगा; उसके पास दुनिया में जो कुछ है, वह सबकुछ आप उससे ले सकते हैं, अगर आप चाहें तो उसकी जिंदा खाल खिंचवा सकते हैं, और वह हँसते-हँसते उसे सह लेगा।

—अपटोन सिनक्लेयर , 403 सी.जे.

—————————— : * : ——————————

ईश्वर जालिम है?

एक अत्याचारी शासक के लिए जरूरी है कि वह जाहिर तौर पर धर्म में असाधारण आस्था दिखाए। जालिम को धर्म के प्रति समर्पण का बहुत अच्छा मुखौटा पहनना पड़ता है। प्रजा उस शासक के गैर-कानूनी व्यवहार पर कम शंका करती है, जिसे वह ईश्वर से डरने वाला और धार्मिक समझती है। दूसरी ओर वह उसकी खिलाफत कम करती है, यह भरोसा करते हुए कि ईश्वर उसकी तरफ है।

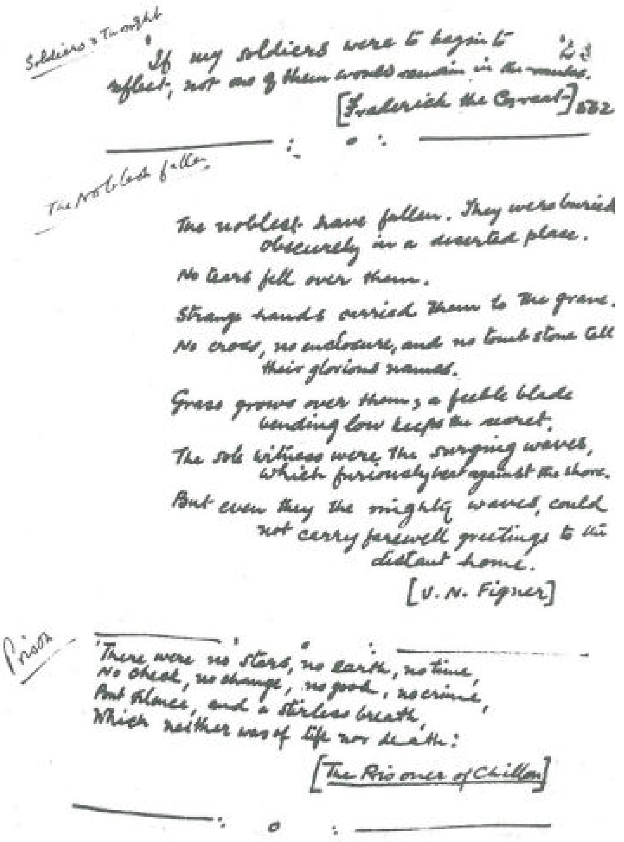
Soldiers Thought

"If my soldiers were to begin to reflect, not one of them would remain in the ranks." 23

[Frederick the Great] 532

The Noblest fallen

The noblest have fallen. They were buried obscurely in a deserted place.
No tears fell over them.
Strange hands carried them to the grave.
No cross, no enclosure, and no tomb stone tell their glorious names.
Grass grows over them, a feeble blade bending low keeps the secret.
The sole witness were the surging waves, which furiously beat against the shore.
But even they the mighty waves, could not carry farewell greetings to the distant home.

[V. N. Figner]

Prison

'There were no stars, no earth, no time,
No check, no change, no good, no crime,
But silence, and a stirless breath,
Which neither was of life nor death:

[The Prisoner of Chillon]

Downloaded from www.PDFshala.com

फौजी और विचार

"यदि मेरे सैनिक सोचना शुरू कर दें, तब तो उनमें से कोई भी सेना में नहीं रहेगा!"

—फ्रेडरिक दि ग्रेट *(पृ. 562)*

—— : ✻ : ——

सर्वोत्तम की मौत

जो सर्वोत्तम थे उनकी मौत हो गई
और गुमनाम उन्हें दफना दिया गया तन्हा जगह पर
उनके लिए नहीं गिरा कोई आँसू
अजनबी हाथ उन्हें ले गए कब्र तक
क्रॉस नहीं, ताबूत नहीं, और न कब्र पर पत्थर
उनका यशस्वी नाम बताने को
उन पर घास उग आई, नाजुक घास
जो झुककर रहस्य बनाए रखती है
मात्र गवाह थीं सरसराती लहरें
जो भयानक शोर के साथ टकरा रही थीं
किनारे से,
लेकिन वे ताकतवर लहरें भी
उस दूरस्थ घर तक विदाई का
संदेश नहीं ले जा सकीं।

—वी.एन. फिंगर

—— : ✻ : ——

जेल

न सितारे थे, न धरती, न समय
न बाधा, न बदलाव, न अच्छाई न अपराध
लेकिन खामोशी और धीमी श्वास
जो न जीवन की थी, न मृत्यु की।

— दि प्रिजनर ऑफ चिल्लॉन

—— : ✻ : ——

Downloaded from www.PDFshala.com

30

<u>After conviction</u>:—

During the moments which immediately follow upon his sentence, the mind of the condemned in many respects resembles that of a man on the point of death. Quiet, and as if inspired, he no longer clings to what he is about to leave, but firmly looks in front of him, fully conscious of the fact that what is coming is inevitable.

[V. N. Figner]

———— : • : ————

<u>The Prisoner</u>:—

'It is suffocating under the low, dirty roof;
My strength grows weaker year by year:
They oppress me, this stony floor,
This iron chained table,
This bedstead, this chair, chained
To the walls, like boards of the grave.
In this eternal, dumb, deep silence
One can only consider oneself a corpse.'

"N. A. Morozov."

———— : • : ————

Naked walls, prison thoughts,
How dark and sad you are!
How heavy to lie a prisoner inactive,
And dream of years of freedom.

[Morozov]

———— : • : ————

[illegible]

———— : * : ————

कसूरवार ठहराए जाने के बाद

उसको सजा सुनाए जाने के बाद जो लम्हे आते हैं, उनमें कसूरवार ठहराए गए शख्स का मन कई तरह से मौत की हालत जैसा हो जाता है। खामोश और उतना ही बे-साँस, वह जो छोड़ने जा रहा है, एक हक, उससे चिपके रहना नहीं चाहता, बल्कि अपने सामने देखता रहता है, इस बात से पूरी तरह वाकिफ कि क्या होने जा रहा है?

—वी.एन. फिंगर

———— : * : ————

कैदी

नीची, गंदी छत के नीचे दम घुटता है
साल-दर-साल मेरी ताकत कम होती है

Downloaded from www.PDFshala.com

वे मुझे सताते हैं यह पत्थर का फर्श
यह खटिया, यह कुरसी दीवारों से बँधी हुई
जैसे कब्र के तख्त इस अनंत, गूँगी, गहरी खामोशी में
कोई सिर्फ खुद को एक लाश महसूस कर सकता है।

—एन.ए. मोरोजोव

———————— : ✻ : ————————

नंगी दीवारें, कैदखाने के खयाल
तुम कितने स्याह और गमजदा हो
काहिल कैदी होना कितना मुश्किल है
जब हो बरसों की आजादी का ख्वाब।

— मोरोजोव

———————— : ✻ : ————————

तुझे जबाह करने की खुशी, मुझे मरने का शौक
मेरी भी मर्जी वही है, जो मेरे सय्याद की है

———————— : ✻ : ————————

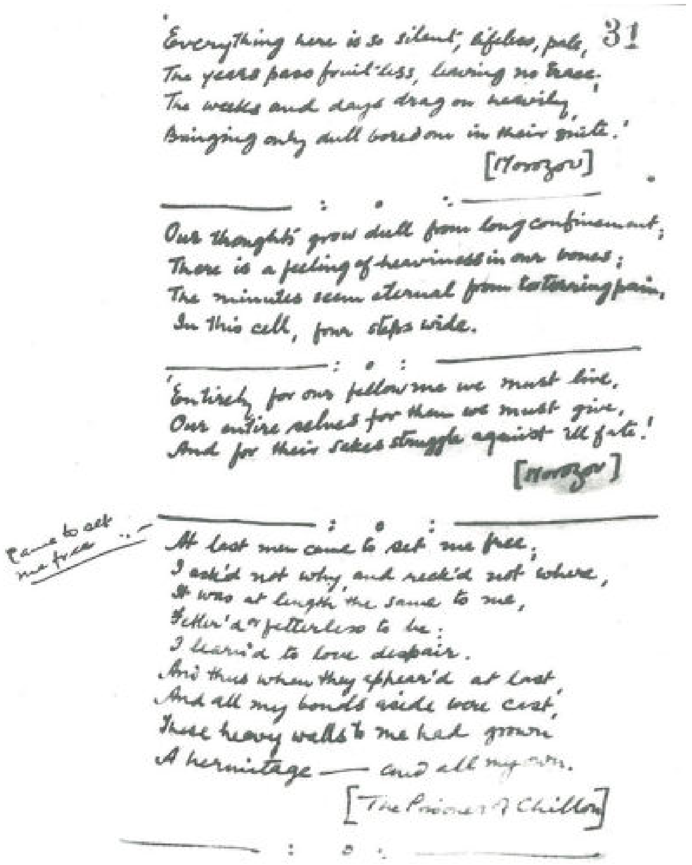
31
'Everything here is so silent, lifeless, pale,
The years pass fruitless, leaving no trace,
The weeks and days drag on heavily,
Bringing only dull boredom in their suite.'
[Morozov]

—— : • : ——

Our thoughts grow dull from long confinement;
There is a feeling of heaviness in our bones;
The minutes seem eternal from tottering pain,
In this cell, four steps wide.

—— : • : ——

'Entirely for our fellow men we must live,
Our entire selves for them we must give,
And for their sakes struggle against ill fate!'
[Morozov]

—— : • : ——

came to set me free ..

At last men came to set me free;
I ask'd not why, and reck'd not where,
It was at length the same to me,
Fetter'd or fetterless to be:
I learn'd to love despair.
And thus when they appear'd at last
And all my bonds aside were cast,
These heavy walls to me had grown
A hermitage — and all my own.
[The Prisoner of Chillon]

—— : • : ——

Downloaded from www.PDFshala.com

यहाँ हर शै खामोश, बेजान, बेनूर है
सालों बीतते हैं, बेकार, छोड़े बिना कोई निशां
हफ्ते और दिन होते हैं कितने बोझिल
सिर्फ उदास उकताहट लिये

—मोरोजोव

: * :

लंबे अरसे तक कैद में हमारी सोच हो जाती है कुंद
हड्डियों में भारीपन का एहसास
सितम के दर्द से लम्हे लगते हैं कभी न खत्म होनेवाले
इस कोठरी में, जो सिर्फ चार कदम चौड़ी है
बेशक अपने साथियों के साथ हमें जीना ही होगा
हमें उन्हें अपनी पूरी खुदी को देना होगा
उनकी खातिर, बदकिस्मती से
करनी होगी जद्दोजहद

—मोरोजोव

: * :

मुझे आजाद करने आए

आखिर लोग मुझे आजाद करने आए
मैंने नहीं पूछा कि क्यों और कहाँ ले जा रहे थे
आखिर मुझे क्या फर्क पड़ना था,
जंजीर में जकड़ा होऊँ या बे-जंजीर
मुझे मायूसी भाने लगी थी
लिहाजा आखिर जब वो आए
और मेरे सारे बंधन खोल फेंक दिए
ये भारी दीवारें बन चुकी थीं
मेरे लिए एक संन्यास आश्रम—पूरी तरह अपना।

—दि प्रिजनर ऑफ चिल्लॉन

: * :

Downloaded from www.PDFshala.com

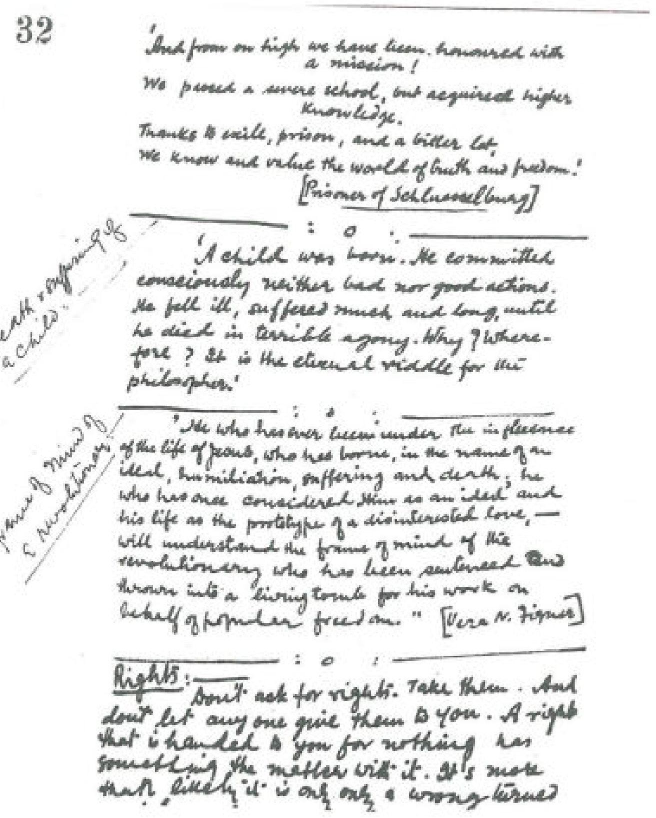

32

'And from on high we have been honoured with a mission!
We passed a severe school, but acquired higher knowledge.
Thanks to exile, prison, and a bitter lot,
We know and value the world of truth and freedom.'
[Prisoner of Schlusselburg]

: o :

Death & suffering of a child.

'A child was born. He committed consciously neither bad nor good actions. He fell ill, suffered much and long, until he died in terrible agony. Why? Wherefore? It is the eternal riddle for the philosopher.'

: o :

Frame of mind of a revolutionary

'He who has ever been under the influence of the life of Jesus, who has borne, in the name of an ideal, humiliation, suffering and death; he who has once considered Him as an ideal and his life as the prototype of a disinterested love,— will understand the frame of mind of the revolutionary who has been sentenced and thrown into a living tomb for his work on behalf of popular freedom." [Vera N. Figner]

: o :

Rights:
Don't ask for rights. Take them. And don't let anyone give them to you. A right that is handed to you for nothing has something the matter with it. It's more than likely it is only a wrong turned

और ऊपर वाले ने हमें एक मकसद देकर नवाजा
हम एक सख्त स्कूल से निकले, लेकिन बड़ा ज्ञान पाया
देश-निकाले, कैद और मुश्किलात को शुक्रिया,
हम कद्र करते हैं हक और आजादी की दुनिया की।

—प्रिजनर ऑफ श्लुशेलबर्ग

: * :

एक बच्चे की मौत और तकलीफ

एक बच्चा पैदा हुआ। उसने जानकर कोई खताएँ या नेकियाँ नहीं कीं। वह बीमार हो गया,
बहुत ज्यादा और काफी वक्त सही तकलीफजब तक कि उसकी बहुत दर्दनाक
मौत नहीं हो गई। क्यों? किस वजह? दार्शनिकों के लिए यह कभी न सुलझने वाली पहेली है।

: * :

एक क्रांतिकारी की मानसिकता

"वह, जो हमेशा जीसस के असर में रहा, जिसने किसी उसूल के नाम पर जिल्लत और पीड़ा सही और मर गया; वह, जिसने उसे आदर्श और उसके जीवन को बेगरज प्यार का रूप माना हो, वही उस क्रांतिकारी की मानसिकता को समझेगा, जिसे सजा दी गई है और लोगों की आजादी के लिए किए गए काम के लिए ताबूत में डाल दिया गया हो।

Downloaded from www.PDFshala.com

—वेरा एन. फिंगर

: * :

हक

अधिकार माँगो नहीं, बढ़कर ले लो। और उन्हें किसी के द्वारा भी तुम्हें देने मत दो। यदि मुफ्त में तुम्हें कोई अधिकार दिया जाता है तो समझो कि उसमें कोई-न-कोई राज जरूर है। ज्यादा संभावना यही है कि किसी गलत बात को उलट दिया गया है।

: * :

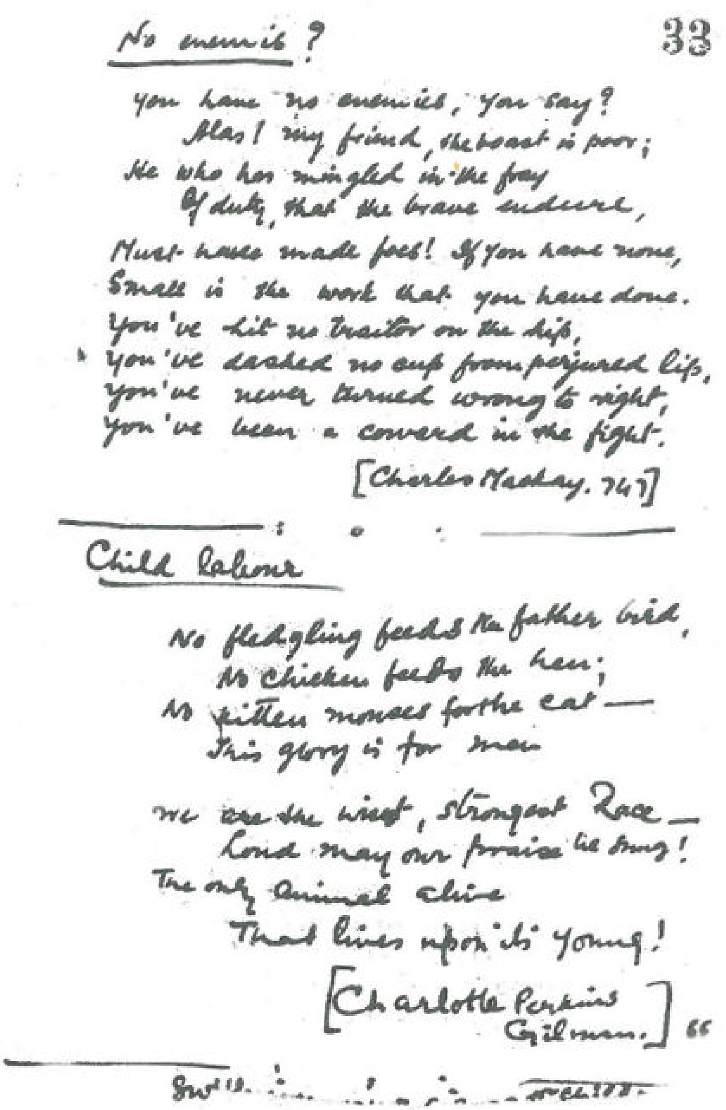

No enemies? 33

You have no enemies, you say?
Alas! my friend, the boast is poor;
He who has mingled in the fray
Of duty, that the brave endure,
Must have made foes! If you have none,
Small is the work that you have done.
You've hit no traitor on the hip,
You've dashed no cup from perjured lips,
You've never turned wrong to right,
You've been a coward in the fight.
[Charles Mackay. 747]

Child labour

No fledgling feeds the father bird,
No chicken feeds the hen;
No kitten mouses for the cat—
This glory is for man
We are the wisest, strongest Race—
Loud may our praise be sung!
The only animal alive
That lives upon its young!
[Charlotte Perkins Gilman.] 66

कोई दुश्मन नहीं?

तुम कहते हो, तुम्हारा कोई दुश्मन नहीं?
आह! मेरे दोस्त, यह घमंड तरस के काबिल है

Downloaded from www.PDFshala.com

वह, जो फर्ज की लड़ाई के मैदान में डटा है
उसने दुश्मन जरूर बनाए होंगे तुम्हारा कोई दुश्मन नहीं,
तो फिर तुमने कोई बड़ा काम नहीं किया।
तुमने झूठी कसम खाने वाले होंठ से
कोई प्याला छीनकर तोड़ा नहीं होगा
तुमने कभी किसी गलत को सही नहीं किया,
इस लड़ाई में तुम बुजदिल ही रहे।

—चार्ल्स मेके

———————— : * : ————————

बाल मजदूरी

कोई चिड़िया का बच्चा अपने पिता के लिए दाना नहीं जुटाता
कोई चूजा मुरगी को नहीं खिलाता,
कोई बिल्ली का बच्चा माँ के लिए चूहा नहीं मारता
यह गौरव आदमी को मिला है
हम सबसे ज्यादा समझदार, सबसे मजबूत नस्ल हैं—
हमारी तारीफ में तेज आवाज में गीत गाए जाएँ
वही प्राणी जीवित है
जो अपने बच्चों के सहारे जिंदा है।

—चारलोटे परकिंग गिलमेन

———————— : * : ————————

Downloaded from www.PDFshala.com

No classes! No compromise!!

[George D. Herron]

Under the Socialist movement there is coming a time, and the time may be even now at hand, when improved conditions or adjusted wages will no longer be thought to be an answer to the cry of labour; yes when these will be but an insult to the common intelligence. It is not for better wages, improved capitalist conditions or a share of capitalist proffits that the Socialist movement is in the world; it is here for the abolition of wages and profits, and for the end of capitalism and the private capitalist. Reformed political institution, boards of arbitration between capital and labour, philanthropies and privileges that are but the capitalist gifts — none of these can much longer answer the question that is making the temples, thrones and Parliaments of the nation tremble. There can be no peace between the man who is down and the man who builds on his back. There can be no reconciliation between classes; there can only be an end of classes. It is idle to talk of good will until there is first justice, and idle to talk of justice until the man who makes the world possesses the work of his own hands. The cry of the world's workers can be answered with nothing save the whole product of their work.

[George D. Herron]

(फटा हुआ)

Downloaded from www.PDFshala.com

कोई वर्ग नहीं, कोई समझौता नहीं

समाजवादी आंदोलन के चलते एक ऐसा वक्त आ रहा है, और हो सकता है कि तकरीबन आ ही गया हो, जब काम की शर्तों में सुधार या ठीक मजदूरी को मजदूर की पुकार का जवाब नहीं माना जाएगा; जी हाँ, तब ये चीजें आम लोगों की समझ में बेइज्जती होंगी। दुनिया में समाजवादी आंदोलन बेहतर मजदूरी, बेहतर पूँजीवादी स्थितियों या पूँजीपतियों के मुनाफे के हिस्से के लिए नहीं चल रहा; इसका मकसद मजदूरी और मुनाफे और पूँजीवाद तथा निजी पूँजीपतियों को खत्म करना है। बेहतर राजनीति संस्थाएँ, पूँजी और श्रम के बीच बोर्ड ऑफ आर्बिट्रेशन, पूँजीपतियों की खैरातों के अलावा और कुछ नहीं है। लोकोपकार तथा विशेषाधिकार महज पूँजीपति के तोहफे हैं—इनमें से कुछ भी, उस सवाल का अब बहुत दिनों तक जवाब नहीं हो सकता, जो मंदिरों, सिंहासनों तथा राष्ट्रों की संसदों को हिला रहा है। जो आदमी नीचे दबा है और जो आदमी उसकी पीठ पर चढ़ा है, उन दोनों के बीच शांति नहीं हो सकती। इन वर्गों के बीच कोई सुलह नहीं हो सकती; सिर्फ वर्गों का खात्मा हो सकता है। जब तक पहले इनसाफ न हो, बेरोजगारी खत्म न हो, तब तक सद्भाव की बात बेमानी है। दुनिया के मजदूरों की आवाज सुनी जानी चाहिए और उन्हें उनके काम का पूरा फायदा मिलना चाहिए।

—जॉर्ज डी. हरसन

: * :

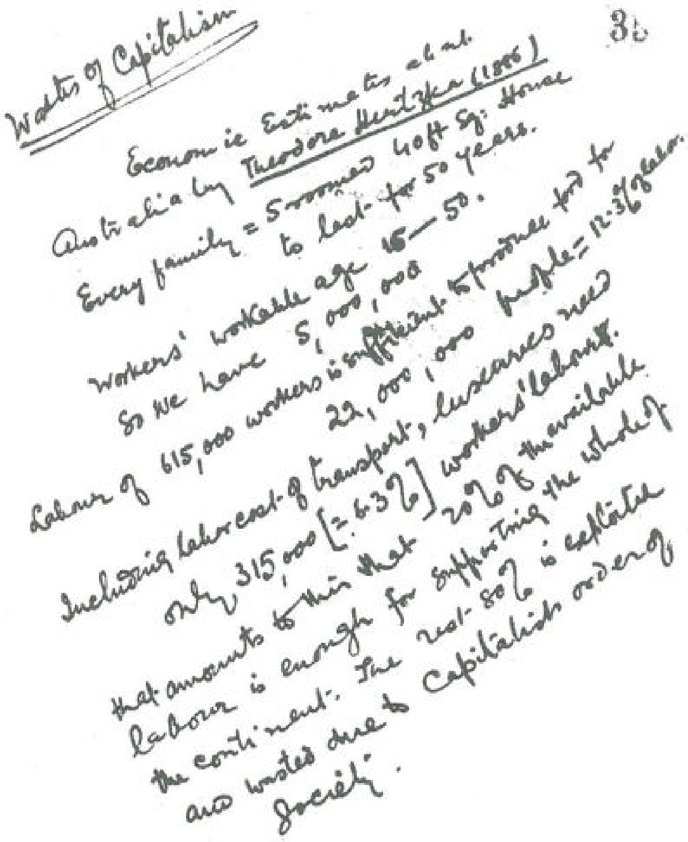
Wastes of Capitalism
35
Economic Estimates about
Austria by Theodore Hertzka (1886)
Every family = 5 roomed 40 ft sq. House
to last for 50 years.
workers' workable age 16—50.
So we have 5,000,000
Labour of 615,000 workers is sufficient to produce food for
22,000,000 people = 12.3% of labour.
Including labour cost of transport, luxuries need
only 315,000 [= 6.3%] workers' labour.
that amounts to this that 20% of the available
labour is enough for supporting the whole of
the continent. The rest 80% is exploited
and wasted due to capitalist order of
society.

Downloaded from www.PDFshala.com

पूँजीवाद की फिजूलखर्ची

थियोडोर हर्टज्क (1886) द्वारा ऑस्ट्रेलिया के बारे में आर्थिक आकलन। हर एक परिवार के पास = 40-40 वर्गफीट के 5 कमरे के मकान, जो 50 साल चलेंगे।

ऑस्ट्रेलिया के बारे में आिर्थक अनुमान, स्थियोडोर हर्टज्का (1886) द्वारा प्रत्येक परिवार = 40 वर्ग फीट में 5 कमरों वाला मकान 50 वर्षों तक चलने लायक

मजदूरों की काम करने की उम्र =16-50 (वर्ष-सं.)

इस प्रकार हमारे पास हैं 5,000,000 (मजदूर-सं.)

615,000 मजदूरों का श्रम = श्रम का 12.3 प्रतिशत,

22,000,000 लोगों का भोजन पैदा करने के लिए पर्याप्त है।

यातायात परिवहन की श्रम लागत समेत, विलासिताओं हेतु सिर्फ 315,000=6.33 प्रतिशत मजदूरों के श्रम की आवश्यकता पड़ती है। इसका मतलब यह हुआ कि उपलब्ध श्रम का 20 प्रतिशत ही समूचे महाद्वीप के भरण-पोषण के लिए पर्याप्त है। शेष 60 प्रतिशत समाज की पूँजीवादी व्यवस्था के कारण शोषित और बरबाद हो जाता है।

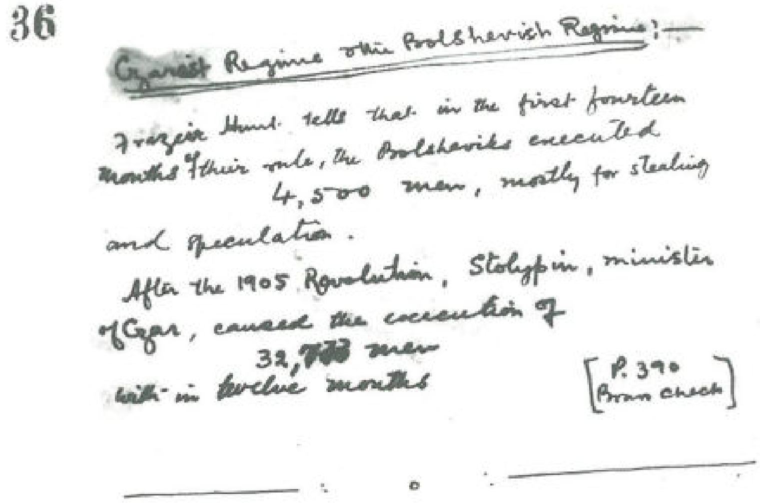
36

Czarist Regime & the Bolshevist Regime:—

Frazier Hunt tells that in the first fourteen months of their rule, the Bolsheviks executed 4,500 men, mostly for stealing and speculation.

After the 1905 Revolution, Stolypin, minister of Czar, caused the execution of 32,[illegible] men within twelve months

[P. 390 Bran check]

Downloaded from www.PDFshala.com

जारवादी व्यवस्था और बोल्शेविक व्यवस्था

फ्रेजियर हंट कहता है कि बोल्शेविकों ने अपने पहले चौदह महीनों की हुकूमत में 4,500 लोगों को फाँसी पर लटका दिया। उनमें से ज्यादातर पर चोरी और सट्टेबाजी का इलजाम था।

1905 की क्रांति के बाद, जार के मंत्री स्टोलिपिन ने बारह महीनों के भीतर 32,773 लोगों को फाँसी लगवा दी।

—ब्रास चेक *(पृ. 390)*

: * :

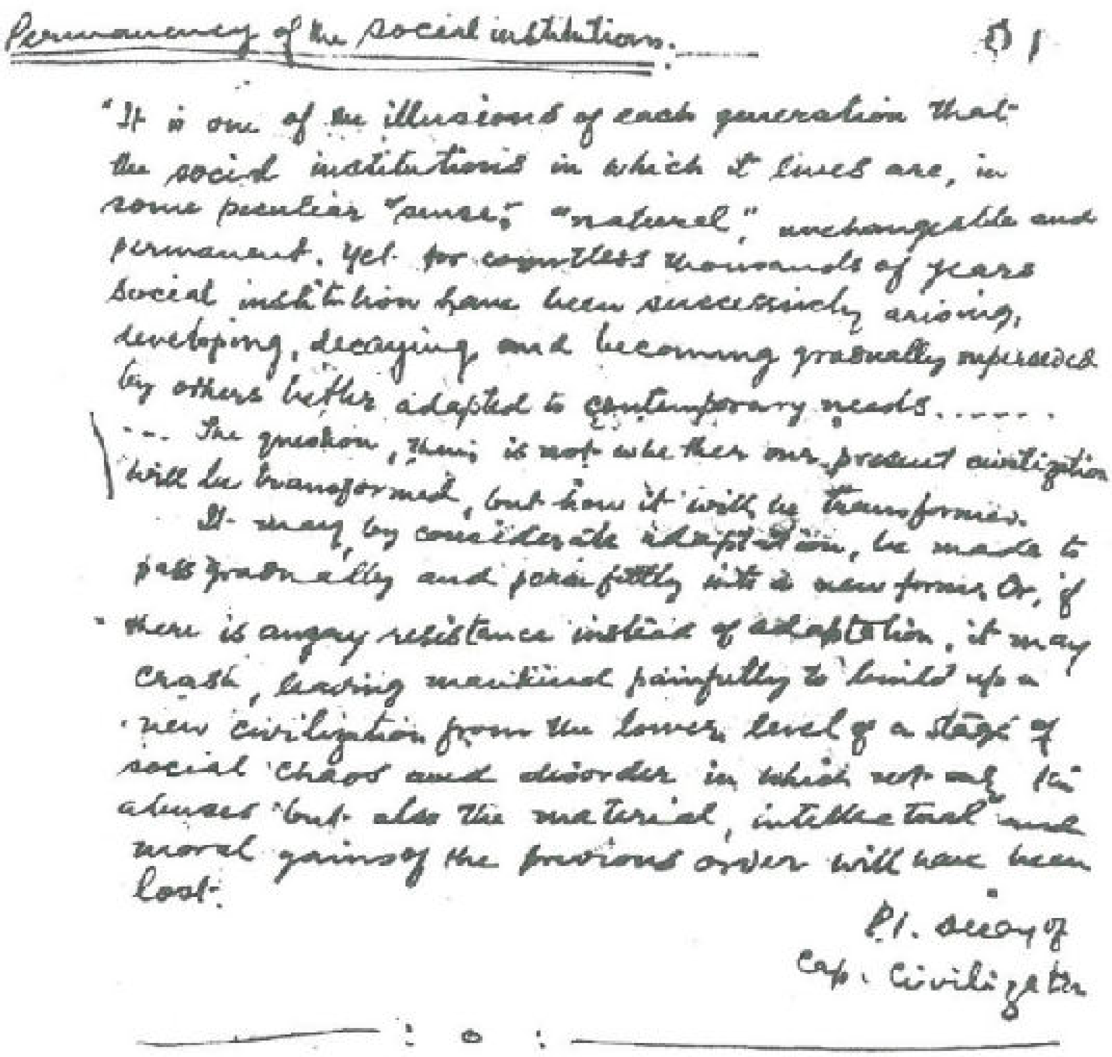

Permanency of the social institutions. 81

"It is one of the illusions of each generation that the social institutions in which it lives are, in some peculiar "sense," "natural," unchangeable and permanent. Yet for countless thousands of years social institution have been successively arising, developing, decaying and becoming gradually superseded by others better adapted to contemporary needs......

... The question, then, is not whether our present civilization will be transformed, but how it will be transformed.

It may, by considerable adaptation, be made to pass gradually and peacefully into a new form. Or, if there is angry resistance instead of adaptation, it may crash, leaving mankind painfully to build up a new civilization from the lower level of a stage of social chaos and disorder in which not only the abuses but also the material, intellectual and moral gains of the previous order will have been lost.

P1. Decay of
Cap. Civilization

: o :

Downloaded from www.PDFshala.com

सामाजिक संस्थाओं का स्थायित्व

प्रत्येक पीढ़ी के लोगों को यह भ्रम रहता है कि जिन सामाजिक संस्थाओं में वे रह रहे हैं, वे किसी खास अर्थ में 'स्वाभाविक', अपरिवर्तनीय और स्थायी हैं। फिर भी अनगिनत हजारों साल से सामाजिक संस्थाएँ सफलता के साथ बनती, विकसित और क्षीण हो रही हैं और बदले वक्त के मुताबिक दूसरी संस्थाएँ धीरे-धीरे उनकी जगह लेती आ रही हैं—लिहाजा, सवाल यह नहीं है कि हमारी मौजूदा सभ्यता बदलेगी या नहीं, बल्कि यह है कि यह कैसे बदली जाएगी?

सोच-समझ के साथ बदलाव कर इसे धीरे-धीरे और शांतिपूर्वक नया रूप दिया जा सकता है। या अगर सुधार की जगह क्रोध से भरा विरोध हो, तो यह खत्म हो सकती है, जिसके नतीजे में इनसान को बहुत मेहनत कर सामाजिक अराजकता और अव्यवस्था की निचली स्थिति से फिर से नई सभ्यता का निर्माण करना होगा, जिसमें पुरानी व्यवस्था की न केवल बुराइयाँ, बल्कि भौतिक, बौद्धिक और नैतिक उपलब्धियाँ भी खो जाएँगी।

—पी.आई. डिके ऑफ
केप. सिविलाइजेशन

: * :

Downloaded from www.PDFshala.com

Capitalism & Commercialism

Rabindranath's address to an assembly of Japanese Students:-

"You had your own industry in Japan; how scrupulously honest and true it was, you can see by its products — by their grace and strength, their conscientiousness in details, where they can hardly be observed. But the tidal wave of falsehood has swept over your land from that part of the world where business is business, and honesty is followed merely as the best policy. Have you never felt shame when you see the trade advertisements, not only plastering the whole town with lies and exaggerations, but invading the green fields, where the peasants do their honest labour, and the hilltops, which greet the first pure light of the morning? .... This commercialism with its barbarity of ugly decorations is a terrible menace to all humanity, because it is setting up the ideal of power over that of perfection. It is making the cult of self-seeking exult in its naked shamelessness. ... Its movements are violent, its noise is discordantly loud. It is carrying its own damnation because it is trampling into distortion

Downloaded from www.PDFshala.com

पूँजीवाद और व्यापारवाद

रवींद्रनाथ का जापानी विद्यार्थियों की सभा को संबोधन—

"जापान में आपका अपना उद्योग था; यह कितना ईमानदार और सच्चा था, इसे आप इसके उत्पादों को देखकर समझ सकते हैं—उनकी खूबसूरती और मजबूती से। जिन पर शायद ही कोई टीका-टिप्पणी की जा सके, परंतु आपकी भूमि पर झूठ की एक लहर दुनिया के उस भाग से बहकर आ चुकी है, जहाँ व्यापार सिर्फ व्यापार है और ईमानदारी को सिर्फ सबसे अच्छी नीति माना जाता है। क्या व्यापार के विज्ञापनों को देखकर कभी आपको शर्म नहीं आती? इन झूठे और अतिरंजित विज्ञापनों से न केवल पूरा शहर पटा पड़ा है, बल्कि जिनका आक्रमण खेतों तक हो रहा है, जहाँ किसान ईमानदारी से मेहनत करते हैं। ये इन पहाड़ियों तक जा रहे हैं, जो सुबह के शुद्ध प्रकाश का सबसे पहले अभिवादन करती हैं? यह खुदगर्जी के चलन को उसके नंगे बेशर्म रूप में सामने ला रहा है। इसकी गतिविधियाँ हिंसक हैं। यह अपने ही सर्वनाश की ओर बढ़ रहा है, क्योंकि यह उसी मानवता को कुचलकर विकृत कर रहा है, जिस पर यह स्वयं खड़ा है।

(शेष अगले पेज पर)

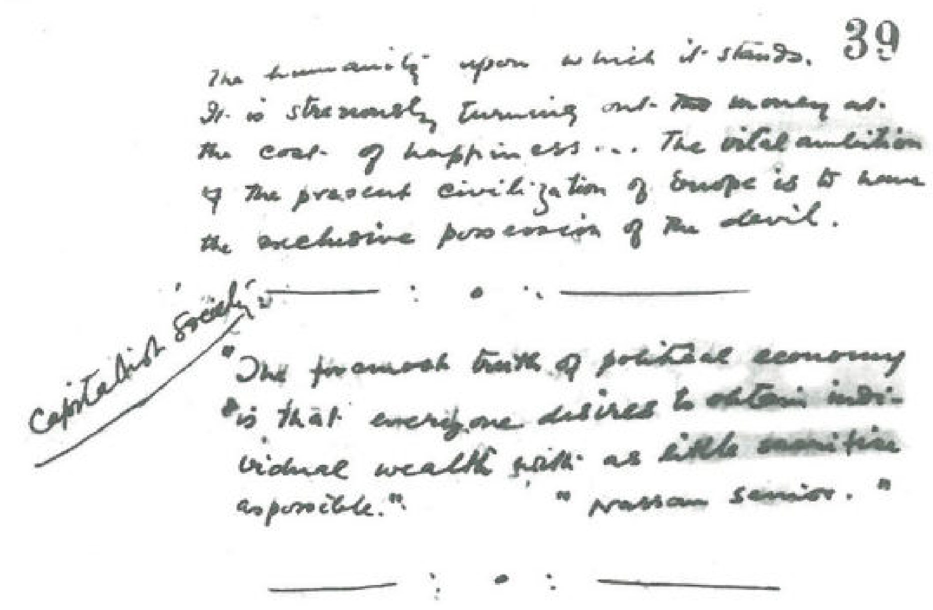
39

The humanity upon which it stands. It is strenuously turning out the money at the cost of happiness... The vital ambition of the present civilization of Europe is to have the exclusive possession of the devil.

: • :

Capitalist Society

"The foremost truth of political economy is that everyone desires to obtain individual wealth with as little sacrifice as possible." "Nassau Senior."

: • :

"यह बहुत मेहनत से खुशी की कीमत पर पैसा बना रहा है—यूरोप की मौजूदा सभ्यता की महत्त्वपूर्ण आकांक्षा यह है कि शैतान पर सिर्फ उसका अधिकार हो जाए।"

: * :

पूँजीवादी समाज

राजनीति अर्थव्यवस्था का सबसे बड़ा सच यह है कि हर शख्स कम-से-कम त्याग कर निजी दौलत हासिल करना चाहता है।

—नास्सान सीनियर

: * :

Downloaded from www.PDFshala.com

Karl Marx on Religion :—

Man makes religion; religion does not make man. Religion indeed, is the self-consciousness and the self-feeling of man who either has not yet found himself, or else (have found himself) has lost himself once more. But man is not an abstract being, the world squatting down somewhere outside. Man is the world of men, the state, society. This State, this society produces religion, produce a perverted world consciousness, because they are a perverted world. Religion is the generalized theory of this world, its encyclopaedic compendium, its logic in a popular form ... the fight against religion is, therefore a direct campaign against the world whose spiritual aroma is religion ...

Downloaded from www.PDFshala.com

धर्म पर कार्ल मार्क्स के विचार

आदमी धर्म को बनाता है, धर्म आदमी को नहीं। दरअसल, धर्म आदमी की आत्म-व्याकुलता और आत्म-अनुभूति है, जिसने या तो अभी तक खुद को नहीं पाया है या फिर (खुद को पा लिया है) खुद को पुनः खो दिया है। लेकिन आदमी कोई अमूर्त वस्तु नहीं है, जो दुनिया के बाहर कहीं बैठा है। आदमी आदमियों, राज्य, समाज की दुनिया है। यह राज्य, यह समाज धर्म पैदा करता है, एक विकृत विश्व चेतना पैदा करता है, क्योंकि वे एक विकृत दुनिया हैं। धर्म इस दुनिया का सामान्यीकृत सिद्धांत है, इसका विश्वकोशीय सारांश है, लोकप्रिय रूप में इसका तर्क है—

(शेष अगले पेज पर)

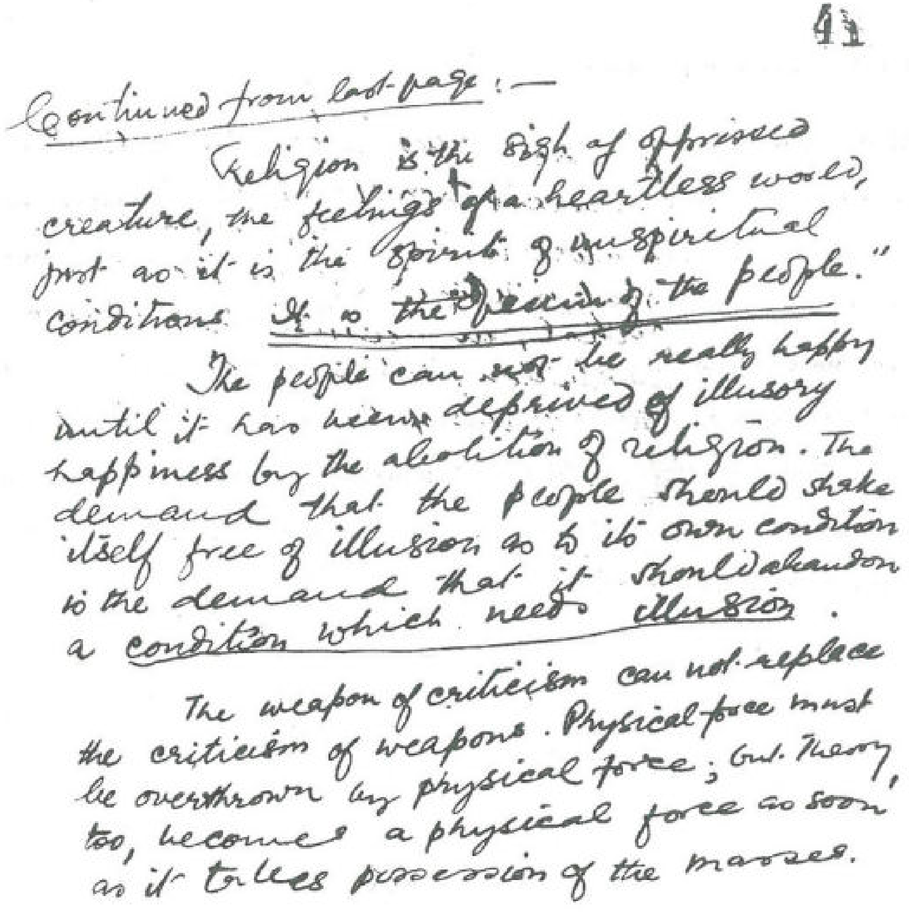
41

Continued from last-page :—

Religion is the sigh of oppressed creature, the feelings of a heartless world, just as it is the spirit of unspiritual conditions. It is the opium of the people."

The people can not be really happy until it has been deprived of illusory happiness by the abolition of religion. The demand that the people should shake itself free of illusion as to its own condition is the demand that it should abandon a condition which needs illusion.

The weapon of criticism can not replace the criticism of weapons. Physical force must be overthrown by physical force; but theory, too, becomes a physical force as soon as it takes possession of the masses.

Downloaded from www.PDFshala.com

धर्म दमित प्राणी की आह है, एक बेरहम दुनिया का एहसास है, वैसे ही, जैसे यह गैर-आध्यात्मिक स्थितियों की प्रेरणा है। "**धर्म लोगों की अफीम है।**"

लोग धर्म के द्वारा उत्पन्न झूठी खुशी से छुटकारा पाए बिना सच्ची खुशी हासिल नहीं कर सकते। यह माँग कि लोगों को इस भ्रम से मुक्त हो जाना चाहिए, उसका मतलब यह माँग है कि **ऐसी स्थिति को त्याग देना चाहिए, जिसमें भ्रम की जरूरत होती है।**

आलोचना का हथियार हथियार की आलोचना की जगह नहीं ले सकता। भौतिक ताकत को भौतिक ताकत से ही जीता जा सकता है, लेकिन सिद्धांत भी जैसे ही लोगों को अपने कब्जे में लेता है, भौतिक ताकत बन जाता है।

Downloaded from www.PDFshala.com

A Revolution not Utopian

A radical revolution, the general emancipation of mankind, is not a utopian dream for Germany; what is utopian is the idea of a partial, an exclusively political revolution, which would leave the pillars of the house standing.

"Great are great because we are on knees. Let us Rise!!"

Downloaded from www.PDFshala.com

एक क्रांति जो काल्पनिक नहीं

एक आमूल परिवर्तनवादी क्रांति, यानी मानव जाति की आम मुक्ति, जर्मनी के लिए कोई यूटोपियाई स्वप्न नहीं है; यूटोपियाई तो एक आंशिक, एक विशुद्ध राजनीतिक क्रांति की धारणा होती है, जो (पूँजीवादी व्यवस्था की- सं.) इमारत के खंभों को खड़ा छोड़ देगी।

———————————————————————

“महान् लोग महान् इसलिए
हैं, क्योंकि हम घुटनों पर हैं।
आइए, हम उठें!”

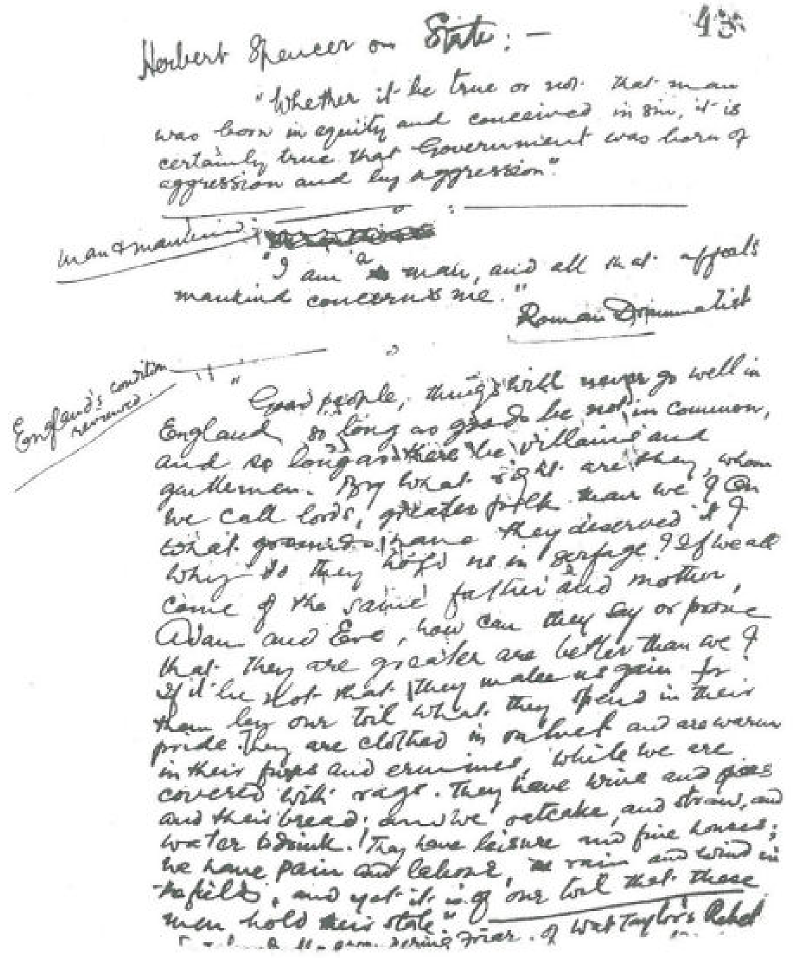
43

Herbert Spencer on State: —

"Whether it be true or not that man was born in equity and conceived in sin, it is certainly true that Government was born of aggression and by aggression."

Man & mankind:

"I am a man, and all that affects mankind concerns me."
Roman Dramatist

England's condition reviewed:

"Good people, things will never go well in England so long as goods be not in common, and so long as there be villains and gentlemen. By what right are they whom we call lords, greater folk than we? On what grounds have they deserved it? Why do they hold us in serfage? If we all come of the same father and mother, Adam and Eve, how can they say or prove that they are greater or better than we? If it be not that they make us gain for them by our toil what they spend in their pride. They are clothed in velvet and are warm in their furs and ermines, while we are covered with rags. They have wine and spices and fair bread; and we oatcake, and straw, and water to drink. They have leisure and fine houses; we have pain and labour, the rain and wind in the fields, and yet it is of our toil that these men hold their state."
Wat Tyler's Rebel

Downloaded from www.PDFshala.com

राज्य पर हर्बर्ट स्पेंसर के विचार

"भले ही यह सच हो या न हो कि मनुष्य निष्कलंक पैदा हुआ और पाप में सन गया। लेकिन यह निश्चित है कि सरकार का जन्म अवश्य आक्रामकता से और आक्रामकता द्वारा हुआ।"

——————— : * : ———————

मानव और मानव जाति

मैं एक मानव हूँ, और वह सबकुछ जो मानवता को
प्रभावित करता है उससे मेरा सरोकार है

—रोमन ड्रामाटिस्ट

——————— : * : ———————

इंग्लैंड की स्थिति की समीक्षा

"अच्छे लोगो, इंग्लैंड में स्थितियाँ तब तक अच्छी नहीं हो सकतीं, जब तक अच्छाइयाँ आम नहीं हो जातीं, और जब तक सज्जन लोगों के साथ दुर्जन लोग भी बने रहते हैं। वे किस अधिकार से, जिन्हें वे मालिक कहते हैं, हमसे किस तरह बेहतर हैं? उन्हें किस बुनियाद पर यह हक मिला? वे हमें दास क्यों मानते हैं? अगर ऐसा नहीं है कि वे हमारी मेहनत से फायदा पा रहे हैं, तो फिर वे गर्व के साथ खर्च क्या करेंगे। अगर वे अपने फायदे के लिए हमसे मेहनत नहीं करवाते तो वे अपनी शान-शौकत में क्या खर्च करते? वे मखमल पहनते हैं और अपने फरों तथा अमाइंस में गरम रहते हैं, जबकि हम चीथड़ों में लिपटे हैं। वे वाइन पीते हैं, लजीज खाना और ब्रेड खाते हैं; और हम केक, स्ट्रॉ खाते हैं और पानी पीते हैं! उनके पास फुरसत का वक्त है और शानदार मकान हैं; हमारे हिस्से में दर्द और मेहनत, खेतों में बारिश और हवा के थपेड़े हैं, और इसके बाद भी हमारी मेहनत से ही ये लोग अपने राज्य पर काबिज बने हुए हैं—

(पन्ना फटा है)

Downloaded from www.PDFshala.com

44 Revolution & classes

All classes striving for power are revolutionary, and talk of Equality. All classes, when they get into power, are conservative and are convinced that equality is an iridescent dream. All classes but one — the Working Class, for as Comte has said, "The working class is not properly speaking, a class at all, but constitutes the body of society." But the day of the working class, the fusion of all useful people, has not even yet arrived. p. 43

"World History for Workers" by Alfred Barton.

Downloaded from www.PDFshala.com

क्रांति और वर्ग

सत्ता के लिए जद्दोजहद करनेवाले सभी वर्ग क्रांतिकारी हैं और समानता की बात करते हैं। सभी वर्ग, जब वे सत्ता में आ जाते हैं, तो संकीर्णतावादी हो जाते हैं और उन्हें यह भरोसा हो जाता है कि समानता एक भद्दा ख्वाब है। सिर्फ मजदूर वर्ग इसका अपवाद है, जैसा कि कॉम्टे ने कहा, "सच पूछिए तो मजदूर वर्ग ही समाज की काया है।" लेकिन मजदूर वर्ग, जो सभी लोगों का संगम है, का दिन अभी तक नहीं आया है।

'वर्ल्ड हिस्टरी ऑफ वर्कर्स',

लेख—अल्फ्रेड बार्टन

नोट : हर्बर्ट स्पेंसर (1820-1903) अंग्रेज दार्शनिक; महत्त्वपूर्ण कृतियाँ।

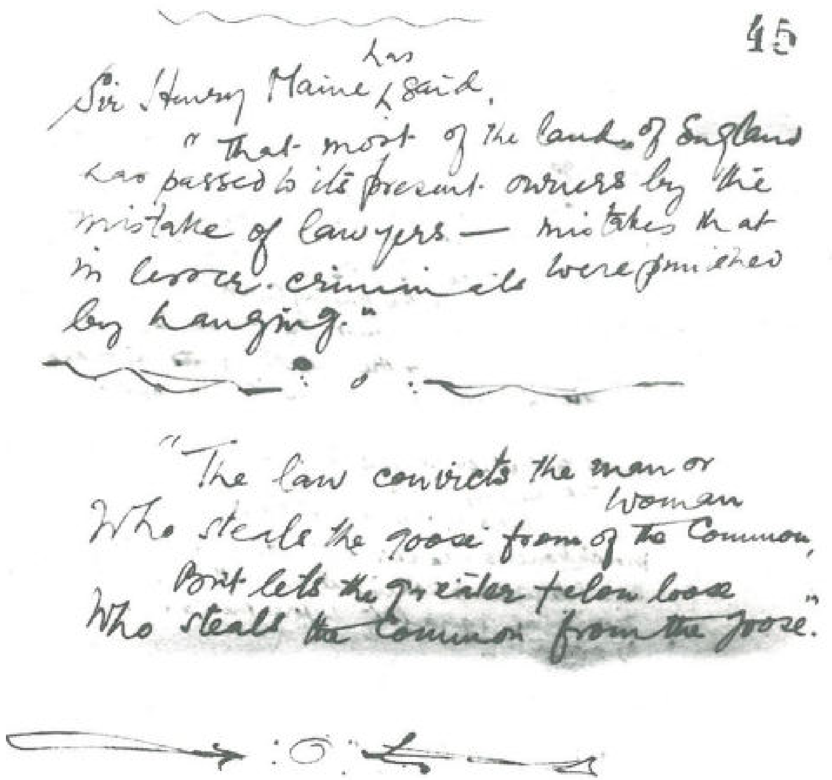
45

Sir Henry Maine has said,
"That most of the lands of England has passed to its present owners by the mistake of lawyers — mistakes that in error criminals were punished by hanging."

"The law convicts the man or woman
Who steals the goose from of the Common,
But lets the greater felon loose
Who steals the Common from the goose."

Downloaded from www.PDFshala.com

सर हेनरी मैन ने कहा—

"इंग्लैंड की ज्यादातर जमीन मौजूदा
मालिकों के हाथों में वकीलों की गलती
से पहुँच गई—ऐसी गलतियों से, जिनके लिए मामूली अपराधियों
को फाँसी दी गई।"

: * :

"कानून आम आदमी से हंस चुराने वाले
आदमी या औरत को सजा देता है,
लेकिन बड़े अपराधी को छोड़ देता है
जो हंस से आम आदमी को चुरा लेता है।"

: * :

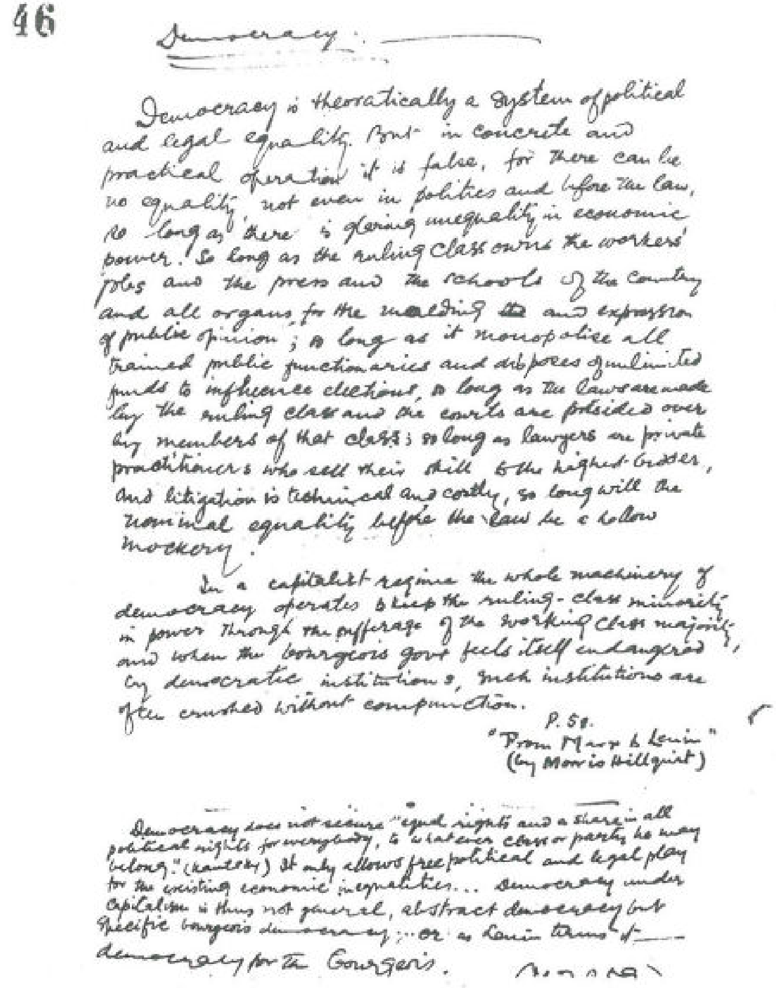

46

Democracy :

Democracy is theoratically a system of political and legal equality. But in concrete and practical operation it is false, for there can be no equality, not even in politics and before the law, so long as there is glaring inequality in economic power. So long as the ruling class owns the workers' jobs and the press and the schools of the country and all organs for the moulding and expression of public opinion; so long as it monopolise all trained public functionaries and disposes of unlimited funds to influence elections, so long as the laws are made by the ruling class and the courts are presided over by members of that class; so long as lawyers are private practitioners who sell their skill to the highest bidder, and litigation is technical and costly, so long will the nominal equality before the law be a hollow mockery.

In a capitalist regime the whole machinery of democracy operates to keep the ruling-class minority in power through the suffrage of the working class majority, and when the bourgeois govt feels itself endangered by democratic institutions, such institutions are often crushed without compunction.

P. 58.
"From Marx to Lenin"
(by Morris Hillquit)

Democracy does not secure "equal rights and a share in all political rights for everybody, to whatever class or party he may belong." (Kautsky) It only allows free political and legal play for the existing economic inequalities... Democracy under Capitalism is thus not general, abstract democracy but specific bourgeois democracy;... or as Lenin terms it — democracy for the bourgeois.

Downloaded from www.PDFshala.com

लोकतंत्र

लोकतंत्र सैद्धांतिक रूप से राजनीति और कानूनी समानता की व्यवस्था है, लेकिन वास्तविक और व्यावहारिक संचालन में यह झूठी है, क्योंकि जब तक आर्थिक सत्ता में घोर असमानता है, तब तक कोई समानता नहीं हो सकती। यहाँ तक कि राजनीति में और कानून के सामने भी जब तक सत्ताधारी वर्ग मजदूर के रोजगारों और देश की प्रेस तथा स्कूलों का मालिक है और जनमत को मोड़ने तथा उसकी अभिव्यक्ति के सभी साधन उनके हाथों में हैं; जब तक सभी प्रशिक्षित सार्वजनिक कार्यकर्ताओं पर उनका एकाधिकार है और चुनावों को प्रभावित करने के लिए उनके पास असीमित पैसा है; जब तक कानूनों का निर्माण सत्ताधारी वर्ग के द्वारा किया जाएगा और अदालतों में इस वर्ग के सदस्य पीठासीन हैं; जब तक वकील प्राइवेट प्रैक्टिशनर हैं, जो सबसे ऊँची बोली लगाने वाले को अपना हुनर बेचते हैं, और मुकदमेबाजी टेक्निकल तथा खर्चीली है, तब तक कानून के सामने नाममात्र की समानता भी एक खोखला मजाक होगी।

पूँजीवादी व्यवस्था में लोकतंत्र की पूरी मशीनरी बहुमत वाले श्रमिक वर्ग को तकलीफ देकर अल्पमत के सत्ताधारी वर्ग को सत्ता में बनाए रखने का काम करती है, और जब बुर्जुआ सरकार खुद को लोकतांत्रिक संस्थाओं के द्वारा खतरे में समझती है, जो ऐसी संस्थाओं को बिना किसी संकोच के अकसर कुचल दिया जाता है।

फ्रॉम मार्क्स टु लेनिन
(मोरिस हिलक्वाइट) *(पृ. 58)*

: * :

लोकतंत्र में समान अधिकार और सभी राजनीतिक अधिकारों में प्रत्येक को हिस्सा नहीं मिलता, भले ही वह किसी भी वर्ग या दल का हो। (कौट्स्की) इसमें सिर्फ मौजूदा आर्थिक असमानताओं के लिए राजनीति और कानूनी खेल करने की सुविधा मिलती है—इस प्रकार पूँजीवाद के अंतर्गत लोकतंत्र व्यापक और अमूर्त लोकतंत्र न होकर विशिष्ट बुर्जुआ लोकतंत्र होता है, अथवा जैसा कि लेनिन ने कहा—बुर्जुआ के लिए लोकतंत्र।

(पन्ना फटा है)

Downloaded from www.PDFshala.com

"Term "Revolution" defined":—

"The conception of revolution is not to be treated in the police interpretation of the term, in the sense of an armed rising. A party would be mad that would choose the method of insurrection on principle so long as it has at its disposal different, less costly and safer methods of action. In that sense social democracy was never revolutionary on principle. It is so only in the sense that it recognizes that when it attains political power it can not employ it for any purpose other than the abolition of the mode of production upon which the present system rests."
~~[illegible]~~
—Karl Kautsky.

— : : o : —

Some facts and figures about ~~England~~ United States

5 men can produce bread for 1000
1 man " " cotton cloth for 250
1 man " " woollens for 300
1 man " " boots & shoes 1000
—P.M. Broomhall.

— : : o : —

15,000,000 are living abject poverty who can't even maintain their working efficiency.
3,000,000 Child Labourers

— : : o : —

Re: England:—

Prewar estimates!

Total Production of England (per annum) £ 2000,000,000
Gains through foreign investments £ 200,000,000
£ 2200,000,000

1/9th part of the population take away 1/2 i.e. £ 1100,000,000
2/9th " " 1/3 of the Rest £ 1100,000,000 i.e. £ 300,000,000
2/3 ... " ...

Downloaded from www.PDFshala.com

क्रांति की परिभाषा

"क्रांति की अवधारणा को पुलिसिया व्याख्या के रूप में नहीं लेना चाहिए, यानी उसे सशस्त्र विद्रोह नहीं माना जाना चाहिए। कोई दल पागल ही होगा, जो सैद्धांतिक रूप से विद्रोह के इस तरीके को चुनेगा, जब तक कि इसको अंजाम देना, काररवाई के अधिक सुरक्षित तरीके से अलग और कम खर्चीला नहीं हो। इस अर्थ में सामाजिक लोकतंत्र, सैद्धांतिक रूप से कभी क्रांतिकारी नहीं रहा। यह इसी अर्थ में ऐसा है कि इसमें इस बात को मान्यता दी गई है कि राजनीति सत्ता मिलने पर यह उत्पादन के उस तरीके को हटाने के अलावा किसी और मकसद से उसका उपयोग नहीं करेगी, जिस पर मौजूदा व्यवस्था टिकी है।"

—कार्ल कौट्स्की

——————————— : * : ———————————

संयुक्त राज्य के बारे में कुछ तथ्य और आँकड़े

5 लोग 1,000 के लिए ब्रेड का उत्पादन कर सकते हैं।

1 व्यक्ति 300 लोगों के लिए गरम कपड़े बना सकता है।

1 व्यक्ति 1,000 लोगों के लिए जूते बना सकता है।

—आयरन हील पी. *(पृ. 78)*

——————————— : * : ———————————

15,000,000 लोग घोर गरीबी में जी रहे हैं,

जो अपनी कार्यदक्षता तक को कायम नहीं रख सकते।

3,000,000 बाल श्रमिक

——————————— : * : ———————————

संदर्भ : इंग्लैंड

युद्ध-पूर्व आकलन

इंग्लैंड का कुल उत्पादन 2000,000,000 पाउंड

विदेशी निवेश से लाभ 200,000,000 पाउंड

222,000,000 पाउंड

आबादी के 1/9वें भाग ने 1/2 = 1100,000,000 पाउंड

ले लिया

आबादी के 2/9 भाग ने बाकी में से 1/3 ले लिया 1100,000,000 पाउंड

(पृष्ठ फटा है)

Downloaded from www.PDFshala.com

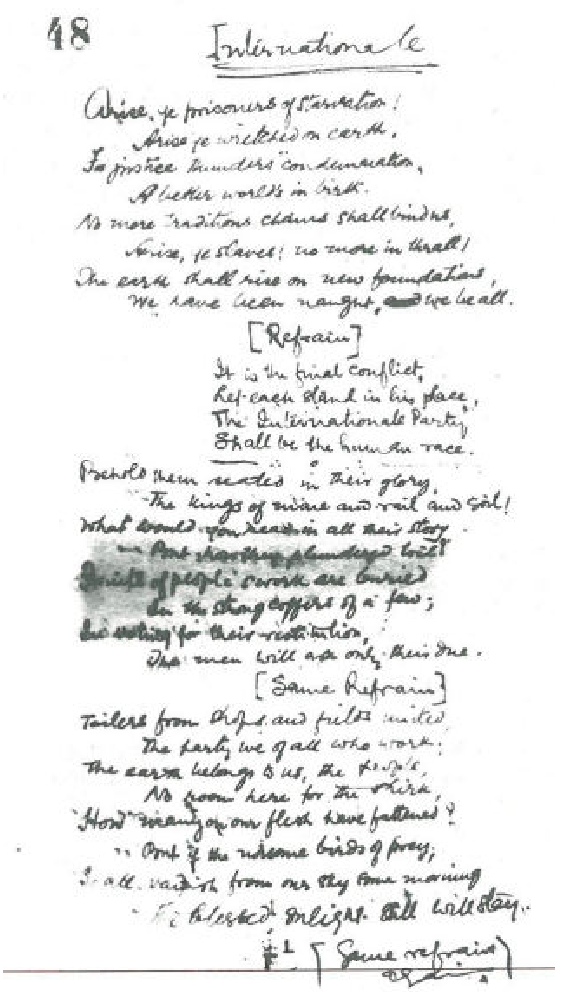
48
Internationale

Arise, ye prisoners of starvation!
Arise ye wretched on earth,
For justice thunders condemnation,
A better world's in birth.
No more traditions chains shall bind us,
Arise, ye slaves! no more in thrall!
The earth shall rise on new foundations,
We have been naught, we be all.

[Refrain]
It is the final conflict,
Let each stand in his place,
The Internationale Party
Shall be the human race.

Behold them seated in their glory
The kings of mine and rail and soil!
What would you read in all their story
But how they plundered toil?
Sum of people's work are buried
In the strong coffers of a few;
But nothing for their restitution,
The men will ask only their due.
[Same Refrain]

Toilers from [illegible] and fields united
The party we of all who work;
The earth belongs to us, the people,
No room here for the shirk.
How many on our flesh have fattened?
But if the noisome birds of prey,
All shall vanish from our sky some morning
[illegible] the blessed sunlight still will stay.
[illegible] [Same refrain]

इंटरनेशनल

उठो, ओ गरीबी के कैदियो!
उठो, ओ धरती पर बहुत बदकिस्मतो!
इनसाफ के लिए गरजो, यह तकाजा है वक्त का
यही होगा नया जन्म।
परंपराओं की कोई जंजीर अब न जकड़ेगी हमें
गुलामो, उठो, अब गुलामी में न रहो!
धरती उठ खड़ी होगी नई बुनियादों पर
हम तबाह हैं, लेकिन सबकुछ पा लेंगे।

(टेक)

यह आखरी मुकाबला है,
हर कोई जहाँ है, उठ खड़ा हो
पूरी मानव जाति बनेगी
इंटरनेशनल पार्टी

: * :

घमंड में तने जो बैठे हैं, उन्हें देखो,
मेरे तुम्हारे और धरती के राजा!

Downloaded from www.PDFshala.com

तुम उनकी कहानी में क्या पढ़ोगे
सिवा इसके कि उन्होंने मेहनत को कैसे लूटा?
लोगों की मेहनत का फल
चला गया है कुछ की तिजोरियों में,
उनकी वापसी के लिए वोट मत दो
मतदान करने में सिर्फ अपना हक माँगो॥
(वही टेक)
दुकानों और खेतों के मेहनतकश
पार्टी काम करेगी हर मेहनतकश के लिए
धरती हमारी, हम जनता की है,
कामचोरों की यहाँ कोई जगह नहीं
कितने ज्यादा लोग हमारे मांस से मोटे हो गए?
लेकिन अगर घृणित शिकारी चिड़िया
किसी दिन आकाश से गायब हो भी गई
तो भी आनंददायक सूर्य-किरण रहेंगी।
(फिर वही टेक)

Downloaded from www.PDFshala.com

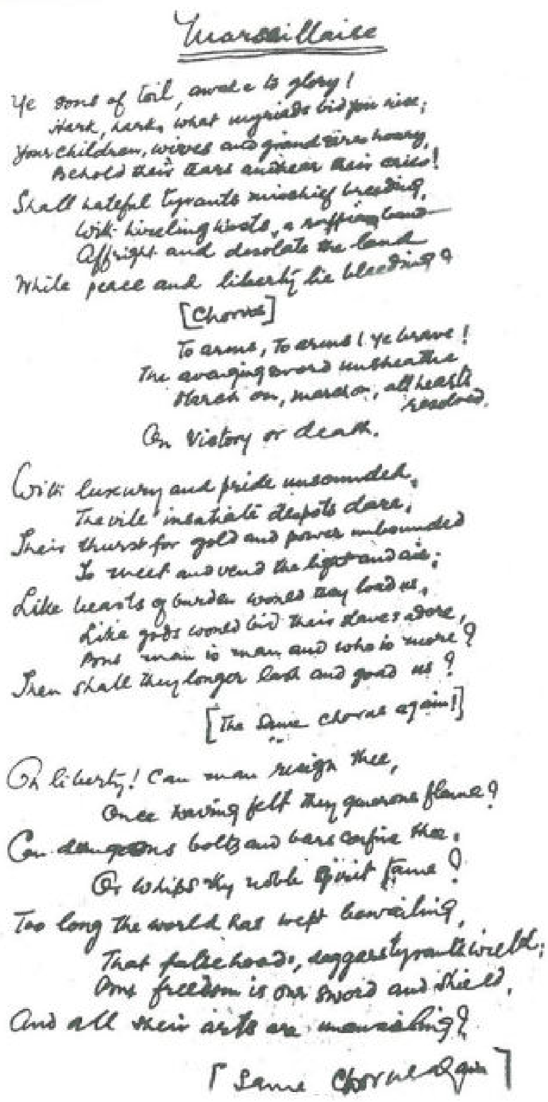
Marseillaise

Ye sons of toil, awake to glory!
Hark, hark, what myriads bid you rise;
Your children, wives and grandsires hoary,
Behold their tears and hear their cries!
Shall hateful tyrants mischief breeding,
With hireling hosts, a ruffian band—
Affright and desolate the land
While peace and liberty lie bleeding?

[Chorus]
To arms, to arms! ye brave!
The avenging sword unsheathe
March on, march on, all hearts resolved
On victory or death.

With luxury and pride surrounded,
The vile insatiate despots dare,
Their thirst for gold and power unbounded
To meet and vend the light and air;
Like beasts of burden would they load us,
Like gods would bid their slaves adore,
But man is man and who is more?
Then shall they longer lash and goad us?
[The same chorus again!]

Oh liberty! Can man resign thee,
Once having felt thy generous flame?
Can dungeons bolts and bars confine thee,
Or whips thy noble spirit tame?
Too long the world has wept bewailing,
That falsehoods dagger tyrants wield;
But freedom is our sword and shield,
And all their arts are unavailing?
[Same Chorus again]

मारसेइलेइस

ओ मेहनत के बेटो, गौरव के लिए उठो
पूछता हूँ, कितनी बार कहने से उठोगे;
यहाँ तुम्हारे बच्चों, बीवियों तथा पितामहों के
आँसू देखो और उनकी चीखें सुनो!
क्या आततायियों के समूह घिनौने अत्याचारी शरारती बढ़ते रहेंगे
उनके भाड़े के टट्टू बढ़ते रहेंगे—
इस सरजमीं को खौफजदा और वीरान और तबाह करते
जबकि अमन और आजादी का बहता रहेगा खून?

(कोरस)

ओ बहादुरो, हथियार उठाओ, हथियार उठाओ!
बदला लेने, तलवार को म्यान से निकालो
आगे बढ़ो, आगे बढ़ो, पूरी ताकत और संकल्प से, जीतो या मर जाओ।
बैठे रहे आराम में, गर्व को दबाए
तो कमीने करेंगे तुम पर मनमानी, ललकारेंगे

Downloaded from www.PDFshala.com

उनकी सोने और सत्ता की हवस रहेगी बेहद
प्रकाश और हवा पाकर बेचेंगे
वे भारवाही पशु की तरह हमें हाँकेंगे,
वे देवताओं की तरह आदेश देंगे
गुलाम उनका पालन करते रहेंगे,
लेकिन आदमी, फिर आदमी है, उससे बड़ा कौन?
फिर क्या वे टिक पाएँगे और हमें मनमर्जी से हाँक पाएँगे?

(पुन: वही कोरस)

ओ आजादी! क्या आदमी तुम्हें छोड़ सकता है,
तुम्हारी उदार ऊष्मा को महसूस करने के बाद?
क्या काल कोठरियों की जंजीरें और सलाखें बाँध सकती हैं तुम्हें
या फिर कोड़ों की मार तुम्हारी महान् आत्मा को कर सकती है वश में?
दुनिया बहुत समय तक विलाप कर चुकी झूठे, जालिम के हाथ में है कटार;
लेकिन आजादी हमारी तलवार और ढाल है,
और उनकी सभी चालबाजियाँ हो रही हैं उजागर?
(पुन: वही कोरस)

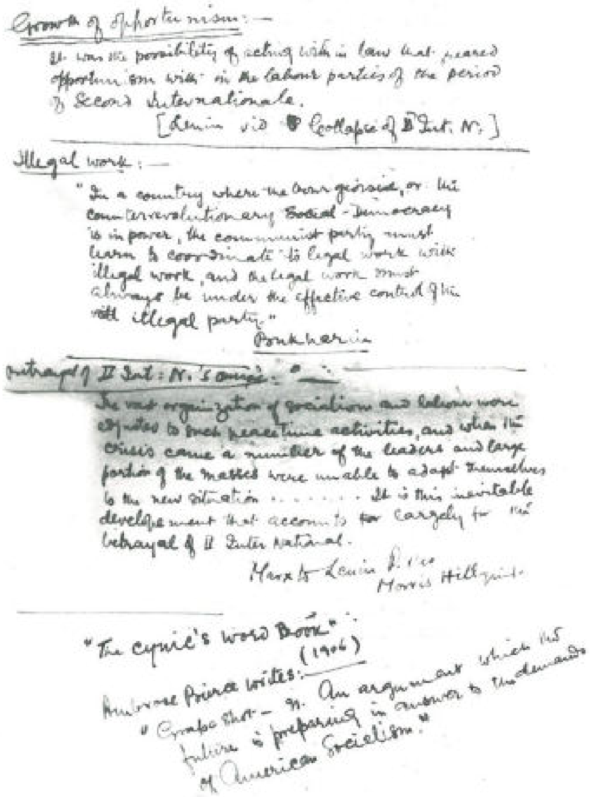
Growth of Opportunism:—
It was the possibility of acting within law that reared opportunism within the labour parties of the period of Second Internationale.
[Lenin vide Collapse of II Int. N.]

Illegal work:—
"In a country where the bourgeoisie, or the counterrevolutionary Social-Democracy is in power, the communist party must learn to coordinate its legal work with illegal work, and the legal work must always be under the effective control of the illegal party."
Boukharin

Betrayal of II Int: N.'s origin:—
The vast organization of socialism and labour were adapted to such peace time activities, and when the crisis came a number of the leaders and large portion of the masses were unable to adapt themselves to the new situation .... It is this inevitable development that accounts for largely for the betrayal of II International.
Marx to Lenin p. 120
Morris Hillquit.

"The Cynic's Word Book" (1906)
Ambrose Pierce writes:
"Grape shot — n. An argument which the future is preparing in answer to the demands of American Socialism."

पनपती मौकापरस्ती

कानून के दायरे में काम करने की संभावना ने ही स्कॉटलैंड इंटरनेशनल के समय की लेबर पार्टियों में मौकापरस्ती को पनपा दिया।

(लेनिन वाइड कॉलेप्स ऑफ II इंट. ने.)

———————— : * : ————————

Downloaded from www.PDFshala.com

गैर-कानूनी काम

“ऐसे देश में जहाँ बुर्जुआवादी, क्रांति-विरोधी, सोशल डेमोक्रेसी सत्ता में है, वहाँ कम्युनिस्ट पार्टी को अपने कानूनी काम को गैर-कानूनी काम के साथ समन्वित करना सीखना चाहिए, और कानूनी काम हमेशा गैर-कानूनी पार्टी के प्रभावी नियंत्रण में ही होना चाहिए।”

—बुखरिन

: * :

इंटरनेशनल के मकसद से गद्दारी

समाजवाद और लेबर के विशाल संगठन को इस तरह शांतिकालीन गतिविधियों से समायोजित किया गया; और जब संकट आया, तो अनेक नेता और जनता का बड़ा हिस्सा नई स्थिति से तालमेल नहीं बैठा पाया—

II इंटरनेशनल के साथ विश्वासघात मुख्यत: इसी लाज़िमी घटना के कारण हुआ।

मार्क्स टू लेनिन, पी
मोरिस हालक्वाइट *(पृ. 140)*

: * :

‘दि सिनिक्स वर्डबुक’ (1906)

एंब्रोस प्रियर्से लिखता है—

“ग्रेप शॉट : एक दलील, जो भविष्य के अमेरिकी समाजवाद की माँगों का जवाब देने के लिए तैयार कर रहा है।”

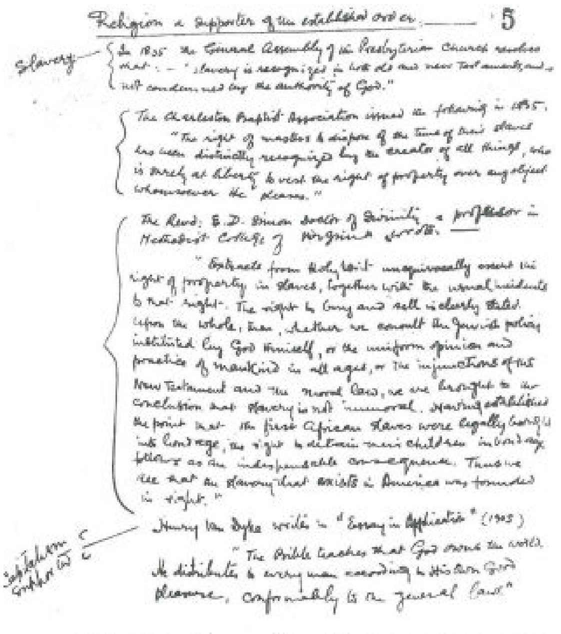
Religion a supporter of the established order — 5

Slavery — In 1835 the General Assembly of the Presbyterian Church resolved that :— "slavery is recognized in both old and new Testaments, and is not condemned by the authority of God."

The Charleston Baptist Association issued the following in 1835.
"The right of masters to dispose of the time of their slaves has been distinctly recognized by the creator of all things, who is surely at liberty to vest the right of property over any object whomsoever He pleases."

The Revd. E. D. Simon doctor of Divinity & professor in Methodist College of Virginia wrote.
"Extracts from Holy Writ unequivocally assert the right of property in slaves, together with the usual incidents to that right. The right to buy and sell is clearly stated. Upon the whole, then, whether we consult the Jewish policy instituted by God Himself, or the uniform opinion and practice of mankind in all ages, or the injunctions of the New Testament and the moral law, we are brought to the conclusion that slavery is not immoral. Having established the point that the first African slaves were legally brought into bondage, the right to detain their children in bondage follows as an indispensable consequence. Thus we see that the slavery that exists in America was founded in right."

Henry Van Dyke writes in "Essays in Application" (1905)
"The Bible teaches that God owns the world. He distributes to every man according to His own good pleasure, conformably to the general laws"

धर्म है स्थापित व्यवस्था का समर्थक

Downloaded from www.PDFshala.com

दासता

प्रेस्बाइटेरियन चर्च की जनरल असेंबली ने 1835 में संकल्प लिया कि “दासता को ओल्ड और न्यू टेस्टामेंट, दोनों में मान्यता है, और गॉड की अथॉरिटी द्वारा उसकी निंदा नहीं की जाती।”

शारलेस्टन ब्रेविटरस्ट एसोसिएशन ने 1835 में निम्नलिखित संकल्प पारित किया—“सिरजनहार द्वारा दासों के समय पर मालिक के अधिकार को सभी चीजों के द्वारा स्पष्ट रूप से मान्य किया गया है। उसके मालिक को उसकी किसी भी वस्तु पर मिल्कियत की पूरी आजादी है।”

रेव. ई.डी. सायमन, डायरेक्टर ऑफ डिविनिटी, मेथॉडिस्ट कॉलेज ऑफ वर्जीनिया के प्रोफेसर ने लिखा—

“होली रिट के उद्धरणों में स्पष्ट रूप से जोर देकर कहा गया है कि दासों पर स्वामित्व का अधिकार उस अधिकार के सामान्य घटनाक्रम के साथ जुड़ा है। खरीदने और बेचने के उनके अधिकार का स्पष्ट रूप से उल्लेख है। पूरे विषय पर, भले ही हम स्वयं गॉड द्वारा निर्धारित ज्यूइश पॉलिसी को पढ़ लें अथवा सभी युगों में समान जनमत और व्यवहार अथवा न्यू टेस्टामेंट के आदेशों और नैतिक कानून को, हम इस नतीजे पर पहुँचते हैं कि दासता अनैतिक नहीं है। इस बात को प्रमाणित करने के बाद कि सबसे पहले अफ्रीकन दासों को कानूनन दास बनाया गया, उनके बच्चों को दास बनाने का अधिकार अनिवार्य रूप से निष्कर्षत: सामने आता है। इस प्रकार अमेरिका में जो दासता प्रचलित है, वह अधिकार के तहत है।”

पूँजीवाद का समर्थन

हेनरी वान डाइक ने ‘एसे इन एप्लीकेशन’ (1905) में लिखा—

“बाइबल सिखाती है कि गॉड दुनिया का मालिक है। वह अपनी मर्जी से हर एक व्यक्ति को, सामान्य नियमों के अनुसार चीजें वितरित करता है।”

: * :

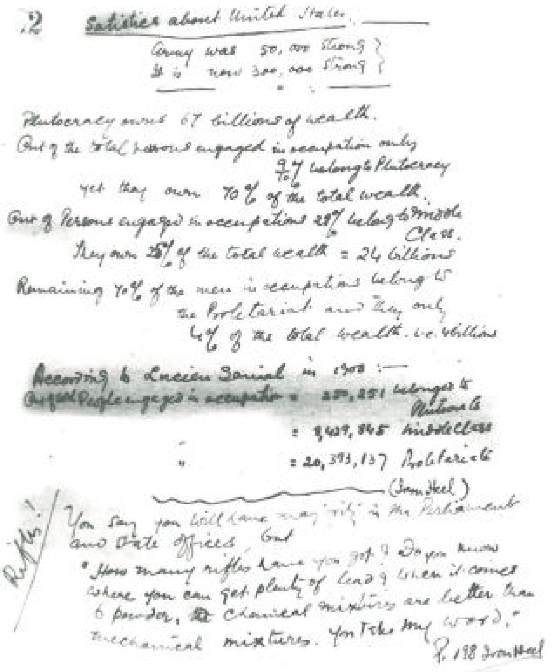

2 Statistics about United States.

Army was 50,000 strong
It is now 300,000 strong

Plutocracy owns 67 billions of wealth.
Out of the total persons engaged in occupation only 9/10% belong to Plutocracy
yet they own 70% of the total wealth.
Out of persons engaged in occupations 29% belong to middle class.
They own 25% of the total wealth = 24 billions
Remaining 70% of the men in occupations belong to the Proletariat and they only 4% of the total wealth i.e. [illegible] billions

According to Lucien Sanial in 1900:—
Out of all People engaged in occupation = 250,251 belonged to Plutocrats
= 8,429,845 middle class
= 20,393,137 Proletariats

(Iron Heel)

Rifles!

You say you will have many 'ifs' in the Parliament and State offices, but
"How many rifles have you got? Do you know where you can get plenty of lead? When it comes to powder, chemical mixtures are better than mechanical mixtures. You take my word."

P. 198 Iron Heel

Downloaded from www.PDFshala.com

संयुक्त राज्य से संबंधित आँकड़े

सेना में 50,000 लोग थे

अब 3,00,000 लोग हैं।

——————— : * : ——————————

प्लूटोक्रेसी के पास 67 बिलियन की संपदा है।

व्यवसायों में लगे कुल लोगों में सिर्फ 9/10 % प्लूटोक्रेसी से संबंधित हैं,

फिर भी उनके पास कुल संपदा का 70 % हिस्सा है।

व्यवसायों में लगे लोगों में से 29 % मध्यम वर्ग के हैं,

उनके पास कुल संपदा का 25 % =24 बिलियन है।

व्यवसायों में लगे लोगों में शेष 70 % लोग प्रोलेटेरियट से जुड़े हैं और उन्हें कुल संपदा में से सिर्फ 4 % अर्थात् 4 बिलियन (मिलता) है।

ल्यूसियन सेनियल के अनुसार, 1900 में—

व्यवसायों में लगे कुल लोगों में से =	250, 251 प्लूटोक्रेट्स से जुड़े हैं।
व्यवसायों में लगे कुल लोगों में से =	8,429,845 मध्यम वर्ग के हैं
व्यवसायों में लगे कुल लोगों में से =	20,395,137 प्रोलेटेरियट

—आयरन हील

—————————— : * : ——————————

रायफल्स

तुम कहते हो कि तुम्हें पार्लियामेंट और स्टेट ऑफिसेज में बहुमत मिलेगा, लेकिन तुम्हारे पास कितनी रायफल्स हैं? तुम्हें पता है कि तुम्हें बड़ी मात्रा में सीसा कहाँ मिल सकता है? जहाँ तक बारूद की बात है, तो रासायनिक मिश्रण यांत्रिकीय मिश्रणों से बेहतर हैं। मेरी बात को लिख लो।

—आयरन हील *(पृ. 198)*

Downloaded from www.PDFshala.com

<u>Power & its measurement.</u>

A socialist leader had addressed a meeting of the plutocrats and charged them of mismanaging a society and thereby thrown the whole responsibility on their shoulders, the responsibility for the woes and misery that confronts the suffering humanity. Afterwards a capitalist (Mr. Wickson) rose and addressed him as follows:—

"This, then, is our answer. We have no words to waste on you. When you reach out your vaunted strong hands for our palaces and purpled ease, we will show you what strength is. In roar of shell and shrapnel and in whine of machine guns will our answer be couched. We will grind you revolutionists down under our heel, and we shall walk upon your faces. The world is ours, we are its lords and ours it shall remain. As for the host of labour, it has always been in the dirt since history began, and I read history aright. And in the dirt it shall remain so long as I and mine and those that come after us have the power. There is the word. It is the king of words — Power. Not God, not mammon, but Power. Pour it over your tongue till it tingles with it. Power."

"I am answered," Earnest (the socialist leader) said quietly. "It is the only answer that could be given. Power. It is what we of the working class preach. We know, and well we know by bitter experience that, no appeal for the right, for justice, for humanity can ever touch you. Your hearts are hard as your heels with which you tread upon the faces of the poor. So we have preached power. By the Power of our ballots on election day will we take your government away from you ———."

"What if you do get a majority, a sweeping majority on election day," Mr. Wickson broke in to demand, "Suppose we refuse to turn the Govt. over to you after you have captured it at the ballot box?"

Downloaded from www.PDFshala.com

को (अपठनीय-फटा हुआ) शक्ति

एक समाजवादी नेता ने प्लूटोक्रेट्स धनिकतंत्र की एक सभा को संबोधित करते हुए उन पर समाज की व्यवस्था बिगाड़ने का आरोप लगाया था और उन पर सारी जिम्मेदारी डाल दी थी, मानवता की सभी तकलीफों और परेशानियों की जिम्मेदारी। इसके बाद एक पूँजीवादी (मि. विक्सन) उठा और निम्नलिखित बात कही—

"इस पर हमारा जवाब यह है—हमारे पास तुम पर बेकार करने के लिए शब्द नहीं हैं। जब तुम घमंड से भरकर अपने मजबूत हाथ हमारे महलों तक पहुँचाओगे, और हमारे आराम में दखल दोगे, तो हम तुम्हें दिखाएँगे कि शैलर की दहाड़ में और बम के गोलों की गड़गड़ाहट में कितनी ताकत होती है और मशीनगनों की बहरा कर देने वाली आवाज में कितना दम होता है? हमारा जवाब यही होगा।"

तुम क्रांतिकारियों को हम एड़ी तले पीसकर रख देंगे, और तुम्हारे चेहरों को पैरों से रौंद देंगे। दुनिया हमारी है। हम इसके मालिक हैं और यह हमारी ही रहेगी। जहाँ तक मजदूर वर्ग का सवाल है, तो यह इतिहास में शुरू से ही नीच रहा है, और मैंने इतिहास को सही पढ़ा है।

जब तक हम और हमारे बाद आनेवाले लोग सत्ता में हैं, यह नीचता में ही रहेगा।

एक शब्द है—सत्ता। यह शब्दों का राजा है—

सत्ता ही सबकुछ है गॉड नहीं, पैसा नहीं सत्ता ही सबकुछ है। अपनी जबान पर रख लो और तब तक उसे रखे रहो, जब तक कि यह उसे झनझनाने न लगे। सत्ता"

Downloaded from www.PDFshala.com

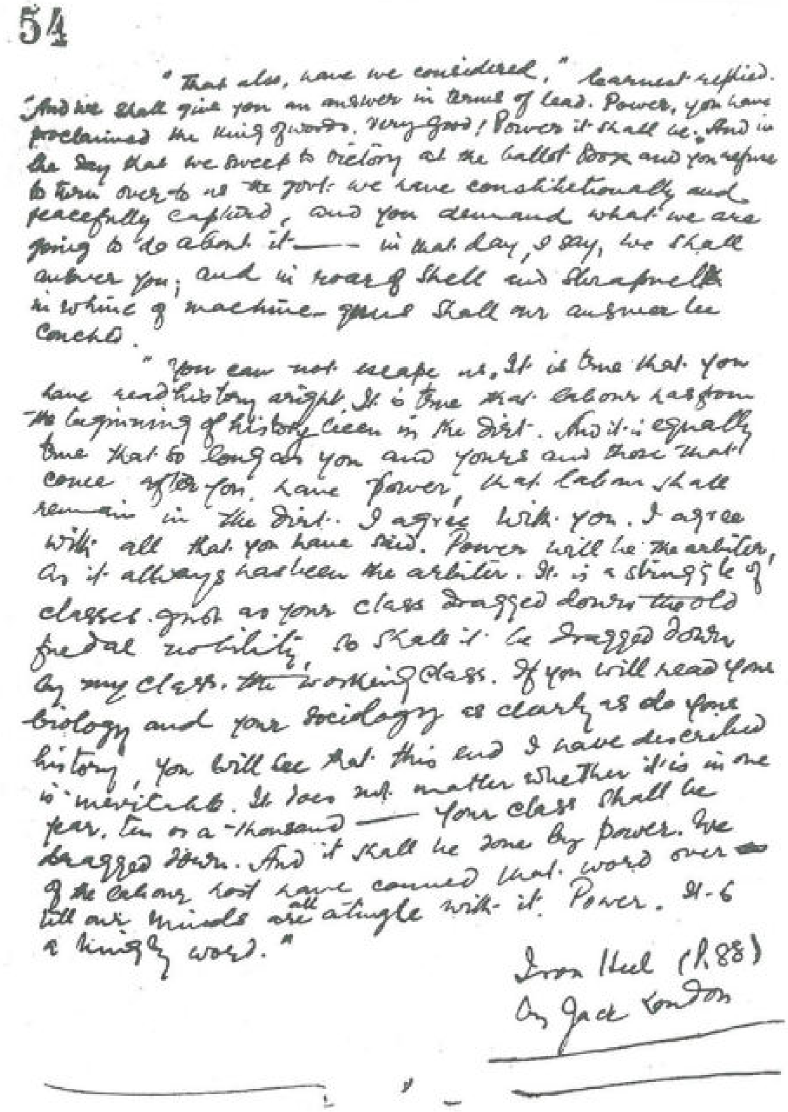
54

"That also, have we considered," Ernest replied. "And we shall give you an answer in terms of lead. Power, you have proclaimed the king of words. Very good! Power it shall be. And in the day that we sweep to victory at the ballot box and you refuse to turn over to us the govt. we have constitutionally and peacefully captured, and you demand what we are going to do about it —— in that day, I say, we shall answer you; and in roar of shell and shrapnel & in whine of machine-guns shall our answer be couched.

"You can not escape us. It is true that you have read history aright. It is true that labour has from the beginning of history been in the dirt. And it is equally true that so long as you and yours and those that come after you have power, that labour shall remain in the dirt. I agree with you. I agree with all that you have said. Power will be the arbiter, as it always has been the arbiter. It is a struggle of classes. Just as your class dragged down the old feudal nobility, so shall it be dragged down by my class, the working class. If you will read your biology and your sociology as clearly as do your history, you will see that this end I have described is inevitable. It does not matter whether it is in one year, ten or a thousand — your class shall be dragged down. And it shall be done by power. We of the labour host have conned that word over till our minds are all atingle with it. Power. It is a kingly word."

Iron Heel (p.88)
by Jack London

अर्नेस्ट (समाजवादी नेता) ने गंभीरता से कहा, "मुझे जवाब मिल गया।" "यही जवाब दिया भी जा सकता था। सत्ता का ही उपदेश हम मजदूर वर्ग के लोग देते हैं। हमें पता है, हम यह बहुत कड़वे अनुभव से जानते हैं कि अधिकार, इनसाफ, मानवता की किसी अपील से तुम नहीं पसीजोगे। तुम्हारे दिल तुम्हारी एड़ियों की तरह ही कठोर हैं, जिनसे तुम गरीबों के मुँह कुचलते हो। लिहाजा, हमने सत्ता का उपदेश दिया है। अपने मतपत्र (बैलेट) की ताकत से हम चुनाव के दिन तुमसे सत्ता छीन लेंगे।"

मि. विक्सन ने बीच में टोककर पूछा, "अगर तुमको चुनाव के दिन बहुमत, पूरा बहुमत मिल भी जाए तो क्या?" "सोचा है कि बैलेट बॉक्स के जरिए तुम्हारे सत्ता पर काबिज हो जाने के बाद हम सरकार तुम्हारे हवाले करने से इनकार कर दें तो?"

अर्नेस्ट ने जवाब दिया, "उसके बारे में भी हमने सोच लिया है। हम तुम्हें गोलियों की भाषा में जवाब देंगे। तुमने सत्ता को 'शब्दों का राजा' कहा है। बहुत अच्छा! सत्ता ऐसी ही रहेगी। जिस दिन हम चुनाव में जीत जाएँगे, और तुम हमें सरकार सौंपने से इनकार कर दोगे, जिसे हमने संवैधानिक रूप से शांतिपूर्वक प्राप्त करने का

Downloaded from www.PDFshala.com

अधिकार जीता है, और तुम पूछोगे कि उस दिन हम क्या करेंगे, तो हम तुम्हें जवाब देंगे; और यह जवाब बमगोलों की गरज तथा मशीनगनों की बहरा कर देने वाली आवाज के साथ होगा।

"तुम हमसे बचकर नहीं जा सकते। यह सही है कि तुमने इतिहास सही पढ़ा है। यह सही है कि मजदूर वर्ग इतिहास में शुरू से ही नीचता में रहा है। यह भी उतना ही सही है कि जब तक तुम और तुम्हारे लोग तथा तुम्हारे बाद आनेवाले लोग सत्ता में हैं, मजदूर वर्ग नीचता में ही रहेगा, मैं तुमसे सहमत हूँ। सत्ता ही इनसाफ करेगी, क्योंकि इसने ही सदा से इनसाफ किया है। यह वर्गों का संघर्ष है। जिस तरह तुम्हारे वर्ग ने सामंती कुलीनों को नीचे उतारा था, वैसे ही मेरे वर्ग, मजदूर वर्ग द्वारा उसे उतारा जाएगा। अगर तुम अपने जीव विज्ञान और समाजशास्त्र को भी उतना ही सही पढ़ो, जितना इतिहास को पढ़ा था, तो तुम समझ जाओगे कि मैंने जिस अंत का जिक्र किया, वह होना लाजमी है। इससे फर्क नहीं पड़ता कि यह एक साल में होगा या दस या हजार साल में—तुम्हारे वर्ग को नीचे उतारा ही जाएगा। यह सत्ता के बल पर किया जाएगा। हम मजदूर वर्ग के लोगों ने इस शब्द पर ध्यानपूर्वक विचार किया है और हमारा दिमाग इसी में लगा हुआ है। सत्ता—यह राजसी शब्द है।"

—आयरन हील जेक लंडन *(पृ. 353)*

55

Figures :—

England :—

1922 — number of unemployment 1,135,000

1926 — it has oscillated to 1¼ and 1½ millions i.e. 1,250,000 to 1,500,000

Downloaded from www.PDFshala.com

Betrayal of the English labour leaders:—

The years 1911 to 1913 were times of unparalleled class struggles of the miners, railwaymen, and transport workers generally. In August 1911 a national, in other words a general, strike broke out on the railways. The vague shadow of revolution hovered over Britain in those days. The leaders exerted all their strength in order to paralyze the movement. Their motive was 'Patriotism': the affair was occurring at the time of the Agadir incident, which threatened to lead to a war with Germany. As is well known today, the premier summoned the workers' leaders to a secret council, and called them to the salvation of the fatherland. And leaders did all that lay in their power, strengthening the bourgeoisie, and thus preparing the way for an imperialist slaughter.

P. S.
Ceres in Britain [illegible]
[illegible]

आँकड़े

इंग्लैंड—

1922—बेरोजगारों की संख्या 1,135,000

1926— यह और मिलियन के बीच झूलती रही, अर्थात् 1,250,000 से 1,500,000 के बीच।

अंग्रेज मजदूर नेताओं की गद्दारी

साल 1911 से 1913 तक खानकर्मियों, रेलवे मैन तथा परिवहन मजदूरों के अतुलनीय वर्ग संघर्ष का समय था। अगस्त 1911 में एक राष्ट्रीय, अन्य शब्दों में सामान्य, रेलवे हड़ताल हो गई। उन दिनों ब्रिटेन पर क्रांति की धुँधली छाया मँडरा रही थी। नेताओं ने आंदोलन को पंगु बनाने के लिए अपनी पूरी ताकत झोंक दी। उनका प्रेरक शब्द था 'देशभक्ति'; यह कार्य अगादिर घटना के समय हो रहा था, जिससे जर्मनी के साथ जंग का खतरा था।

जैसा कि आज सुविदित है, प्रीमियर प्रधानमंत्री ने मजदूरों के नेताओं की एक गुप्त बैठक बुलाई और उनसे पितृभूमि की मुक्ति का आह्वान किया। नेताओं ने अपनी पूरी ताकत लगाकर जो मुमकिन था वह किया, जिससे बुर्जुआ मजबूत हुए और साम्राज्यवादी संहार का मार्ग प्रशस्त हुआ।

व्हेयर इज ब्रिटेन
ट्रोट्स्की

Downloaded from www.PDFshala.com

Betrayal :—

It was only after 1920 the movement returned to its bounds, after 'Black Friday' when the Triple alliance of miners', railwaymen's, and transport leaders betrayed the general strike. P. 3

For Reform a threat of revolution is necessary :—

The British bourgeoisie reckoned that by such means (reforms) a revolution could be avoided. It follows, therefore, that even for the introduction of reforms the principle of gradualness alone is insufficient, and that an actual threat of revolution is necessary. P. 29

Social Solidarity :—

It would seem that once we stand for the annihilation of a privileged class which has no desire to pass from the scene, we have therein the basic content of the class struggle. But no, Macdonald desires to 'evoke' the consciousness of social solidarity. With whom? The solidarity of the working class is the expression of its internal welding in the struggle with the bourgeoisie.

The social solidarity which Macdonald preaches is the solidarity of the exploited with the exploiters, in other words, the maintenance of exploitation.

Revolution a calamity ;—

"The revolution in Russia," says Macdonald "taught us a great lesson. It showed that revolution is a ruin and a calamity & nothing more."

(next Page)

Downloaded from www.PDFshala.com

गद्‌दारी

1920 के बाद ही आंदोलन सीमित हुआ, 'ब्लैक फ्राइडे' के बाद, जब खननकर्मियों, रेलवे और ट्रांसपोर्टरों के नेताओं ने व्यापक हड़ताल के साथ गद्‌दारी की।

——————————: * :——————————

सुधार के लिए क्रांति का खतरा जरूरी है

---अंग्रेज बुर्जुआ यह मानकर चल रहे थे कि इन साधनों (सुधार) से क्रांति को टाला जा सकता है। लिहाजा, समझ में आया कि सुधार लागू करने के लिए सिर्फ धीरे-धीरे काम करते रहने का सिद्‌धांत ही पर्याप्त नहीं है, और क्रांति का एक वास्तविक खतरा जरूरी है।

——————————: * :——————————

सामाजिक एकजुटता

---ऐसा लगता है कि अगर हम एक बार परिदृश्य से हटने को अनिच्छुक, विशेषाधिकार प्राप्त वर्ग के संहार का पक्ष लें तो हमें वर्ग संघर्ष का बुनियादी सारतत्त्व उसमें मिल जाएगा। लेकिन नहीं, मैक्डोनाल्ड सामाजिक एकजुटता की चेतना 'जगाना' चाहते हैं। किसके साथ? मजदूर वर्ग की एकजुटता, बुर्जुआ के साथ संघर्ष में आंतरिक सुसंबद्‌धता की अभिव्यक्ति है।

Downloaded from www.PDFshala.com

57

Revolution leads only to calamity! But the British democracy led to the imperialist war, ... with the ruin of which the calamities of revolution cannot, of course, compared in the very least. But in addition to this, what deaf ears and shameless face are necessary in order in the face of a revolution which overthrew Tsarism, nobility and bourgeoisie shook the Church, awakened to a new life a nation of 130 millions, a whole family of nations, to declare that revolution is a calamity and nothing more.

P. 64.

Peaceful?—

When and where did the ruling class ever yield power and property on the order of a peaceful vote — and especially such a class as the British bourgeoisie, which has behind it centuries of world rapacity. P. 66

Aim of Socialism:— Peace

It is absolutely unchallenged that the aim of Socialism is to eliminate force, first of all in its most crude and bloody forms, and afterwards in other more concealed forms.

P. 80

"Where is Britain going?" Trotsky.

Aim of the World Revolution:—

1. To overthrow Capitalism
2. To control the nature for the service of humanity.

This is how Bukharin defined it.

जिस सामाजिक एकजुटता का मैक्डोनाल्ड उपदेश दे रहे हैं, वह शोषितों की शोषकों के साथ एकजुटता है। शोषण को बनाए रखने के अलावा और कुछ नहीं है।

क्रांति तो विपदा को ही जन्म देती है, लेकिन ब्रिटिश जनतंत्र ने तो साम्राज्यवादी युद्ध को जन्म दे दिया, जिसकी बरबादी की तुलना क्रांति की विपदाओं से तो निश्चित तौर पर तनिक भी नहीं की जा सकती। फिर भी, जिस क्रांति से जारशाही, कुलीनतंत्र और बुर्जुआ वर्ग को उखाड़ फेंका, चर्च को हिलाकर रख दिया। 130 करोड़ लोगों के एक राष्ट्र या राष्ट्रों के एक समूचे कुल में, एक नए जीवन का संचार किया। उसके सामने यह घोषणा करने के लिए कि क्रांति एक विपदा के सिवाय और कुछ नहीं है। ऐसे ही बहरे कानों और निर्लज्ज चेहरों की जरूरत है। *(पृ. 64)*

: * :

Downloaded from www.PDFshala.com

शांतिप्रिय?

कब और कहाँ सत्ताधारी वर्ग ने शांतिपूर्ण मतदान के जरिए कभी सत्ता और संपत्ति सौंपी है? विशेषकर ब्रिटिश बुर्जुआ जैसे वर्ग ने, जिसका दुनिया में लूटमार करने का सदियों का इतिहास है। *(पृ. 66)*

———————— : * : ————————

समाजवादी शांति का मकसद

यह बात पूरी तरह अकाट्य है कि समाजवाद का मकसद, ताकत के सबसे पहले, सर्वाधिक भौंड़े और खूनी स्वरूप को खत्म करना है, और इसके बाद इसके छुपे रूपों को।

—हेचर इज ब्रिटेन गोइंग
ट्रॉट्स्की *(पृ. 80)*

———————— : * : ————————

विश्व क्रांति का लक्ष्य

1. पूँजीवाद को हटाना
2. मानवता की सेवा के लिए प्रकृति पर नियंत्रण करना

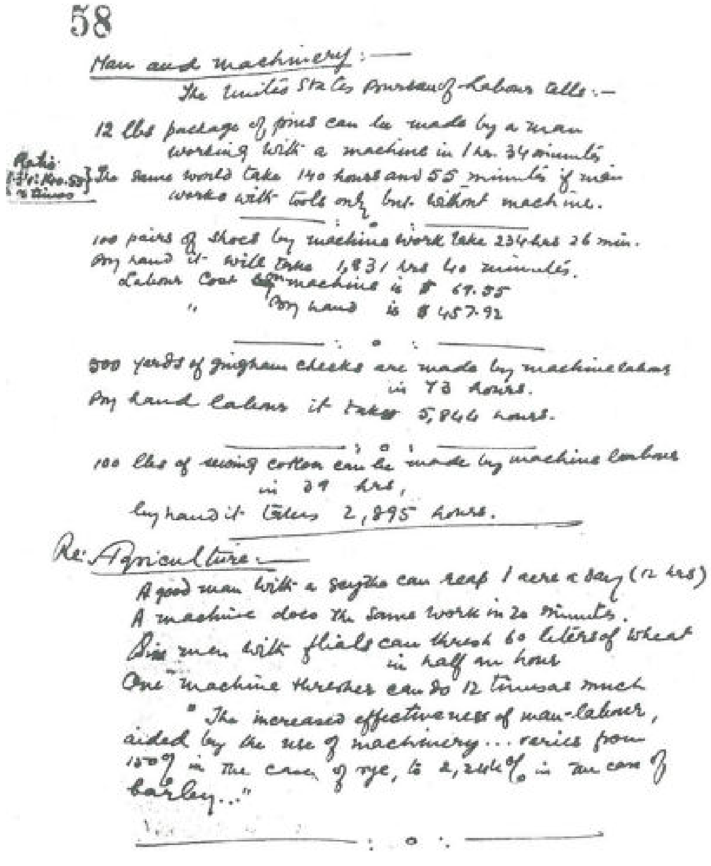
58

Man and machinery :—
The United States Bureau of Labour tells :—

12 lbs package of pins can be made by a man working with a machine in 1 hr. 34 minutes. The same would take 140 hours and 55 minutes if man works with tools only but without machine.

Ratio: [1 : 90] times

100 pairs of shoes by machine work take 234 hrs 26 min. By hand it will take 1,831 hrs 40 minutes.
Labour cost machine is $ 69.55
" by hand is $ 457.92

500 yards of gingham checks are made by machine labour in 73 hours.
By hand labour it takes 5,846 hours.

100 lbs of sewing cotton can be made by machine labour in 39 hrs,
by hand it takes 2,895 hours.

Re: Agriculture :—
A good man with a scythe can reap 1 acre a day (12 hrs)
A machine does the same work in 20 minutes.
Six men with flails can thresh 60 liters of wheat in half an hour
One machine thresher can do 12 times as much
" The increased effectiveness of man-labour, aided by the use of machinery ... varies from 150% in the case of rye, to 2,244% in the case of barley..."

नोट : बुखरिन ने इसे इस तरह परिभाषित किया है—भगतसिंह

Downloaded from www.PDFshala.com

मानव और मशीनरी

यूनाइटेड स्टेट्स ऑफ ब्यूरो कहता है—

एक मनुष्य मशीन पर काम करके 1 घंटा 34 मिनट में पिनों के 12 Ibs बना सकता है।

अगर मनुष्य सिर्फ औजारों से काम करे, तो इसे करने में 140 घंटे 55 मिनट लगेंगे, लेकिन बिना मशीन के।

(अनुपात : 1.34 : 140.55 गुना)

{मशीन से 100 जोड़ी जूते बनाने में 234 घंटे 25 मिनट लगेंगे।}

हाथ से बनाने में 1,831 घंटे 40 मिनट लगेंगे।

मशीन की श्रम लागत 69.55 डॉलर होगी।

हाथ की श्रम लागत 457.92 डॉलर

——————————— : * : ——————————

मशीन द्वारा 500 गज जिंगेम चेक्स बनाने में 73 घंटे लगते हैं।

हाथ से बनाने में 5,844 घंटे।

——————————— : * : ——————————

स्यूइंग कॉटन के 100 Ibs मशीन से बनाने में 39 घंटे लगते हैं।

हाथ से बनाने में 2,895 घंटे।

——————————— : * : ——————————

संदर्भ—कृषि

एक कुशल व्यक्ति दराँती से एक दिन (12 घंटे) में 1 एकड़ में कटाई करेगा

यही काम मशीन 20 मिनट में कर देगी

एक मशीन थ्रेशर 12 गुना काम कर देगी।

“मशीन के उपयोग से मनुष्य-श्रम की प्रभावशीलता अधिक है—चावल के मामले में 150%, जौ के मामले में 2,244% ··· ।

——————————— : * : ——————————

Downloaded from www.PDFshala.com

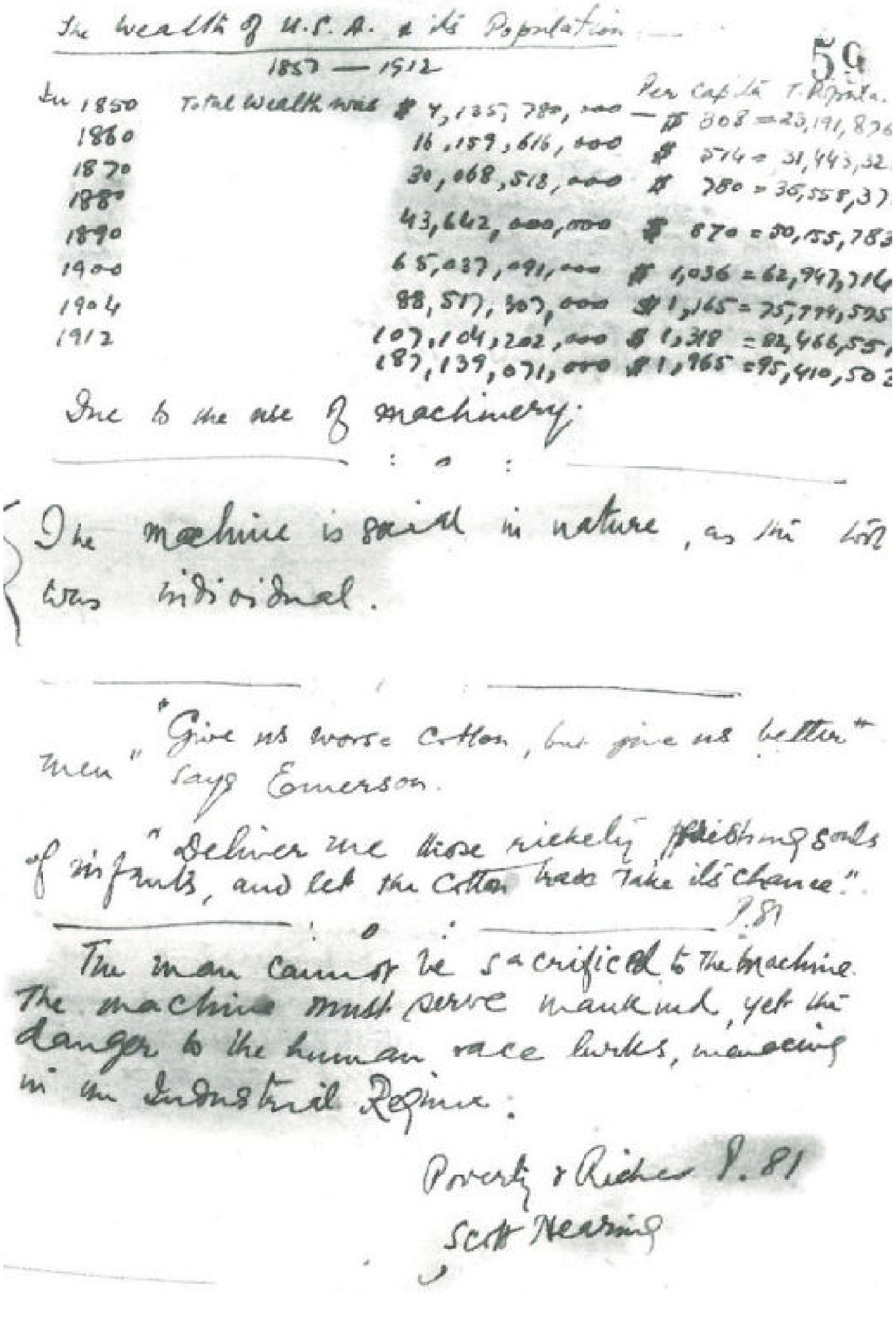

The wealth of U.S.A. & its Population — 59

1850 — 1912

			Per Capita	T. Popula.
In 1850	Total wealth was	$ 7,135,780,000 —	$ 308 =	23,191,876
1860		16,159,616,000	$ 514 =	31,443,32[illegible]
1870		30,068,518,000	$ 780 =	38,558,37[illegible]
1880		43,642,000,000	$ 870 =	50,155,783
1890		65,037,091,000	$ 1,036 =	62,947,714
1900		88,517,307,000	$ 1,165 =	75,994,575
1904		107,104,202,000	$ 1,318 =	82,466,55[illegible]
1912		187,139,071,000	$ 1,965 =	95,410,50[illegible]

Due to the use of machinery.

The machine is social in nature, as the tool was individual.

"Give us worse cotton, but give us better men" says Emerson.

"Deliver me those rickety perishing souls of infants, and let the cotton trade take its chance." P. 81

The man cannot be sacrificed to the machine. The machine must serve mankind, yet the danger to the human race lurks, menacing in an Industrial Regime.

Poverty & Riches P. 81
Scott Nearing

यू.एस.ए. की संपदा और उसकी आबादी (1850-1912)

1850 में— ......

कुल संपदा थी— 7,13,780,000 डॉलर

प्रति व्यक्ति— 308 डॉलर

Downloaded from www.PDFshala.com

=कुल आबादी— 23,191,876

1850 में— 1860

कुल संपदा थी— 16,159,616,000 डॉलर

प्रति व्यक्ति— 514 डॉलर

=कुल आबादी— 1,443,321

1850 में— 1870

कुल संपदा थी— 30,068,518,000 डॉलर

प्रति व्यक्ति— 780 डॉलर

=कुल आबादी— 38,558,371

1850 में— 1880

कुल संपदा थी— 43,642,2000,000 डॉलर

प्रति व्यक्ति— 870 डॉलर

=कुल आबादी— 50,155,785

1850 में— 1890

कुल संपदा थी— 65,037,091,000 डॉलर

प्रति व्यक्ति— 1,036 डॉलर

=कुल आबादी— 82,947,714

1850 में— 1900

कुल संपदा थी— 88,517,307,000 डॉलर

प्रति व्यक्ति— 1,165 डॉलर

=कुल आबादी— 75,994,575

1850 में— 1904

कुल संपदा थी— 104,104,202,000 डॉलर

Downloaded from www.PDFshala.com

प्रति व्यक्ति— 1,318 डॉलर

=कुल आबादी— 82,466,551

1850 में— 1912

कुल संपदा थी— 187,139,071,000 डॉलर

प्रति व्यक्ति— 1,965 डॉलर

=कुल आबादी— 95,4,0,503

मशीन के उपयोग के कारण

———————————— : * : ————————————

मशीन की प्रकृति सामाजिक है, औजार की व्यक्तिगत

—————————— : * : ——————————

"हमें खराब कपड़ा दो, लेकिन हमें बेहतर आदमी दो।" एमर्सन का कहना है।

"सुखंडी रोग से मरते शिशुओं की प्राण-रक्षा करो, फिर उसके बाद कपड़ा व्यापार को तरजीह दो!"

—————————— : * : ——————————

मशीन के लिए मनुष्य की बलि नहीं दी जा सकती। मशीन को मानवता की सेवा करनी चाहिए, फिर भी औद्योगिक व्यवस्था में मनुष्य जाति के सामने मुँह बाए खतरा तो मँडराता ही है।

—पॉवर्टी ऐंड रिचेज

स्कॉट नियरिंग *(पृ. 81) नोट : मशीन के उपयोग के कारण—भगतसिंह*

———————————— : * : ————————————

Downloaded from www.PDFshala.com

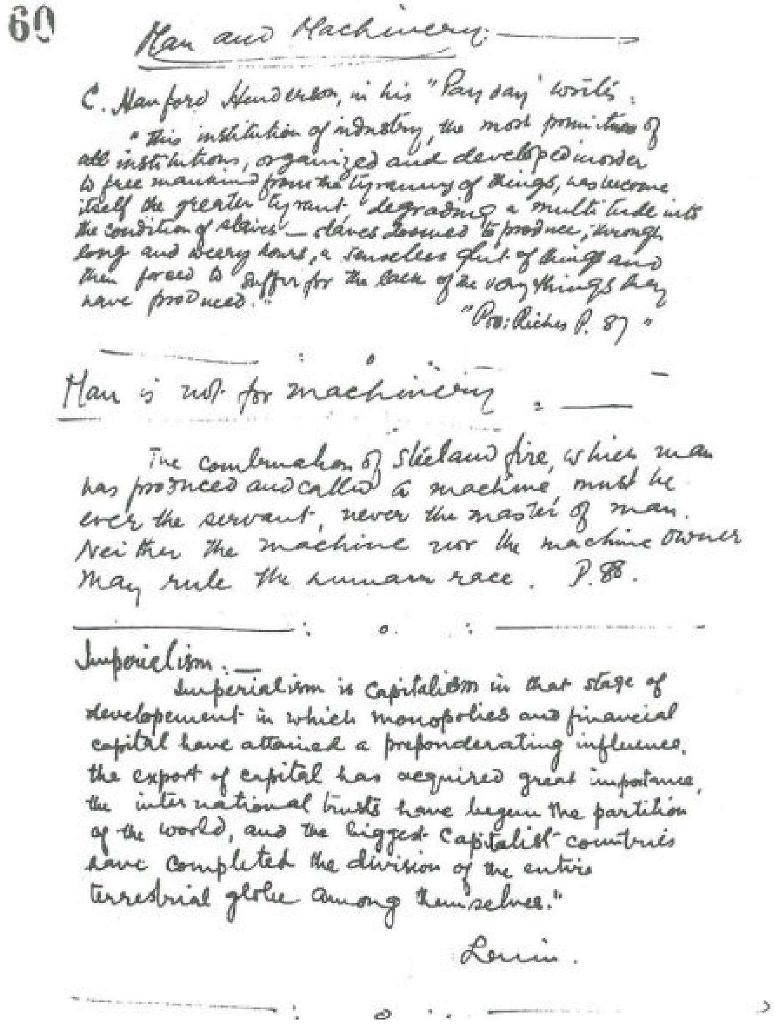

60

Man and Machinery: —

C. Hanford Henderson, in his "Pay day" writes:

"This institution of industry, the most primitive of all institutions, organized and developed in order to free mankind from the tyranny of things, has become itself the greater tyrant degrading a multitude into the condition of slaves — slaves doomed to produce, through long and weary hours, a senseless glut of things and then forced to suffer for the lack of the very things they have produced."

"Pro: Riches P. 87"

Man is not for machinery.

The combination of steel and fire, which man has produced and called a machine, must be ever the servant, never the master of man. Neither the machine nor the machine owner may rule the human race. P. 88.

Imperialism.—

Imperialism is capitalism in that stage of development in which monopolies and financial capital have attained a preponderating influence, the export of capital has acquired great importance, the international trusts have begun the partition of the world, and the biggest capitalist countries have completed the division of the entire terrestrial globe among themselves."

Lenin.

मानव और मशीनरी

सी. नेनफोर्ड अपनी पुस्तक 'पेडे' में लिखता है—

"मनुष्य को अत्याचार से मुक्त कराने के लिए संगठित और विकसित की गई सभी संस्थाओं में सबसे पुरानी संस्था उद्योग संस्था खुद ज्यादा अत्याचारी हो गई है, जिसने बड़ी तादाद में लोगों को दासता की स्थिति में पहुँचा दिया है—दास को घंटों, थकान वाली मेहनत से उत्पादन करना है, चीजों की बेतहाशा बाढ़ लाना और फिर उन्हीं थकान वाली चीजों के लिए तरसना है, जो उसने बनाई हैं।"

—पाव. रिचेज *(पृ. 87)*

———————— : * : ————————

मानव मशीन के लिए नहीं है

मानव द्वारा किए गए इस्पात और आग के संयोजन से बनी मशीन को हमेशा सेवक रहना चाहिए, मानव की स्वामी नहीं। न तो मशीन और न ही मशीन का मालिक मानव जाति पर शासन कर सकता।

———————— : * : ————————

Downloaded from www.PDFshala.com

साम्राज्यवाद

"साम्राज्यवाद विकास की उस अवस्था में पूँजीवाद हो गया, जिसमें एकाधिकारों और वित्तीय पूँजी का प्रभाव बहुत बढ़ गया, पूँजी के निर्यात का महत्त्व अत्यधिक हो गया, अंतरराष्ट्रीय न्यासों ने विश्व को टुकड़ों में बाँटना शुरू कर दिया, और सबसे बड़े पूँजीवादी देशों ने संपूर्ण भौगोलिक विश्व के आपस में विभाजन का काम पूरा कर लिया।"

यहाँ क्रांतिकारी तानाशाही लाना है।

: * :

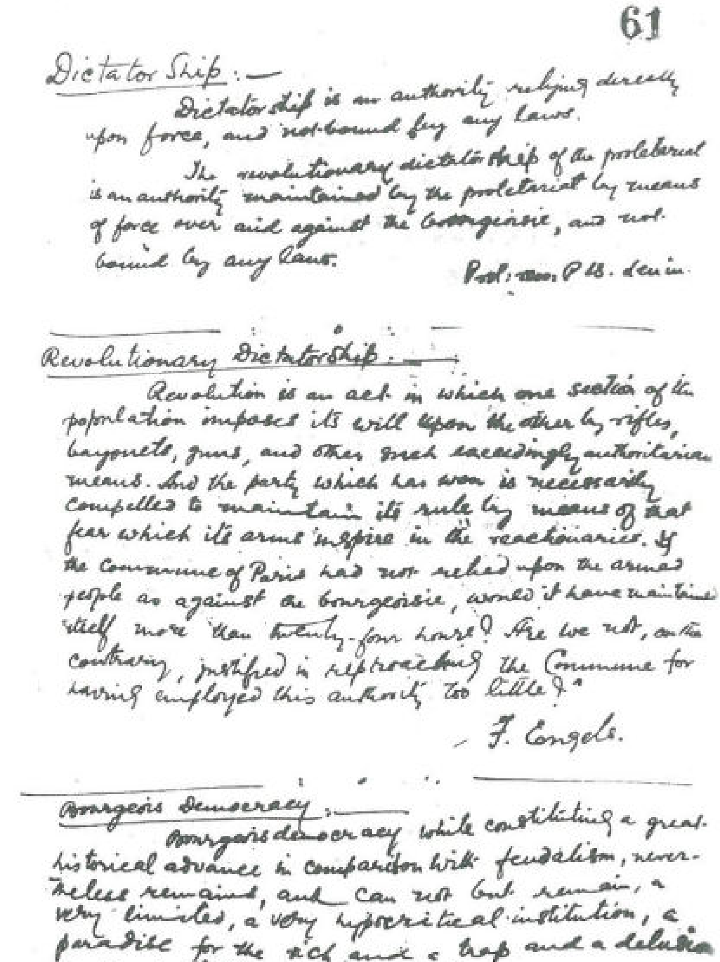

61

Dictator Ship:—

Dictatorship is an authority relying directly upon force, and not bound by any laws.

The revolutionary dictatorship of the proletariat is an authority maintained by the proletariat by means of force over and against the bourgeoisie, and not bound by any laws.

Prol: Rev. P 18. Lenin

Revolutionary Dictatorship:—

Revolution is an act in which one section of the population imposes its will upon the other by rifles, bayonets, guns, and other such exceedingly authoritarian means. And the party which has won is necessarily compelled to maintain its rule by means of that fear which its arms inspire in the reactionaries. If the Commune of Paris had not relied upon the armed people as against the bourgeoisie, would it have maintained itself more than twenty-four hours? Are we not, on the contrary, justified in reproaching the Commune for having employed this authority too little?"

— F. Engels.

Bourgeois Democracy:—

Bourgeois democracy while constituting a great historical advance in comparison with feudalism, nevertheless remains, and can not but remain, a very limited, a very hypocritical institution, a paradise for the rich and a trap and a delusion for the exploited and for the Poor.

Lenin P. 18.

तानाशाही

तानाशाही एक ऐसा अख्तियार है, जो सीधे तौर पर ताकत से जुड़ा है, और किसी कानून के बंधन में नहीं है।

प्रोलेटेरिएट द्वारा बुर्जुआ पर और उसके खिलाफ ताकत के बल पर कायम रखा गया कोई अख्तियार किसी भी कानून से बँधा नहीं है।

—**प्रोलि. रिवो** *(पृ. 81)*

Downloaded from www.PDFshala.com

———————— : * : ————————

क्रांतिकारी तानाशाही

"क्रांति एक ऐसा कृत्य है, जिसमें आबादी का एक हिस्सा रायफलों, संगीनों, तोपों और ऐसे ही तानाशाही माध्यमों से स्वयं को दूसरों पर अपनी मर्जी थोपता है। जो दल जीत जाता है, वह भय और डर के जरिए अपनी हुकूमत को कायम रखता है। यह डर प्रतिक्रियावादियों में इसके हथियारों द्वारा पैदा किया जाता है। अगर पेरिस का कम्यून बुर्जुआ के खिलाफ हथियारबंद लोगों पर निर्भर नहीं रहता, तो क्या यह चौबीस घंटे से ज्यादा टिका रह सकता था? इसके विपरीत, क्या हम बहुत कम अधिकार का प्रयोग करने के लिए कम्यून की आलोचना करके सही काम कर रहे हैं?

—एफ. एंगेल्स

———————— : * : ————————

बुर्जुआ लोकतंत्र

बुर्जुआ लोकतंत्र सामंतवाद की तुलना में बड़ी ऐतिहासिक बढ़त हासिल करने के बावजूद एक बहुत सीमित, एक बहुत पाखंडी संस्थान बनकर रह गया है, और वह ऐसा हुए बिना नहीं रह सकता। क्या यह अमीरों के लिए स्वर्ग और शोषितों तथा गरीबों के लिए एक जाल और भ्रम नहीं बन गया है?

———————— : * : ————————

Downloaded from www.PDFshala.com

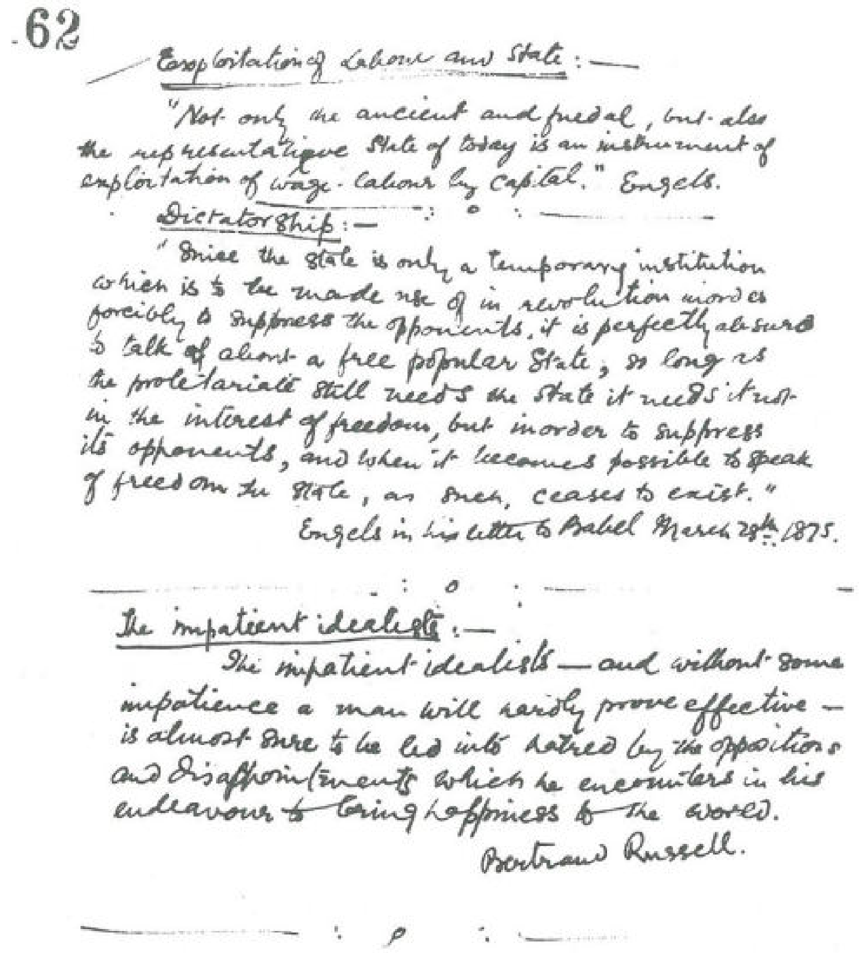

62

Exploitation of Labour and State :—

"Not only the ancient and feudal, but also the representative State of today is an instrument of exploitation of wage-labour by capital." Engels.

Dictatorship :—

" Since the state is only a temporary institution which is to be made use of in revolution in order forcibly to suppress the opponents, it is perfectly absurd to talk of about a free popular State, so long as the proletariat still needs the state it needs it not in the interest of freedom, but in order to suppress its opponents, and when it becomes possible to speak of freedom the state, as such, ceases to exist."

Engels in his letter to Babel March 28th 1875.

The impatient idealists :—

The impatient idealists — and without some impatience a man will hardly prove effective — is almost sure to be led into hatred by the oppositions and disappointments which he encounters in his endeavour to bring happiness to the world.

Bertrand Russell.

नोट : लेनिन की रचना 'सर्वहारा क्रांति और गद्दार काउत्स्की' से।

श्रम और राज्य का शोषण

"सिर्फ प्राचीन और सामंती राज्य के नहीं, बल्कि मौजूदा राज्य के प्रतिनिधि भी पूँजी के हाथों मजदूर के शोषण का जरिया बन गए हैं।"

—एंगेल्स

——————————— : ✻ : ——————————

निरंकुशता

"चूँकि राज्य सिर्फ एक अस्थायी संस्था है, जिसका क्रांति में विरोधियों के दमन के लिए उपयोग किया जाता है। लिहाजा, किसी लोकप्रिय राज्य की बात करना बकवास है; जब तक सर्वहारा को राज्य की जरूरत है, उसे इसकी जरूरत आजादी के हक में नहीं, बल्कि अपने विरोधियों के दमन के लिए है और जब आजादी की बात करना मुमकिन हो जाता है, तब राज्य का अस्तित्व ही नहीं रह जाता।"

—बेबेल को अपने पत्र में एंगेल्स ने लिखा
28 मार्च, 1875

Downloaded from www.PDFshala.com

: * :

बेचैन आदर्शवादी

बचैन आदर्शवादी—और बिना कुछ बेचैनी के, कोई व्यक्ति कभी असरकारी साबित नहीं हो सकता—दुनिया में खुशहाली लाने की अपनी कोशिश में मिलने वाले विरोध और हताशाओं के चलते निश्चय ही नफरत से भर जाएगा।

—बर्ट्रेंड रसे

: * :

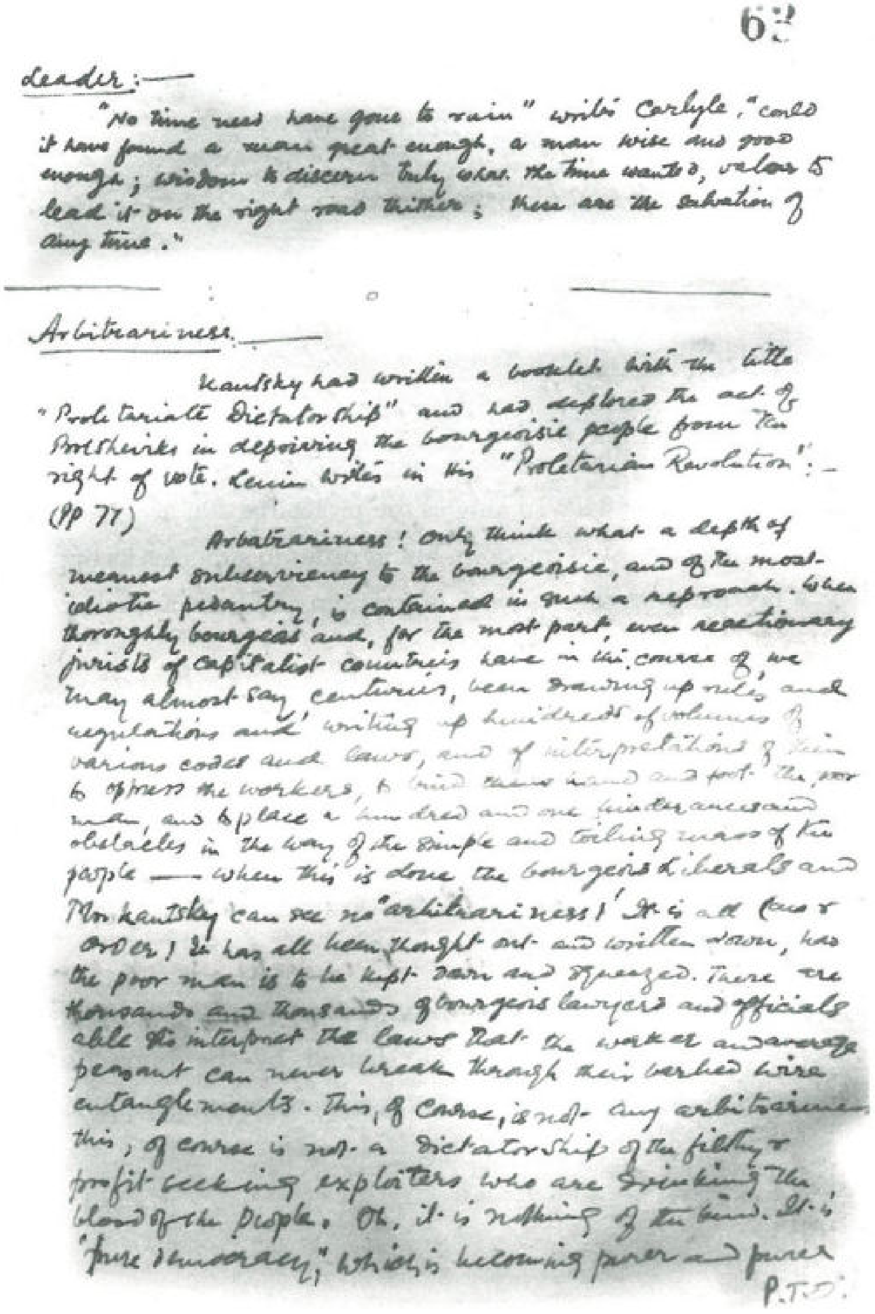

62

Leader:—

"No time need have gone to ruin" writes Carlyle, "could it have found a man great enough, a man wise and good enough; wisdom to discern truly what the time wanted, valor to lead it on the right road thither; these are the salvation of any time."

: o :

Arbitrariness.—

Kautsky had written a booklet with the title "Proletariate Dictatorship" and had deplored the act of Bolsheviks in depriving the bourgeoisie people from the right of vote. Lenin writes in his "Proletarian Revolution":— (PP 77)

Arbitrariness! Only think what a depth of meanest subserviency to the bourgeoisie, and of the most idiotic pedantry, is contained in such a reproach. When thoroughly bourgeois and, for the most part, even reactionary jurists of capitalist countries have in the course of, we may almost say, centuries, been drawing up rules and regulations and writing up hundreds of volumes of various codes and laws, and of interpretations of them to oppress the workers, to bind them hand and foot the poor man, and to place a hundred and one hindrances and obstacles in the way of the simple and toiling mass of the people — when this is done the bourgeois liberals and Mr. Kautsky can see no "arbitrariness"! It is all law & order! It has all been thought out and written down, how the poor man is to be kept down and squeezed. There are thousands and thousands of bourgeois lawyers and officials able to interpret the laws that the worker and average peasant can never break through their barbed wire entanglements. This, of course, is not any arbitrariness, this, of course is not a dictatorship of the filthy & profit seeking exploiters who are drinking the blood of the people. Oh, it is nothing of the kind. It is "pure democracy", which is becoming purer and purer

P.T.O.

Downloaded from www.PDFshala.com

नेता

कार्लाइल लिखता है, "अगर कोई पर्याप्त रूप से महान्, समझदार और अच्छा आदमी मिल जाता, तो बिल्कुल वक्त बरबाद नहीं होता—ऐसा व्यक्ति, जिसे सचमुच यह समझ होती कि वक्त की माँग क्या है? जिसमें इतना पराक्रम होता कि वक्त के लिहाज से सही रास्ते पर नेतृत्व कर सकता, तब तो इनकी बदौलत कोई भी समय मुक्ति का समय हो सकता था।"

——————————: * :——————————

मनमानी

कॉट्स्की ने 'प्रोलेटेरियट डिक्टेटरशिप' शीर्षक से एक पुस्तिका लिखी, जिसमें उसने बुर्जुआ लोगों को मतदान के अधिकार से वंचित करने के बोल्शेविकों के कृत्य की निंदा की। यह बात लेनिन ने अपनी पुस्तक 'प्रोलेटेरियन रेवोल्यूशन' में लिखी।

कैसी मनमानी! सोचिए कि इस निंदा में बुर्जओं की घटिया चापलूसी और अत्यधिक मूर्खतापूर्ण आलंकारिकता छुपी हुई है। पूरी तरह बुर्जुआ और पूँजीवादी देशों के अधिकतर प्रतिक्रियावादी न्यायविद् सदियों से नियम और कानून बनाते आ रहे हैं, विभिन्न संहिताओं और कानूनों की पुस्तकें लिखते आ रहे हैं, और मजदूरों का दमन करके उनकी व्याख्याएँ करते रहे हैं, ताकि उनके हाथ-पैर बाँधे जा सकें और सीधे-सादे मेहनतकश लोगों के रास्ते में सैकड़ों बाधाएँ व मुश्किलें खड़ी करते आ रहे हैं—जब यह होता है, तब बुर्जुआ लिबरल्स और कॉट्स्की को 'मनमानी' दिखाई नहीं देती! यह कानून और व्यवस्था है! यह विचार और लिखा गया है कि किस तरह हजारो-हजार बुर्जुआ वकील और अधिकारी कानूनों की इस तरह व्याख्या करते हैं कि औसत किसान काँटों से घिरे बाड़े में से कभी बाहर आ ही नहीं पाता। यह मनमानी बिल्कुल नहीं है। यह गंदे और अपना फायदा ढूँढ़ने वाले शोषकों की निरंकुशता नहीं है, जो लोगों का खून पी रहे हैं?

(शेष अगले पेज पर)

Downloaded from www.PDFshala.com

every day. But when the toiling and exploited masses for the first time in history, seperated by imperialist war from their brothers across the frontier, have constructed their soviets, have summoned to the work of political construction, the classes which the bourgeois used to oppress and to stupefy, and begun themselves to build up a new proletarian State, begun, in the midst of raging battles, in the fire of civil war, to lay down the fundamental principles of a State without exploiters, then all the scoundrels of the bourgeoisie, the entire band of blood suckers, with Kautsky singing "obligato", scream about arbitrariness!

(Lenin) P. 77-78

Party:—

But it has become clear that no revolution is possible unless there is a party able to lead the revolution. (P. 15. Lessons of October 1917)

A party is the instrument indispensable to a proletarian revolution. (P. 17. ibid by Trotsky)

Downloaded from www.PDFshala.com

अरे, ऐसा कुछ नहीं है! यह 'शुद्ध लोकतंत्र' है, जो रोजाना और अधिक शुद्ध होता जा रहा है। लेकिन जब इतिहास में पहली बार मेहनतकश और शोषित लोगों ने, जो साम्राज्यवादी युद्ध के द्वारा सीमा के पार अपने भाइयों से अलग कर दिए गए थे, अपनी सोवियतें बना लीं, तब उन्होंने राजनीति विचार रखनेवाले मजदूरों का आह्वान किया। यह वह वर्ग था, जिसे बुर्जुआ ने दमित और भ्रमित किया था। इन लोगों ने एक नए सर्वहारा राज्य की स्थापना करना शुरू कर दिया। उन्होंने 'शोषकों से रहित राज्य' के बुनियादी सिद्धांत का प्रतिपादन किया। तब बुर्जुआ, खून चूसने वालों के सभी गुंडे कॉट्स्की के साथ मनमानी का राग आलापने लगे।

—लेनिन (पृ. 76)

: * :

पार्टी

लेकिन यह स्पष्ट हो गया है कि जब तक नेतृत्व करने के लिए कोई पार्टी न हो, तब तक कोई क्रांति संभव नहीं है।

—लेसंस ऑफ अक्तूबर (1917)

: * :

सर्वहारा क्रांति के लिए पार्टी रूपी माध्यम अपरिहार्य है।

—ट्रॉटस्की की वही पुस्तक

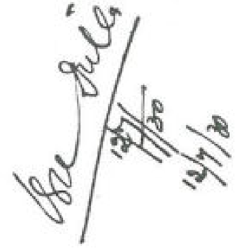

Law, morality, religion are ~~to~~ to him (the working man) so many bourgeois prejudices, behind which lurk in ambush just as many bourgeois interests.

Karl Marx - Manifesto

Downloaded from www.PDFshala.com

हस्ताक्षर/(बी.के. दत्त)

12/7/30

12/7/30

कानून, नैतिकता, धर्म उसके (मजदूर) लिये उतने ही बुर्जुआवादी पूर्वग्रह हैं, जिनकी आड़ में इतने ही बुर्जुओं के स्वार्थी हित छुपे हैं।

—कार्ल मार्क्स, मेनिफेस्टो

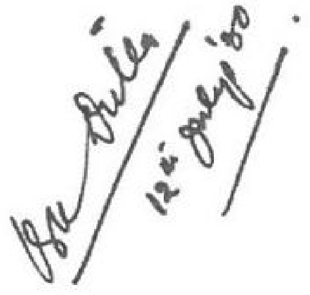

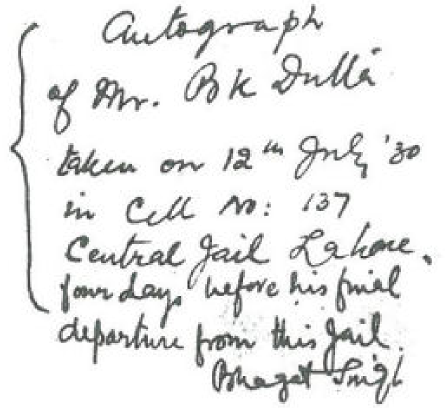

---

* पेज 66 खली है

हस्ताक्षर (बी.के. दत्त)

12 जुलाई, '30

बी.के. दत्त का ऑटोग्राफ
जो सेंट्रल जेल लाहौर

Downloaded from www.PDFshala.com

की सेल नंबर 137 में 12 जुलाई, '30 को
जेल से अंतिम विदाई
के चार दिन पहले लिया गया था।

भगतसिंह

* पेज 68 खली है

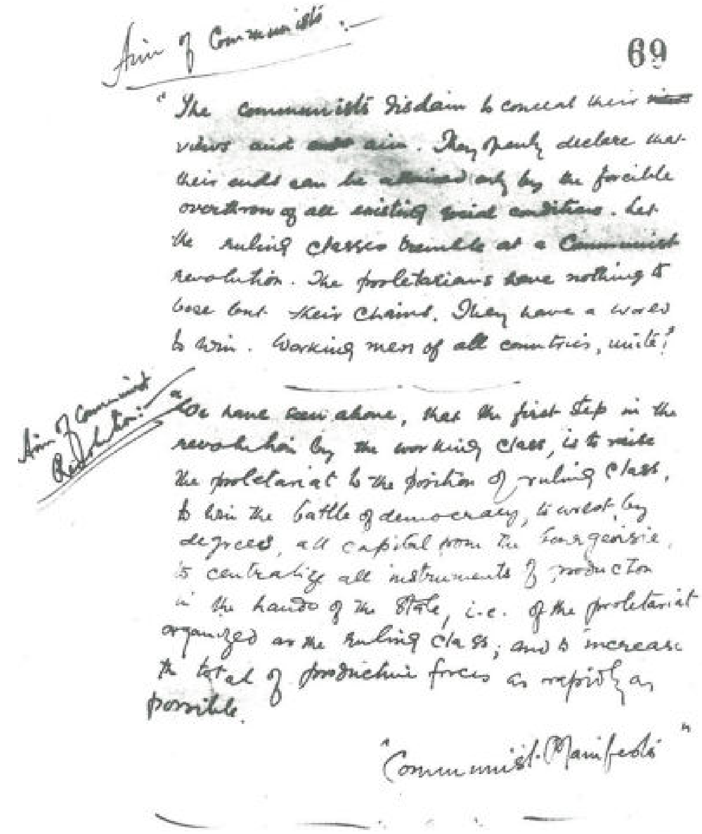

Aim of Communists:—

69

"The communists disdain to conceal their views and aim. They openly declare that their ends can be attained only by the forcible overthrow of all existing social conditions. Let the ruling classes tremble at a Communist revolution. The proletarians have nothing to lose but their chains. They have a world to win. Working men of all countries, unite!

Aim of Communist Revolution:—

We have seen above, that the first step in the revolution by the working class, is to raise the proletariat to the position of ruling class, to win the battle of democracy, to wrest, by degrees, all capital from the bourgeoisie, to centralize all instruments of production in the hands of the State, i.e. of the proletariat organized as the ruling class; and to increase the total of productive forces as rapidly as possible.

"Communist Manifesto"

साम्यवादियों का मकसद

"साम्यवादी अपने विचारों तथा मकसदों को छुपाने से नफरत करते हैं। वे खुलकर ऐलान करते हैं कि उनका मकसद सिर्फ मौजूदा सामाजिक हालात को ताकत से बदलकर ही पाया जा सकता है। साम्यवादी क्रांति से सत्ताधारी वर्ग को काँपने दो। सर्वहारा के पास अपनी जंजीरों के अलावा खोने को कुछ नहीं है। जीतने के लिए एक दुनिया है। सभी देशों के मजदूरो, एक हो जाओ।

——————— : ✻ : ———————

साम्यवादी क्रांति का मकसद

"हमने ऊपर देखा कि मजदूर वर्ग द्वारा क्रांति में पहला कदम सर्वहारा को सत्ताधारी वर्ग बनाना, लोकतंत्र की लड़ाई जीतना, क्रमिक रूप से बुर्जुआ से सारी पूँजी छीन लेना, उत्पादन के सभी साधन राज्य के हाथों में केंद्रित करना, अर्थात् सत्ताधारी वर्ग के रूप में संगठित सर्वहारा, और सभी उत्पादक ताकतों को अधिकतम तेजी के साथ बढ़ाना है।"

Downloaded from www.PDFshala.com

—साम्यवादी घोषणा-पत्र

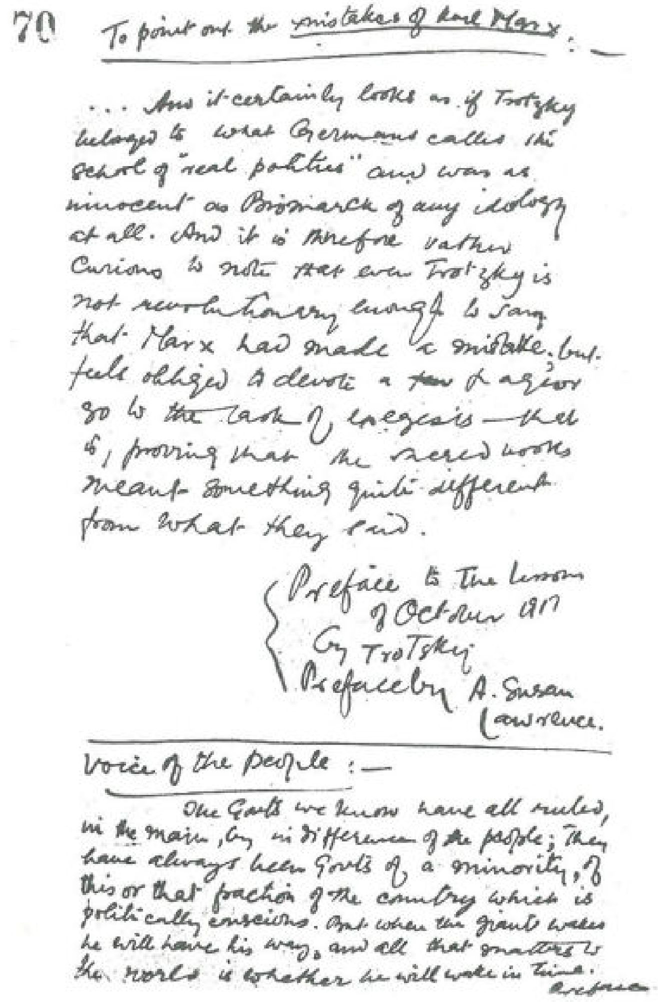

70 To point out the mistakes of Karl Marx: —

... And it certainly looks as if Trotzky belonged to what Germans call the school of "real politics" and was as innocent as Bismarck of any ideology at all. And it is therefore rather curious to note that even Trotzky is not revolutionary enough to say that Marx had made a mistake, but feels obliged to devote a page or more so to the task of exegesis — that is, proving that the sacred books meant something quite different from what they said.

{Preface to The Lessons of October 1917 by Trotsky
Preface by A. Susan Lawrence.

Voice of the people: —

The Govts we know have all ruled, in the main, by indifference of the people; they have always been Govts of a minority, of this or that faction of the country which is politically conscious. And when the giant wakes he will have his way, and all that matters to the world is whether he will wake in time.

कार्ल मार्क्स की गलतियाँ

… निश्चय ही ऐसा लगता है कि मानो ट्राट्स्की उस विचारधारा से ताल्लुक रखते हैं, जिसे जर्मन लोग 'रियल पॉलिटिक्स' कहते हैं और वे किसी भी विचाराधारा से उतने ही अछूते हैं, जितने बिस्मार्क। लिहाजा, यह बड़ी बात है कि ट्राट्स्की इतने क्रांतिकारी नहीं हैं कि यह कह सकें कि मार्क्स ने कोई गलती नहीं की, बल्कि उन्हें व्याख्या के रूप में एक पृष्ठ या उससे कुछ अधिक लिखना पड़ा—यह सिद्ध करने के लिए कि पवित्र ग्रंथों का अर्थ उससे एकदम अलग होता है, जो वे कहते हैं।

ट्राट्स्की की पुस्तक 'लेसन ऑफ अक्तूबर' 1917 की प्रस्तावना

प्रस्तावना

ए. ऑसन बारेंस द्‌वारा लिखित

: * :

लोगों की आवाज

Downloaded from www.PDFshala.com

हम जिन भी सरकारों को जानते हैं, उन्होंने मुख्यत: लोगों के बीच मतभेद के कारण ही शासन किया; वे सरकारें हमेशा अल्पमत में रहीं, देश के किसी-न-किसी गुट से संबंधित, जो राजनीतिक रूप से सजग हों। लेकिन जब दैत्य (यानी जनता-सं.) जागता है, तो वह अपनी मर्जी का काम करता है और दुनिया के लिए सिर्फ इस बात का महत्त्व है कि वह कब जागता है?

—प्रस्तावना

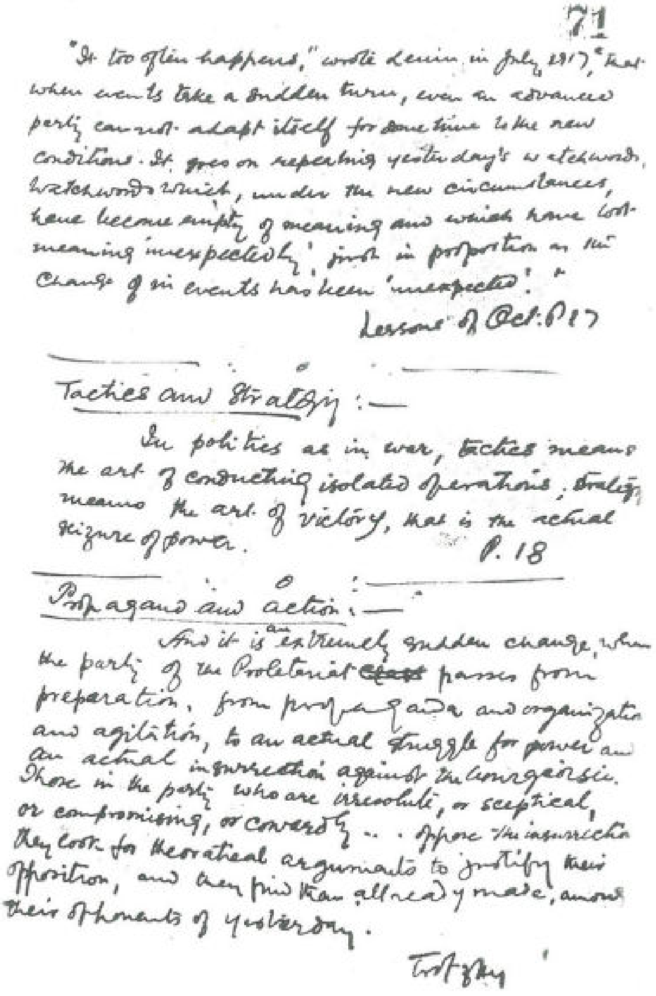
71

"It too often happens," wrote Lenin in July 1917, "that when events take a sudden turn, even an advanced party cannot adapt itself for some time to the new conditions. It goes on repeating yesterday's watchwords, watchwords which, under the new circumstances, have become empty of meaning and which have lost meaning 'unexpectedly', just in proportion as the change of [illegible] events has been 'unexpected'."

Lessons of Oct. P 17

Tactics and Strategy:—

In politics as in war, tactics means the art of conducting isolated operations; strategy means the art of victory, that is the actual seizure of power. P. 18

Propaganda and action:—

And it is an extremely sudden change, when the party of the Proletariat ~~class~~ passes from preparation, from propaganda and organization and agitation, to an actual struggle for power and an actual insurrection against the bourgeoisie. Those in the party who are irresolute, or sceptical, or compromising, or cowardly ... oppose the insurrection they look for theoretical arguments to justify their opposition, and they find them all ready made, among their opponents of yesterday.

Trotsky

Downloaded from www.PDFshala.com

लेनिन ने जुलाई 1917 में लिखा—"ऐसा अवसर आता है, घटनाक्रम अचानक कोई मोड़ लेता है, तो कोई उन्नत दल भी नई स्थितियों से स्वयं का तालमेल नहीं बैठा पाता। यह बीते दिनों के आदर्श वाक्य दोहराता रहता है, जिनके अर्थ नई परिस्थितियों में खोखले होते हैं, और जो 'अनपेक्षित' रूप से अपना अर्थ खो चुके होते हैं तथा जिस अनुपात में घटनाओं में 'अप्रत्याशित' परिवर्तन हो चुका होता है।"

—लेसंस ऑफ अक्तूबर *(पृ. 17)*

—————————— : * : ——————————

दाव-पेंच और रणनीति

राजनीति में युद्ध की तरह दाव-पेंच का अर्थ होता है—तटस्थ कारखाइयों के संचालन की कला; रणनीति का अर्थ होता है—जीत की कला, जो वास्तव में सत्ता पर कब्जा करना है। *(पृ. 81)*

—————————— : * : ——————————

प्रोपेगंडा और कारखाई

यह बड़ा अचानक परिवर्तन तब होता है, जब सर्वहारा का दल तैयारी के साथ प्रचार और प्रचार अथवा संगठन और आंदोलन से सत्ता के वास्तविक संघर्ष तथा बुर्जुआ के खिलाफ वास्तविक विद्रोह की ओर बढ़ता है। दल में जो लोग ढुलमुल अथवा शंकालु, अथवा समझौतापरस्त अथवा कायर होते हैं, वे विद्रोह का विरोध करते हैं। वे अपने विरोध को सही ठहराने के लिए सैद्धांतिक जन दलीलें तलाशते हैं, और वे उन्हें मिल भी जाती हैं, बिल्कुल तैयार, अपने पिछले समय के विरोधियों के बीच।

—ट्राट्स्की

Downloaded from www.PDFshala.com

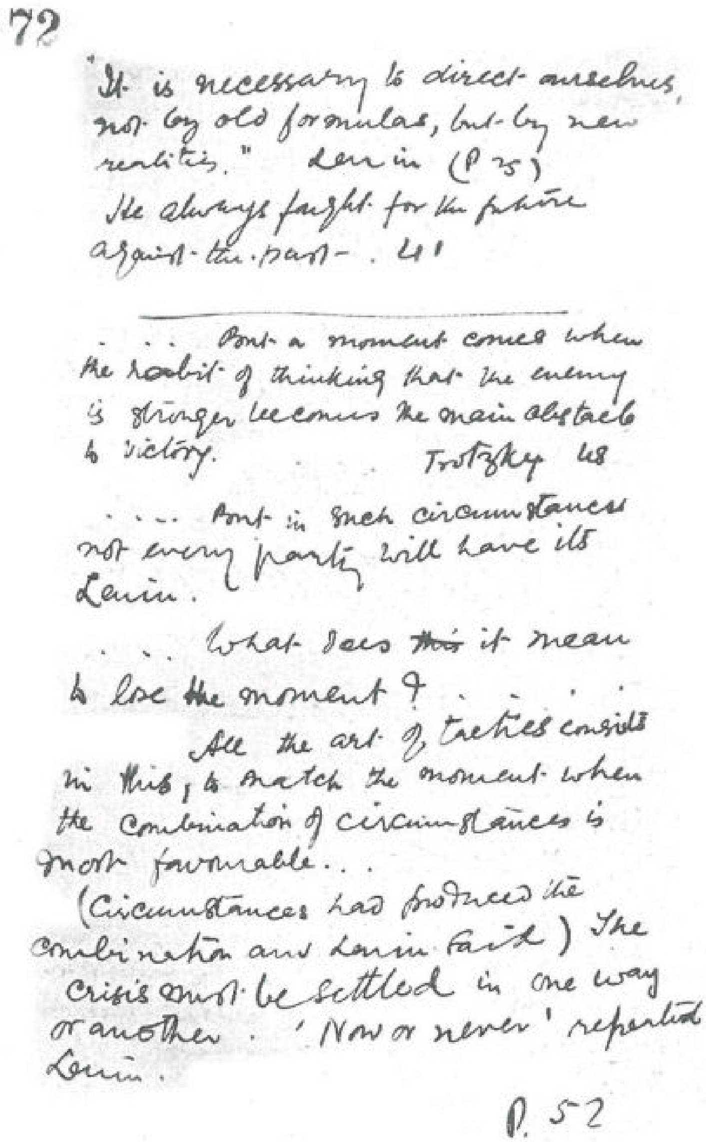
72

"It is necessary to direct ourselves, not by old formulas, but by new realities." Lenin (P 25)

He always fought for the future against the past. 41

. . . But a moment comes when the habit of thinking that the enemy is stronger becomes the main obstacle to victory. Trotzky 48

. . . But in such circumstances not every party will have its Lenin.

. . What does ~~this~~ it mean to lose the moment? . . . .

All the art of tactics consists in this, to snatch the moment when the combination of circumstances is most favourable...

(Circumstances had produced the combination and Lenin said) The crisis must be settled in one way or another. 'Now or never' repeated Lenin.

P. 52

"हमें स्वयं को निर्देशित करने की जरूरत है, लेकिन पुराने फॉर्मूलों से नहीं, बल्कि नई वास्तविकताओं से।"

—लेनिन (पृ. 25)

उसने हमेशा भविष्य के लिए अतीत से लड़ाई लड़ी।

··· लेकिन ऐसा क्षण आता है, जब यह सोचने की आदत जीत में सबसे बड़ी रुकावट बन जाती है कि दुश्मन ज्यादा ताकतवर है।

—ट्राट्स्की (पृ. 48)

: ✻ :

··· लेकिन ऐसी परिस्थितियों में हर एक दल के पास उसका लेनिन नहीं होगा।

··· कोई क्षण गँवाने का मतलब क्या होता है?

··· दाव-पेंच की सारी कला इस बात में निहित है कि जब परिस्थितियों का जोड़ सबसे ज्यादा अनुकूल हो, तब उस क्षण को उसके साथ मिला दो —

Downloaded from www.PDFshala.com

(परिस्थितियों ने जोड़ को बनाया है और लेनिन ने कहा (संकट का समाधान किसी-न-किसी तरह करना ही होता है)। लेनिन ने दोहराया कि 'अभी या कभी नहीं'।

: * :

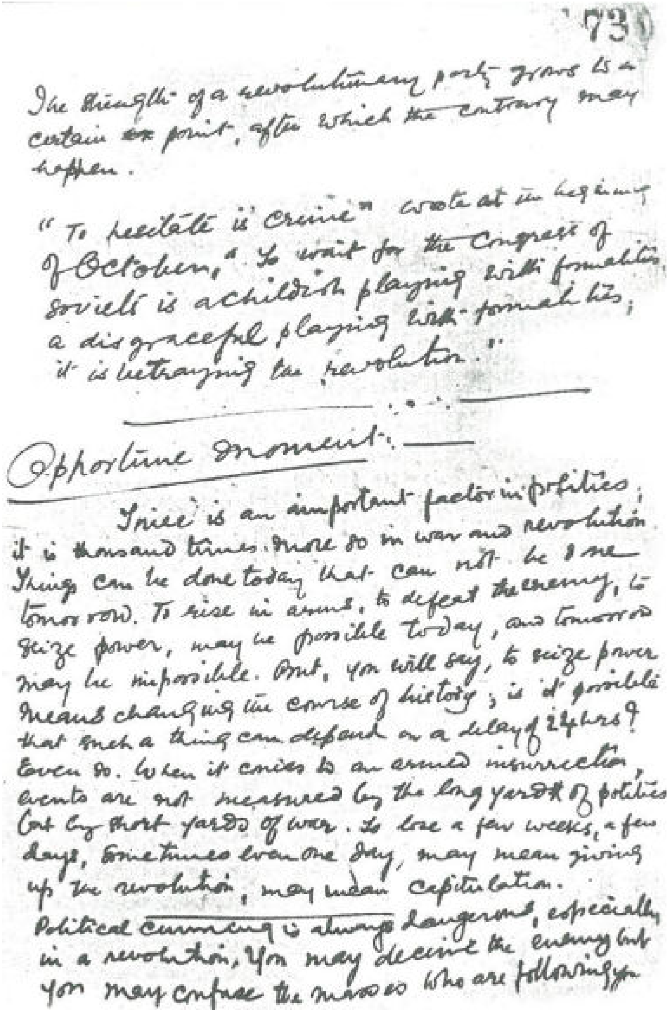
73

The strength of a revolutionary party grows to a certain point, after which the contrary may happen.

"To hesitate is crime" wrote at the beginning of October, "to wait for the Congress of soviets is a childish playing with formalities, a disgraceful playing with formalities; it is betraying the revolution."

Opportune moment:—

Time is an important factor in politics; it is thousand times more so in war and revolution. Some things can be done today that can not be done tomorrow. To rise in arms, to defeat the enemy, to seize power, may be possible today, and tomorrow may be impossible. But, you will say, to seize power means changing the course of history; is it possible that such a thing can depend on a delay of 24 hrs? Even so. When it comes to an armed insurrection, events are not measured by the long yardstick of politics but by short yards of war. To lose a few weeks, a few days, sometimes even one day, may mean giving up the revolution, may mean capitulation.
Political cunning is always dangerous, especially in a revolution. You may deceive the enemy but you may confuse the masses who are following you

Downloaded from www.PDFshala.com

किसी क्रांतिकारी दल की ताकत एक सीमा तक बढ़ती है, जिसके बाद इससे विपरीत हो सकता है—

(लेनिन ने) अक्तूबर की शुरुआत में लिखा कि "संकोच करना अपराध है, सोवियतों की कांग्रेस का इंतजार करना बचपना है, औचित्य के साथ बेशर्मी से खिलवाड़ करना क्रांति के साथ विश्वासघात है।"

——————————— : * : ——————————

उपयुक्त अवसर

राजनीति में समय एक महत्त्वपूर्ण कारक है; जंग और क्रांति में इसका महत्त्व हजारों गुना बढ़ जाता है। वे चीजें आज की जानी चाहिए, जिन्हें कल नहीं किया जा सकता। हथियार उठाना, दुश्मन को हराना, हुकूमत हासिल करना आज संभव हो सकता है, लेकिन कल शायद यह संभव न हो। लेकिन तुम कहोगे कि हुकूमत हासिल करने का मतलब इतिहास की दिशा बदलना है; क्या यह संभव है कि ऐसी कोई बात 24 घंटे बाद हो सके? फिर भी, जब हथियारबंद विद्रोह की बात आती है, तो घटनाओं को राजनीति के गज से नहीं, बल्कि युद्ध के छोटे गजों से मापा जाता है। कुछ सप्ताह, कुछ दिन, कभी-कभी एक दिन भी गँवा देने का मतलब क्रांति को छोड़ देना, समर्पण करना हो सकता है।

राजनीति धूर्तता हमेशा खतरनाक होती है, खासकर क्रांति में। तुम दुश्मन को धोखा दे सकते हो, लेकिन ऐसा करने से जनता भ्रमित हो सकती है, जो तुम्हारे पीछे चल रही है।

Downloaded from www.PDFshala.com

Hesitation:—

Hesitation on the part of the leaders, and felt by their followers, is generally harmful in politics; but in the case of an armed insurrection it is a deadly danger.

War:— ... 'War is War'; come what may, there must be no hesitation or loss of time.

The inefficient leaders:—

... There are two kinds of leaders who incline to drag the party back at the moment when it should go fastest. One kind always tends to see overwhelming difficulties and obstacles in the way of revolution, and looks at them — consciously or unconsciously — with the desire of avoiding them. They alter Marxism into a system for explaining why revolutionary action is impossible.

The other kind are mere superficial agitators. They see never any obstacles until they break their heads against them. They think they can avoid real ~~sufferances~~ difficulties by floods of oratory. They look at everything with supreme optimism, and, naturally, change right over when something has actually to be done.

P 88

Downloaded from www.PDFshala.com

झिझक

नेताओं का झिझकना और अनुयायियों का उसे महसूस करना आमतौर पर राजनीति में नुकसानदेह होता है, लेकिन हथियारबंद विद्रोह में यह घातक रूप से खतरनाक है।

——————— : * : ———————

युद्ध

··· "युद्ध तो युद्ध है", जो भी हो, कोई झिझक नहीं होनी चाहिए और वक्त नहीं गँवाना चाहिए।

——————— : * : ———————

अक्षम नेता

··· दो तरह के नेता होते हैं, जो उस वक्त अपने दल को वापस खींच लेते हैं, जब उसे तेजी से आगे बढ़ना चाहिए। एक तरह के नेता क्रांति के रास्ते में बहुत अधिक मुश्किलें और रुकावटें देखते हैं और उन्हें ही देखते रहते हैं—जान-बूझकर या अनजाने में इस इच्छा के साथ कि उसे टाला जाए। वे मार्क्सवाद को एक सिस्टम में बदल देते हैं, यह समझाने के लिए कि क्रांतिकारी काररवाई क्यों असंभव है।

दूसरी तरह के नेता सिर्फ उथले आंदोलनकारी होते हैं। वे तब तक रुकावटें नहीं देखते, जब तक उनसे टकराकर उनका सिर नहीं फूट जाए। वे समझते हैं कि भाषण की बाढ़ से वे वास्तविक कठिनाइयों से बच सकते हैं। वे हर चीज को चरम आशावाद के साथ देखते हैं, और स्वाभाविक रूप से उस वक्त रास्ता बदल लेते हैं, जब वास्तव में कुछ किया जाना जरूरी होता है।

(पृ. 80)

** नोट : पृष्ठ 75 से 100 तक खाली हैं।*

Downloaded from www.PDFshala.com

Value :—

" 1 quarter corn = x cwt. iron. What does this equation tell us? It tells us that in two different things – in 1 quarter of corn and x cwt of iron – there exists in equal quantities something common to both. The two things must therefore be equal to a third, which in itself is neither the one or the other. . . Let us now consider the residue of each of these products; it consists of the same unsubstantial reality in each, a mere congelation of homogeneous human labour, of labour-power expended without regard to the mode of its expenditure. All these things now tell us that human labour-power has been expended in their production, that labour is embodied in them. When looked at as crystals of this social substance, common to all, they are <u>Values</u>."

Marx – 'Capital'. English Translation PP 34-5.

✓ Law :–

"Society, however, does not rest upon law. This is a legal fiction. Rather the law must rest on society. It must be the expression of the interest and needs of society which result from the social and invariably material method of production as against the arbitrariness of the individual. As for Napoleonic Code, which I have in my hand, that has not engendered modern Civil society. The society which arose in the 18th Century and developed in the 19th, finds in the Code only a legal expression. As soon as that no longer corresponds to social conditions, it is merely so much waste paper. . . . . The laws necessarily changed with the changing conditions of life. The maintaining of the old law against the new needs and demands of the social development is at bottom nothing but a hypocritical assertion (in accord with the spirit of the age) of special interest against the common interest." Marx. [Before the Court of Jury of Cologne.]

✓ " .. "

Downloaded from www.PDFshala.com

समाज शास्त्र—

मूल्य

"1 क्वार्टर कॉर्न = X/ लोहे का मूल्य। यह सवाल हमें क्या बताता है? यह हमें बताता है कि दो अलग-अलग चीजों में—एक क्वार्टर कॉर्न में और X लोहे के मूल्य—कोई ऐसी चीज समान मात्रा में है, जो दोनों में साझा रूप से उपस्थित है। लिहाजा, ये दो चीजें किसी तीसरे के बराबर होनी चाहिए, जो अपने आप में न एक है न दूसरी—अब हम इनमें से प्रत्येक उत्पाद के अवशेष पर विचार करें; यह प्रत्येक में सारहीन वास्तविकता के रूप में मौजूद है, मानवीय श्रम की महज समरूप जमावट, उस श्रमशक्ति की, जो इसके खर्च के स्वरूप पर विचार किए बिना खर्च कर दी गई। ये सभी चीजें हमें बताती हैं कि मानवीय श्रमशक्ति उनके उत्पादन में खर्च हुई है, यही श्रम उनका साकार रूप है। सभी में साझा रूप से विद्यमान, इस सामाजिक सारतत्त्व को क्रिस्टल के रूप में देखा जाने पर यही मूल्य है।"

—मार्क्स, 'कैपीटल' अंग्रेजी अनुवाद *(पृ. 3, 4, 5)*

कानून

"बहरहाल, समाज कानून पर आधारित नहीं होता। यह एक कानूनी कल्पित कथा है। इसके विपरीत, कानून समाज पर आधारित होना चाहिए। इसमें समाज की रुचि तथा आवश्यकताओं की अभिव्यक्ति होनी चाहिए, जो व्यक्तिगत निरंकुशता के बरक्स सामाजिक और आवश्यक रूप से उत्पादन की भौतिक विधि का परिणाम हो। जहाँ तक नेपोलियन कोड का सवाल है, तो मेरे मुताबिक, इसने आधुनिक सभ्य समाज को उत्पन्न नहीं किया है। जो समाज 18वीं शताब्दी में उत्पन्न और 19वीं शताब्दी में विकसित हुआ, उसे इस कोड में सिर्फ एक कानूनी अभिव्यक्ति मिलती है।

"जैसे ही वह सामाजिक स्थितियों के अनुकूल नहीं रह जाता, वैसे ही यह सिर्फ कागज की बरबादी हो जाता है—कानून जीवन की स्थितियों में बदलाव के अनुसार बदलना ही चाहिए। सामाजिक बदलाव के खिलाफ पुराने कानून को नई आवश्यकताओं तथा माँगों के अनुरूप युग की भावना के अनुसार न बदला जाना सिर्फ विशेष सामान्य हित के विरुद्ध पाखंडपूर्ण दुराग्रह है।"

—मार्क्स, जूरी ऑफ कोलोंज के कोर्ट के समक्ष

Downloaded from www.PDFshala.com

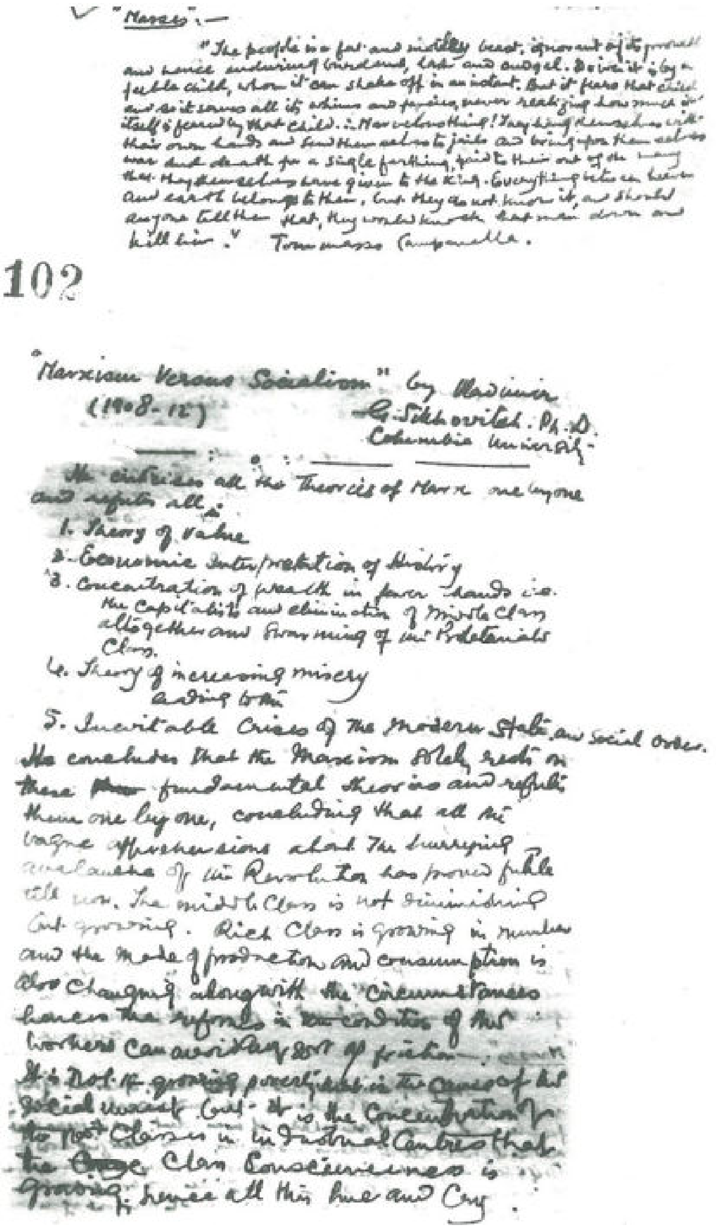

"Masses" :—

"The people is a fat and sickly beast, ignorant of its powers and hence enduring burdens, lash and cudgel. Driven by a feeble child, whom it can shake off in an instant. But it fears that child and so it serves all its whims and fancies, never realizing how much it itself is feared by that child. ∴ Marvelous thing! They hang themselves with their own hands and send themselves to jail and bring upon themselves war and death for a single farthing, paid to them out of the many that they themselves have given to the King. Everything between heaven and earth belongs to them, but they do not know it, and should anyone tell them that, they would knock that man down and kill him." Tommasso Campanella.

102

"Marxism Versus Socialism" by Wladimir (1908-12) G. Simkhovitch. Ph.D. Columbia University.

He criticises all the theories of Marx one by one and refutes all. i.e.

1. Theory of value
2. Economic Interpretation of History
3. Concentration of wealth in fewer hands i.e. the Capitalists and elimination of Middle Class altogether and swarming of the Proletariate Class.
4. Theory of increasing misery leading to the
5. Inevitable Crisis of the Modern State and social order.

He concludes that the Marxism solely rests on these fundamental theories and refutes them one by one, concluding that all the vague apprehensions about the sweeping avalanche of the Revolution has proved futile till now. The middle class is not diminishing but growing. Rich class is growing in number and the mode of production and consumption is also changing alongwith the circumstances hence the reforms in the condition of the workers can avoid any sort of friction. It is not the growing poverty [illegible] is the cause of the social unrest but it is the concentration of the poor classes in industrial centres that the class consciousness is growing, hence all this hue and cry.

आम जनता

आम जनता एक मोटा और बेढंगा भारवाही पशु है, जिसे अपनी ताकत का पता नहीं है, और इसीलिए बोझा ढो रहा है, चाबुक और डंडे खा रहा है, एक कमजोर बच्चे द्‍वारा हाँका जा रहा है, जिसे वह एक पल में झटक सकता है। लेकिन वह बच्चे से डरता है और उसकी मनमर्जी से चलता है। उसे कभी यह महसूस नहीं होता कि वह बच्चा भी उससे कितना डरा हुआ है—आश्चर्य ! वे अपने हाथों से फाँसी पर लटक जाते हैं और खुद जेल चले जाते हैं तथा उसी बहुत सारे पैसे में से एक दमड़ी के लिए युद्‍ध और मौत को स्वयं पर झेल लेते हैं, जो उन्होंने स्वयं राजा को दिया था। स्वर्ग और धरती के बीच सबकुछ उनका है, लेकिन उन्हें नहीं पता, और अगर उन्हें कोई यह बात बताए, तो वे उसे लात मार देंगे और मार डालेंगे।"

—टोम्मासो कैंपानेल

Downloaded from www.PDFshala.com

——————————— : ✻ : ———————————

मार्क्सवाद बनाम समाजवाद

(1908-12) लेखक ब्लादिमीर जी. सिखोविच पी-एच.डी. कोलंबिया विश्वविद्यालय,

वह एक के बाद एक मार्क्स के सिद्धांतों की आलोचना करता है और निम्नलिखित बातों के आधार पर उनका खंडन करता है—

1. मूल्य का सिद्धांत
2. इतिहास की आर्थिक व्याख्या
3. संपदा का कुछ हाथों में एकत्र होना अर्थात् पूँजीपतियों के हाथों में, और मध्यम वर्ग का पूरी तरह विनाश तथा सर्वहारा वर्ग का उभार
4. बढ़ता लालच
5. आधुनिक राज्य और सामाजिक व्यवस्था के लाजिमी संकट

उसका निष्कर्ष है कि मार्क्सवाद सिर्फ इन बुनियादी सिद्धांतों पर आधारित है और वह उनका एक-एक कर खंडन करता है। वह निष्कर्षत: यह मानता है कि क्रांति से अचानक आई विपत्ति के बारे में धुँधली शंकाएँ अब तक खोखली साबित हो चुकी हैं। मध्यम वर्ग कम नहीं हो रहा, बल्कि बढ़ रहा है। संपन्न वर्ग के लोगों की संख्या बढ़ रही है, और उत्पादन तथा उपभोग के तरीके भी परिस्थितियों के साथ बदल रहे हैं। लिहाजा, मजदूरों की स्थिति में सुधार से किसी भी प्रकार के टकराव को टाला जा सकता है। सामाजिक अशांति का कारण बढ़ती गरीबी नहीं, बल्कि औद्योगिक केंद्रों में गरीब वर्गों का इकट्ठा हो जाना है। इसी कारण वर्ग चेतना बढ़ रही है। इसीलिए यह सब हाय-तौबा मची है।

Downloaded from www.PDFshala.com

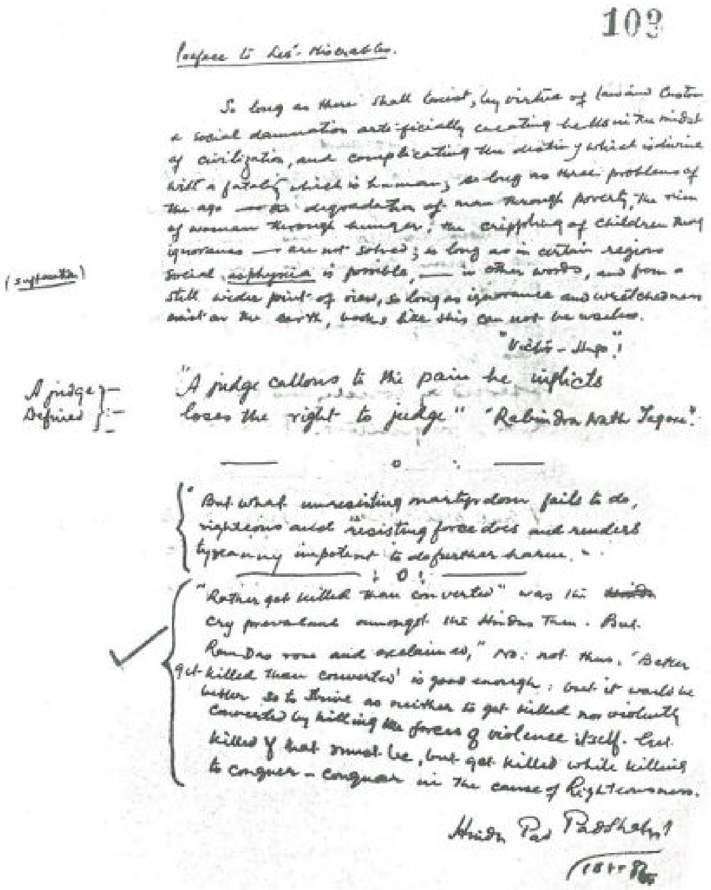

103

Preface to Les-Miserables.

So long as there shall exist, by virtue of law and custom a social damnation artificially creating hells in the midst of civilization, and complicating the destiny which is divine with a fatality which is human; so long as three problems of the age — the degradation of man through poverty, the ruin of woman through hunger, the crippling of children through ignorance — are not solved; so long as in certain regions social asphyxia is possible, — in other words, and from a still wider point of view, so long as ignorance and wretchedness exist on the earth, books like this can not be useless.

"Victor-Hugo".

(suffocation)

A judge — Defined :—

"A judge callous to the pain he inflicts loses the right to judge." "Rabindra Nath Tagore".

— o : —

"But what unresisting martyrdom fails to do, righteous and resisting force does and renders tyranny impotent to do further harm."

— : O : —

"Rather get killed than converted" was the cry prevalent amongst the Hindus then. But Ramdas rose and exclaimed, "No: not thus. 'Better get killed than converted' is good enough: but it would be better so to strive as neither to get killed nor violently converted by killing the forces of violence itself. Get killed if that must be, but get killed while killing to conquer — conquer in the cause of Righteousness.

Hindu Pad Padshahi

(184 Pg)

लेस मिजरेबल्स की प्रस्तावना

जब तक कानून और रिवाजों के कारण एक सामाजिक लानत-मलामत मौजूद है, जो सभ्यता के बीच बनावटी नरक पैदा करती है, और जो प्रारब्ध को जटिल बनाकर, जो मानवीय होकर भी दिव्य रूप दिए जाने से घातक हो जाता है; जब तक युग की तीन समस्याओं—गरीबी के कारण आदमी का पतन, भूख के कारण औरत की तबाही, अज्ञान के कारण बच्चों की पंगुता—का समाधान नहीं हो जाता; जब तक कुछ क्षेत्रों में सामाजिक नाड़ी रुकना (साँस रुकना) संभव है—अन्य शब्दों में, और अधिक व्यापक दृष्टिकोण से, जब तक धरती पर अज्ञान और दुष्टता मौजूद है, तब तक इस तरह की पुस्तकें बेकार नहीं हो सकतीं।

— विक्टर ह्यूगो

जज की परिभाषा

"जज, जो दर्द के प्रति बेरहम है, वह जज के अधिकार का हनन करता है।"

—रवींद्रनाथ टैगोर

—————————— : * : ——————————

"लेकिन बिना विरोध की शहादत जो नहीं कर पाती, वह सच्ची और विरोध करनेवाली ताकत कर जाती है और जालिम को नपुंसक बनाकर उसे और सितम करने लायक नहीं छोड़ती।"

***घुटन— भगमसिंह** *(पृ. 82)*

Downloaded from www.PDFshala.com

—————————— : * : ——————————

"उस वक्त हिंदुओं में यह आवाज थी कि धर्म बदलने के बजाय मर जाओ। लेकिन रामदास ने उठ खड़े होकर घोषणा की, "नहीं, ऐसा नहीं हो ! धर्म बदलने से बेहतर है, मारे जाओ। यह पर्याप्त रूप से अच्छा है; लेकिन इस बात के लिए संघर्ष करना बेहतर है कि न मारे जाओ, न आवेग में धर्म बदलो, बल्कि हिंसा की ताकतों को ही मार डालो। ऐसा करते हुए विजेता को मारते हुए मरना पड़े तो मर जाओ—धर्म की खातिर।"

—हिंदू पादशाही

** नोट : विक्टर ह्यूगो 1802-1855 : फ्रांसीसी कवि, नाटककार, उपन्यासकार और रोमांसवाद के एक प्रवर्तक। लेस मिजरेनल्स उनका 1862 में लिखा एक क्लासिक उपन्यास है।*

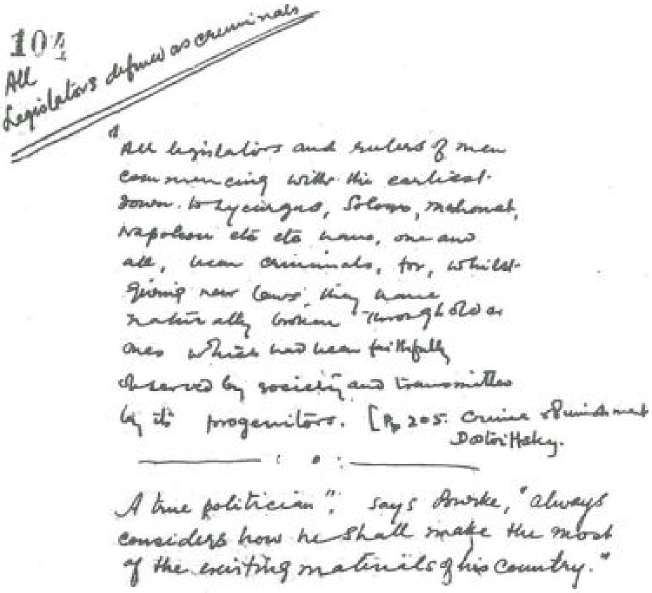
104

All Legislators defined as criminals

"All legislators and rulers of men commencing with the earliest down to Lycurgus, Solon, Mahomet, Napoleon etc etc have, one and all, been criminals, for, whilst giving new laws, they have naturally broken through the old ones which had been faithfully observed by society and transmitted by its progenitors. [P. 205. Crime & Punishment Dostoievsky.

: * :

A true politician", says Burke, "always considers how he shall make the most of the existing materials of his country."

Downloaded from www.PDFshala.com

सभी लेजिस्लेटर अपराधियों के रूप में परिभाषित

"शुरू से लेकर लिक्युरगस, सोलोन महोमेट, नेपोलियन आदि तक सभी लेजिस्लेटर और शासक अपराधी रहे हैं, क्योंकि नए कानून देते समय पुराने कानूनों को तोड़ा, जिनका समाज ने निष्ठा से पालन किया और अपनी संतानों को इसका दायित्व सौंप गए।"

(पृ. 205, क्राइम ऐंड पनिशमेंट)

—दोस्तोवस्की

———————— : * : ————————

बर्क ने कहा, "एक सच्चा राजनीतिज्ञ हमेशा यह मानता है कि वह अपने देश की वर्तमान सामग्री का सर्वश्रेष्ठ उपयोग करेगा।"

Jurisprudence :—

105

Law :—

1. Legal exposition } as it exists.
2. Legal History } As it develops.
3. Science of legislation } As it ought to be.

: o :

1. Theoretical } .., Philosophy. Supplying foundation for the science.
2. General } jurisprudence

: o :

1. Analytical
2. Historical } jurisprudence
3. Ethical

1. Analytical jurisprudence explains the first principles of Law. It deals with (a) conception of Civil Law
(b) Relation between Civil & other laws
(c) Various constituent ideas that constitute the idea of law viz State, sovereignty and administration of justice.
(d) Legal sources of law and theory of legislation etc.
(e) Scientific arrangement of law
(f) Legal rights.
(g) Theory of legal (civil & criminal) liability.
(h) Other legal conceptions.

Downloaded from www.PDFshala.com

न्याय शास्त्र

कानून

1. कानूनी व्याख्या – जैसी मौजूद है
2. कानून का इतिहास – जैसा बनाया गया
3. कानून का विज्ञान – जैसा होना चाहिए

————————— : * : —————————

1. सैद्धांतिक (i) दर्शन। विज्ञान के लिए आधार देने वाला न्याय शास्त्र
2. सामान्य (i) दर्शन। विज्ञान के लिए आधार देने वाला न्याय शास्त्र

————————— : * : —————————

1. विश्लेषणात्मक न्याय शास्त्र
2. ऐतिहासिक न्याय शास्त्र
3. नैतिक न्याय शास्त्र

1. विश्लेषणात्मक न्याय कानून के प्रथम सिद्धांत की व्याख्या करता है। यह निम्नलिखित विषयों पर चर्चा करता है—

(ए) सिविल कानून की अवधारणा

(बी) सिविल और अन्य कानूनों के बीच संबंध

(सी) कानून के विचार का निर्माण करनेवाले अनेक घटक विचार, अर्थात् राज्य की संप्रभुत्ता और न्याय प्रशासन

(डी) कानून के विधिक स्रोत, और कानून का सिद्धांत आदि

(ई) कानून की वैज्ञानिक व्यवस्था

(एफ) कानूनी अधिकार

(जी) कानूनी (सिविल और क्रिमिनल) दायित्व का सिद्धांत

(एच) अन्य कानूनी अवधारणाएँ

Downloaded from www.PDFshala.com

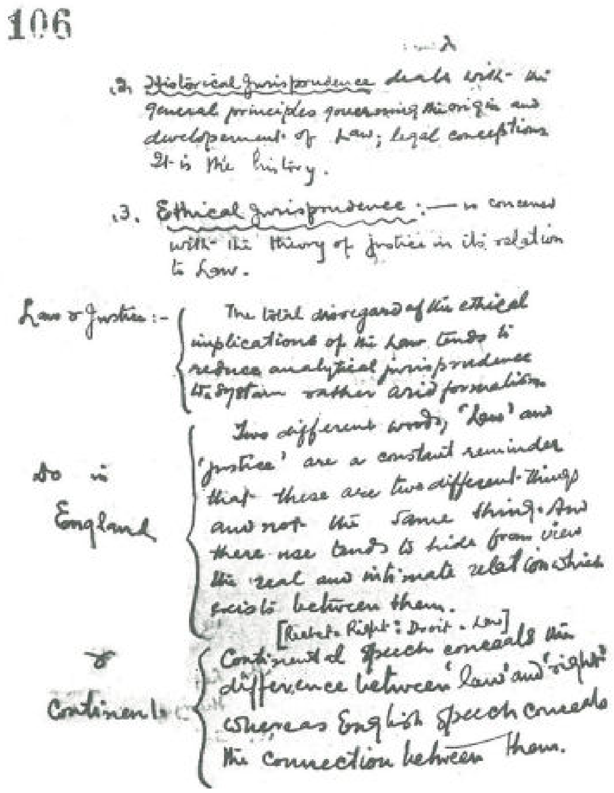
106

2. Historical Jurisprudence deals with the general principles governing the origin and development of law; legal conceptions. It is the history.

3. Ethical Jurisprudence :— is concerned with the theory of justice in its relation to law.

Law & Justice :- The total disregard of the ethical implications of the law tends to reduce analytical jurisprudence to a system rather arid formalism.

So in England
Two different words, 'law' and 'justice' are a constant reminder that these are two different things and not the same thing. And their use tends to hide from view the real and intimate relation which exists between them.

[Recht : Right : Droit : Law]

& Continental
Continental speech conceals the difference between 'law' and 'right' whereas English speech conceals the connection between them.

** नोट : ऐसा प्रतीत होता है कि भगतसिंह ने विधिशास्त्र संबंधी व्यापक अध्ययन की रूपरेखा बनाई थी, जो नोटबुक के अगले कई पृष्ठों तक जारी है।*

(2) ऐतिहासिक न्यायशास्त्र में कानून की उत्पत्ति और विकास को शासित करनेवाले सामान्य सिद्धांतों; कानूनी अवधारणाओं की चर्चा होती है। यह इतिहास है।

(3) नैतिक न्यायशास्त्र न्याय के साथ कानून के संबंध का अध्ययन है।

कानून और न्याय

कानून और नीतिशास्त्रीय निहितार्थों की पूर्ण आलोचना विश्लेषणात्मक विधिशास्त्र की एक बेजान प्रणाली में तब्दील कर सकती है।

इंग्लैंड में

दो विभिन्न शब्द 'कानून' और 'न्याय' लगातार याद दिलाते हैं कि ये दोनों अलग-अलग चीजें हैं, एक ही नहीं। उनका उपयोग करते समय दोनों के बीच वास्तविक और घनिष्ठ संबंध को नहीं देखा जाता।

और महाद्वीप में

(रीचेट : अधिकार = ड्रॉइट : कानून)

महाद्वीपीय भाषा में 'कानून' और 'अधिकार' के बीच भेद छुप जाता है, जबकि अंग्रेजी भाषा में उनके बीच संबंध को छुपाया जाता है।

Downloaded from www.PDFshala.com

Law:—

"We term any kind of rule or canon whereby actions are framed, a law." [Hooker]

"Law in its most general sense signifies a rule of action, and is indiscriminately to all kinds of action whether rational or irrational, animate or inanimate. Thus we say, the Laws of motion, of gravitation, of optics, of nature and of nations." {Blackstone}

Kinds of Laws:—

1. Imperative Law
2. Physical Law or Scientific Law
3. Natural or Moral Law
4. Conventional Law
5. Customary Law
6. Practical or Technical Law
7. International Law
8. Civil Law or the Law of the State.

Downloaded from www.PDFshala.com

कानून

"हम उस किसी भी किस्म के नियम या सिद्धांत को कानून नाम दे देते हैं, जिसके द्वारा कार्यों को कानून का रूप दिया जाता है।"

—हूकर

"कानून अपने सर्वाधिक सामान्य अर्थ में कार्य के नियम का द्योतक है, और सभी तरह के कार्यों में भेदभाव नहीं करता, चाहे संगत हो या असंगत, जड़ हो या चेतन।"

इस तरह हम कहते हैं, गति के सिद्धांत, गुरुत्वाकर्षण के सिद्धांत, प्रकाश के सिद्धांत, प्रकृति के सिद्धांत और राष्ट्रों के सिद्धांत।

—ब्लेकस्टोन

कानूनों के प्रकार

(1) अनिवार्य कानून
(2) भौतिक कानून अथवा वैज्ञानिक कानून
(3) प्राकृतिक अथवा नैतिक कानून
(4) पारंपरिक कानून
(5) प्रथागत कानून
(6) व्यावहारिक अथवा तकनीकी कानून
(7) अंतरराष्ट्रीय कानून
(8) सिविल कानून अथवा राज्य का कानून

Downloaded from www.PDFshala.com

1. Imperative Law means a rule of action imposed upon men by some authority which enforces obedience to it.

'A Law is a command which obliges a person or persons to a course of ~~action~~ conduct.' {Austin}

The sanctions of Imperative Law - Punishment etc.

Positive morality in society also amounts to the Imperative Laws.

Hobbes' view:- {It is men and arms that make the force and power of the laws. (Hobbes).}

2. Physical Law is an expression of actions as they are. (moral Law or the law of reason, is an expression of actions as they ought to be.)

3. Natural or Moral Law means the principles of natural right and wrong — the principles of natural justice including all rightful actions.

Justice being of two kinds the Positive and Natural.

Natural justice is justice as it is indeed and in truth.

Positive justice is justice as it is conceived, recognized and expressed.

Downloaded from www.PDFshala.com

1. अनिवार्य कानून का अर्थ है, कार्य का वह नियम, जो लोगों पर किसी ऐसे अख्तियार द्‌वारा लागू किया जाता है, जो इसका पालन करने को मजबूर करता है। "कानून एक ऐसा आदेश है, जो किसी व्यक्ति अथवा व्यक्तियों को एक विशेष प्रकार के आचरण के लिए मजबूर करता है।"

अनिवार्य कानून का अनुमोदन : सजा, युद्‌ध आदि समाज में सकारात्मक नैतिकता भी अनिवार्य कानून है।

—ऑस्टिन

{ **हॉब्स के विचार :** मानव और हथियार कानून की ताकत और बल का निर्माण करते हैं।

2. **भौतिक कानून :** कार्यों की उसी स्वरूप में अभिव्यक्ति है। (नैतिक कानून अथवा तर्क का कानून ऐसे कार्यों की अभिव्यक्ति है, जो होना चाहिए)।

3. **प्राकृतिक अथवा नैतिक कानून** का अर्थ है सही और गलत के प्राकृतिक सिद्‌धांत—नैसर्गिक न्याय के सिद्‌धांत, जिनमें सही न्यायपूर्ण कार्य शामिल हैं। न्याय दो तरह का होता है—सकारात्मक और नैसर्गिक

नैसर्गिक न्याय वह है, जो वास्तव में है और सत्य है।

सकारात्मक न्याय : ऐसा न्याय है, जिसकी अवधारणा की गई है, जिसे मान्य तथा अभिव्यक्त किया गया है।

Downloaded from www.PDFshala.com

4. Conventional Law :— is any rule or system of rules agreed upon by persons for the regulation of their conduct. Agreement is a law for the parties to it.

5. Customary Law :— is any rule of action which is actually observed by men — any rule which is the expression of some actual uniformity of voluntary action. Custom is law for those who observe it.

6. Practical or Technical Law.— consists of rules for the attainment of some practical end. In games there are both conventional laws and practical laws; the former being the rules agreed upon by players, the latter being the rules to make the player success or for the successful playing of the game.

7. International Law :— consists of those rules which govern sovereign states in their relations and conduct towards each other.

1) Express laws. [Treaties Etc.
2) Implied laws. [Customary.

Again divisible into two kinds —

1) Common laws (between all nations)
2) Particular laws (between two or more particular nations.)

8. Civil Law :— Law of the State or of the land; as applied in the Courts of Justice. ...

Downloaded from www.PDFshala.com

4. **पारंपरिक कानून :** कोई भी ऐसे नियम अथवा नियमों की व्यवस्था है, जिस पर लोग अपने आचरण के विनियमन के लिए सहमत हों। अनुबंध संबंधित पक्षों के लिए एक कानून है।

5. **प्रथागत कानून** ऐसा कार्य का नियम है, जिसका वास्तव में लोगों द्वारा पालन किया जाता है—कोई नियम, जो स्वैच्छिक कार्य की किसी वास्तविक समानता को अभिव्यक्त करता है।

6. **व्यावहारिक अथवा तकनीकी कानून** में किसी व्यावहारिक लक्ष्य को प्राप्त करने के लिए नियम होते हैं। खेलों में ये दोनों होते है—'पारंपरिक कानून' और 'व्यावहारिक कानून'। पहले वाले कानून पर खिलाड़ियों की सहमति होती है, जबकि दूसरे वाले कानून में ऐसे नियम होते हैं, जो खेल को सफल बनाने अथवा खेल को सफलतापूर्वक खेले जाने के लिए होते हैं।

7. **अंतरराष्ट्रीय कानून** में वे नियम होते हैं, जो संप्रभुत्ता संपन्न राज्यों के अन्य राज्यों के साथ संबंधों तथा आचरण को शासित करते हैं।

(1) एक्सप्रेस कानून (संधियाँ आदि)

(2) सांकेतिक कानून (प्रथागत)

(3) साझा कानून (सभी देशों के बीच)

(4) विशिष्ट कानून (दो अथवा अधिक विशिष्ट राष्ट्रों के बीच)

8. **सिविल कानून :** राज्य अथवा देश का कानून—जो न्याय की अदालतों में लागू होता है।

Downloaded from www.PDFshala.com

दंड

राजनीति अपराध

"हम बड़ी संख्या में उन लेजिस्लेटर्स के इस विचार से सहमत हैं कि आमतौर पर कोई व्यक्ति, जो किसी ऐसी राजनीतिक साजिश का हिस्सा रहा हो, जिसे अंजाम न दिया गया हो, उसे कठोर दंड नहीं दिया जाना चाहिए। फिर भी, राज्य के विरुद्ध होनेवाले बड़े अपराधों के मामले में इस नियम का अपवाद होना चाहिए; क्योंकि राज्य के विरुद्ध अपराध, विशेषकर अत्यंत जघन्य और भयंकर अपराध इस प्रकार के होते हैं कि यदि उन्हें सफलतापूर्वक अंजाम दे दिया जाए, तो अपराधी हमेशा दंड से बच जाता है। कातिल उसके शिकार की मौत के बाद पहले से ज्यादा खतरे में हो जाता है। चोर उसके शिकार की मौत के बाद पहले से ज्यादा खतरे में आ जाता है। चोर पर्स लिये जाने के बाद पहले से ज्यादा खतरे में आ जाता है, लेकिन राजद्रोही जब सरकार का तख्ता पलट देता है तो वह खतरे से बाहर हो जाता है। चूँकि दंड देने वाला कानून कामयाब बागी के विरुद्ध नपुंसक होता है, लिहाजा यह बहुत जरूरी है कि इसे बगावत के शुरू होते ही अधिक कठोर और तीखा बना दिया जाए।"

— II एल.सी.सी. जजमेंट, 1906

(पृ. 120)

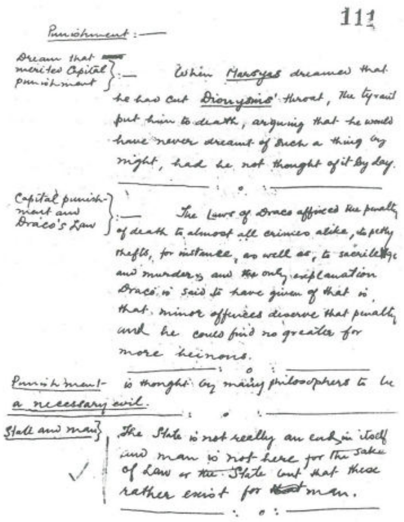
111

Punishment :—

Dream that merited Capital punishment } :— When Marsyas dreamed that he had cut Dionysius' throat, the tyrant put him to death, arguing that he would have never dreamt of such a thing by night, had he not thought of it by day.

Capital punishment and Draco's Law } :— The Laws of Draco affixed the penalty of death to almost all crimes alike, to petty thefts, for instance, as well as, to sacrilege and murders; and the only explanation Draco is said to have given of that is, that minor offences deserve that penalty and he could find no greater for more heinous.

Punishment is thought by many philosophers to be a necessary evil.

State and man } The State is not really an end in itself and man is not here for the sake of Law or the State but that these rather exist for ~~that~~ man.

Downloaded from www.PDFshala.com

मृत्युदंड का सपना

जब **मार्सियस** ने सपना देखा कि उसने **डायोनिसिस** का गला काट दिया, तो जालिम शासक ने उसे मौत के घाट उतार दिया, यह दलील देते हुए कि यदि उसने दिन में यह सोचा न होता, तो वह कभी रात में यह सपना देख ही नहीं सकता था।

——————————— : * : ——————————

मृत्युदंड और डेको का कानून

डेको के कानूनों ने प्राय: सभी अपराधों के लिए मृत्युदंड निर्धारित किया था, छोटी-मोटी चोरी के लिए भी, धर्मस्थान को अपवित्र करने और हत्या के लिए भी। कहते हैं कि डेको ने इसकी एकमात्र सफाई यह दी थी कि छोटे अपराधों के लिए यह सजा मिलनी चाहिए और बड़े जुर्मों के लिए इससे बड़ी सजा वह सोच नहीं सका।

—————————— : * : ——————————

दंड को अनेक दार्शनिक एक आवश्यक बुराई समझते हैं।

——————————— : * : ——————————

राज्य और आदमी

राज्य अपने आप में कोई लक्ष्य नहीं है और आदमी कानून अथवा राज्य के लिए नहीं, बल्कि ये दोनों आदमी के लिए

—————————————— : * : ——————————————

Downloaded from www.PDFshala.com

Justice :— The maintenance of right within a political community by means of the physical force of the State.
It has replace the personal vengeance, when men avenged their own wrongs by themselves or with the help of their kinsmen. In those days the principle of 'might is right' worked.

Civil & Criminal Justice } :— Civil justice enforces rights. Criminal justice punishes wrongs.
A man claims a debt that is due to him, or the restoration of property wrongfully detained from him. This is Civil.
In a criminal case the defendant is accused of a wrong. Court visits the accused with a penalty for the duty already disregarded and for a right already violated, as where he is hanged for murder and imprisoned for theft.

Downloaded from www.PDFshala.com

न्याय

किसी राजनीतिक समुदाय के भीतर राज्य की भौतिक ताकत के माध्यम से अधिकार को कायम रखना।

जब मनुष्यों ने अपने पर किए गए अन्यायों का स्वयं अथवा अपने परिजनों के साथ मिलकर बदला लिया, तब इसने व्यक्तिगत प्रतिशोध की जगह ले ली। उन दिनों 'जिसकी लाठी उसकी भैंस' का सिद्धांत चलता था।

सिविल और आपराधिक न्याय

सिविल न्याय अधिकारों को लागू करता है। आपराधिक न्याय गलत कामों पर दंड देता है।

कोई व्यक्ति उसके द्वारा दिए गए कर्ज अथवा उससे गलत तरीके से छीनी गई संपत्ति को वापस लेने के लिए दावा करता है। यह सिविल है।

आपराधिक मामले में प्रतिवादी पर कुछ गलत करने का आरोप होता है। अदालत आरोपी को उसके कर्तव्य का पालन न करने तथा किसी अधिकार के हनन के लिए सजा देती है। उसे हत्या के लिए फाँसी और चोरी के लिए कैद की सजा दी जाती है।

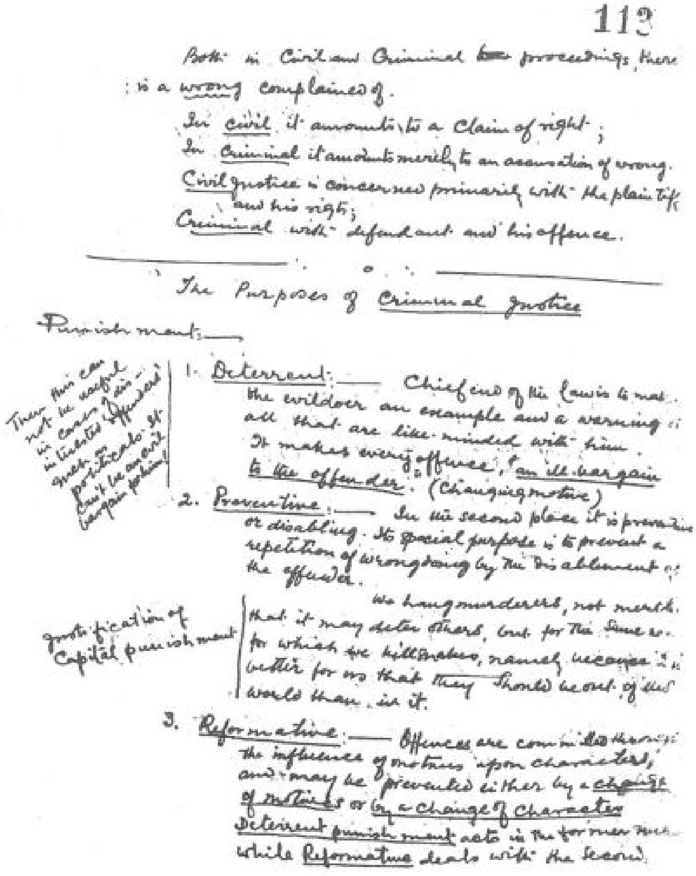
113

Both in Civil and Criminal proceedings, there is a wrong complained of.

In civil it amounts to a claim of right;
In Criminal it amounts merely to an accusation of wrong.
Civil justice is concerned primarily with the plaintiff and his right;
Criminal with defendant and his offence.

The Purposes of Criminal Justice

Punishment:—

1. Deterrent:— Chief end of the law is to make the evildoer an example and a warning to all that are like-minded with him. It makes every offence "an ill bargain to the offender". (Changing motive)

There this can not be useful in cases of [illegible] offenders such as political. It can't be an evil bargain [illegible]

2. Preventive:— In the second place it is preventive or disabling. Its special purpose is to prevent a repetition of wrongdoing by the disablement of the offender.

We hang murderers, not merely that it may deter others, but for the same reason for which we kill snakes, namely because it is better for us that they should be out of the world than in it.

Justification of Capital punishment

3. Reformative:— Offences are committed through the influence of motives upon character, and may be prevented either by a change of motives or by a change of character. Deterrent punishment acts in the former method while Reformative deals with the second.

Downloaded from www.PDFshala.com

सिविल और मूल प्रक्रियाओं, दोनों में किसी गलत काम की शिकायत होती है। सिविल में किसी अधिकार का दावा होता है।

आपराधिक में यह प्राय: गलत का आरोप होता है।

सिविल न्याय प्राथमिक दृष्टि से वादी और उसके अधिकारों से संबंधित है।

आपराधिक का संबंध प्रतिवादी और उसके अपराध से है।

——————————— : ✻ : ——————————

आपराधिक न्याय के उद्‌देश्य

1. **दंड :** कानून का मुख्य उद्‌देश्य गलत काम करनेवाले को एक मिसाल बनाकर उसके समान सोचने वालों के लिए चेतावनी देना है। इससे प्रत्येक "अपराधी को अपराध करना कठिन हो जाता है।"

अभिप्राय (motive) बदलकर

2. **रोकथाम :** इसका दूसरा उद्‌देश्य अपराध की रोकथाम करना अथवा अपराध करने के अयोग्य बनाना है। इसका विशेष उद्‌देश्य अपराधी को अपराध करने के अयोग्य बनाकर अपराध की पुनरावृत्ति को रोकना है।

मृत्युदंड का औचित्य

हम हत्यारे को सिर्फ इसलिए फाँसी नहीं देते कि इससे दूसरों को हत्या करने से रोका जा सकता है, बल्कि उसी कारण से देते हैं, जिस कारण से हम साँप को मारते हैं, यानी हमारे लिए यह बेहतर है कि वह दुनिया में रहने के बजाय दुनिया से बाहर रहे।

3. **सुधारात्मक :** अपराध चरित्र पर अभिप्राय के असर के कारण होते हैं, और अभिप्राय बदलकर अथवा चरित्र बदलकर उन्हें रोका जा सकता है। अवरोधक दंड पहली घटना में काम करता है, जबकि सुधारात्मक दंड दूसरे में।

Downloaded from www.PDFshala.com

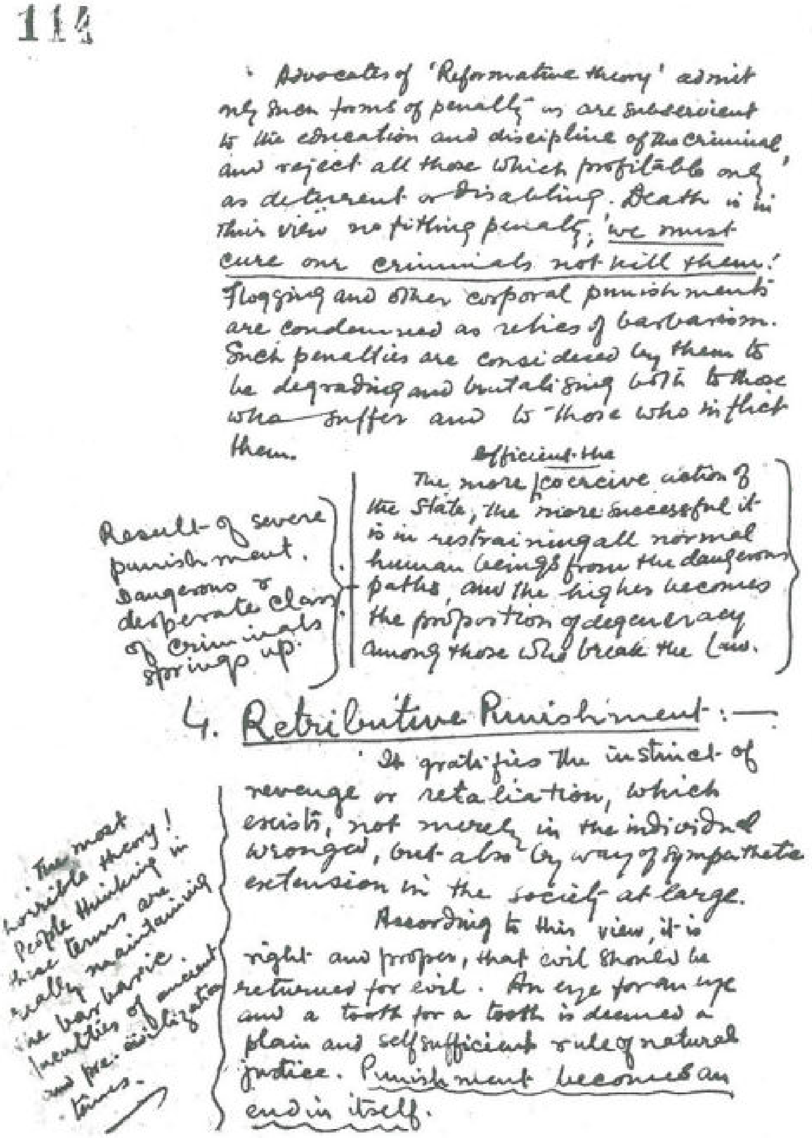
114

'Advocates of 'Reformative theory' admit only such forms of penalty as are subservient to the education and discipline of the criminal, and reject all those which profitable only as deterrent or disabling. Death is in their view no fitting penalty; 'we must cure our criminals not kill them.' Flogging and other corporal punishments are condemned as relics of barbarism. Such penalties are considered by them to be degrading and brutalising both to those who suffer and to those who inflict them.

Result of severe punishment. Dangerous & desperate class of criminals springs up.

Efficient the
The more coercive action of the State, the more successful it is in restraining all normal human beings from the dangerous paths, and the higher becomes the proportion of degeneracy among those who break the law.

4. Retributive Punishment :—

'It gratifies the instinct of revenge or retaliation, which exists, not merely in the individual wronged, but also by way of sympathetic extension in the society at large.

According to this view, it is right and proper, that evil should be returned for evil. An eye for an eye and a tooth for a tooth is deemed a plain and self sufficient rule of natural justice. Punishment becomes an end in itself.

The most horrible theory! People thinking in these terms are really maintaining the barbaric mentalities of ancient and pre-civilization times.

'सुधारात्मक सिद्धांत' के समर्थक दंड के सिर्फ उन स्वरूपों को स्वीकार करते हैं, जो अपराधी को शिक्षा दें और अनुशासित करें, और उन सभी दंडों को अस्वीकृत करते हैं, जो निवारक तथा अपराधी को अपराध के अयोग्य बनाने वाले (हों)। उनकी नजर में मृत्युदंड उचित नहीं है। कोड़े मारने तथा अन्य शारीरिक दंड देने को बर्बरता की निशानी मानकर उनकी आलोचना की जाती है। उनके द्वारा ऐसे दंडों को दंड पाने वाले तथा दंड देने वाले, दोनों के लिए तथा क्रूरतापूर्ण माना जाता है।*

राज्य की बलपूर्वक कारस्वाई जितनी अधिक सक्षम होगी, वह सामान्य लोगों को खतरनाक रास्ते पर जाने से रोकने में उतनी ही सफल होगी, और कानून तोड़ने वालों के लिए वह उसी अनुपात में पतनकारी होगी।

4. **प्रतिकारात्मक दंड :** इससे बदले अथवा प्रतिशोध की प्रवृत्ति की तुष्टि होती है, जो न सिर्फ उस व्यक्ति में होती है, जिसके साथ गलत हुआ हो, बल्कि व्यापक समाज में यह सहानुभूतिपूर्ण विस्तार के रूप में भी होती है। इस दृष्टिकोण के अनुसार, यह सही और उचित है कि बुरे के बदले बुरा किया जाए। आँख के बदले आँख

Downloaded from www.PDFshala.com

फोड़ी जाए और दाँत के बदले दाँत। इसे ही नैसर्गिक न्याय का आत्मनिर्भर पर्याप्त सीधा नियम माना जाता है। दंड स्वयं एक बुराई बन जाता है।

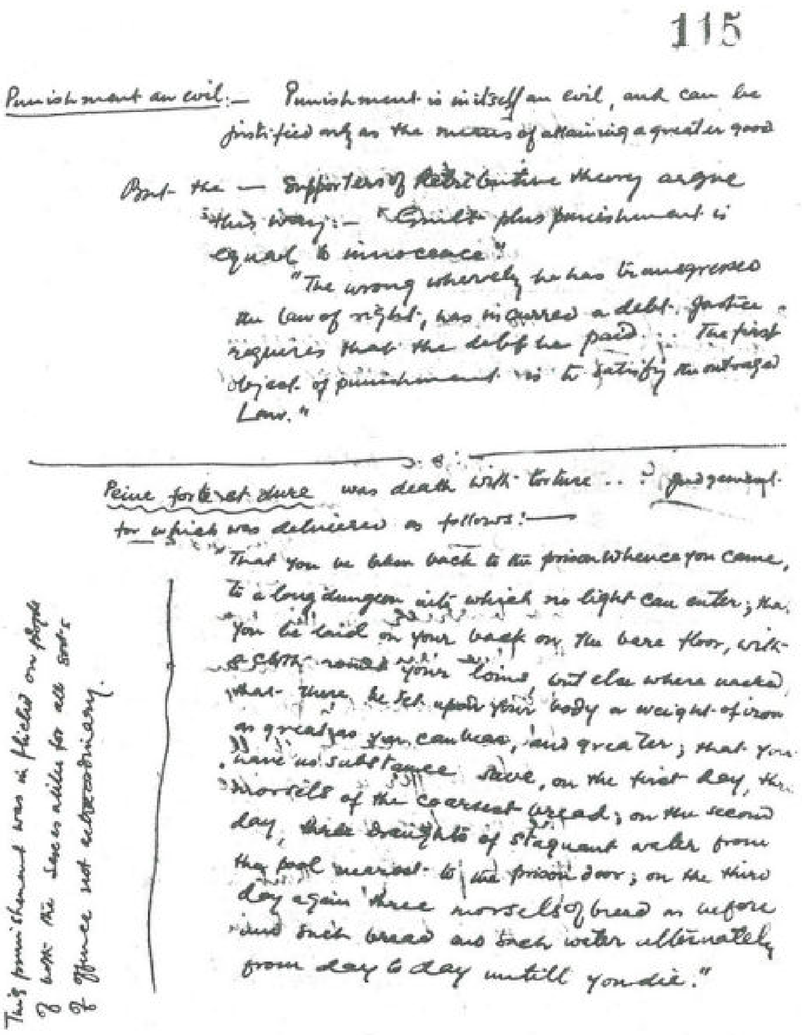
115

Punishment an evil:— Punishment is in itself an evil, and can be justified only as the means of attaining a greater good

But the — Supporters of Retributive theory argue this way:— "Guilt plus punishment is equal to innocence."

"The wrong whereby he has transgressed the law of right, has incurred a debt. Justice requires that the debt be paid... The first object of punishment is to satisfy the outraged Law."

Peine forte et dure was death with torture .. ? Judgement for which was delivered as follows:—

"That you be taken back to the prison whence you came, to a low dungeon into which no light can enter; that you be laid on your back on the bare floor, with a cloth round your loins, but elsewhere naked; that there be set upon your body a weight of iron as great as you can bear, and greater; that you have no substance save, on the first day, three morsels of the coarsest bread; on the second day, three draughts of stagnant water from the pool nearest to the prison door; on the third day again three morsels of bread as before and such bread and such water alternately from day to day untill you die."

This punishment was inflicted on people of both the sexes alike for all sorts of offence not extraordinary.

दंड : एक बुराई

दंड अपने आप में एक बुराई है, और उसे किसी बड़े भलाई के काम के साधन के रूप में ही उचित ठहराया जा सकता है।

लेकिन प्रतिकारात्मक सिद्धांत के समर्थक दलील देते हैं कि "अपराध और दंड मिलकर निर्दोषता बन जाते हैं।"**

---

* कठोर दंड का परिणाम: अपराधियों का खतरनाक और गुस्सैल वर्ग उत्पन्न हो जाता है।

** सबसे भयानक सिद्धांत ! इस तरह से सोचने वाले लोग वास्तव में प्राचीन और सभ्यता-पूर्व की बर्बर प्रवृत्तियों को कायम रखते हैं।

भगतसिंह की टिप्पणी

Downloaded from www.PDFshala.com

"उस अपराध से जिसमें किसी ने सच्चे व्यक्ति के अधिकार का हनन किया है, उसका कर्ज उस पर हो गया। न्याय की माँग है कि यह कर्ज चुकाया जाए—दंड का पहला उद्‌देश्य तोड़े गए कानून को संतुष्ट किया जाए।

———————— : * : ————————

Peive forte due तड़पाकर दी जानेवाली मौत थी, उसके लिए निम्नलिखित निर्णय दिया गया—

"यह कि तुम्हें उसी जेल में वापस ले जाया जाएगा, जहाँ से तुम आए हो, एक लंबी काल कोठरी में, जिसमें रोशनी नहीं जा सकती। इसके बाद तुम्हे नंगे फर्श पर पीठ के बल लिटाया जाएगा, तुम्हारी कमर में एक कपड़ा बाँध दिया जाएगा, बाकी सारा शरीर नंगा होगा। इसके बाद तुम्हारे शरीर पर लोहे का उतना वजन रखा जाएगा, जितना तुम सहन कर सकते हो, और उससे भी ज्यादा, उस दिन तुम्हारी बरदाश्त की ताकत खत्म हो जाएगी, पहले दिन तुम्हें सबसे मोटे अनाज की रोटी के कौर दिए जाएँगे। दूसरे दिन जेल के दरवाजे के सबसे पास स्थित पोखर के ठहरे हुए पानी की तीन बूँदें दी जाएँगी। तीसरे दिन, पहले की तरह फिर रोटी के तीन कौर दिए जाएँगे, और यह रोटी और पानी तुम्हें मरने तक बारी-बारी से दी जाएँगी।"*

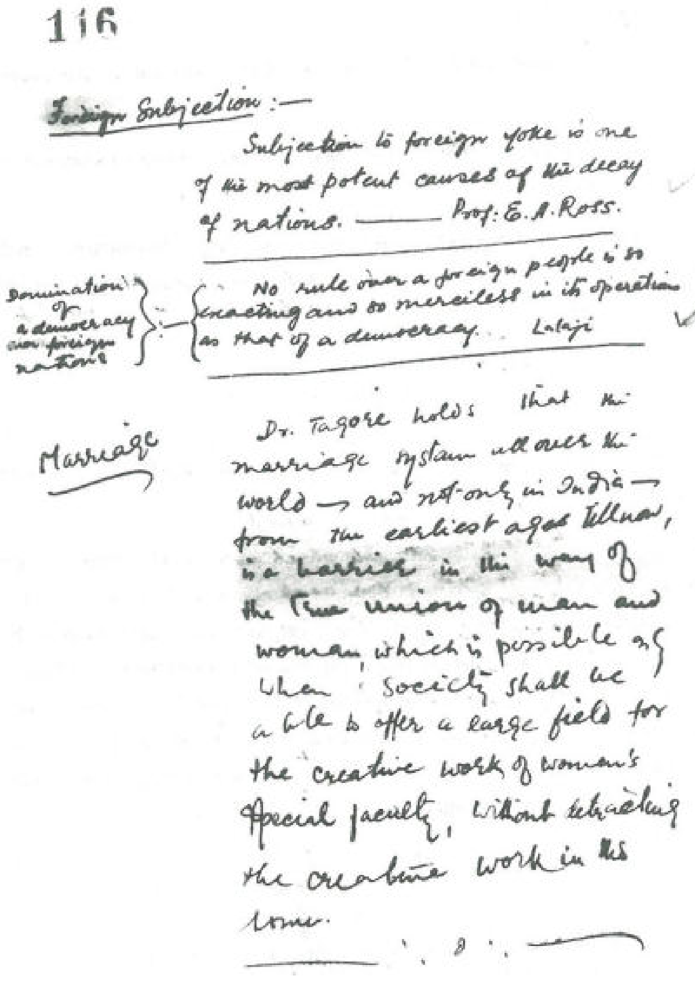
116

Foreign Subjection :—

Subjection to foreign yoke is one of the most potent causes of the decay of nations. —— Prof: E. A. Ross.

Domination of a democracy over foreign nations :— No rule over a foreign people is so exacting and so merciless in its operation as that of a democracy. Lalaji

Marriage

Dr. Tagore holds that the marriage system all over the world — and not only in India — from the earliest ages till now, is a barrier in the way of the true union of man and woman, which is possible only when society shall be able to offer a large field for the creative work of woman's special faculty, without checking the creative work in the home.

———— . . . ————

* यह सजा असाधारण अपराध के लिए नहीं, बल्कि सभी तरह के अपराधों के लिए स्त्रियों और पुरुषों, दोनों को समान रूप से दी जाती थी।—भगतसिंह

Downloaded from www.PDFshala.com

विदेशी गुलामी

विदेशी गुलामी राष्ट्रों की तबाही के सबसे बड़े कारणों में एक है।

—प्रो. ए.ई. रोस

जनतंत्र का प्रभुत्व और विदेशी राष्ट्र एक विदेशी जनता के ऊपर एक जनतंत्र की कारवाइयाँ ज़ितनी निरंकुश और निर्मम होती हैं, उतनी और किसी भी शासन की नहीं होतीं।

—लालाजी

शादी

डॉ. टैगोर का मानना है कि पूरी दुनिया में शादी की व्यवस्थाएँ—सिर्फ भारत में नहीं—प्रारंभिक काल से अब तक स्त्री और पुरुष के वास्तविक मिलन में एक बाधा हैं। यह मिलन तभी संभव है, जब समाज स्त्रियों की विशेष प्रतिभा को रचनात्मक कार्य करने के लिए बड़ा क्षेत्र प्रदान करे, घर में सृजनात्मक काम से उनका ध्यान हटाए बिना।

: * :

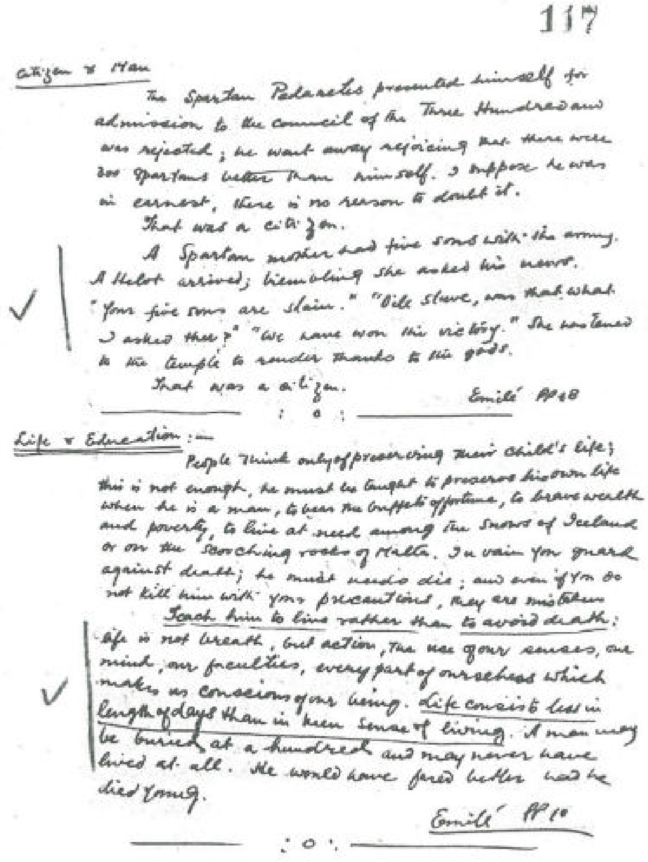

117

Citizen & Man

The Spartan Pedaretes presented himself for admission to the council of the Three Hundred and was rejected; he went away rejoicing that there were 300 Spartans better than himself. I suppose he was in earnest, there is no reason to doubt it.

That was a citizen.

A Spartan mother had five sons with the army. A Helot arrived; trembling she asked his news. "Your five sons are slain." "Vile slave, was that what I asked thee?" "We have won the victory." She hastened to the temple to render thanks to the gods.

That was a citizen.

Emile p. 8

: o :

Life & Education :—

People think only of preserving their child's life; this is not enough, he must be taught to preserve his own life when he is a man, to bear the buffets of fortune, to brave wealth and poverty, to live at need among the snows of Iceland or on the scorching rocks of Malta. In vain you guard against death; he must needs die; and even if you do not kill him with your precautions, they are mistaken. Teach him to live rather than to avoid death: life is not breath, but action, the use of our senses, our mind, our faculties, every part of ourselves which makes us conscious of our being. Life consists less in length of days than in keen sense of living. A man may be buried at a hundred and may never have lived at all. He would have fared better had he died young.

Emile p. 10

: o :

Downloaded from www.PDFshala.com

* नोट : लाला लाजपत राय (1865-1928) : लाहौर में साइमन कमीशन का विरोध करने पर ब्रिटिश पुलिस ने बर्बर लाठीचार्ज किया, और इसी में लगी सांघातिक चोट के फलस्वरूप बाद में लालाजी की मृत्यु हो गई। उनकी मौत और पंजाब के अपमान का बदला लेने के लिए भगतसिंह और उनके क्रांतिकारी सास्थियों ने ब्रिटिश पुलिए अफसर सांडर्स की गोली मारकर हत्या कर दी।

Downloaded from www.PDFshala.com

नागरिक और मानव

स्पार्टन, पेडेरेट्स काउंसिल ऑफ दि थ्री हंड्रेड में प्रवेश के लिए गए, लेकिन उन्हें खारिज कर दिया गया; वह खुशी मनाते हुए लौटे कि 300 स्पार्टन उनसे बेहतर हैं। मैं मानता हूँ कि वह सही थे, इसमें शक की कोई गुंजाइश नहीं है।

यह था नागरिक।

एक स्पार्टन माँ के पाँच बेटे फौज में थे। एक हेलॉट आया। माँ ने काँपते हुए उससे समाचार पूछा, "तुम्हारे पाँचों पुत्र मारे गए।"

"तुच्छ दास, क्या मैंने तुमसे यह पूछा था?"

"हमने विजय हासिल कर ली है।" वह देवताओं को धन्यवाद देने के लिए दौड़ी-दौड़ी मंदिर चली गई। वह एक सच्ची नागरिक थी।

—एमिली *(पृ. 8)*

: * :

जीवन और शिक्षा

लोग सिर्फ बच्चे के जीवन की सुरक्षा की बात सोचते हैं; यह काफी नहीं है। उसे इस तरह शिक्षित किया जाए कि बड़ा होकर वह स्वयं के जीवन की रक्षा कर सके। संपत्ति तथा गरीबी में धैर्य के साथ जी सके। आइसलैंड में बर्फ के बीच अथवा माल्टा की झुलसा देने वाली चट्टानों पर जरूरत पड़ने पर यों निकल सके। तुम मौत के विरुद्ध बेकार सुरक्षा जुटा रहे हो, उसे मरना ही होगा। और अगर तुम उसे अपनी सावधानियों से न भी मारो, तो फिर वह अपनी गलतियों से मर जाएगा। उसे मौत से बचने की बजाय मरना सिखाओ। जीवन साँस नहीं, बल्कि कर्म है। हमारी इंद्रियों, हमारे दिमाग, हमारी क्षमताओं, हमारे प्रत्येक अंग का उपयोग हमारे अस्तित्व को चैतन्य बनाता है। जीवन का महत्त्व इसमें नहीं है कि यह कितने दिन का है, बल्कि इसमें है कि हमने उसे कितनी जिंदादिली से जिया। किसी व्यक्ति को भले ही सौ साल की उम्र में दफनाया गया हो, लेकिन हो सकता है कि उसने जिंदगी कभी जी ही नहीं हो। वह अगर जवानी में मर जाता तो ज्यादा बेहतर होता।

—एमिली *(पृ. 10)* .

: * :

Downloaded from www.PDFshala.com

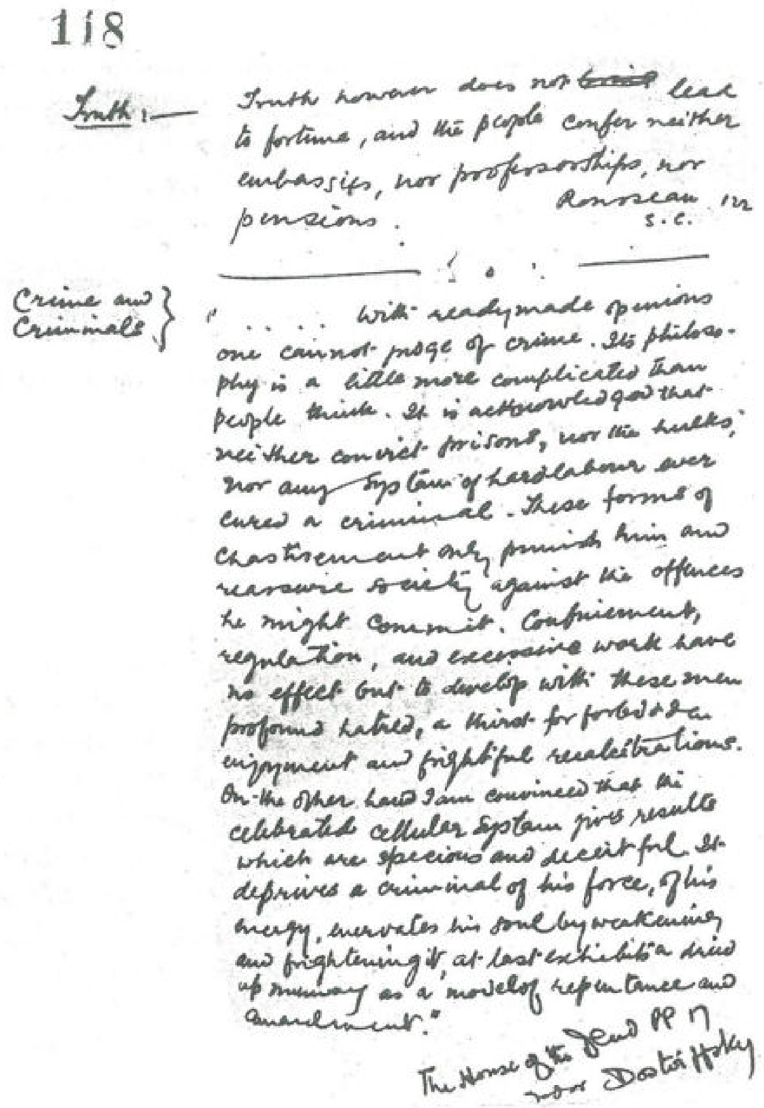
118

Truth :— Truth however does not ~~bring~~ lead to fortune, and the people confer neither embassies, nor professorships, nor pensions. Rousseau in S.C.

Crime and Criminals } " . . . With readymade opinions one cannot judge of crime. Its philosophy is a little more complicated than people think. It is acknowledged that neither convict prisons, nor the hulks, nor any system of hard labour ever cured a criminal. These forms of chastisement only punish him and reassure society against the offences he might commit. Confinement, regulation, and excessive work have no effect but to develop with these men profound hatred, a thirst for forbidden enjoyment and frightful recalcitrations. On the other hand I am convinced that the celebrated cellular system gives results which are specious and deceitful. It deprives a criminal of his force, of his energy, enervates his soul by weakening and frightening it, at last exhibits a dried up mummy as a 'model of repentance and amendment.'"

The House of the Dead PP 17 — Dostoievsky

सत्य

बहरहाल, सत्य से दौलत नहीं मिलती, और लोग दूतावास या प्रोफेसरशिप या पेंशन भी नहीं देते।

—रौसियो एस.सी.

रूसी, 122

: * :

अपराध और अपराधी

" … तैयार मान्यता से कोई अपराध के तथ्यों का आकलन नहीं कर सकता। इसका दर्शन, लोग जितना सोचते हैं, उससे ज्यादा जटिल है। यह स्वीकार किया जाता है कि न तो सजायाफ्ता, न कठोर परिश्रम की किसी व्यवस्था ने कभी किसी अपराधी को सुधारा है। इनसे उसे सिर्फ सजा मिलती है और समाज आश्वस्त होता है कि वह फिर से अपराध नहीं करेगा। बंदीकरण, नियंत्रण तथा अधिक काम का कोई असर नहीं पड़ता। सिर्फ इन

Downloaded from www.PDFshala.com

लोगों के मन गहरी नफरत से भर जाते हैं। उनके मन में निषिद्‌ध काम करने की इच्छा बढ़ जाती है और भयानक अक्खड़पन पैदा होता है। दूसरी ओर, मुझे भरोसा है कि प्रसिद्‌ध काल-कोठरी के जो परिणाम मिलते हैं, वे झूठे और फरेबी होते हैं। इससे अपराधी की ताकत और ऊर्जा खत्म हो जाती है। उसकी आत्मा कमजोर और भयभीत हो जाती है। अंततः उसकी स्मृति सूख जाती है और वह पश्चात्ताप और सुधार की मिसाल दिखाई देता है।

—दि हाउस ऑफ दि डेड

फेडोर दोस्तोवस्की *(पृ. 17)*

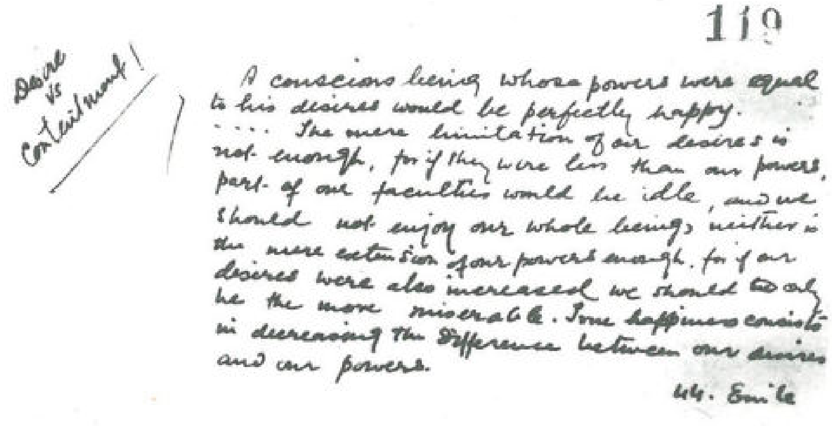

119

Desire vs Contentment!

A conscious being whose powers were equal to his desires would be perfectly happy. .... The mere limitation of our desires is not enough, for if they were less than our powers, part of our faculties would be idle, and we should not enjoy our whole being; neither is the mere extension of our powers enough, for if our desires were also increased we should too only be the more miserable. True happiness consists in decreasing the difference between our desires and our powers.

44. Emile

नोट : फ्योदोर सिखाइलोविच दोस्तोव्स्की (1821-1881) का उपन्यास 'द हाउस ऑफ डेड', जो स्वयं उनके कारावास के अनुभवों के आधार पर 1861 में लिखा गया।

Downloaded from www.PDFshala.com

कामना बनाम संतोष

कोई चेतन प्राणी, जिसकी शक्ति उसकी इच्छाओं के बराबर होगी, वह पूरी तरह प्रसन्न होगा। ··· सिर्फ हमारी कामनाओं की सीमाएँ पर्याप्त नहीं हैं, क्योंकि अगर वे हमारी शक्ति से कम हुईं, तो हमारी क्षमता का एक भाग बेकार हो जाएगा, और हम जीवन का पूरा आनंद नहीं ले पाएँगे। सिर्फ हमारी शक्ति का विस्तार भी पर्याप्त नहीं है, क्योंकि यदि हमारी कामनाएँ भी बढ़ जाएँ, तो हम और अधिक दयनीय ही बनेंगे। सच्ची प्रसन्नता हमारी कामनाओं तथा शक्तियों के बीच अंतर को कम करने में निहित है।

—एमाइल

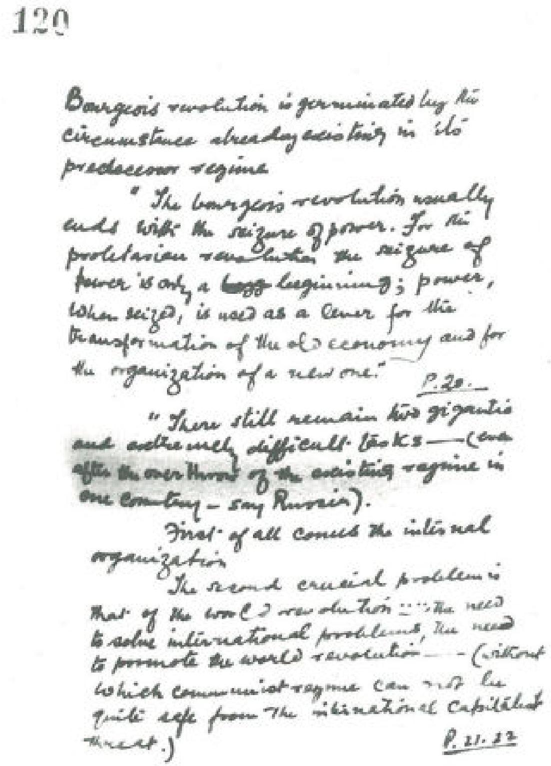

120

Bourgeois revolution is germinated by the circumstance already existing in its predecessor regime

" The bourgeois revolution usually ends with the seizure of power. For the proletarian revolution the seizure of power is only a ~~begg~~ beginning; power, when seized, is used as a lever for the transformation of the old economy and for the organization of a new one."

P. 20.

" There still remain two gigantic and extremely difficult tasks — (even after the overthrow of the existing regime in one country – say Russia).

First of all comes the internal organization

The second crucial problem is that of the world revolution ... the need to solve international problems, the need to promote the world revolution — (without which communist regime can not be quite safe from the international Capitalist threat.)

P. 21. 22

"बुर्जुआ क्रांति का जन्म उन परिस्थितियों में हुआ, जो पूर्व शासन के दौरान पहले से मौजूद थीं। आमतौर पर बुर्जुआ क्रांति का अंत सत्ता हासिल करने में होता है। सर्वहारा क्रांति के लिए सत्ता की प्राप्ति सिर्फ शुरुआत है। प्राप्त होने के बाद सत्ता का उपयोग पुरानी अर्थव्यवस्था को बदलकर नई अर्थव्यवस्था बनाने के लिए एक साधन के रूप में किया जाता है।"

"अभी दो बहुत बड़े और कठिन काम बाकी हैं—(एक देश, यानी रूस में वर्तमान शासन व्यवस्था को उलट देने के बाद भी)।"

सबसे पहली समस्या आंतरिक संगठन है। दूसरी बड़ी समस्याओं को सुलझाने की जरूरत, विश्वक्रांति को आगे बढ़ाने की जरूरत—(जिसके बिना साम्यवादी व्यवस्था अंतरराष्ट्रीय पूँजीवादी खतरे से पूरी तरह सुरक्षित नहीं हो सकती)।

(पृ. 21-22)

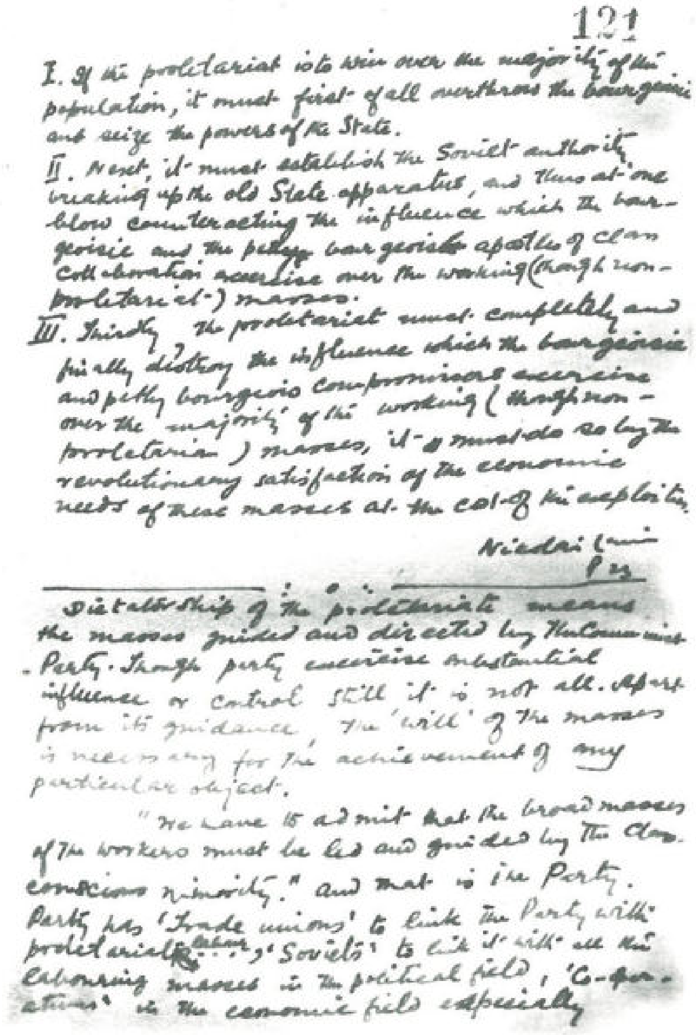

121

I. If the proletariat is to win over the majority of the population, it must first of all overthrow the bourgeoisie and seize the powers of the State.

II. Next, it must establish the Soviet authority breaking up the old State apparatus, and thus at one blow counteracting the influence which the bourgeoisie and the petty bourgeois apostles of class collaboration exercise over the working (though non-proletariat) masses.

III. Thirdly the proletariat must completely and finally destroy the influence which the bourgeoisie and petty bourgeois compromisers exercise over the majority of the working (though non-proletarian) masses, it must do so by the revolutionary satisfaction of the economic needs of these masses at the cost of the exploiters.

Nicolai Lenin
P 23

Dictatorship of the proletariat means the masses guided and directed by the Communist Party. Though party exercise substantial influence or control still it is not all. Apart from its guidance, the 'will' of the masses is necessary for the achievement of any particular object.

"We have to admit that the broad masses of the workers must be led and guided by the class conscious minority." and that is the Party. Party has 'Trade unions' to link the Party with proletariat ..., 'Soviets' to link it with all the labouring masses in the political field, 'Co-operatives' in the economic field especially

Downloaded from www.PDFshala.com

I. अगर सर्वहारा को ज्यादातर लोगों पर विजय प्राप्त करनी है, तो उसे सबसे पहले बुर्जुआ को उखाड़कर राज्य की सत्ता पर काबिज होना होगा।

II. उसके बाद, उसे पुराने राज्यतंत्र को तोड़कर सोवियत सत्ता स्थापित करनी होगी, और इस तरह एक ही झटके में उस असर को खत्म करना होगा, जो बुर्जुआ और शत्रु-सहयोगी छुटभैया-बुर्जुआ का मजदूर मजदूर वर्गों (यद्यपि गैर-सर्वहारा) पर था।

III. तीसरी बात, सर्वहारा को उस असर को पूरी तरह और अंतिम रूप से खत्म करना होगा, जो बुर्जुआ और छुटभैया-बुर्जुआ से समझौता करनेवाले अधिकतर मजदूर (यद्यपि गैर-सर्वहारा) लोगों पर रखते हैं; उसे यह काम शोषकों की कीमत पर आम लोगों की आर्थिक आवश्यकताओं को क्रांतिकारी रूप से संतुष्ट करके करना होगा।

—निकोलइ लेनिन *(पृ. 82)*

———————— : * : ————————

सर्वहारा की तानाशाही का अर्थ है—वे लोग, जो कम्युनिस्ट पार्टी से मार्गदर्शित और निर्देशित हैं। हालाँकि पार्टी का काफी असर या नियंत्रण है, लेकिन यह पूरा नहीं है। इस मार्गदर्शन के अलावा, लोगों में किसी विशेष लक्ष्य को प्राप्त करने की 'इच्छाशक्ति' आवश्यक है।

हमें यह मानना होगा कि मजदूरों के बड़े वर्ग का नेतृत्व और मार्गदर्शन वर्ग चेतना युक्त अल्पसंख्यकों द्वारा होना

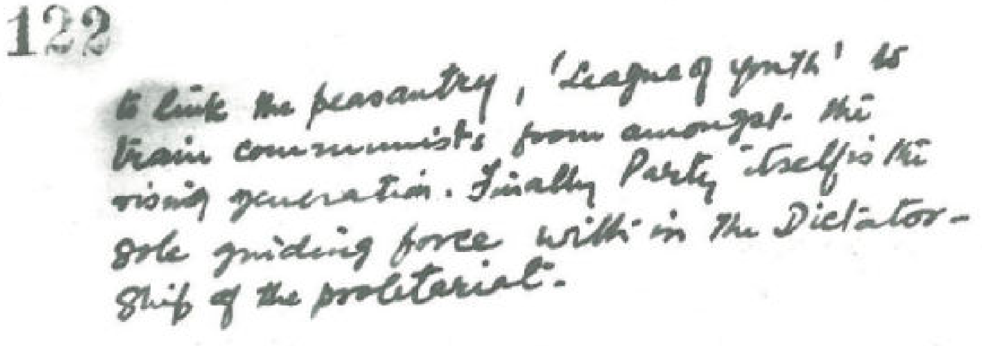
122

to link the peasantry, 'League of youth' to train communists from amongst the rising generation. Finally Party itself is the sole guiding force with-in the Dictator-ship of the proletariat.

चाहिए। और यह पार्टी है। पार्टी को सर्वहारा मजदूर से जोड़ने के लिए पार्टी के पास ट्रेड यूनियनें हैं ··· इसे राजनीति-क्षेत्र में सभी मजदूर वर्गों से जोड़ने के लिए सोवियतें हैं, आर्थिक क्षेत्र में, विशेषकर किसानों के लिए कोऑपरेटिव्स हैं।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

Downloaded from www.PDFshala.com

Figures: — *Inequality of incomes:* —

Production
Pre-war United Kingdom's (England's)
Annual production amounted to: —
£, 2000,000,000
Gained through foreign investments: —
£, 200,000,000
Total £ 2200,000,000

Distribution
$\frac{1}{9}$ of the whole population i.e. Capitalist or bourgeois took away $\frac{1}{2}$ of the total production i.e. —— £, 1100,000,000. [least average income annual — £ 160]

$\frac{2}{9}$ th of the whole population i.e. Petty bourgeois took away $\frac{1}{3}$ of the remaining half or $\frac{1}{6}$ th of the whole — i.e. £, 300,000,000. {average income less than £ 160 a year}

$\frac{2}{3}$ rd of the population i.e. manual labour or proletariat got the rest i.e. £, 800,000,000. [average income £ 60 yearly]

United States America: —— in 1890.

40% of total production was received by owners of means
60% " was given to all workers.

इसी तरह नई पीढ़ी के कम्युनिस्टों

Downloaded from www.PDFshala.com

आँकड़े

आमदनी में असमानता
उत्पादन

युद्ध से पहले यूनाइटेड किंग्डम (इंग्लैंड) का वार्षिक उत्पादन	: 2000,000,000 पाउंड
विदेशी निवेश से प्राप्त	: 200,000,000 पाउंड
	2200,000,000

वितरण

कुल आबादी का 1/9वाँ भाग, अर्थात् पूँजीपति अथवा बुर्जुआ ले गए	न्यूनतम औसत आमदनी वार्षिक
उत्पादन का 1/2 भाग, अर्थात् 1100,000,000	160 पाउंड
कुल आबादी का 2/9वाँ भाग, अर्थात् छुटभैया बुर्जुआ शेष आधे का 1/3 भाग अथवा कुल 300,000,000 का 1/6वाँ भाग ले गए	औसत आमदनी एक वर्ष में 160 से कम
अथवा शेष 800,000,000 आबादी का 2/3 भाग अर्थात् मजदूर या सर्वहारा ले गए।	औसत आमदनी 60 पाउंड वार्षिक

———————————— : * : ————————————

संयुक्त राज्य अमेरिका : 1890 में कुल उत्पादन का

4 % भाग साधनों के स्वामियों को मिलता था। कुल उत्पादन का

60 % भाग सभी मजदूरों को मिलता था।

Downloaded from www.PDFshala.com

124

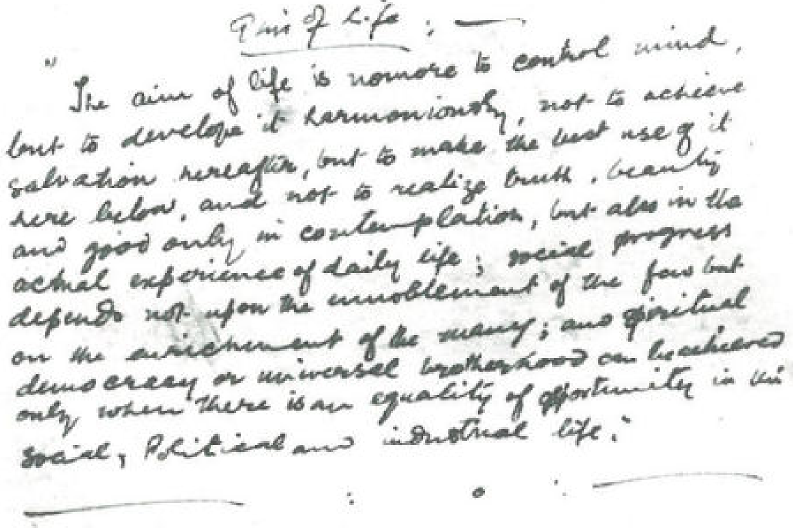

Aim of Life :—

"The aim of life is nomore to control mind, but to develope it harmoniously, not to achieve salvation hereafter, but to make the best use of it here below, and not to realize truth, beauty and good only in contemplation, but also in the actual experience of daily life; social progress depends not upon the ennoblement of the few but on the enrichment of the many; and spiritual democracy or universal brotherhood can be achieved only when there is an equality of opportunity in the social, political and industrial life."

जिंदगी का मकसद

"जिंदगी का मकसद अब मन पर काबू करना नहीं, बल्कि इसका समरसतापूर्ण विकास है। मौत के बाद मुक्ति पाना नहीं, बल्कि दुनिया में जो है, उसका सर्वश्रेष्ठ उपयोग करना है। सत्य, सुंदर और शिव की खोज ध्यान से नहीं, बल्कि रोजमर्रा की जिंदगी के वास्तविक अनुभवों से करना भी है। सामाजिक प्रगति सिर्फ कुछ लोगों की नेकी से नहीं, बल्कि अधिक लोगों के नेक बनने से होगी। आध्यात्मिक लोकतंत्र अथवा सार्वभौम भाईचारा तभी संभव है, जब सामाजिक, राजनीतिक और औद्योगिक जीवन में अवसरों की समानता हो।"

Downloaded from www.PDFshala.com

Ancient Polity:— Rome & Sparta:— Aristotle & Plato:— Subordination of the individual to the State was the dominant feature of these ancient polities, Sparta & Rome. In Hellas or in Rome the citizen had but a few personal rights; his conduct was largely subject to public censorship, and his religion was imposed by State authority. The only true citizens and members of the Sovereign body being an aristocratic caste of freemen, whose manual work is performed by slaves possessing no civil rights.

Socrates:— Socrates is represented as contending that whoever, after reaching man's estate, voluntarily remains in a city, should submit to the Govt. even when he deems its laws unjust; accordingly, on the ground that he would break 'his agreement with' the State by escaping from prison into exile, determines to await the execution of an unjust sentence.

Plato:— He traces the origin of society and the State to mutual need, for men as isolated beings are incapable of satisfying their manifold wants. He while depicting a kind of idealised Sparta says, 'In an ideal State philosophers should rule; and to this aristocracy, or government of the best, the body of citizens would owe implicit obedience.' He emphasises on the careful training and education of citizens.

[Social Contract]

Aristotle:— He was the first to disentangle politics from ethics, though he careful not to sever them. 'The majority of men,' he urged, "are ruled by their passions rather than by reason, and the State must therefore train them to virtue by a life-long course of discipline, as in Sparta. Until political society is instituted there is no administration of justice ... (but) it is necessary to enquire into the best constitution.

: * :

राज्य का विज्ञान

प्राचीन राज्य व्यवस्था : रोम और स्पार्टा : अरस्तु और प्लेटो

इन प्राचीन राज्य-व्यवस्थाओं में व्यक्ति का शासन के अधीन होना सबसे बड़ी विशेषता थी। रोम के हेलास में नागरिक को बहुत कम व्यक्तिगत अधिकार प्राप्त थे। उसका आचरण व्यापक रूप से सार्वजनिक निगरानी में था, उसका धर्म राज्य प्राधिकार द्वारा थोपा गया था। वास्तविक नागरिक और सोवरिन बॉडी के सदस्य सिर्फ कुलीन लोग थे और उन्हें ही पूरी स्वतंत्रता प्राप्त थी। उनका सभी मेहनत का काम दासों द्वारा किया जाता था, जिनके पास कोई नागरिक अधिकार नहीं थे।

सुकरात

सुकरात को यह दलील देते हुए प्रस्तुत किया जाता है कि कोई भी नागरिक राज्य में पहुँचने के बाद यदि स्वेच्छा से एक नगर में रहने लगे तो उसे सरकार की अधीनता स्वीकार करनी चाहिए, भले ही उसे इसके कानून अनुचित क्यों न लगें। तदनुसार ही इस आधार पर कि यदि वह जेल से फरार होकर भाग जाए तो राज्य के साथ उसका करार भंग हो जाएगा। वह एक अनुचित सजा के लागू होने का भी इंतजार करते रहने के लिए तैयार रहे।

प्लेटो

(सामाजिक संविदा)

वह समाज और राज्य की उत्पत्ति पारस्परिक आवश्यकता से बताता है, क्योंकि मनुष्य अकेला रहकर अपनी विभिन्न आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर सकता। वह एक तरह के आदर्श स्पार्टा की व्याख्या करते हुए कहता है—"एक आदर्श राज्य में दार्शनिकों को शासन करना चाहिए और इन सर्वश्रेष्ठ लोगों के अभिजात वर्ग अथवा सरकार की आज्ञा का नागरिकों द्वारा पूरी तरह पालन किया जाना चाहिए।" वह नागरिकों के सजग प्रशिक्षण और शिक्षा पर जोर देता है।

अरस्तु

वह पहला व्यक्ति था, जिसने राजनीति को नीतिशास्त्र से मुक्त किया, हालाँकि वह सतर्क भी था कि दोनों एक-दूसरे से बिल्कुल पृथक् न हो जाएँ। उसकी दलील थी, लोगों की बहुसंख्या विवेक के बजाय अपनी भावनाओं में शामिल होती है। इसलिए राज्य के लिए जरूरी है कि वह उन्हें जीवन पर्याप्त अनुशासन में रहने का प्रशिक्षण दे, जैसा कि स्पार्टा में है। जब तक राजनीतिक समाज स्थापित नहीं होता, तब तक न्याय का कोई प्रशासन नहीं हो सकता ··· लेकिन इसके लिए आवश्यक है कि सर्वोत्तम संविधान और विधि निर्माण की सर्वोत्तम प्रणाली की खोज की जाए।

(शेष अगले पृष्ठ पर)

Downloaded from www.PDFshala.com

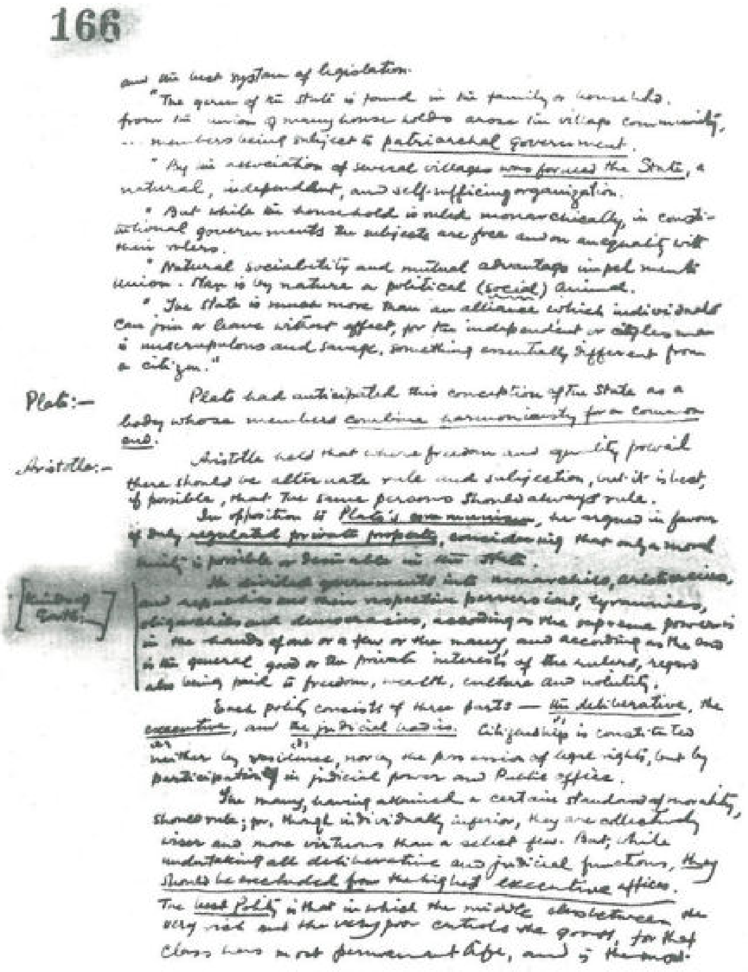

166

and the best system of legislation.
"The germ of the State is found in the family or household. From the union of many households arose the village community, ... members being subject to patriarchal government.
" By the association of several villages was formed the State, a natural, independent, and self-sufficing organization.
" But while the household is ruled monarchically, in constitutional governments the subjects are free and on an equality with their rulers.
" Natural sociability and mutual advantage impel men to union. Man is by nature a political (social) animal.
" The State is much more than an alliance which individuals can join or leave without effect, for the independent or cityless man is unscrupulous and savage, something essentially different from a citizen."

Plato:— Plato had anticipated this conception of the State as a body whose members combine harmoniously for a common end.

Aristotle:— Aristotle held that where freedom and equality prevail there should be alternate rule and subjection, but it is best, if possible, that the same persons should always rule.
In opposition to Plato's communism, he argued in favour of duly regulated private property, considering that only a moral unity is possible or desirable in the State.
[illegible] He divided governments into monarchies, aristocracies, and republics and their respective perversions, tyrannies, oligarchies and democracies, according as the supreme power is in the hands of one or a few or the many, and according as the end is the general good or the private interests of the rulers, regard also being paid to freedom, wealth, culture and nobility.
Each polity consists of three parts — the deliberative, the executive, and the judicial bodies. Citizenship is constituted neither by residence, nor by the possession of legal rights, but by participation in judicial power and Public office.
The many, having attained a certain standard of morality, should rule; for, though individually inferior, they are collectively wiser and more virtuous than a select few. But, while undertaking all deliberative and judicial functions, they should be excluded from the highest executive offices.
The best Polity is that in which the middle class between the very rich and the very poor controls the government, for that class has the most permanent life, and is the most [illegible]

"राज्य का बीज परिवार या कुटुंब में होता है। कई कुटुंबों के संयुक्त होने से ग्राम समुदाय की उत्पत्ति हुई है, (ज़िसके) सदस्य पितृसत्तात्मक सरकार के अधीन होते हैं।"

कई गाँवों को मिलाकर राज्य का निर्माण हुआ, जो एक प्राकृतिक स्वतंत्र और आत्मनिर्भर संगठन था। "लेकिन जहाँ कुटुंब एक व्यक्तित्व द्वारा शासिल होता है, वही संवैधानिक सरकारों में व्यक्ति स्वतंत्र और अपने शासकों के समान होते हैं।"

"प्राकृतिक, सामाजिकता और परस्पर लाभ से भी एकता संभव होती है। मनुष्य अपने स्वभाव से एक राजनीतिक (सामाजिक) प्राणी है।"

"राज्य एक संश्रय से कहीं अधिक है; जिससे व्यक्ति जुड़ सकते हैं या बिना कोई फर्क पड़े छोड़ सकते हैं, लेकिन स्वतंत्र या नागरिकता रहित मनुष्य अविश्वसनीय, असभ्य, और एक नागरिक सेभिन्न कोई चीज होती है।"

प्लेटो

प्लेटो ने राज्य की अवधारणा एक ऐसी संस्था के रूप में की, जिसके सदस्य किसी एक सामान्य उद्‌देश्य के लिए समरसता के साथ संयुक्त होते हैं।

Downloaded from www.PDFshala.com

अरस्तु

अरस्तु का मानना है कि जहाँ स्वतंत्रता और समानता होती हैं, वहाँ वैकल्पिक शासन तथा अधीनता होनी चाहिए, लेकिन इसके श्रेष्ठतम रूप में, यदि संभव हो तो, वे ही लोग हमेशा शासन करें।

प्लेटो के साम्यवाद के विरोध में उसकी दलील बाकायदा नियम निर्धारित निजी संपत्ति के पक्ष में थी, जिसके पीछे उसका विचार यह था कि राज्य में सिर्फ एक नैतिक एकता ही संभव या वांछनीय है।

सरकारों के प्रकार

उसने सरकारों को राजतंत्र, कुलीनतंत्र तथा गणराज्यों में बाँटा था। उनकी विकृतियाँ, अत्याचार, कुलीनतंत्र और लोकतंत्र, तदनुसार उनकी सारी शक्तियाँ किसी एक व्यक्ति अथवा कुछ अथवा बहुत से लोगों के हाथ में होती हैं। इनका अंतिम उद्देश्य जनकल्याण अथवा शासकों के खुद के हित होते हैं। स्वतंत्रता, संपत्ति, संस्कृति तथा कुलीनता का भी सम्मान किया जाता है। हर शासन व्यवस्था के तीन भाग होते हैं—(1) विचारक, (2) कार्यपालिका और (3) न्यायिक संस्थाएँ। नागरिकता का निर्धारण न निवास से होता है, न कानूनी अधिकारों की प्राप्ति से, बल्कि यह न्यायिक शक्ति तथा सार्वजनिक पद में भागीदारी से होता है।

अनेक लोगों को, जिन्होंने एक सीमा तक नैतिकता का स्तर प्राप्त कर लिया हो, शासन करना चाहिए। वे व्यक्तिगत रूप से कमतर हो सकते हैं, लेकिन सामूहिक रूप से कुछ चुनिंदा लोगों की तुलना में अधिक समझदार और गुणवान होते हैं। लेकिन सभी विचारण और न्यायिक कार्य करते हुए उन्हें सर्वोच्च कार्यपालिक पदों से अलग रहना चाहिए।

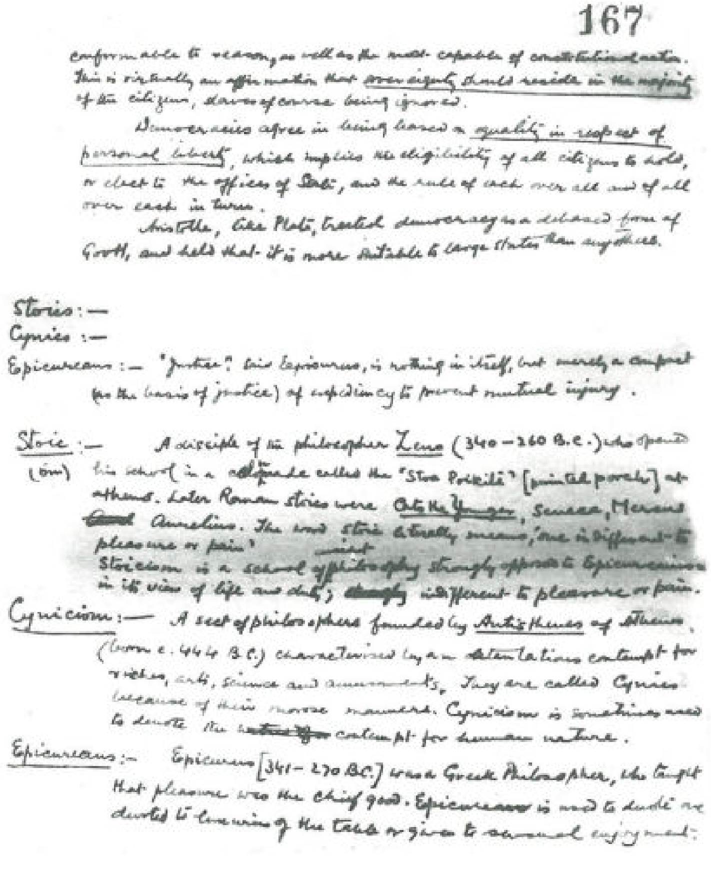
167

conformable to reason, as well as the most capable of constitutional action. This is virtually an affirmation that sovereignty should reside in the majority of the citizens, slaves of course being ignored.

Democracies agree in being based on equality in respect of personal liberty, which implies the eligibility of all citizens to hold, or elect to the offices of State, and the rule of each over all and of all over each in turn.

Aristotle, like Plato, treated democracy as a debased form of Govt, and held that it is more suitable to large States than any other.

Stoics :—
Cynics :—
Epicureans :— "Justice" said Epicurus, is nothing in itself, but merely a compact (as the basis of justice) of expediency to prevent mutual injury.

Stoic :— A disciple of the philosopher Zeno (340–260 B.C.) who opened his school in a colonnade called the "Stoa Poikile" [painted porch] at Athens. Later Roman stoics were Cato the Younger, Seneca, Marcus Aurelius. The word stoic literally means "one indifferent to pleasure or pain."
Stoicism is a school of philosophy strongly opposed to Epicureanism in its view of life and duty; indifferent to pleasure or pain.

Cynicism :— A sect of philosophers founded by Antisthenes of Athens (born c. 444 B.C.) characterised by an ostentatious contempt for riches, arts, science and amusements. They are called Cynics because of their morose manners. Cynicism is sometimes used to denote the contempt for human nature.

Epicureans :— Epicurus [341–270 B.C.] was a Greek Philosopher, who taught that pleasure was the chief good. Epicurean is used to denote one devoted to the pleasures of the table or given to sensual enjoyment.

Downloaded from www.PDFshala.com

सर्वश्रेष्ठ शासन व्यवस्था वह है, जिसमें बहुत अमीर और बहुत गरीब के बीच का मध्य वर्ग शासन पर नियंत्रण करता है, क्योंकि इस वर्ग का जीवन सर्वाधिक स्थायित्व वाला और सर्वाधिक तर्कसंगत होता है। इस वर्ग के लोग संवैधानिक कार्य करने के लिए सर्वाधिक सक्षम होते हैं। यह एक तरह से इस बात को सिद्ध करता है कि प्रभुसत्ता नागरिकों की बहुसंख्या में होनी चाहिए। दासों की लाजमी रूप से अनदेखी होती है। लोकतांत्रिक व्यवस्थाएँ व्यक्तिगत स्वतंत्रता में समानता पर आधारित होने के लिए सहमत हैं, जिसका अर्थ है कि सभी नागरिकों को राज्य के पदों पर रहने, अथवा उनके पदाधिकारियों का चुनाव करने की पात्रता है। प्रत्येक का सब पर और सबका प्रत्येक पर शासन होता है। प्लेटो की तरह अरस्तु लोकतंत्र को शासन का हीन स्वरूप मानता था और कहता था कि यह किन्हीं अन्य की तुलना में बड़े राज्यों के लिए अधिक उपयुक्त है।

स्टॉइक्स

सिनिक्स

एपीक्यूरियंस

एपीक्यूरस ने कहा कि "न्याय अपने आप में कुछ नहीं, सिर्फ परस्पर हानि को रोकने का एक अनिवार्य समझौता (न्याय का आधार) है।"

स्टॉइक (वाद)

दार्शनिक झेनो (340-360 बी.सी.) का शिष्य, जिसने यूनान के एक कॉलोनाड में 'स्टोका पोइकाइट' (पेंटेड पोर्च) नाम का स्कूल खोला था। बाद में जो रोमन स्टॉइक्स हुए, उनमें 'केटो दि यंगर', सेनेका शामिल हैं। मार्क्स ऑरेलियसा। 'स्टॉइक' शब्द का अर्थ है, "जो प्रसन्नता और दु:ख से उदासीन हो।"

स्टॉइसिज्म एक ऐसा प्राचीन दर्शन है, जो जीवन तथा कर्तव्य के संबंध में एपीक्यूरियनिज्म से बहुत विपरीत है।

कसनिसिज्म

यह एंटीस्थेनेस ऑफ एथेंस (जन्म लगभग 444 बी.सी.) द्वारा स्थापित दार्शनिकों का एक संप्रदाय है, जो संपन्नता, कलाओं, विज्ञान तथा आमोद-प्रमोद से खुलकर नफरत करता है। इन्हें उनके रूखे आचरण के कारण 'सिनिक्स' कहते हैं। सिनिसिज्म ऐसी चीज है, जो मानव स्वभाव के प्रति हिकारत से भरी है।

एपीक्यूरियंस

एपीक्यूरियंस (341-270 बी.सी.) एक यूनानी दार्शनिक था, जिसने शिक्षा दी कि आनंद ही सबसे अच्छी चीज है। 'एपीक्यूरियन' शब्द का उपयोग ऐसे व्यक्ति के लिए किया जाता है, जो खाने-पीने अथवा ऐंद्रिक सुखों में पूरी तरह डूबा हो।

Downloaded from www.PDFshala.com

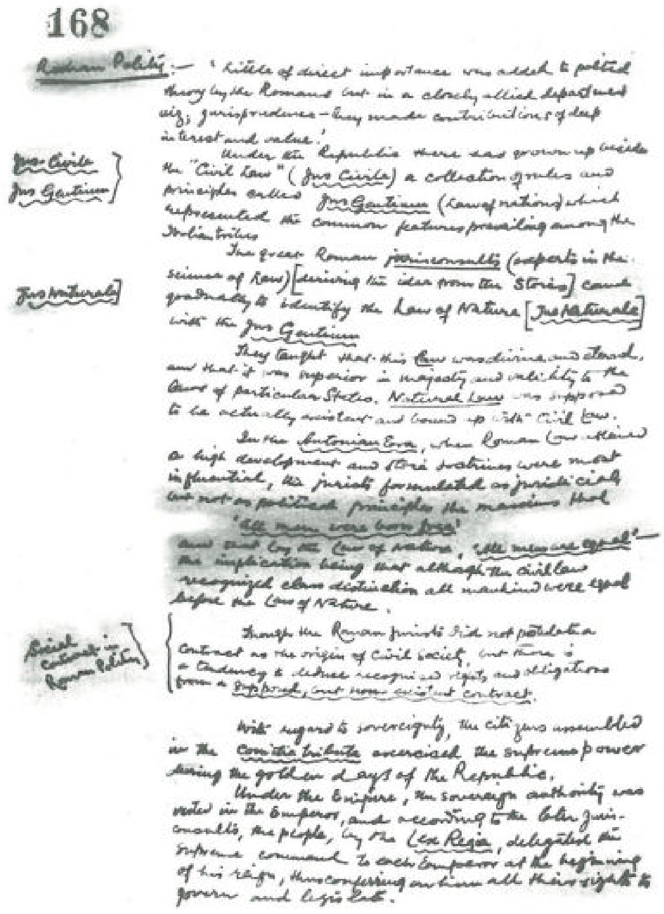

168

Roman Polity:— 'Little of direct importance was added to political theory by the Romans but in a closely allied department viz, jurisprudence—they made contributions of deep interest and value.'

Jus Civile / Jus Gentium

Under the Republic there was grown up beside the "Civil Law" (Jus Civile) a collection of rules and principles called Jus Gentium (Law of nations) which represented the common features prevailing among the Italian tribes

Jus Naturale

The great Roman jurisconsults (experts in the science of Law) [deriving the idea from the Stoics] came gradually to identify the Law of Nature [Jus Naturale] with the Jus Gentium

They taught that this Law was divine and eternal, and that it was superior in majesty and validity to the laws of particular States. Natural Law was supposed to be actually existent and bound up with Civil Law.

In the Antonian Era, when Roman Law attained a high development and Stoic doctrines were most influential, the jurists formulated as juristical but not as political principles the maxims that

'All men were born free'

and said by the Law of nature, 'All men are equal'—the implication being that although the civil law recognized class distinction all mankind were equal before the Law of Nature.

Social Contract in Roman Polity

Though the Roman jurists did not postulate a contract as the origin of Civil society, but there is a tendency to declare recognized rights and obligations from a supposed, but non-existent contract.

With regard to sovereignty, the citizens assembled in the Comitia tributa exercised the supreme power during the golden days of the Republic.

Under the Empire, the sovereign authority was vested in the Emperor, and according to the later jurisconsults, the people, by the Lex Regia, delegated the supreme command to each Emperor at the beginning of his reign, thus conferring on him all their rights to govern and legislate.

रोमन शासन व्यवस्था

रोमनों के राजनीति सिद्धांत में प्रत्यक्ष महत्त्व की बहुत कम बातें जोड़ी गईं, लेकिन नजदीकी रूप से संबंधित विभाग, अर्थात् 'न्यायशास्त्र' में उन्होंने बहुत गहरा तथा मूल्यवान योगदान किया।

जस्ट-सिविक जस्ट-जेंटियम

रिपब्लिक के अंतर्गत 'सिविल लॉ' के साथ ही नियमों और सिद्धांतों का एक संग्रह विकसित हो गया, जिसे 'जस जेंटियम' (लॉ ऑफ नेशंस) कहा गया। यह इटेलियन प्रजातियों में प्रचलित सामान्य विशेषताओं का प्रतिनिधित्व करता है।

जस नेचुरले

महान् रोमन ज्यूरिस-कंसल्ट (विधि विज्ञान में विशेषज्ञ) [स्टॉइक्स से विचार ग्रहण करनेवाला] धीरे-धीरे लॉ ऑफ नेचर (जस नेचुरले) तथा जस जेंटियम ही माना जाने लगा।

उन्होंने कहा कि यह कानून ईश्वरीय और शाश्वत है, और यह प्रभुत्व और वैधता में विशिष्ट राज्यों के कानूनों की तुलना में श्रेष्ठ है। यह माना गया कि नेचुरल लॉ वास्तविक रूप से लागू है और सिविल लॉ से आबद्ध है।

एंटोनियम युग में, जब रोमन लॉ का काफी विकास हो गया और स्टॉइक सिद्धांत बहुत प्रभावशाली थे, तब न्यायविदों ने न्यायिक, परंतु राजनीति सिद्धांत नहीं बनाए। सिद्धांत यह था कि "सभी मनुष्य स्वतंत्र पैदा होते हैं"

Downloaded from www.PDFshala.com

और यह कि लॉ ऑफ नेचर के द्वारा "सभी मनुष्य बराबर हैं।"

इसका निहितार्थ यह हुआ कि हालाँकि सिविल लॉ वर्गभेद को मान्य करता है, लेकिन लॉ ऑफ नेचर के समक्ष पूरी मानव जाति समान है।

रोमन शासन व्यवस्था में सामाजिक संविदा

यद्यपि रोमन विधिवेत्ताओं ने नागरिक समाज की उत्पत्ति के तौर पर किसी समझौते को स्वीकार नहीं किया था, फिर भी स्वीकृत अधिकारों और दायित्वों को एक किल्पत, लेकिन गैर-मौजूद समझौते से निगमित करने का एक रुझान मौजूद था।

संप्रभुत्ता के संबंध में, कॉमिशिया ट्रिबुटा में एकत्र नागरिकों ने रिपब्लिक के स्वर्णिम दिनों में सर्वोच्च शक्ति का प्रयोग किया। एंपायर के अंतर्गत संप्रभु अधिकार सम्राट् में निहित था और बाद में ज्यूरिस कंसल्ट्स के अनुसार, लोगों ने लेक्स रेगिया के द्वारा उसके शासन के प्रारंभ के समय प्रत्येक सम्राट् को सर्वोच्च सत्ता सौंप दी। इस प्रकार उसे शासन करने और कानून बनाने के सभी अधिकार मिल गए।

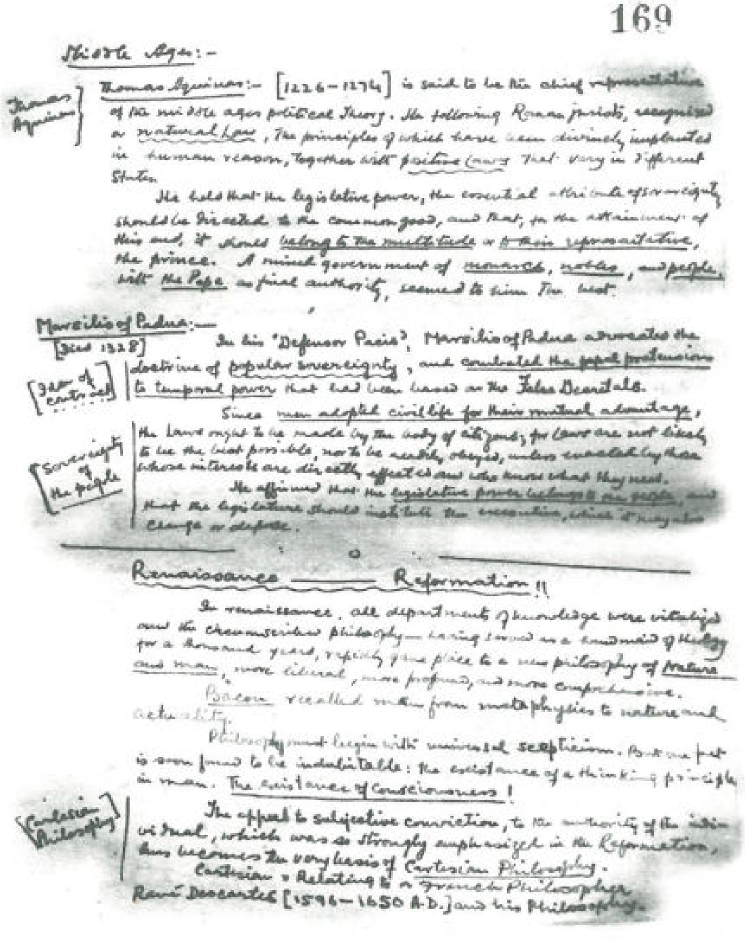

169

Middle Ages:-

Thomas Aquinas Thomas Aquinas:- [1226-1274] is said to be the chief representative of the middle ages political theory. He following Roman jurists, recognised a natural law, the principles of which have been divinely implanted in human reason, together with positive laws that vary in different States.

He held that the legislative power, the essential attribute of sovereignty should be directed to the common good, and that, for the attainment of this end, it should belong to the multitude or to their representative, the prince. A mixed government of monarch, nobles, and people, with the Pope as final authority, seemed to him the best.

Marsilio of Padua:— [Died 1328] In his 'Defensor Pacis', Marsilio of Padua advocated the doctrine of popular sovereignty, and combated the papal pretension to temporal power that had been based on the False Decretals.

[Idea of contract] Since men adopted civil life for their mutual advantage, the laws ought to be made by the body of citizens; for laws are not likely to be the best possible, nor to be readily obeyed, unless enacted by those whose interests are directly affected and who know what they need.

[Sovereignty of the people] He affirmed that the legislative power belongs to the people, and that the legislature should institute the executive, which it may also change or depose.

Renaissance —— Reformation!!

In renaissance, all departments of knowledge were vitalized and the [illegible] philosophy — having served as a handmaid of theology for a thousand years, rapidly gave place to a new philosophy of nature and man, more liberal, more profound, and more comprehensive.

Bacon recalled men from metaphysics to nature and actuality.

Philosophy must begin with universal scepticism. But one fact is soon found to be indubitable: the existence of a thinking principle in man. The existence of consciousness!

[Cartesian Philosophy] The appeal to subjective conviction, to the authority of the individual, which was so strongly emphasized in the Reformation, thus becomes the very basis of Cartesian Philosophy.

Cartesian = Relating to a French Philosopher René Descartes [1596-1650 A.D.] and his Philosophy.

मध्य युग

थॉमस एक्वीनस

Downloaded from www.PDFshala.com

थॉमस एक्वीनस (1226-1274) को मध्य युग की पॉलिटिकल थ्योरी का सबसे प्रमुख प्रतिनिधि माना जाता है। रोमन न्यायविदों का समर्थन करते हुए वह एक नेचुरल लॉ को मान्यता देता है, जिसके सिद्धांत मानवीय तक में दिव्यता से समाविष्ट हैं। वह इसके साथ ही सकारात्मक नियमों को भी मान्य करता है, जो हर राज्य के अलग-अलग होते हैं।

उसका मानना है कि विधायी शक्तियाँ, जो संप्रभुता की अत्यावश्यक अंग हैं, आमजन की भलाई के लिए होनी चाहिए और इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए ये जनसाधारण अथवा उनके प्रतिनिधि, प्रिंस के पास होनी चाहिए। सम्राट्, कुलीनों तथा लोगों की मिश्रित सरकार, जिसमें पोप अंतिम प्राधिकार हो, सर्वश्रेष्ठ प्रतीत होती है।

संविदा का विचार*

अपनी पुस्तक 'डिफेंसर पेकिस' में मार्सिलियो ऑफ पडुआ ने लोकप्रिय संप्रभुत्ता का पक्ष लिया और लौकिक शक्ति पर पोप के अधिकार के आडंबर का विरोध किया, जो फाल्स डिक्रेटल्स पर आधारित रहे थे।

मार्सिलियो ऑफ पडुआ लोगों की प्रभुसत्ता

चूँकि मनुष्यों ने परस्पर लाभ के लिए नागरिक जीवन को अपनाया, अत: इसके कानून भी लोगों की संस्था द्वारा बनाए जाने चाहिए। कानून संभावित रूप से श्रेष्ठतम तभी हो सकते हैं, और उनका तत्परता से पालन तभी हो सकता है, जब उन्हें वे लोग बनाएँ, जिनके हित सीधे प्रभावित होते हैं और जिन्हें पता हो कि उन्हें क्या चाहिए। उसने दृढ़ता से कहा कि विधायिका जनता की है, और यह कि विधायिका द्वारा कार्यपालिका का गठन किया जाए, जिसे यह बदल सके अथवा हटा सके।

रेनिसा—रिफॉर्मेशन

रेनिसा में ज्ञान के सभी विभागों को सशक्त किया गया और सीमित दर्शन, जिसने एक हजार वर्ष तक धर्म-शास्त्र का चाकर बनकर काम किया, की जगह तेजी से एक नए दर्शन नैचर ऐंड मैन द्वारा ली जा रही है, जो अधिक उदार, अधिक गहरा और अधिक समग्र है। बेकन मनुष्य को अतींद्रिय से निकालकर प्रकृति और वास्तविकता की ओर ले गया। दर्शन की शुरुआत सार्वभौम संशयवाद के साथ होनी चाहिए, लेकिन एक तथ्य शीघ्र ही असंदिग्ध बन जाता है—मनुष्य में विचार के सिद्धांत का अस्तित्व।

चेतना का अस्तित्व : कार्टेशियन दर्शन (कार्तवादी दर्शन)

सुधारकाल में आत्मगत सच्चाई पर विश्वास और व्यक्ति की सत्ता का जिस जोर-शोर के साथ आह्वान किया गया, वही कार्तवादी दर्शन का आधार बना। कार्तवादी-फ्रांसीसी दार्शनिक रेने द कार्त (1596-1650) और उसके दर्शन से संबंधित है।

Downloaded from www.PDFshala.com

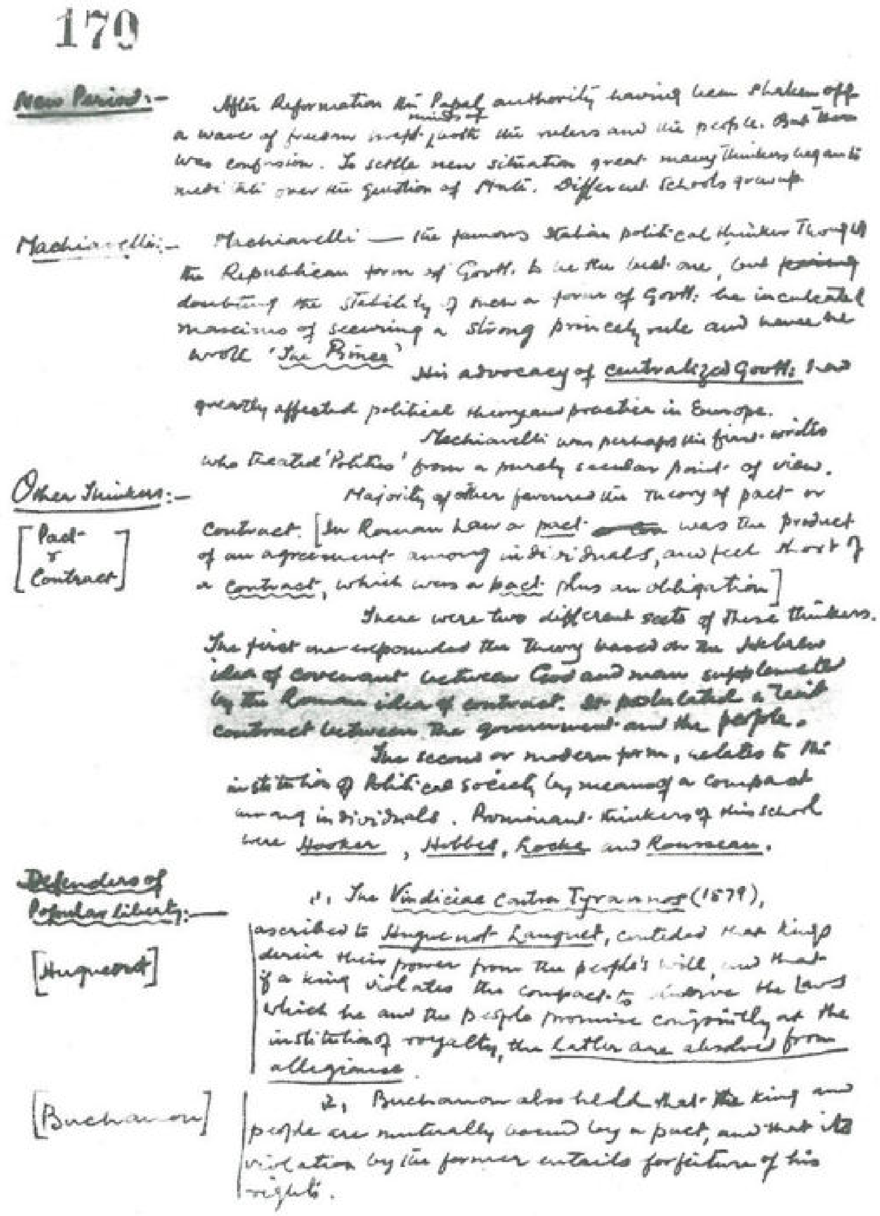

179

New Period:— After Reformation the Papal authority having been shaken off a wave of freedom swept [minds of] both the rulers and the people. But there was confusion. To settle new situation great many thinkers began to meditate over the question of State. Different Schools grew up.

Machiavelli:— Machiavelli — the famous Italian political thinker though the Republican form of Govt. to be the best one, but doubting the stability of such a form of Govt. he inculcated maxims of securing a strong princely rule and hence he wrote 'The Prince'.

His advocacy of centralized Govt. has greatly affected political theory and practice in Europe.

Machiavelli was perhaps the first writer who treated 'Politics' from a purely secular point of view.

Other Thinkers:— [Pact & Contract]

Majority of other favoured the theory of pact or contract. [In Roman Law a pact was the product of an agreement among individuals, and fell short of a contract, which was a pact plus an obligation.]

There were two different sects of these thinkers. The first one expounded the theory based on the Hebrew idea of covenant between God and man supplemented by the Roman idea of contract. It postulated a tacit contract between the government and the people.

The second or modern form, relates to the institution of political society by means of a compact among individuals. Prominent thinkers of this school were Hooker, Hobbes, Locke and Rousseau.

Defenders of Popular liberty:—

[Huguenot] 1. The Vindiciae contra Tyrannos (1579), ascribed to Huguenot Languet, contended that kings derive their power from the people's will, and that if a king violates the compact to observe the laws which he and the people promise conjointly at the institution of royalty, the latter are absolved from allegiance.

[Buchanan] 2. Buchanan also held that the king and people are mutually bound by a pact, and that its violation by the former entails forfeiture of his rights.

---

* मर्सिलियो की मृत्यु 1328 में हुई—भगतसिंह

नया युग

रिफॉर्मेशन के बाद पोप का अख्तियार कमजोर होने के बाद शासकों तथा जनता, दोनों के मन में स्वतंत्रता की लहर दौड़ गई, लेकिन भ्रम की स्थिति थी। नई स्थिति से निपटने के लिए अनेक महान् विचारकों ने राज्य के प्रश्न पर विचार किया। अनेक विचारधाराएँ उठ खड़ी हुईं।

मैकियावेली

Downloaded from www.PDFshala.com

प्रसिद्ध इटेलियन विचारक मैकियावेली ने सरकार के गणतांत्रिक स्वरूप को सर्वश्रेष्ठ माना, लेकिन इस प्रकार की सरकार के स्थायित्व पर संदेह करते हुए उसने सशक्त राजा के शासन के सिद्धांत को प्रतिपादित किया। उसने 'दि प्रिंस' नामक पुस्तक लिखी। उसके द्वारा केंद्रीकृत सरकार का पक्ष लिया गया, जिसका यूरोप में राजनीति सिद्धांत और व्यवहार पर गहरा प्रभाव हुआ।

मैकियावेली शायद पहला ऐसा लेखक था, जिसने 'राजनीति' को विशुद्ध रूप से सेक्युलर दृष्टि से देखा।

अन्य विचारक

(समझौता और संविदा)

अन्य विचारक करार और समझौता—अन्य विचारकों में से ज्यादातर ने करार या समझौते के सिद्धांत का समर्थन किया। रोमन कानून में (करार) व्यक्तियों के बीच एक सहमति का नतीजा हुआ करता था और इसका दायरा समझौते से छोटा हुआ करता था, जबकि समझौता करार के साथ-साथ एक बाध्यकारी दायित्व भी होता था।

इन विचारकों के दो प्रमुख संप्रदाय थे। पहला संप्रदाय ईश्वर और मनुष्य के बीच समझौते के हिब्रू (यहूदी) विचार पर आधारित सिद्धांत का प्रतिपादन करता है। संविदा का रोमन विचार इसका पूरक था। यह सरकार और लोगों के बीच मौन संविदा को स्वीकार करता है।

दूसरा अथवा आधुनिक संप्रदाय व्यक्तियों के बीच संविदा के माध्यम से पॉलिटिकल सोसाइटी की स्थापना से संबंधित है। इस विचारधारा के प्रमुख विचारकों में हूकर, हॉब्स, लॉक और रूसो शामिल हैं।

लोगों की स्वतंत्रता के हिमायती

ह्यूगुनॉट

(1) **दि विंडिसिया कॉण्ट्रा टीव्रान्नोस (1576)** को ह्यूगुनॉट द्वारा लिखा हुआ माना जाता है, जिसमें कहा गया है कि राजा अपनी शक्ति लोगों की इच्छा से प्राप्त करता है, और यदि कोई राजा कानून का पालन करने के समझौते को तोड़ दे, जिसका कुलीन तथा लोग संयुक्त रूप से पालन करने की शपथ लेते हैं, तो ऐसी स्थिति में लोगों को इसमें निष्ठा रखने की अनिवार्यता से मुक्ति मिल जाती है।

बुचानन

(2) बुचानन का भी मानना है कि राजा और लोग एक समझौते से बँधे हैं, और राजा द्वारा इसका उल्लंघन किए जाने पर उसके अधिकार छिन जाते हैं।

Downloaded from www.PDFshala.com

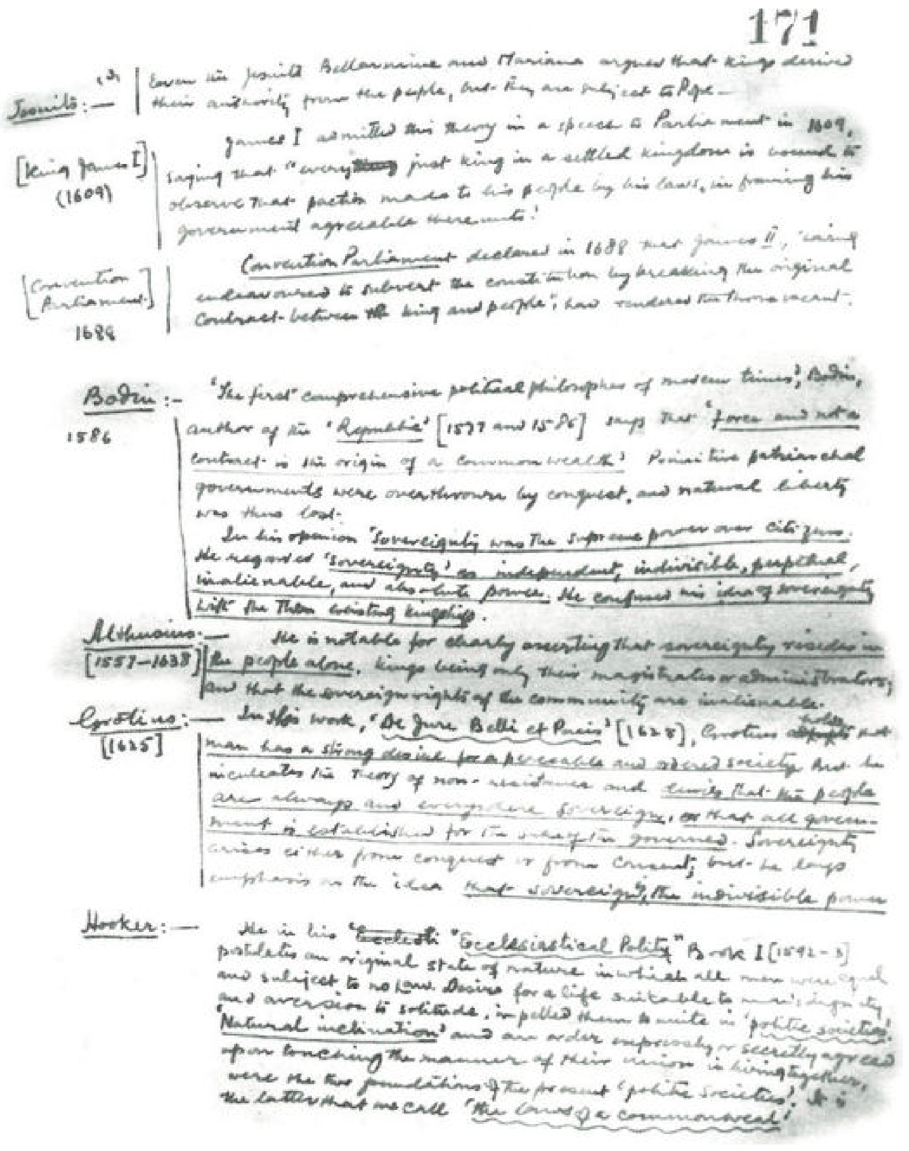

171

Jesuits :— (3) Even the Jesuits Bellarmine and Mariana argued that kings derive their authority from the people, but they are subject to Pope—

[King James I] (1609) James I admitted this theory in a speech to Parliament in 1609, saying that "every just king in a settled kingdom is bound to observe that paction made to his people by his laws, in framing his government agreeable thereunto."

[Convention Parliament] 1688 Convention Parliament declared in 1688 that James II, 'having endeavoured to subvert the constitution by breaking the original contract between the king and people', had rendered the throne vacant.

Bodin :— 1586 'The first' comprehensive political philosopher of modern times; Bodin, author of the 'Republic' [1577 and 1586] says that 'force and not a contract is the origin of a commonwealth.' Primitive patriarchal governments were overthrown by conquest, and natural liberty was thus lost.

In his opinion 'Sovereignty was the supreme power over citizens. He regarded 'sovereignty' as independent, indivisible, perpetual, inalienable, and absolute power. He confined his idea of sovereignty [illegible] the then existing kingships.

Althusius :— [1557–1638] He is notable for clearly asserting that sovereignty resides in the people alone, kings being only their magistrates or administrators; and that the sovereign rights of the community are inalienable.

Grotius :— [1625] In his work, 'De Jure Belli et Pacis' [1625], Grotius holds that man has a strong desire for a peaceable and ordered society. And he inculcates the theory of non-resistance and denies that the people are always and everywhere sovereign, or that all government is established for the [illegible] governed. Sovereignty arises either from conquest or from consent; but he lays emphasis on the idea that sovereignty, the indivisible power

Hooker :— He in his "Ecclesiastical Polity" Book I [1592–3] postulates an original state of nature in which all men were equal and subject to no law. Desire for a life suitable to man's dignity and aversion to solitude, impelled them to unite in 'politic societies'. 'Natural inclination' and an order expressly or secretly agreed upon touching the manner of their union in living together, were the two foundations of the present 'politic societies'; the latter that we call 'the laws of a commonweal'. It is

जीस्युइट्स

(3) यहाँ तक कि जीस्युइट्स बेलरमाइन और मरियाना ने दलील दी कि राजा अपना अधिकार लोगों से प्राप्त करता है, लेकिन वे लोग प्रजा पोप की ही होते हैं।

किंग जेम्स प्रथम (1609)

जेम्स प्रथम ने अपने इस सिद्धांत को 1609 में पार्लियामेंट में दिए गए भाषण में यह कहते हुए स्वीकार किया कि "किसी स्थापित राज्य में प्रत्येक न्यायप्रिय राजा उसके कानूनों के माध्यम से लोगों के साथ किए गए समझौते का पालन करने के लिए बाह्यहै। उसे अपनी सरकार इसी के अनुसार चलानी चाहिए।"

कन्वेंशन पार्लियामेंट (1688)

कन्वेंशन पार्लियामेंट ने 1688 में घोषणा की कि जेम्स द्वितीय ने राजा और जनता के बीच मूल समझौते को तोड़कर संविधान का उल्लंघन करने का प्रयास किया। इसीलिए उसने सिंहासन को खाली छोड़ दिया।

बोडिन (1586)

Downloaded from www.PDFshala.com

आधुनिक युग के प्रथम समग्र राजनीति विचारक बोडिन ने 'दार्शनिक और रिपब्लिक' (1577 और 1586) की रचना की। वह कहता है कि "कॉमनवेल्थ की उत्पत्ति संविदा से नहीं, शक्ति से हुई है।"

आदिम पेट्रिआर्क सरकारों को पराजित कर उलट दिया गया और इस प्रकार नैसर्गिक स्वतंत्रता खो गई। उसकी राय में, "सोवरिन नागरिकों पर परम सत्ता है।" वह सोवरिन को स्वतंत्र, अविभाजनीय, चिरस्थायी, अभिन्न और परम सत्ता मानता था। वह सोवरिन के विचार को भ्रमवश उस समय प्रचलित किंगशिप समझ बैठा।

अल्थूसियस (1557-1638)

उसने यह उल्लेखनीय बात स्पष्ट रूप से कही कि प्रभुसत्ता केवल लोगों में निहित है, और राजा सिर्फ उनके न्यायाधीश अथवा प्रशासक होते हैं। समुदाय के संप्रभु अधिकार उनसे अलग नहीं किए जा सकते।

ग्रोटियस (1625)

ग्रोटियस ने अपनी पुस्तक 'डी ज्यूर बेल्ली एट पेरिस' (1628) में कहा कि मनुष्य में एक शांतिपूर्ण और व्यवस्थित समाज की तीव्र लालसा होती है। लेकिन वह अ-प्रतिरोध के सिद्धांत को पोषित करता है और इस बात से इनकार करता है कि लोग हमेशा और हर जगह संप्रभु होते हैं, अथवा सभी सरकारें शासितों के लिए स्थापित होती हैं। संप्रभुत्ता या तो विजय से आती है या सहमति से; परंतु वह इस विचार पर जोर देता है कि संप्रभुत्ता अविभाजनीय शक्ति है।

हूकर

उसने अपनी पुस्तक 'एक्लेस्टिकल पॉलिटी' (1529-30) में एक ऐसी मौलिक प्राकृतिक स्थिति की बात कही, जिसमें सभी मनुष्य समान होते हैं और किसी कानून के अधीन नहीं होते। मनुष्यों की गरिमा के अनुरूप जीवन की कामना और अकेले रहने की अरुचि ने उन्हें 'राजनीति समाजों' में एकजुट कर दिया। 'स्वाभाविक रुझान' और व्यवस्था अथवा गुप्त रूप से उनकी साथ रहने की सहमति ही वर्तमान 'राजनीति समाजों' की दो बुनियादें हैं। साथ में रहने के तरीके को ही हम 'दि लॉ ऑफ ए कॉमनवेल्थ' कहते हैं।

Downloaded from www.PDFshala.com

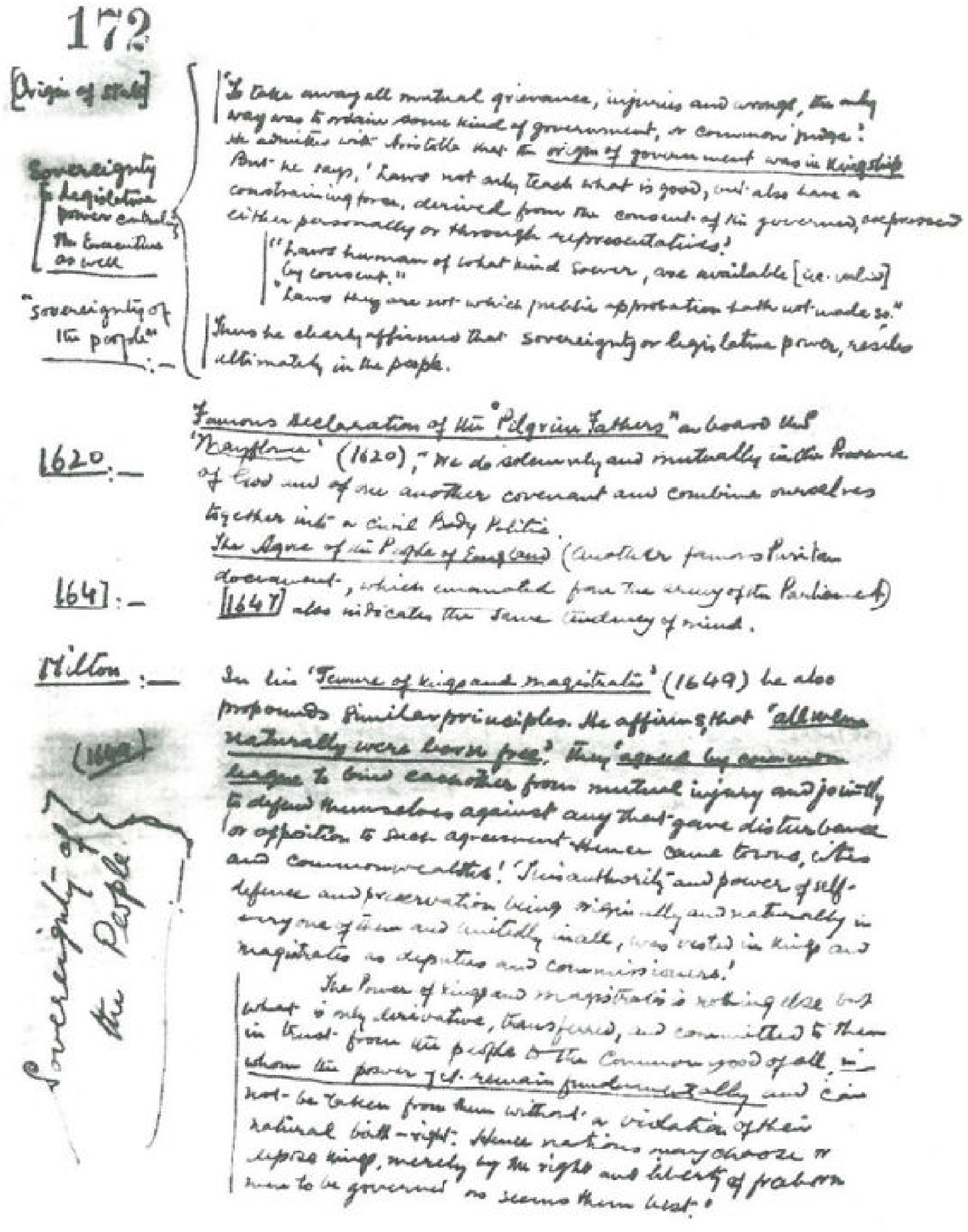

172

[Origin of state] — "To take away all mutual grievances, injuries and wrongs, the only way was to ordain some kind of government, or common judge." He admits with Aristotle that the origin of government was in Kingship. But he says, 'Laws not only teach what is good, but also have a constraining force, derived from the consent of the governed, expressed either personally or through representatives.'

"Laws human of what kind soever, are available [i.e. valid] by consent."

"Laws they are not which public approbation hath not made so."

Sovereignty & legislative power controls the Executive as well

"Sovereignty of the people" :- Thus he clearly affirms that sovereignty or legislative power, resides ultimately in the people.

1620 :- Famous declaration of the "Pilgrim Fathers" on board the 'Mayflower' (1620), "We do solemnly and mutually in the Presence of God and of one another covenant and combine ourselves together into a civil Body Politic."

1647 :- The Agreement of the People of England (another famous Puritan document, which emanated from the army of the Parliament) [1647] also indicates the same tendency of mind.

Milton :- In his 'Tenure of kings and magistrates' (1649) he also propounds similar principles. He affirms that "all men naturally were born free." They "agreed by common league to bind each other from mutual injury and jointly to defend themselves against any that gave disturbance or opposition to such agreement. Hence came towns, cities and commonwealths." "This authority and power of self-defence and preservation being originally and naturally in every one of them and unitedly in all, was vested in kings and magistrates as deputies and commissioners."

The Power of kings and magistrates is nothing else but what is only derivative, transferred, and committed to them in trust from the people to the common good of all, in whom the power yet remains fundamentally and cannot be taken from them without a violation of their natural birth-right. Hence nations may choose or depose kings, merely by the right and liberty of freeborn men to be governed as seems them best.

(1649) Sovereignty of the People

राज्य की उत्पत्ति

संप्रभुत्ता: विधायनी शक्ति कार्यपालिका पर भी नियंत्रण करती है।

"सभी परस्पर शिकायतों, तिरस्कार और अन्यायों को दूर करने का एक ही उपाय है कि किसी सरकार अथवा कॉमन जज की व्यवस्था की जाए।" उसने अरस्तु की इस बात से सहमति जताई कि सरकार की उत्पत्ति किंगशिप में है। लेकिन वह कहता है कि "कानून सिर्फ अच्छी बातें नहीं सिखाते, बल्कि शासितों की सहमति से प्राप्त शक्ति को भी नियंत्रित करते हैं, जो व्यक्तिगत रूप से अथवा प्रतिनिधियों के माध्यम से व्यक्त होती है। सभी प्रकार के मानवीय कानून (अर्थात् वैध) सहमति से उपलब्ध हैं। वे कानून नहीं हैं, जो लोगों की सहमति से नहीं बने हैं।"

लोगों की संप्रभुत्ता

इस प्रकार, उसने स्पष्ट रूप से प्रतिपादित किया कि संप्रभुत्ता अथवा विधायी शक्ति अंतत: लोगों में निहित है।

1620

मेफ्लॉवर के बोर्ड पर 'पिलग्रिम फादर्स' की प्रसिद्ध घोषणा (1620) : हम ईश्वर की उपस्थिति में पूरी निष्ठा से परस्पर सहमति के साथ एकजुट होकर सिविल बॉडी पॉलिटिक के अधीन रहने की घोषणा करते हैं।

Downloaded from www.PDFshala.com

1647

एग्री ऑफ दि पीपुल ऑफ इंग्लैंड : (एक अन्य प्यूरिटन दस्तावेज, जो आर्मी ऑफ पार्लियामेंट से निकला) (1647)। इसमें भी मन की यही प्रवृत्ति इंगित होती है।

मिल्टन

1649 (लोगों की संप्रभुत्ता)

पिलग्रिम पादर्स इंग्लैंड के चर्च के प्यूरिटन विद्रोहियों का एक जत्था, जो परेशान किए जाने से बचने तथा उत्तरी अमेरिका में जा बसने के लिए मेफ्लावर नामक जहाज से भाग निकला।

जॉन मिल्टन (1608-1674) : अंग्रेज कवि, 'पैराडाइज लॉस्ट' और 'पैराडाइज रिगेंड' के रचयिता

अपनी पुस्तक 'टेन्योर ऑफ किंग्स ऐंड मजिस्ट्रेट्स' (1649) में वह भी इसी प्रकार के सिद्धांतों का प्रतिपादन करता है। वह दृढ़ता से कहता है कि "सभी मनुष्य स्वाभाविक रूप से स्वतंत्र जन्म लेते हैं। वे परस्पर तकलीफ के कारण एक-दूसरे से जुड़ जाते हैं और इस अनुबंध के उल्लंघन अथवा विरोध का एकजुट होकर मुकाबला करते हैं। इसीलिए कस्बों, नगरों तथा कॉमनवेल्थों का जन्म हुआ !" आत्मरक्षा तथा सुरक्षा का यही अधिकार और शक्ति मूल रूप और स्वाभाविक रूप से उनमें से प्रत्येक में होती है। उन्होंने इन्हें राजाओं तथा मजिस्ट्रेटों को डिप्टी और कमिश्नर के रूप में सौंप दिया।

राजाओं तथा मजिस्ट्रेटों की शक्ति प्राप्त की हुई, स्थानांतरित और लोगों द्वारा सर्वजन हित के लिए विश्वासपूर्वक सौंपे गए अधिकार के सिवा कुछ भी नहीं है, जो अभी भी बुनियादी तौर पर उसी में (यानी जनता में-सं.) निहित होती है। यह सत्ता मूलरूप से अब भी उन्हीं में है और स्वाभाविक जन्मसिद्ध अधिकार का उल्लंघन किए बिना इसे उनसे छीना नहीं जा सकता। इस प्रकार, राष्ट्र अपनी स्वतंत्रता के अधिकार का उपयोग करके राजा का चयन कर सकते हैं और उन्हें पद से हटा सकते हैं, जिससे स्वतंत्रता के आधार पर कि वे किन में शासित होना सर्वोत्तम समझते हैं।

Downloaded from www.PDFshala.com

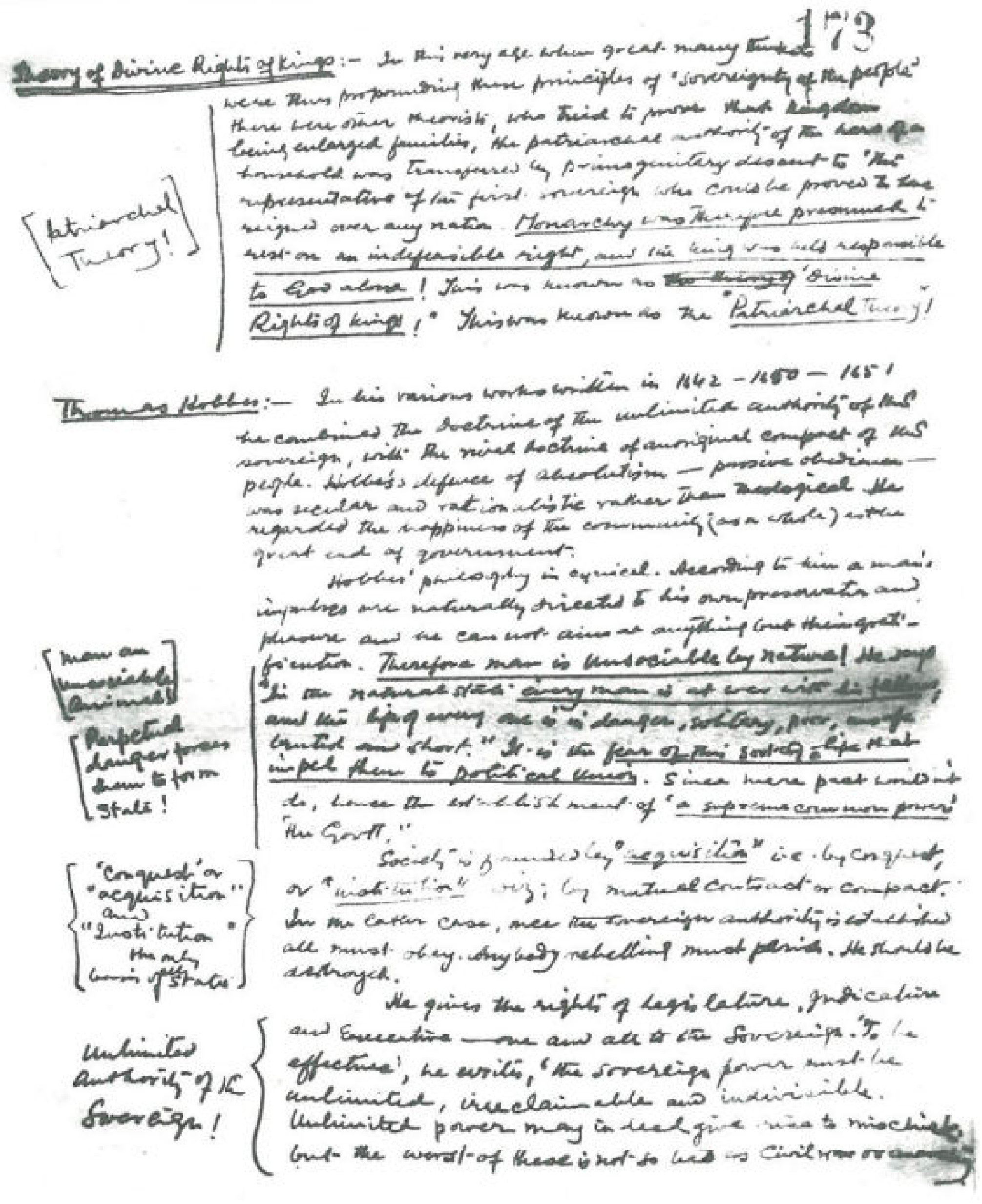

173

Theory of Divine Rights of Kings:— In this very age when great many thinkers were thus propounding these principles of "sovereignty of the people" there were other theorists, who tried to prove that kingdom being enlarged families, the patriarchal authority of the head of a household was transferred by primogenitary descent to "the representative of the first sovereign who could be proved to have reigned over any nation. Monarchy was therefore presumed to rest on an indefeasible right, and the king was held responsible to God alone! This was known as ~~the theory of~~ 'Divine Rights of Kings!" This was known as the "Patriarchal Theory!

[Patriarchal Theory!]

Thomas Hobbes:— In his various works written in 1642 – 1650 – 1651 he combined the doctrine of the unlimited authority of the sovereign, with the rival doctrine of an original compact of the people. Hobbes's defence of absolutism — passive obedience — was secular and rationalistic rather than theological. He regarded the happiness of the community (as a whole) as the great end of government.

Hobbes' philosophy is cynical. According to him a man's impulses are naturally directed to his own preservation and pleasure and he can not aim at anything but their gratification. Therefore man is unsociable by nature! He says "In the natural state every man is at war with his fellows, and the life of every one is in danger, solitary, poor, [illegible] brutish and short." It is the fear of this sort of life that impel them to political union. Since there [illegible] do, hence the establishment of "a supreme common power" "the Govt."

Society is founded by "acquisition" i.e. by conquest, or "institution" viz; by mutual contract or compact. In the latter case, once the sovereign authority is established all must obey. Anybody rebelling must perish. He should be [illegible].

He gives the rights of legislature, judicature and Executive — one and all to the Sovereign. "To be effective", he writes, 'the sovereign power must be unlimited, irreclaimable and indivisible. Unlimited power may indeed give rise to mischiefs but the worst of these is not so bad as Civil war or [illegible]

[man an unsociable Animal!]

[Perpetual danger forces them to form State!]

["Conquest" or "acquisition" and "Institution" the only basis of States]

Unlimited Authority of the Sovereign!

राजा के दैवीय अधिकारों का सिद्धांत

इसी युग में जब अनेक महान् विचारक 'लोगों की संप्रभुत्ता' के इन सिद्धांतों का प्रतिपादन कर रहे थे, तब अन्य सिद्धांत भी प्रचलित थे, जिनसे यह सिद्ध करने की कोशिश की गई कि राज्य(यों) एक बड़ा परिवार है, परिवार के मुखिया का पितृसत्तात्मक अधिकार आदि पूर्वज द्वारा प्रथम सोवरिन के प्रतिनिधि को वंशानुगत रूप से हस्तांतरित किया गया, जिसे किसी राज्य पर शासन करने के योग्य पाया गया। इस प्रकार राजतंत्र को अचूक अधिकार पर आधारित माना गया और राजा को सिर्फ ईश्वर के प्रति उत्तरदायी माना गया। इसे 'राजाओं के ईश्वरीय अधिकार' कहा जाता है। इसे 'पितृसत्तात्मक सिद्धांत' के रूप में जाना जाता है।

थॉमस हॉब्स

Downloaded from www.PDFshala.com

उसने 1642-1650-1651 के दौरान लिखी गई अनेक पुस्तकों में संप्रभुत्ता के असीमित अधिकार के सिद्धांत को लोगों के एक मूल समझौते के विपरीत सिद्धांत के साथ संयोजित किया। हॉब्स की निरपेक्ष अप्रतिरोधक आज्ञाकारिता की पैरवी धार्मिक से ज्यादा सेक्युलर और तर्कवादी थी। उसने समुदाय (संपूर्ण रूप में) की प्रसन्नता को सरकार का महान् उद्देश्य माना।

मनुष्य : एक असामाजिक प्राणी : चिरस्थायी खतरा उन्हें राज्य का निर्माण करने को मजबूर करता है।

हॉब्स का दर्शन सिनिकल है। उसके अनुसार, "मनुष्य के आवेग स्वाभाविक रूप से उसकी सुरक्षा और सुख की ओर प्रवृत्त होते हैं। वह अपनी संतुष्टि के अलावा कोई और लक्ष्य तय नहीं कर सकता। लिहाजा, मनुष्य स्वभाव से ही असामाजिक है।" वह कहता है कि प्राकृतिक अवस्था में प्रत्येक मनुष्य अपने साथियों के साथ युद्धरत हैं, और प्रत्येक व्यक्ति का जीवन खतरे में, अकेला, कमजोर, असुरक्षित, पशुवत् और छोटा है। इस तरह के जीवन के भय से ही वे राजनीति यूनियन बनाते हैं। चूँकि सिर्फ संविदा से काम नहीं चलेगा, अत: सुप्रीम कॉमन पॉवर—ईश्वर की सत्ता को स्थापित किया गया।

'विजय' अथवा 'अधिग्रहण' और 'गठन' ही सभी राज्यों का आधार है।

समाज 'अधिग्रहण' अर्थात् विजय अथवा 'गठन' अर्थात् परस्पर अनुबंध अथवा समझौते पर आधारित है। गठन के मामले में, एक बार प्रभुसत्ता स्थापित हो जाने पर सभी को उसकी आज्ञा माननी पड़ती है। बगावत करनेवाला तबाह हो जाता है। उसे नष्ट कर दिया जाना चाहिए।

सोवरिन का असीमित अधिकार

वह विधायिका, न्यायिक और कार्यपालिक, सभी अधिकार सोवरिन को प्रदान करता है। 'प्रभावी होने के लिए', वह लिखता है कि "सोवरिन (संप्रभु) शक्ति असीमित होनी चाहिए। उसे वापस न लिया जा सके और विभाजित न किया जा सके। बेशक, असीमित शक्ति के कारण अनिष्ट हो सकता है, लेकिन इनसे जो सबसे बुरा हो सकता है, वह गृहयुद्ध अथवा अराजकता के समान बुरा नहीं होगा।"

उसकी राय में राजतंत्र, कुलीनतंत्र अथवा लोकतंत्र शक्ति में एक-दूसरे से भिन्न नहीं होते। व्यापक शांति और सुरक्षा संबंधी उनकी उपलब्धि जनता अथवा उनके अधीन लोगों की आज्ञाकारिता पर निर्भर होती है। बहरहाल, वह राजतंत्र को तरजीह देता है। उसकी राय में 'सीमित राजतंत्र' सर्वश्रेष्ठ है, लेकिन उसका बल इस बात पर है कि सोवरिन को धर्म तथा नागरिकों से संबंधित मामलों पर नियंत्रण रखना चाहिए और यह तय करना चाहिए कि कौन से सिद्धांत शांति के लिए अनुकूल हैं।

Downloaded from www.PDFshala.com

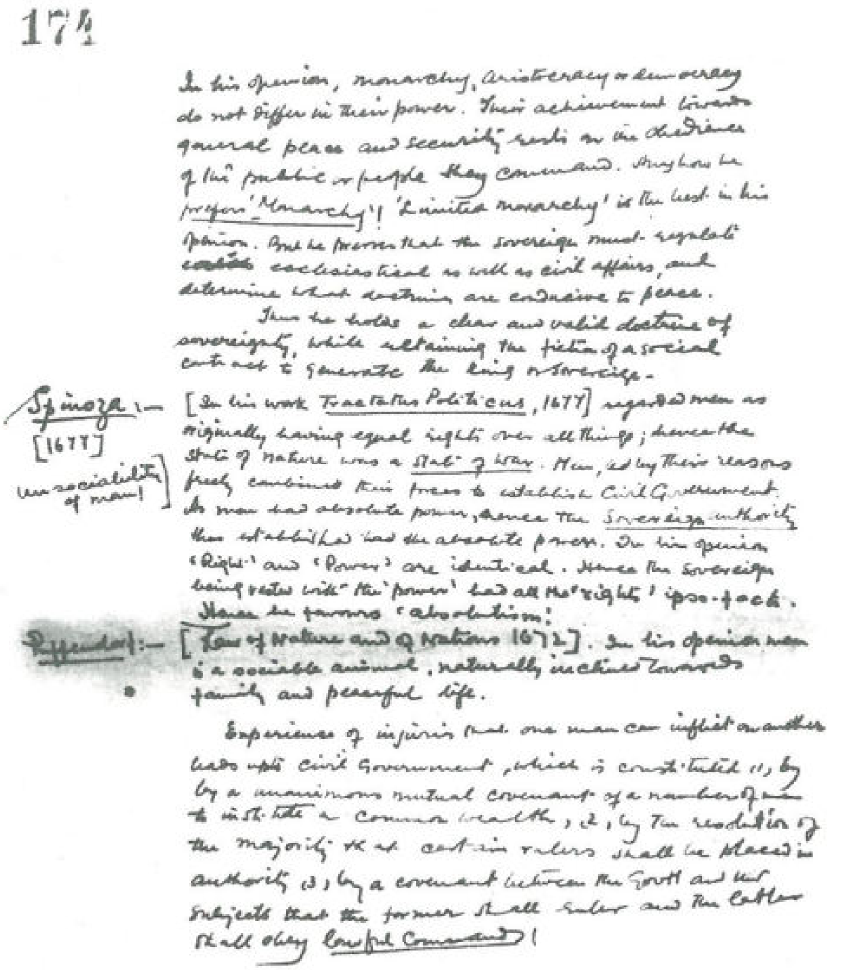
174

In his opinion, monarchy, aristocracy or democracy do not differ in their power. Their achievement towards general peace and security rests on the obedience of the public or people they command. Anyhow he prefers 'Monarchy'! 'Limited monarchy' is the best in his opinion. And he proves that the sovereign must regulate ecclesiastical as well as civil affairs, and determine what doctrines are conducive to peace.

Thus he holds a clear and valid doctrine of sovereignty, while retaining the fiction of a social contract to generate the king or sovereign.

Spinoza :— [1677] [unsociability of man!] [In his work Tractatus Politicus, 1677] regarded men as originally having equal rights over all things; hence the state of nature was a state of war. Men, led by their reasons freely combined their forces to establish Civil Government. As man had absolute power, hence the Sovereign authority thus established had the absolute power. In his opinion 'Right' and 'Power' are identical. Hence the sovereign being vested with the 'power' had all the 'rights' ipso-facto. Hence he favours 'absolutism'!

Puffendorf :— [Law of Nature and of Nations 1672]. In his opinion man is a sociable animal, naturally inclined towards family and peaceful life.

Experience of injuries that one man can inflict on another leads upto civil Government, which is constituted (1) by a unanimous mutual covenant of a number of men to institute a Commonwealth, (2) by the resolution of the majority that certain rulers shall be placed in authority (3) by a covenant between the Govt and their subjects that the former shall rule and the latter shall obey lawful commands!

इस प्रकार सोवरिन के वैध सिद्धांत के प्रति उसके विचार स्पष्ट हैं, वहीं वह राजा अथवा सोवरिन के निर्माण के लिए एक सामाजिक संविदा की कल्पना (मिथ्या) कहानी को भी मान्य करता है।

स्पिनोजा (1677)

मनुष्य की असामाजिकता (अपनी पुस्तक टेक्टेटस पॉलिटिक्स, 1677) में वह मानता है कि मूल रूप से मनुष्य को सभी चीजों पर समान अधिकार है। लिहाजा, प्रकृति की स्थिति युद्ध की स्थिति है। मनुष्य अपने विवेक से प्रेरित होकर सिविल सरकार बनाने के लिए अपनी शक्तियों को स्वतंत्र रूप से संयुक्त करता है। चूँकि मनुष्य के पास निरपेक्ष शक्ति होती है, अत: इस प्रकार स्थापित सोवरिन के पास निरपेक्ष शक्तियाँ होती हैं। उसकी राय में, 'अधिकार' और 'शक्ति' एक ही है।

अत: 'शक्ति' से संपन्न सोवरिन के पास सभी 'अधिकार' अपने आप आ जाते हैं। इस प्रकार वह निरंकुशता का पक्ष लेता है।

पफेंडर

(लॉ ऑफ नेचर ऐंड नेशंस, 1672) : उसकी राय में मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है, जिसका परिवार और शांतिपूर्ण जीवन के प्रति स्वाभाविक रुझान होता है।

Downloaded from www.PDFshala.com

एक मनुष्य द्वारा दूसरे मनुष्य को दिए जानेवाले कष्ट के अनुभव से सिविल सरकार प्रेरित होती है, जिसका गठन किया जाता है—(1) एक कॉमन वेल्थ के गठन के लिए अनेक लोगों द्वारा परस्पर सर्वसम्मति से, (2) बहुसंख्यकों द्वारा इस संकल्प से कि कतिपय शासक को प्राधिकार में रखा जाएगा, (3) सरकार और प्रजा के बीच एक अनुबंध द्वारा कि सरकार शासन करेगी और प्रजा सभी विधिसम्मत आदेशों का पालन करेगी।

** नोट : स्पिनोजा (1632-1677) दकार्त से प्रभावित डच दार्शनिक। उसने अपनी पुस्तक एथिक्स 1677 में यह विचार प्रकट किया कि मानव-जीवन (या प्रकृति) से ओत-प्रोत है।*

पुर्फेंडोर या सैमुअल बैरन फान पुर्फेंडोर (1632-1684) जर्मन विधिवेत्ता और इतिहासकार। उसका विचार था कि राज्य के कानून प्राकृतिक कानून में ही शामिल है।

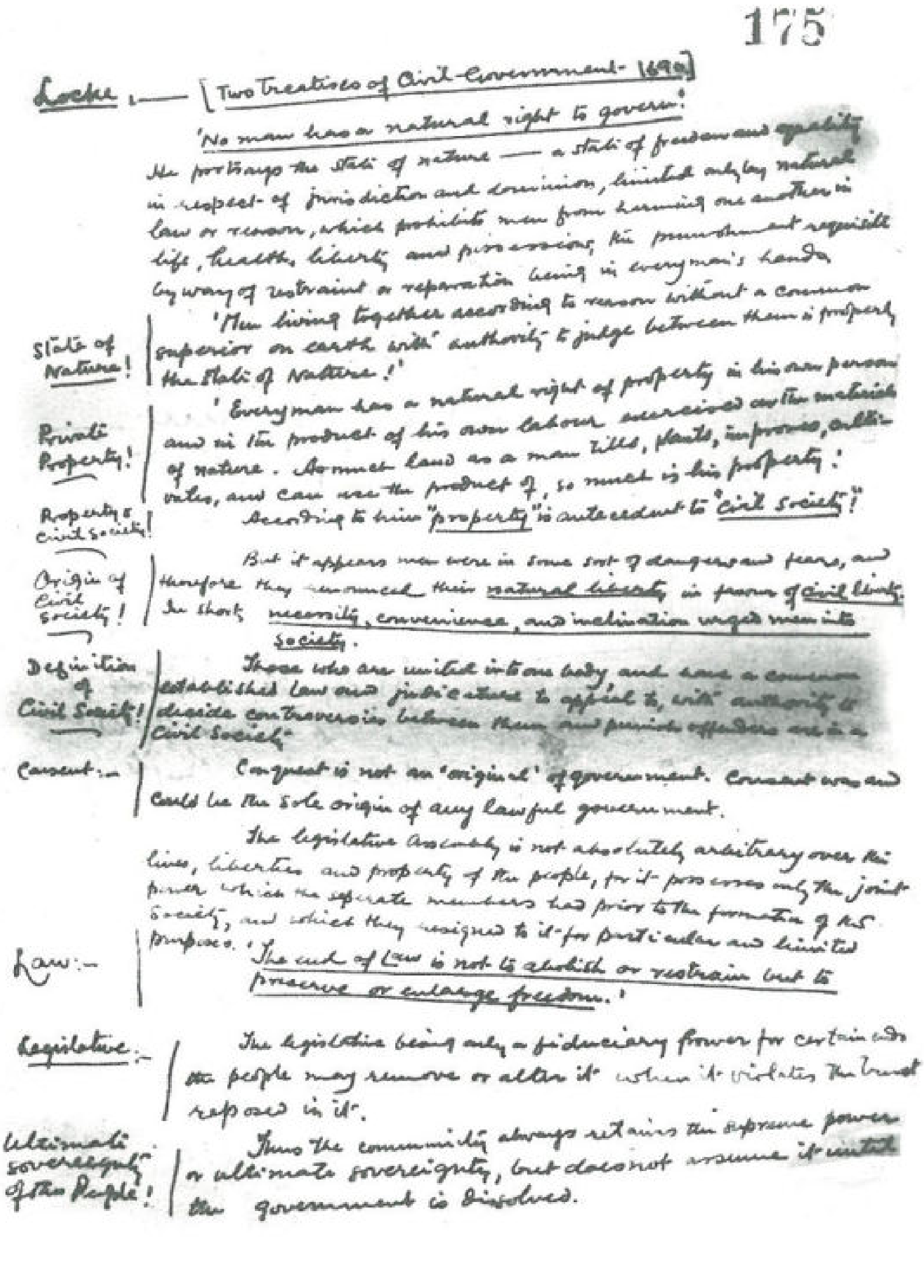

175

Locke :— [Two Treatises of Civil Government - 1690]

'No man has a natural right to govern.'

He portrays the state of nature — a state of freedom and equality in respect of jurisdiction and dominion, limited only by natural law or reason, which prohibits men from harming one another in life, health, liberty and possessions; the punishment requisite by way of restraint or reparation being in everyman's hands.

State of Nature! — 'Men living together according to reason without a common superior on earth with authority to judge between them is properly the State of Nature!'

Private Property! — 'Everyman has a natural right of property in his own person and in the product of his own labour exercised on the materials of nature. As much land as a man tills, plants, improves, cultivates, and can use the product of, so much is his property.'

Property & Civil Society! — According to him "property" is antecedent to "civil society"!

Origin of Civil Society! — But it appears men were in some sort of dangers and fears, and therefore they renounced their natural liberty in favour of civil liberty. In short necessity, convenience, and inclination urged men into society.

Definition of Civil Society! — "Those who are united into one body and have a common established law and judicature to appeal to, with authority to decide controversies between them and punish offenders are in a Civil Society."

Consent :— Conquest is not an 'original' of government. Consent was and could be the sole origin of any lawful government.

The legislative assembly is not absolutely arbitrary over the lives, liberties and property of the people, for it possesses only the joint power which the separate members had prior to the formation of the society, and which they resigned to it for particular and limited purposes.

Law :— 'The end of Law is not to abolish or restrain but to preserve or enlarge freedom.'

Legislative :— The legislative being only a fiduciary power for certain ends the people may remove or alter it when it violates the trust reposed in it.

Ultimate sovereignty of the People! — Thus the community always retains the supreme power or ultimate sovereignty, but does not assume it until the government is dissolved.

लॉक

Downloaded from www.PDFshala.com

(सिविल गवर्नमेंट की दो संधियाँ, 1690)

"किसी भी व्यक्ति को शासन करने का प्राकृतिक अधिकार नहीं है।"

वह प्रकृति की अवस्था की व्याख्या करते हुए कहता है कि कार्यक्षेत्र और राज्य के संबंध में स्वतंत्रता और समानता की स्थिति, सिर्फ प्राकृतिक नियम अथवा तर्क तक सीमित है, जो जीवन, स्वास्थ्य, स्वतंत्रता तथा आधिपत्य में एक-दूसरे को नुकसान पहुँचाने से रोकता है। संयम अथवा क्षतिपूर्ति के जरिए दंड प्रत्येक व्यक्ति के हाथ में है।

प्रकृति की अवस्था

"विवेक के अनुसार इस प्रकार पृथ्वी पर साथ रहना कि जिसमें कोई श्रेष्ठ न माना जाता हो, जिसे लोगों के बीच भेदभाव करने का अधिकार न हो। यही प्राकृतिक अवस्था है।"

निजी संपत्ति

"प्रत्येक व्यक्ति को अपनी व्यक्तिगत संपत्ति रखने तथा प्राकृतिक संसाधनों का उपयोग कर उसने जो कुछ अपने परिश्रम से प्राप्त किया है, उस पर उसका प्राकृतिक अधिकार है। मनुष्य जितनी जमीन जोतता है, उपज प्राप्त करता है, उसमें सुधार करता है, खेती करता है, उसे उस उत्पाद के उपयोग का अधिकार है और इतनी ही उसकी संपत्ति है।

संपत्ति और नागरिक समाज

उसके अनुसार 'संपत्ति' नागरिक समाज का पिछला रूप है।

नागरिक समाज की उत्पत्ति

लेकिन ऐसा लगता है कि मनुष्य किन्हीं खतरों और भयों में थे, इसीलिए उन्होंने नागरिक स्वतंत्रता के पक्ष में अपनी प्राकृतिक स्वतंत्रता को त्याग दिया। संक्षेप में, मनुष्य को आवश्यकता, सुविधा तथा रुझान ने 'समाज में प्रवेश' के लिए प्रेरित किया।

नागरिक समाज की परिभाषा

नागरिक समाज में जो लोग किसी एक संस्था के रूप में संगठित होते हैं, जिनका एक साझा स्थापित कानून होता है और जिसमें अपील की व्यवस्था होती है। उसे उनके बीच विवादों पर निर्णय लेने तथा अपराधियों को दंड देने का अधिकार होता है।

सहमति

सरकार की उत्पत्ति विजय से नहीं, सहमति से हुई, और किसी विधिसम्मत सरकार की उत्पत्ति का एकमात्र आधार यही हो सकता है। विधायिका, लोगों के जीवन, उनकी स्वतंत्रताओं तथा संपत्ति की निरपेक्ष रूप से निरंकुश नहीं हो सकती; क्योंकि उसके पास सिर्फ संयुक्त शक्ति होती है, जो समाज की रचना से पहले अलग-अलग सदस्यों के पास थी, और विशिष्ट तथा सीमित उद्देश्यों के लिए वे उसके अधीन थे।

कानून

"कानून का उद्देश्य स्वतंत्रता को समाप्त करना अथवा सीमित करना नहीं, बल्कि उसकी रक्षा करना और उसे बढ़ाना है।"

विधायिका

विधायिका कुछ निश्चित उद्देश्यों के लिए सिर्फ न्यायधारी सत्ता है, जो यदि इसमें न्यस्त किए गए विश्वास को खंडित करे, तो जनता द्वारा भंग या परिवर्तित की जा सकती है।

लोगों की निरपेक्ष संप्रभुत्ता

सर्वोच्च शक्ति अथवा निरपेक्ष संप्रभुत्ता हमेशा समुदाय के पास होती है, लेकिन वह तब तक उसे धारण नहीं करती, जब तक सरकार भंग न हो जाए।

Downloaded from www.PDFshala.com

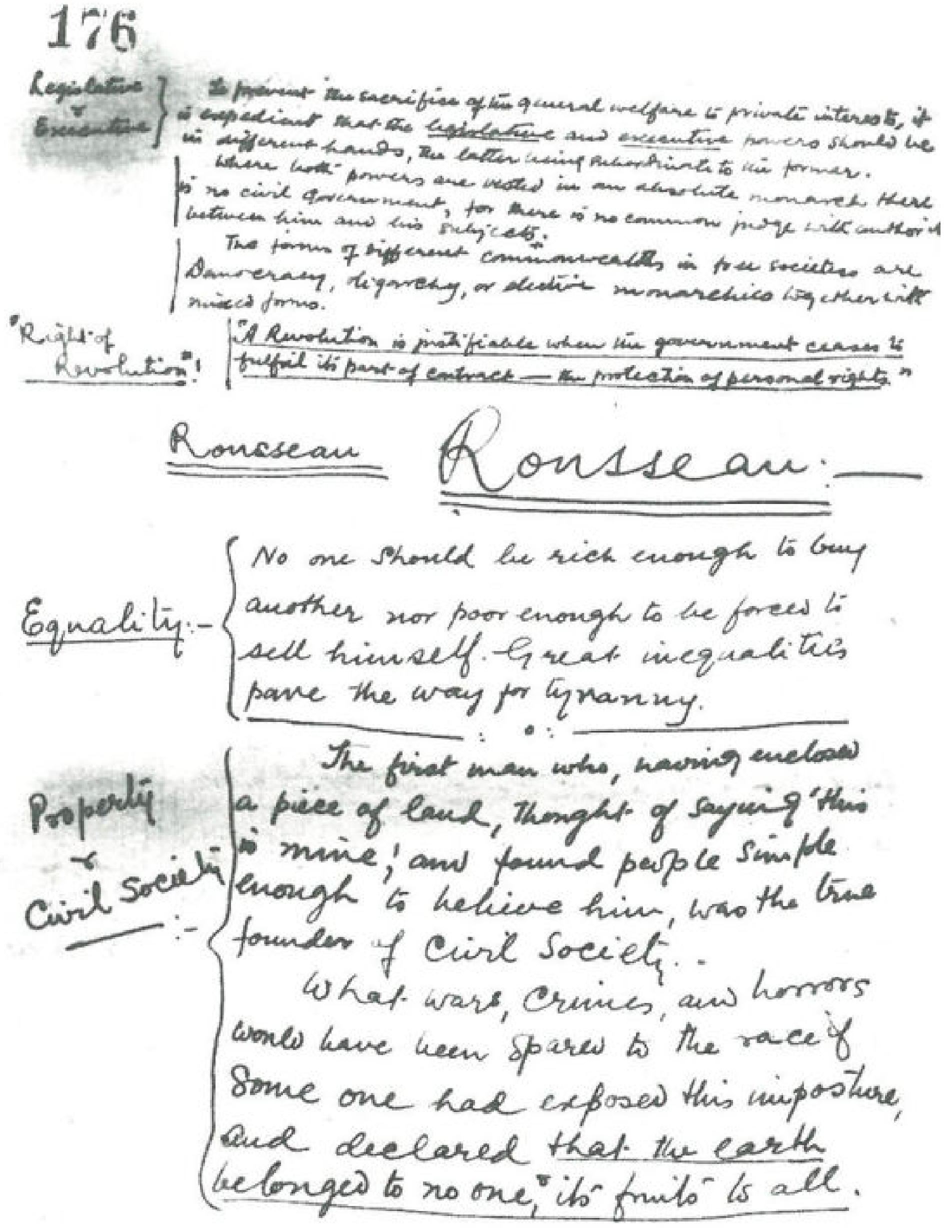

176

Legislative v. Executive — To prevent the sacrifice of the general welfare to private interests, it is expedient that the legislative and executive powers should be in different hands, the latter being subordinate to the former.

Where both powers are vested in an absolute monarch there is no civil government, for there is no common judge with authority between him and his subjects.

The forms of different commonwealths in free societies are Democracy, oligarchy, or elective monarchies together with mixed forms.

"Right of Revolution"! — "A Revolution is justifiable when the government ceases to fulfil its part of contract — the protection of personal rights."

Rousseau — Rousseau:—

Equality:- No one should be rich enough to buy another nor poor enough to be forced to sell himself. Great inequalities pave the way for tyranny.

Property & Civil Society:- The first man who, having enclosed a piece of land, thought of saying 'this is mine,' and found people simple enough to believe him, was the true founder of Civil Society.

What wars, crimes, and horrors would have been spared to the race if some one had exposed this imposture, and declared that the earth belonged to no one, its fruits to all.

विधायिका और कार्यपालिका

निजी हितों की खातिर जनसामान्य के कल्याण की बलि को रोकने के लिए यह उचित है कि विधायी और कार्यपालिक अधिकार अलग-अलग हाथों में हों। कार्यपालिका को विधायिका के अधीन होना चाहिए।

जहाँ ये दोनों शक्तियाँ किसी निरंकुश राजा के हाथ में होती हैं, वहाँ नागरिक सरकार नहीं होती, क्योंकि उसके और उसकी प्रजा के बीच कोई अधिकार संपन्न साझा न्यायाधीश नहीं होता।

मुक्त समाज में जो विभिन्न प्रकार के कॉमनवेल्थ होते हैं, वे लोकतंत्र, कुलीनतंत्र, अथवा निर्वाचित राजतंत्र का मिला-जुला स्वरूप होते हैं।

———————— : * : ————————

Downloaded from www.PDFshala.com

क्रांति का अधिकार

"जब सरकार संविदा में निर्धारित अपनी भूमिका—व्यक्तिगत अधिकारों की सुरक्षा—निभाना छोड़ दे, तो ऐसी स्थिति में क्रांति औचित्यपूर्ण है।"

—रूसो

समानता*

किसी को भी इतना अमीर नहीं होना चाहिए कि वह किसी दूसरे को खरीद सके और किसी को भी इतना गरीब नहीं होना चाहिए कि वह खुद को बेचने को मजबूर हो जाए। अधिक असमानता से जुल्म का मार्ग प्रशस्त होता है।

—————— : * : ——————

संपत्ति और नागरिक समाज

वह पहला व्यक्ति, जिसने जमीन के एक टुकड़े को घेरकर यह कहने का सोचा कि 'यह मेरा है', और लोग इतने भोले निकले कि उन्होंने इसे मान लिया, वही व्यक्ति नागरिक समाज का वास्तविक संस्थापक था।

यदि किसी ने इस छल को उजागर कर घोषणा कर दी होती कि जमीन किसी की नहीं है, इसके फल पर सबका अधिकार है, तो मानव समाज न जाने कितने युद्ध, अपराध और वीभत्सताओं से बच जाता।

** यह और अन्य उद्धरण रूसो के सोशल कॉण्ट्रैक्ट से हैं।*

—————— : * : ——————

Downloaded from www.PDFshala.com

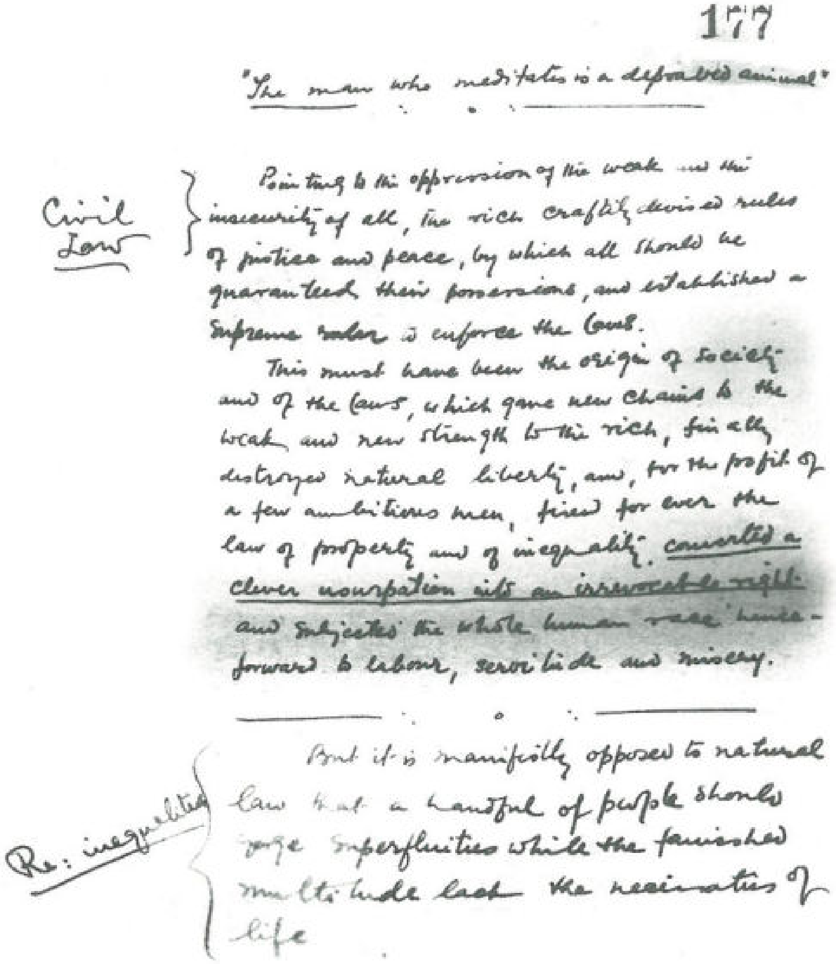
177

"The man who meditates is a depraved animal"

Civil Law

Pointing to the oppression of the weak and the insecurity of all, the rich craftily devised rules of justice and peace, by which all should be guaranteed their possessions, and established a supreme ruler to enforce the laws.

This must have been the origin of society and of the laws, which gave new chains to the weak and new strength to the rich, finally destroyed natural liberty, and, for the profit of a few ambitious men, fixed for ever the law of property and of inequality, converted a clever usurpation into an irrevocable right and subjected the whole human race henceforward to labour, servitude and misery.

Re: inequalities

But it is manifestly opposed to natural law that a handful of people should gorge superfluities while the famished multitude lack the necessities of life.

"वह व्यक्ति जो चिंतन करता है, एक दुष्ट जीव है।"

सिविल कानून

कमजोरों के दमन और सब की असुरक्षा की बात कर अमीरों ने चालाकी से न्याय और शांति के नियम बना लिये, जिनके द्वारा सभी लोगों को संपत्ति की गारंटी दी जानी चाहिए। इन कानूनों को लागू करने के लिए उन्होंने एक सर्वोच्च शासक को स्थापित कर दिया।

समाज और कानून की उत्पत्ति निश्चय ही इसी प्रकार हुई होगी, जिसने कमजोरों को नई जंजीरों से बाँध दिया और अमीरों को नई ताकत मिल गई। इससे अंततः प्राकृतिक स्वतंत्रता नष्ट हो गई और कुछ नए महत्त्वाकांक्षी लोगों के फायदे के लिए संपत्ति का अधिकार और समानता सदा के लिए निर्धारित हो गई। फलस्वरूप, चालाकी से किया गया अवैध अधिग्रहण, एक चालाकी भरी लूट को एक अटल अधिकार में तब्दील कर दिया । इसने पूरी मानव जाति को मजदूर और गुलाम बनाकर उनकी दुर्दशा कर दी।

——————— : * : ———————

संदर्भ : असमानताएँ

Downloaded from www.PDFshala.com

परंतु यह स्पष्ट रूप से प्राकृतिक नियम के विरुद्ध है कि कुछ मुट्ठी भर लोगों के पास सभी चीजें इफरात में हों और जनसाधारण के पास जीवन के लिए जरूरी चीजें भी न हों।

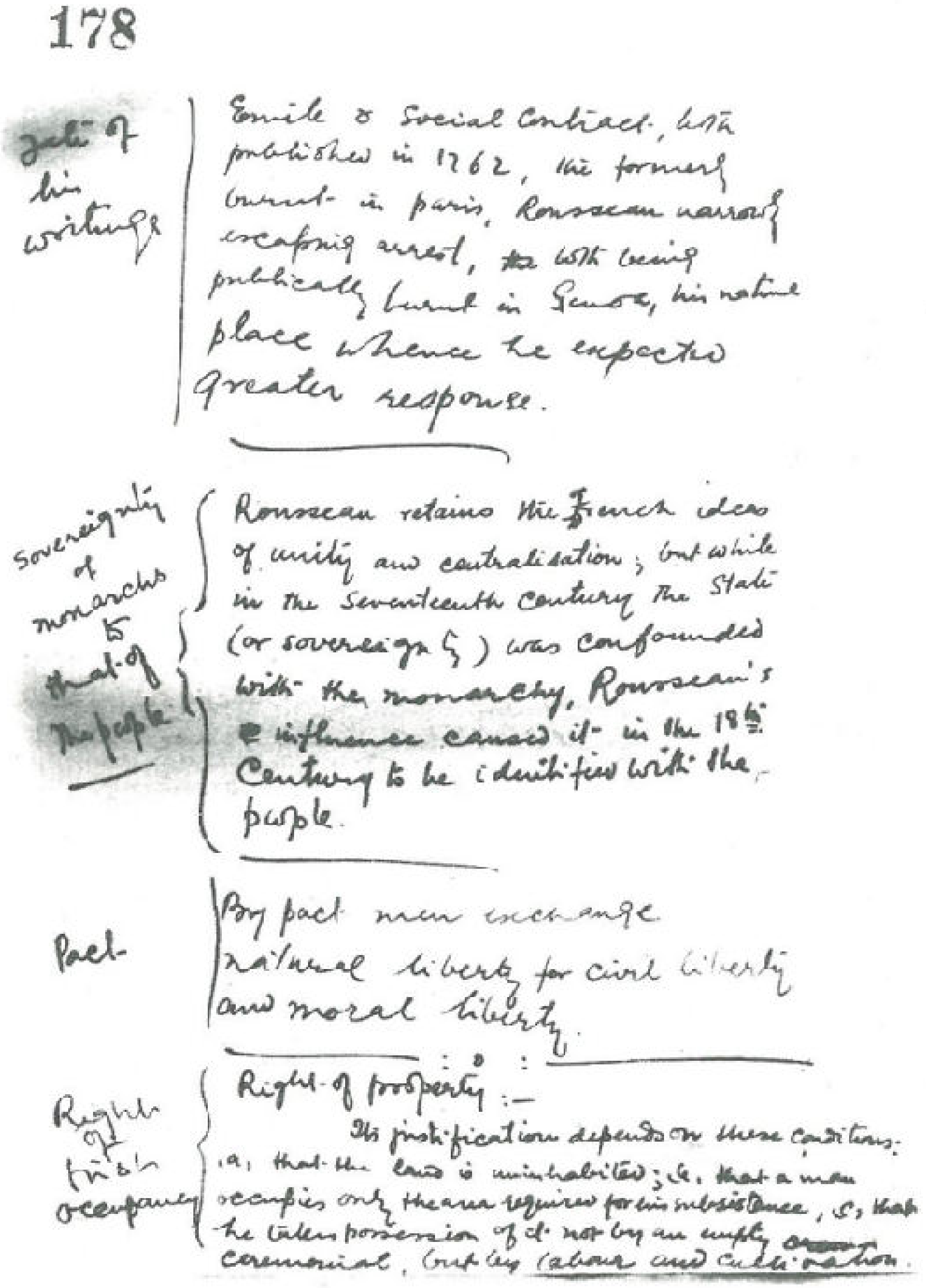
178

Fate of his writings — Emile & Social Contract, both published in 1762, the former burnt in Paris, Rousseau narrowly escaping arrest, the both being publically burnt in Geneva, his native place whence he expected greater response.

Sovereignty of monarchs to that of the people — Rousseau retains the French ideas of unity and centralisation; but while in the seventeenth century the State (or sovereignty) was confounded with the monarchy, Rousseau's influence caused it in the 18th century to be identified with the people.

Pact — By pact men exchange natural liberty for civil liberty and moral liberty.

: o :

Right of first occupancy — Right of property:—
Its justification depends on these conditions: (a) that the land is uninhabited; (b) that a man occupies only the area required for his subsistence, (c) that he takes possession of it not by an empty ceremonial, but by labour and cultivation.

Downloaded from www.PDFshala.com

उनके लेखन की नियति

ईमाइल और सोशल कॉण्ट्रैक्ट, दोनों का प्रकाशन 1762 में हुआ। पहली पुस्तक को पेरिस में जलाया गया। रूसो बड़ी मुश्किल से गिरफ्तारी से बचा। इसके बाद दोनों पुस्तकों को जेनेवा में जलाया गया। यह उसका गृहनगर था और वहाँ से उसे भारी समर्थन मिलने की उम्मीद थी।

शासक की प्रभुसत्ता से लोगों की प्रभुसत्ता तक रूसो ने एकता और केंद्रीयकरण के फ्रांसीसी विचार को कायम रखा; लेकिन सत्रहवीं शताब्दी में राज्य का (अथवा प्रभुसत्ता) राजतंत्र के साथ घालमेल हो गया। रूसो के प्रभाव से 18वीं शताब्दी में यह प्रभुसत्ता लोगों की मानी जाने लगी।*

समझौता

समझौते के जरिए मनुष्य ने नागरिक स्वतंत्रता और नैतिक स्वतंत्रता के बदले प्राकृतिक स्वतंत्रता दे दी।

——————————— : * : ——————————

प्रथम स्वामित्व का अधिकार

इसका औचित्य इन स्थितियों पर निर्भर करता है—(अ) यह कि भूमि पर कोई रहता न हो; (ब) यह कि किसी व्यक्ति ने उतनी ही जमीन पर अधिकार किया हो, जितनी उसके गुजारे के लिए जरूरी है; कि वह इस पर महज खोखली औपचारिकता के जरिए नहीं, बल्कि मेहनत और खेती-बाड़ी करने के नाते दखल रखता है। (स) यह कि वह इसका आधिपत्य किसी खोखले दस्तूर से नहीं, बल्कि परिश्रम और उस पर खेती कर के ले।

Downloaded from www.PDFshala.com

Religion :— { Rousseau places even religion under the tyranny of the sovereign.

Introductory Note.——

I wish to enquire whether, taking men as they are and laws as they can be made, it is possible to establish some just and certain rule of administration in civil affairs....

.. I shall be asked whether I am a prince or a legislator that I write on politics. I reply that I am not. If I were one, I should not waste time in saying what ought to be done, I should do it or remain silent

—— : o : ——

Man is born free, and everywhere he is in chains. : o : ——

Shaking off the yoke of slavery by force!

I should say that so long as a people is compelled to obey and does obey, it does well; but that, so soon as it can shake off the yoke and does shake it off, it does better; for, if men recover their freedom by virtue of the same right (i.e. force) by which it was taken away, either they are justified in resuming it, or there was no justification for depriving them of it.

Downloaded from www.PDFshala.com

धर्म

रूसो धर्म तक को सोवरिन के अत्याचार के अंतर्गत रखता है।*

परिचयात्मक टिप्पणी

मैं यह जानना चाहता हूँ कि लोग जैसे हैं, उन्हें वैसा ही स्वीकार कर और कानून जैसे बने हैं उन्हें वैसा ही मंजूर कर, क्या नागरिक मामलों में प्रशासन का कोई न्यायपूर्ण और निश्चित नियम स्थापित किया जाना संभव है।

" ... मुझसे पूछा जाएगा कि क्या मैं कोई प्रिंस अथवा लेजिस्लेटर हूँ कि राजनीति पर लिखूँ? इसका जबाव मैं 'न' में दूँगा। अगर में वो (प्रिंस या लेजिस्लेटर) होता, तो यह कहने में वक्त बरबाद नहीं करता कि क्या किया जाना चाहिए। मैं इसे कर देता या चुप रहता।

——————————: * :——————————

"मनुष्य जन्म से स्वतंत्र होता है, लेकिन हर जगह वह बेड़ियों में जकड़ा हुआ है।"

——————————: * :——————————

दासता के जुए को ताकत से उतार फेंको

मैं कहूँगा कि जब तक किसी देश के लोगों को आज्ञा मानने के लिए मजबूर किया जाता है और वे इसे मानते हैं, तो यह ठीक है, लेकिन जैसे ही वे इस जुए को ताकत से उतार कर फेंक सकने में समर्थ होते हैं और इसे उतार फेंकते हैं, तो यह उससे बेहतर है, क्योंकि यदि मनुष्य इसी अधिकार (अर्थात् ताकत) के बल पर अपनी स्वतंत्रता वापस प्राप्त करते हैं, जिस अिधकार से यह उनसे छीनी गई होती है तो या तो उनका ऐसा न्यायसंगत है या उनसे इसे छीन लिये जाने का कोई औचित्य नहीं था।

Downloaded from www.PDFshala.com

Force

"Power which is acquired by violence is only a usurpation, and lasting only so long as the force of him who commands prevails over that of those who obey; so that if the latter become the strongest in their turn, and shake off the yoke, they do so with as much right and justice as the other who had imposed it on them. The same law (of force) which has made the authority then unmakes it; it is the law of the strongest."

Diderot. Encyclopaedia "Authority."

Slaves lose everything in their bonds, even the desire to escape from them!

The Right of the strongest

"Obey the powers that be. If that means, Yield to force, the precept is good but superfluous; I reply that it will never be violated.

Right of slavery

"Do subjects, then, give up their persons on condition that their property also shall be taken? I do not see what is left for them?"

"It will be said that the despot secures to his subjects civil peace. Be it so; but what do they gain by that,

Downloaded from www.PDFshala.com

ताकत

"जो ताकत हिंसा से प्राप्त की जाती है, वह बलपूर्वक अधिग्रहण है, और यह तब तक ही चलती है, जब तक हड़पने वाले की आज्ञा मानने वाले उसकी बात मानते हैं; वे लोग फिर सबसे ताकतवर बन जाते हैं और जुए को उतार फेंकते हैं। वे यह कार्य उतने ही अधिकार और न्यायपूर्वक करते हैं, जितना कि उन पर यह लादनेवाले ने किया था। वही कानून (ताकत का), जिसने प्राधिकार को बनाया था, उसे नष्ट कर देता है। यही सबसे ताकतवर का कानून है।

—दिदरो, इनसाइक्लोपीडिया
'अथॉरिटी'

———————————————

दास लोग अपने बंधनों में सबकुछ खो देते हैं, यहाँ तक कि उनसे निकलने की इच्छा भी।

——————: * :——————

सबसे ताकतवर का अधिकार

"जो सत्ता में हो, उसकी आज्ञा मानो। अगर इसका मतलब ताकत के सामने झुकना है, तो यह उपदेश अच्छा, लेकिन फिजूल है; मेरा जवाब है कि इसका कभी उल्लंघन नहीं होगा।"

——————: * :——————

दासता का अधिकार

"तो क्या, तब जनता इस शर्त पर अपना व्यक्तिगत अधिकार छोड़ देती है कि उसकी संपत्ति भी ले ली जाएगी? मुझे दिखाई नहीं देता कि उनके लिए क्या बचा है?"

"यह कहा जाएगा कि तानाशाह अपनी प्रजा को नागरिक शांति प्रदान करता है। हो सकता है,

(शेष अगले पृष्ठ पर)

** नोट : डेनिस दिदेरो (1713-1784) प्रबोधन काल का फ्रांसीसी दार्शनिक*

Downloaded from www.PDFshala.com

if the wars which his ambition brings upon them, together with his insatiable greed and the vexations of his administration, harass them more than their own dissensions would?

To say that a man gives himself for nothing is to say what is absurd and inconceivable".

Whether addressed by a man to a man, or by a man to a nation, such a speech as this will always be equally foolish: "I make an agreement with you wholly at your expense and wholly for my benefit, and I shall observe it as long as I please, while you also shall observe it as long as I please."

——— : o : ———

Equality:

If then you wish to give stability to the State, bring the two extremes as near together as possible; tolerate neither rich nor beggars. These two conditions, naturally inseparable, are equally fatal to the general welfare; from the one class spring tyrants, from the other, the supporters of tyranny; it is always between these that the traffic in public liberty is carried on; the one buys the other sells.

——— : o : ———

Downloaded from www.PDFshala.com

लेकिन यदि उसकी महत्त्वाकांक्षाओं के कारण उन पर युद्ध थोपे जाते हों और उसके लालच का अंत न हो और उसका प्रशासन जटिल हो, उन्हें उतना परेशान करता हो, जितना कि उनकी असहमति भी नहीं करती; तो फिर इससे उन्हें क्या मिलता है?

"यह कहना कि मनुष्य बिना कुछ प्राप्त किए स्वयं को सौंप देता है, बेहूदा और अकल्पनीय बात है। इस तरह की बात व्यक्ति किसी व्यक्ति से अथवा व्यक्ति राष्ट्र से कहे तो यह उतनी ही मूर्खतापूर्ण होगी"—मैं पूरी तरह तुम्हारी कीमत पर और पूरी तरह अपने फायदे के लिए तुमसे यह समझौता करता हूँ और जब तक मैं चाहूँ, इसका पालन करूँगा और जब तक तुम चाहो, इसका पालन करोगे।

—————————— : * : ——————————

समानता

यदि तुम राज्य को स्थायित्व देना चाहते हो, तो दोनों अिथतियों को यथासंभव पास ले आओ; न अमीरों को सहन करो, न भिखारियों को। ये स्वाभाविक रूप से अभिन्न स्थितियाँ—जनकल्याण के लिए समान रूप से घातक हैं। एक वर्ग से जालिम पैदा होते हैं, तो दूसरे वर्ग से जालिमों के हिमायती; इन्हीं दोनों के बीच से लोक स्वतंत्रता का सौदा होता है। एक खरीदता है, दूसरा बेचता है।

—————————— : * : ——————————

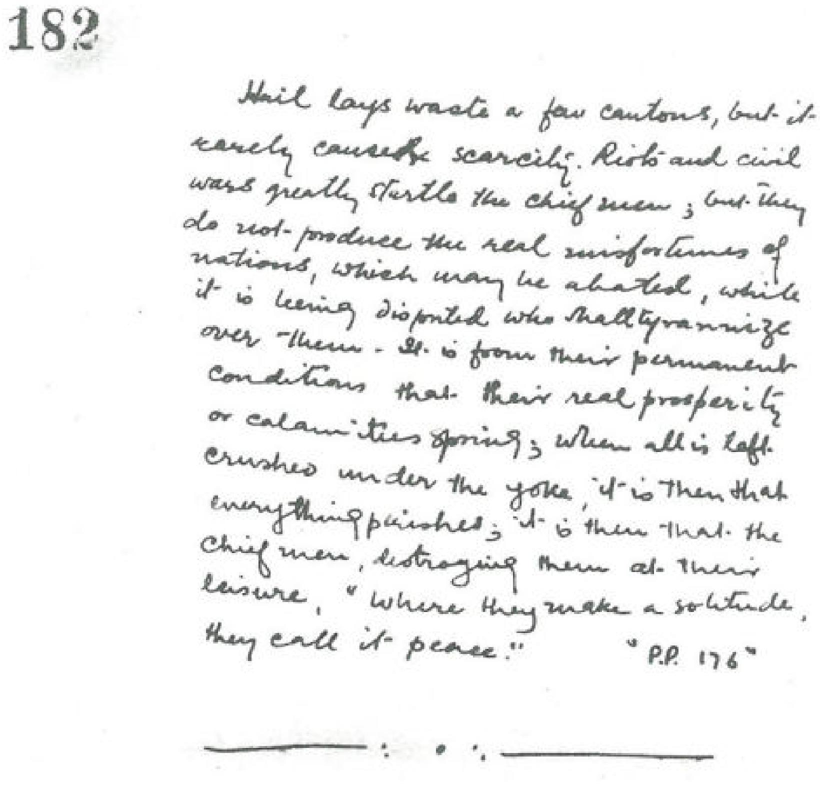
182

Hail lays waste a few cantons, but it rarely causes scarcity. Riots and civil wars greatly startle the chief men; but they do not produce the real misfortunes of nations, which may be abated, while it is being disputed who shall tyrannize over them. It is from their permanent conditions that their real prosperity or calamities spring; when all is left crushed under the yoke, it is then that everything perishes; it is then that the chief men, destroying them at their leisure, "where they make a solitude, they call it peace." "P.P. 176"

Downloaded from www.PDFshala.com

तेज बारिश से कुछ भू-खंड नष्ट हो जाते हैं, लेकिन उनकी कमी कभी नहीं होती। फसादों और गृहयुद्धों से मुखिया लोग बहुत ज्यादा चौकन्ने हो जाते हैं, लेकिन वे राष्ट्रों के लिए ऐसे वास्तविक संकट पैदा नहीं करते, जब तक इस बात को लेकर विवाद चलता रहता है कि कौन उन परनिरंकुश शासन न करे। उनकी वास्तविक समृद्धि या विपदाएँ तो उनकी स्थायी स्थितियों से पैदा होती हैं, जब सबकुछ जूते तले कुचलकर रख दिया जाता है, तभी सबकुछ नष्ट हो जाता है, तभी ये शासक इत्मीनान से सबकुछ नष्ट करने के बाद एक मुर्दा खामोशी पैदा कर देते हैं, जिसे वे 'शांति' कहते हैं।

(पृ. 176)

: * :

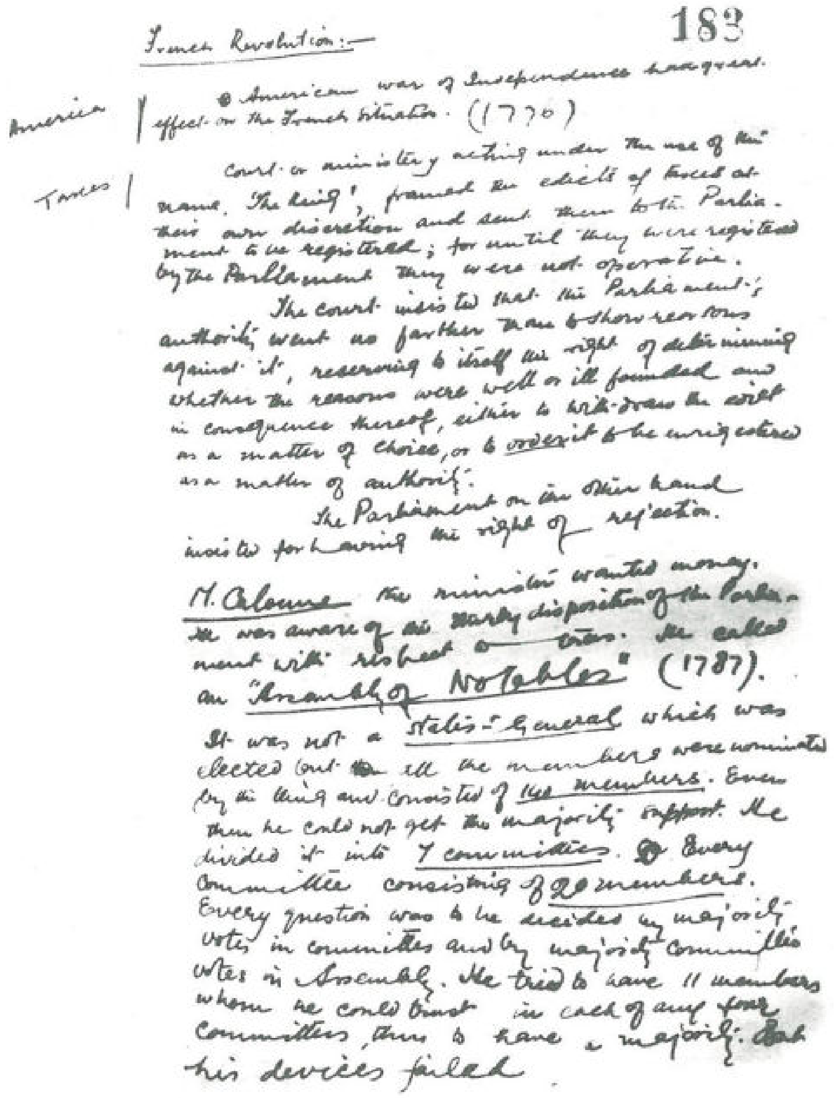
183

French Revolution:—

America | American war of Independence ... effect on the French situation. (1770)

Taxes | Court or ministry acting under the use of the name. 'The King', framed the edicts of taxes at their own discretion and sent them to the Parliament to be registered; for until they were registered by the Parliament they were not operative.

The court insisted that the Parliament's authority went no farther than to show reasons against it, reserving to itself the right of determining whether the reasons were well or ill founded and in consequence thereof, either to withdraw the edict as a matter of choice, or to order it to be ... as a matter of authority.

The Parliament on the other hand insisted for having the right of rejection.

M. Calonne the minister wanted money. He was aware of the sturdy disposition of the Parliament with respect to taxes. He called an "Assembly of Notables" (1787).

It was not a States-General which was elected but all the members were nominated by the King and consisted of 144 members. Even then he could not get the majority support. He divided it into 7 committees. Every committee consisting of 20 members. Every question was to be decided by majority votes in committee and by majority committee votes in Assembly. He tried to have 11 members whom he could trust in each of any four committees, thus to have a majority. But his devices failed.

Downloaded from www.PDFshala.com

फ्रांसीसी क्रांति और अमेरिका

अमेरिका के स्वतंत्रता संग्राम का फ्रांस की स्थितियों (1776) पर बहुत प्रभाव हुआ।

कर

'किंग' के नाम का उपयोग कर जो अदालत या मिनिस्ट्री काम कर रही थी, उसने अपनी मनमर्जी से करों के फरमान बनाकर पंजीयन के लिए पार्लियामेंट को भेज दिए, क्योंकि पार्लियामेंट में पंजीकृत हुए बिना वे लागू नहीं हो सकते थे। अदालत ने आग्रह किया कि पार्लियामेंट का प्राधिकार इसके विरुद्ध तर्क न दे। इस प्रकार उसने इस बात को तय करने का अधिकार अपने पास सुरक्षित कर लिया कि तर्क सही है या गलत। फलस्वरूप, फरमान को इच्छा से या अधिकार के साथ वापस लेने अथवा अपंजीकृत करने का अधिकार उसके पास रहा।

इसके विपरीत, पार्लियामेंट निरस्त करने के अधिकार पर अड़ी रही।

मंत्री, एम. केलोने को पैसा चाहिए था। उसे करों के मामले में पार्लियामेंट के अड़ियल रवैए का पता था। उसने 'असेंबली ऑफ नोटेबल्स' बुलाई (1787)। स्टेट्स-जनरल का निर्वाचन नहीं हुआ था, बल्कि सभी सदस्य किंग द्वारा नामांकित थे, जिनकी संख्या 141 थी। इसके बावजूद उसे बहुमत का समर्थन नहीं मिल सका। उसने इसे 7 कमेटियों में विभाजित कर दिया। प्रत्येक कमेटी में 20 सदस्य थे। कमेटियों में हर प्रश्न पर फैसला बहुमत वोटों से और असेंबली में यह बहुमत कमेटी वोटों से होता था। उसने ऐसे 11 सदस्यों का समर्थन प्राप्त करने की कोशिश की, जिन पर वह प्रत्येक अथवा/किन्हीं चार कमेटियों में विश्वास कर सकता हो, और इस प्रकार उसे बहुमत प्राप्त हो जाए, लेकिन उसकी युक्तियाँ नाकाम हो गईं।

Downloaded from www.PDFshala.com

M. de Lafayette was vice president of a second committee. He charged ~~[illegible]~~ M. Calonne for having sold crown land to the amount of two millions of livres. He gave it in writing too. Sometimes afterwards M. Calonne was dismissed.

The Archbishop of Tolouse was appointed the Prime Minister and Finance Minister. He placed before the Parliament two Taxes —— Stamp Tax and a sort of land-tax. The Parliament returned for answer,

'that with such a revenue as the nation then supported the name of taxes ought not to be mentioned but for the purpose of reducing them.'

and threw both the edicts out. Then they were ordered to Versailles, where the king held 'a Bed of Justice' and enregistered those edicts. Parliament returned to Paris. Held a session there. Ordered the enregistration to be struck off. Declaring everything done at Versailles to be illegal. All were served with 'letter de cachets' and exiled. And afterwards they were recalled. Again the same edicts were placed before them.

Downloaded from www.PDFshala.com

एम. दे लाफायते सेकेंड कमेटी का वाइस प्रेसीडेंट था। उसने एम. केलोने पर दो मिलियन जिंदगियों की कीमत पर क्राउन लैंड को बेचने का आरोप लगाया। उसने यह लिखित में भी दिया। कुछ समय पश्चात् एम. केलोने को बर्खास्त कर दिया गया।

टोलाउस के आर्चबिशप को प्राइम मिनिस्टर और फायनेंस मिनिस्टर नियुक्त किया गया। उसने पार्लियामेंट के समक्ष दो टैक्स—स्टैंप टैक्स और एक प्रकार का लैंड टैक्स प्रस्तुत किए। पार्लियामेंट उत्तर के लिए लौट आई।

यह एक ऐसा रेवेन्यू था, जिसको उस समय राष्ट्र का समर्थन प्राप्त था। कम करने के उद्देश्य के अलावा टैक्सों के नाम उिल्लखित नहीं किए जाने चाहिए, ऐसा कहकर दोनों फरमान निरस्त कर दिए गए। इसके बाद उन्हें वर्सेलेस भेजने का आदेश दिया गया, जहाँ किंग ने इसे 'गलत न्याय' माना और उन फरमानों को पंजीकृत कर दिया। पार्लियामेंट वापस पेरिस आ गई। वहाँ इसका एक सत्र हुआ। पंजीकरण को समाप्त करने का आदेश दिया गया और यह घोषित किया गया कि वर्सेलेस में की गई हर चीज अवैधानिक है। सभी को 'लेटर डी केचेट्स ऐंड एक्जाइल्ड' दिए गए।

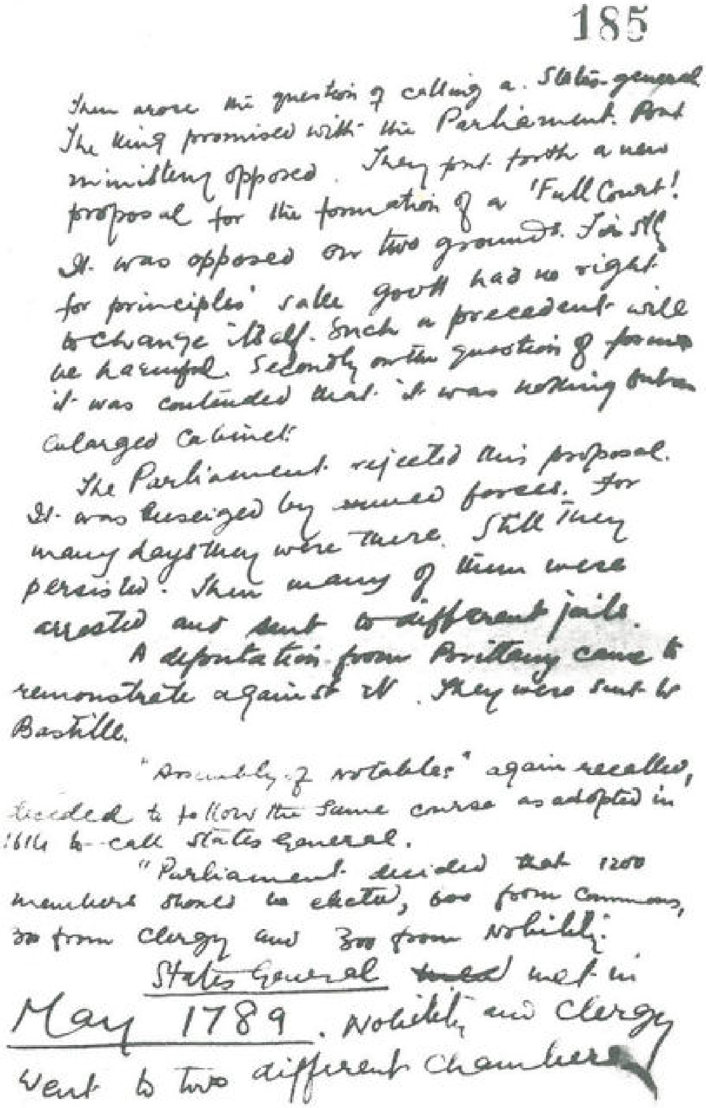

185

Then arose the question of calling a States-general. The King promised with the Parliament. But ministry opposed. They put forth a new proposal for the formation of a 'Full Court'. It was opposed on two grounds. Firstly for principles' sake govt had no right to change itself. Such a precedent will be harmful. Secondly on the question of forms it was contended that it was nothing but an enlarged Cabinet.

The Parliament rejected this proposal. It was besieged by armed forces. For many days they were there. Still they persisted. Then many of them were arrested and sent to different jails.

A deputation from Brittany came to remonstrate against it. They were sent to Bastille.

"Assembly of notables" again recalled, decided to follow the same course as adopted in 1614 to call States General.

"Parliament decided that 1200 members should be elected, 600 from Commons, 300 from Clergy and 300 from Nobility.

States General ~~met~~ met in May 1789. Nobility and Clergy went to two different Chambers.

Downloaded from www.PDFshala.com

इसके बाद उन्हें वापस ले लिया गया। इन्हीं फरमानों को पुन: उनके समक्ष रखा गया। इसके बाद स्टेट्स जनरल बुलाने का प्रश्न उठा। किंग ने पार्लियामेंट को वचन दिया, लेकिन मिनिस्ट्री ने इसका विरोध किया। उन्होंने एक 'फुल कोर्ट' के गठन का नया प्रस्ताव प्रस्तुत किया। इसका दो आधारों पर विरोध किया गया— प्रथम, सिद्धांतों की खातिर सरकार को स्वयं को बदलने का अधिकार नहीं है। इस तरह की नजीर नुकसानदेह होगी। दूसरा आधार यह था कि स्वरूप के प्रश्न पर यह कहा गया कि यह विस्तारित कैबिनेट के सिवा कुछ नहीं है। पार्लियामेंट ने इस प्रस्ताव को ठुकरा दिया। उसे सशस्त्र बलों ने घेर लिया। कई दिन तक वे वहीं रहीं। फिर भी वे जिद पर अड़े रहे। तब उनमें से अनेक को गिरफ्तार कर विभिन्न जेलों में भेज दिया गया। ब्रिटेन से एक शिष्टमंडल इसका विरोध करने आया। उन्हें बेस्टाइल भेज दिया गया।

पुन: बुलाई गई 'असेंबली ऑफ नोटेबल्स' ने वही रास्ता अपनाने का निर्णय लिया, जो 1614 में अपनाया गया था। उसने स्टेट्स जनरल बुलाई।

'पार्लियामेंट ने फैसला किया कि 1,200 सदस्यों का निर्वाचन किया जाना चाहिए, जिनमें 600 जनसामान्य से हों, 300 पादरियों से और 300 अभिजात वर्ग से।"

स्टेट्स जनरल की बैठक मई 1789 में हुई। अभिजात और पादरी दो अलग-अलग चैंबरों में गए।

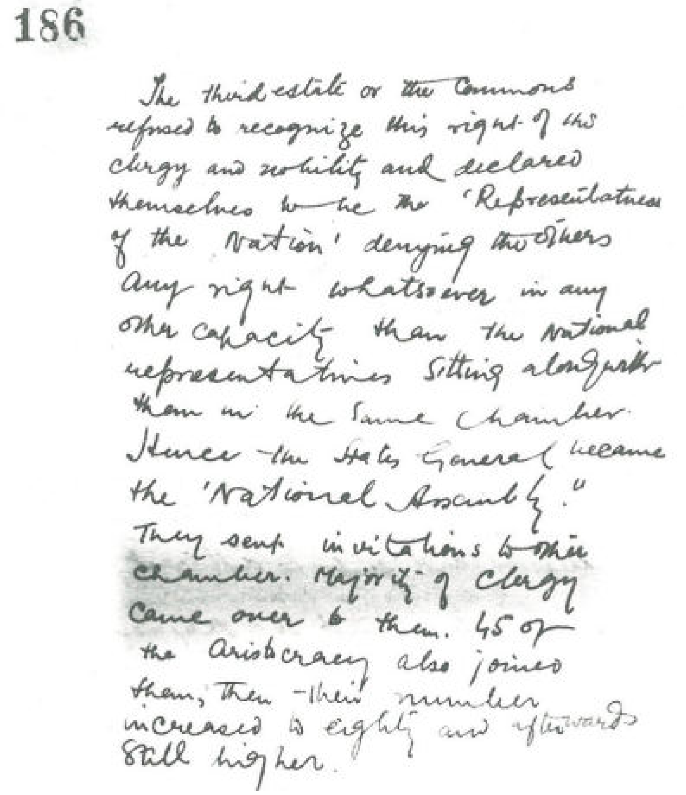
186

The third estate or the Commons
refused to recognize this right of the
clergy and nobility and declared
themselves to be the 'Representatives
of the Nation' denying the others
any right whatsoever in any
other capacity than the National
representatives sitting along with
them in the same chamber.
Hence the States General became
the 'National Assembly.'
They sent invitations to other
chamber. Majority of clergy
came over to them. 45 of
the Aristocracy also joined
them, then their number
increased to eighty and afterwards
still higher.

थर्ड स्टेट अथवा कॉमंस ने पादरियों और अभिजात वर्ग के इन अधिकारों को मानने से इनकार कर दिया और स्वयं को 'राष्ट्र का प्रतिनिधि' घोषित कर दिया। उन्होंने अन्य लोगों को एक ही चैंबर में उनके साथ राष्ट्रीय प्रतिनिधि के रूप में बैठने के अलावा किसी भी अन्य अधिकार से वंचित कर दिया। इस प्रकार स्टेट्स जनरल नेशनल असेंबली बन गई। उन्होंने अन्य चैंबर को आमंत्रण भेजे। अधिकतर पादरी उनके पास आए; 45 अभिजात वर्ग के लोग उनसे जुड़ गए। बाद में उनकी संख्या बढ़कर 80 और फिर इससे भी ज्यादा हो गई।

Downloaded from www.PDFshala.com

Tennis court oath —

The malcontents of nobility and clergy wanted to overthrow the National Assembly. The conspired with ministry. The doors of the chamber was shut in the face of the Representatives of the Nation and were guarded by militia. They then proceeded to a tennis court in a body and took an oath never to seperate until they had established a constitution.

Bastille :—

The next day the chamber was again thrown open to them. But secretly thirty thousand troops were mobilised to beseige Paris. The unarmed Parisian Mob attacked Bastille; and Bastille was taken. 14th July 1789

Versailles :—

5th Oct 1789 thousands of men and women proceeded towards Versailles to demand satisfaction from "Garde du Corps" for their insolent behaviour in connection with national cockade. It is known as Versailles expedition. As a result of further developments the king was brought to Paris.

Downloaded from www.PDFshala.com

टेनिस कोर्ट शपथ

अभिजात और पादरी वर्ग के असंतुष्ट लोग नेशनल असेंबली का तख्ता पलट करना चाहते थे। उन्होंने मिनिस्ट्री के साथ मिलकर षड्यंत्र किया। रिप्रज़ेंटेटिव्ज ऑफ नेशन के लिए चैंबर के दरवाजे बंद कर दिए गए। फिर वे एकजुट होकर टेनिस कोर्ट की ओर गए और उन्होंने शपथ ली कि वे एक राष्ट्रीय संविधान की स्थापना तक अलग नहीं होंगे।

बेस्टिले

अगले दिन चैंबर उनके लिए फिर खोल दिया गया परंतु 3,000 सैनिकों को पेरिस की घेराबंदी के लिए लामबंद किया गया। निशस्त्र पेरिस की भीड़ ने बेस्टिले पर हमला कर उस पर कब्जा कर लिया। (**14 जुलाई, 1789)**

वर्सेल्स

(**5 अक्तूबर, 1789)**

हजारों महिलाएँ और पुरुष नेशनल कॉकेड के मामले में गर्दे ड्यु कॉप्स के अभद्र व्यवहार के लिए उससे क्षमा माँगने का आग्रह करने वर्सेल्स की ओर बढ़े। इसे 'वर्सेल्स अभियान' कहा जाता है। इसके बाद हुए घटनाक्रम के बाद किंग को पेरिस लाया गया।

Downloaded from www.PDFshala.com

The wisdom of every country when properly exerted, is sufficient for all its purposes.

(PP. 112 / Ro Man)

"That the form of a government was a matter wholly at the will of a nation at all times, that if it chose a monarchical form, it had a right to have it so; and if it afterwards chose to be a Republican, it had a right to be a republic; and to say to a king, "We have no longer any occasion for you."

House of Lords. Minister Earl of Shelburne.

Downloaded from www.PDFshala.com

प्रत्येक देश की समझ का जब सही ढंग से उपयोग किया जाता है, तो इसके सभी उद्देश्यों को पूरा करने के लिए यह पर्याप्त होता है।

—आर.एस. ऑफ मैन *(पृ. 112)*

——————— : ✻ : ——————————

सरकार का स्वरूप कैसा हो, यह हमेशा राष्ट्र द्वारा तय किया जाता है। यदि यह राजतंत्र का चुनाव करता है, तो उसे ऐसा करने का अधिकार है और बाद में अगर यह रिपब्लिकन होना चाहे, तो उसे रिपब्लिकन होने का अधिकार है और राजा से कह दिया जाए, "हमारे पास तुम्हें देने को कोई अवसर नहीं है।"

—हाउस ऑफ लॉर्ड्स, मिनिस्टर अर्ल ऑफ शेलबर्न

———————————— : * : ————————————

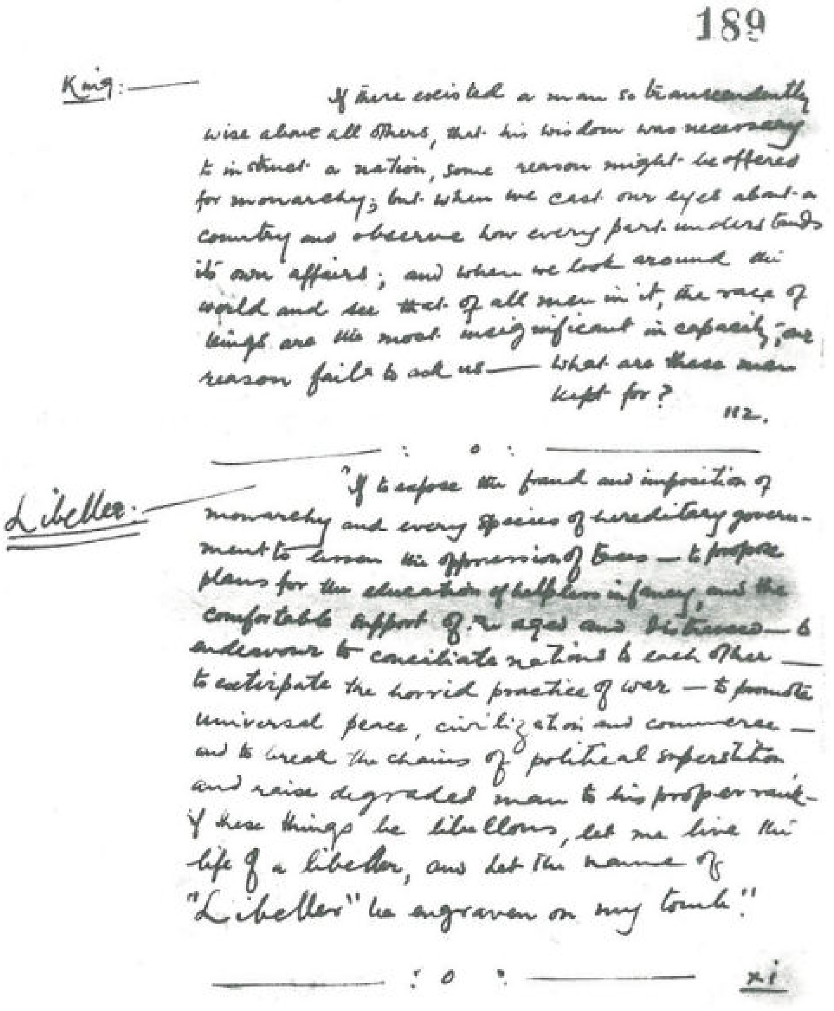

189

King:— If there existed a man so transcendently wise above all others, that his wisdom was necessary to instruct a nation, some reason might be offered for monarchy; but when we cast our eyes about a country and observe how every part understands its own affairs; and when we look around the world and see that of all men in it, the race of kings are the most insignificant in capacity, our reason fails to ask us — What are these men kept for?

112.

———— : o : ————

Libeller:— "If to expose the fraud and imposition of monarchy and every species of hereditary government to lessen the oppression of taxes — to propose plans for the education of helpless infancy, and the comfortable support of the aged and distressed — to endeavour to conciliate nations to each other — to extirpate the horrid practice of war — to promote universal peace, civilization and commerce — and to break the chains of political superstition and raise degraded man to his proper rank — If these things be libellous, let me live the life of a libeller, and let the name of "Libeller" be engraven on my tomb!"

———— : o : ———— xi

Downloaded from www.PDFshala.com

किंग

यदि कोई ऐसा व्यक्ति हो, जो बाकी सभी लोगों से बहुत ज्यादा समझदार हो, तो यह जरूरी है कि उसकी समझ से राष्ट्र को निर्देश मिले, राजतंत्र को कुछ ज्ञान प्राप्त हो; लेकिन जब हम किसी देश पर नजर डालते हैं, तो देखते हैं कि किस तरह हर एक व्यक्ति और वर्ग अपने ही मामलों को समझता है; और जब हम दुनिया पर नजर डालते हैं, तो सभी लोग देखते हैं कि राजाओं की नस्ल अपनी क्षमता में सबसे महत्त्वहीन है। हमारा विवेक यह नहीं पूछता कि ये लोग किसलिए रखे गए हैं?

——————— : * : ———————

लिबलर

“राजशाही तथा हर प्रकार की वंशानुगत सरकार द्वारा और हर प्रकार की वंशानुगत सरकारों की धोखेबाजी को उजागर करना, उनके द्वारा थोपे जानेवाले करों को कम करने को कहना और उनके द्वारा किए जानेवाले दमन को कम करने का प्रयास करना—असहाय बच्चों के लिए शिक्षा की योजना प्रस्तावित करने और वृद्ध तथा पीड़ित लोगों की सहायता के लिए योजना तैयार करना—राष्ट्रों को एक-दूसरे से सहमत करने का प्रयास करना—युद्ध की भयंकर परंपरा को समाप्त करना, विश्व में शांति, सभ्यता और व्यापार लाना—राजनीति अंधविश्वास की जंजीरें तोड़ना और दबे-कुचले व्यक्ति को ऊपर उठाना, यदि ये चीजें अवमानना है, तो फिर मुझे लिबलर का जीवन जीने दो, और मेरी कब्र पर ‘लिबलर’ (अपमानकर्ता) नाम खुदवाया जाए।”

——————— : * : ———————

Downloaded from www.PDFshala.com

But when principle and not place, is the energetic cause of action, a man, I find, is everywhere the same.

: o :

Death :—

If we were immortal we should all be miserable; no doubt it is hard to die, but it is sweet to think that we shall not live for ever. [pp. 45. Emile]

: o :

Socialistic Order

"From each according to his ability, to each according to his need."

: o :

Audacity is the ~~soul~~ soul of success in Revolution.

"Action, Action: Power first discussion afterwards," said Danton!

: o :

Downloaded from www.PDFshala.com

लेकि न जब स्थान नहीं बल्कि सिद्धांत कर्म को ऊर्जस्वित करनेवाला कारण बन जाता है तो मैं देखता हूँ कि आदमी हर जगह एक ही जैसा हो जाता है।

———————— : ✻ : ————————

मौत

अगर हम अमर होते, तो हमारी जिंदगी दु:खदायी होती। बेशक मरना कठिन है, लेकिन यह सोचकर अच्छा लगता है कि हम हमेशा जीवित नहीं रहेंगे।

———————— : ✻ : ————————

सामाजिक व्यवस्था

"प्रत्येक से उसकी योग्यता के अनुसार काम लिया जाए और प्रत्येक को उसकी जरूरत के अनुसार दिया जाए।"

———————— : ✻ : ————————

क्रांति में दु:साहस ही सफलता का मूलमंत्र है।

———————— : ✻ : ————————

दांतो की काररवाई। पहले ताकत, चर्चा बाद में, डेन्टन ने कहा।

———————— : * : ————————

नोट : जॉर्ज जाक दांतो (1769-1794) फ्रांसीसी क्रांतिकारी, प्रखर वक्ता और फ्रांसीसी क्रांति के सबसे रैडिकल नेताओं में से एक। राजशाही की, जो बाद में क्रांतिकारी आतंक कायम करने का साधन बन गई।

Downloaded from www.PDFshala.com

Russian Experiment:
1917-27

1. Face and mind of Bolshevism. by René Fülöp-Miller
2. Russia by [illegible]-O'Hara
3. Russian Revolution by Lancelot Lawton (Macmillan)
4. Bolshevist Russia by Anton Karlgren.
5. Literature and Revolution (Trotsky)
6. Marx-Lenin & Science of Revo: by Anton Karlgren

"The philosophy of the Bolshevists is utterly, aggressively materialistic, whose one redeeming feature even their bitterest enemies will have to recognise viz. the utter absence of any illusion.

They hold firmly to the faith of their founder that 'Everything can be explained by natural laws or in a narrower sense, by Physiology'." P30

Philosophers, said Marx, 'have merely interpreted the world in many ways; the really important thing is to change it."

Downloaded from www.PDFshala.com

रूसी प्रयोग

1917-27

1. फेस ऐंड माइंड ऑफ वोल्शेविज्म

लेखक—रेने फुलोप-मिलर

2. रशिया

लेखक—माकीव-ओर हारा

3. रशियन रिवोल्यूशन

लेखक—लेंसेलोट लाउटन (मेकमिलियन)

4. बोल्शेविक रशिया

लेखक—एंटन कार्लग्रीन

5. लिटरेचर ऐंड रिवॉल्यूशन

लेखक—ट्राट्स्की

6. मार्क्स—लेनिन ऐंड साइंस ऑफ रिवॉल्यूशन

लेखक—एंटन कार्लग्रीन

"बोल्शेविकों का दर्शन अत्यधिक आक्रामक रूप से भौतिकवादी है, जिसमें एक बात ऐसी है कि जिसे सबसे कटु विरोधी भी स्वीकार करेंगे। वह है, इसमें भ्रम का नितांत अभाव।" (मुक्तिदायी विशेषता)

उन्हें अपने संस्थापक की इस बात में पक्का भरोसा है कि "प्रत्येक चीज की व्याख्या प्राकृतिक नियमों अथवा एक संकीर्ण अर्थ में, शरीर-क्रिया विज्ञान (Physiology) द्वारा की जा सकती है!"

मार्क्स ने कहा, "दर्शनशास्त्रियों ने विश्व की सिर्फ बहुत तरह से व्याख्या की है। असली महत्त्वपूर्ण बात है—उसे बदलना।"

Downloaded from www.PDFshala.com

Religion and Socialism:—

"Religion is an opium for mankind" said Marx.

"All idealistic considerations lead in the end to a kind of conception of Divinity, and are, therefore pure non-sense in the eyes of Marxists. Even Hegel saw in God the concrete form of everything good and reasonable that rules the world; the idealist theory must put everything on the shoulders of this unfortunate grey beard, who, according to the teachings of his worshippers, is perfect, and who in addition to Adam, created fleas and harlots, murderers and lepers, hunger and misery, plague and vodka, in order to punish the sinners whom he himself had created, and who sin in accordance with his will. . . . From the scientific standpoint this theory leads to absurdity. The only scientific explanation of all the phenomenon of the world is supplied by absolute materialism. [(P. 32.) Bukharin]

According to them,

In the beginning Nature; from it life; and from life, thought and all the manifestation we call mental or moral phenomena. There is no such thing as Soul, and Mind is nothing but a function of matter, organized in a particular way. . 33.

Downloaded from www.PDFshala.com

धर्म और समाजवाद

मार्क्स ने कहा, "धर्म मानव जाति के लिए अफीम है।"

"सभी आदर्शवादी (भाववादी) विचार अंत में एक प्रकार की दिव्यता की अवधारणा की ओर ले जाते हैं। लिहाजा वे मार्क्स की नजर में कोरी बकवास हैं। यहाँ तक कि हीगल ने ईश्वर में हर अच्छी और चीज का ठोस रूप देखा जो दुनिया को शासित करती है; आदर्शवादी सिद्धांत को उसकी पकी हुई अभागी दाढ़ी (अर्थात् ईश्वर-स.) के कंधे पर रख देना चाहिए, जो उसके पुजारियों की सीरत के अनुसार परिपूर्ण है, और जिसने आदम के अलावा और कातिलों और वेश्याओं, कोढ़ियों, भूख और कंजूसी, प्लेग और वोडवा को इसलिए बनाया कि वह उन पापियों को दंडित कर सके, जिन्हें उसने स्वयं बनाया था, और जो उसकी इच्छा के अनुरूप पाप करते हैं—वैज्ञानिक दृष्टि से यह सिद्धांत बेतुका है। विश्व की सभी चीजों की एकमात्र वैज्ञानिक व्याख्या निरपेक्ष भौतिकवाद द्वारा की गई है।

——————————— : * : ———————————

उनके अनुसार, प्रारंभ में प्रकृति ने अपने जीवन से, जीवन से विचार और फिर उससे सभी स्वरूप निर्मित किए, जिन्हें हम मानसिक अथवा प्राकृतिक परिघटना कहते हैं। आत्मा जैसी कोई चीज है ही नहीं और मन: चेतना पदार्थ की एक खास ढंग से संगठित एक क्रिया के अलावा और कुछ नहीं है।

Downloaded from www.PDFshala.com

Marx on Insurrection:—

Firstly. "never play with insurrection if there is no determination to drive it to the bitter end (literally—to face all the consequences of this play). An insurrection is an equation with very indefinite magnitudes, the value of which may change every day. The forces to be opposed have all the advantages of organization, discipline and traditional authority.
If the rebels cannot bring great forces to bear against their antagonists, they will be smashed and destroyed.

Secondly:— The insurrection once started, it is necessary to act with the utmost determination and pass over to the offensive. The defensive is the death of every armed rising; it perishes before it has measured forces with the enemy. The antagonist must be surprised while their soldiers are still scattered, and new successes, however small, must be attained daily. The moral ascendancy given by the first success, must be kept up. One must rally to the side of insurrection the vacillating elements, which always follow the stronger, and which always look out for the safer side. .. In one word, act according to the words of Danton — the greatest master of Revolutionary policy yet known.—
'Audacity — audacity and yet again audacity.'

Downloaded from www.PDFshala.com

क्रांति के विषय में मार्क्स के विचार

पहली बात, यदि क्रांति को उसके अंतिम परिणाम (अर्थात् इस खेल के सभी परिणामों) तक ले जाने का संकल्प न हो तो यह खेल कभी मत खेलो। क्रांति का समीकरण और आकार बहुत अनिश्चित होता है, जिसका मूल्य रोजाना बदल जाता है। जिन ताकतों का विरोध करना होता है, उनके पास संगठन की ताकत के साथ अनुशासन और पारंपरिक अख्तियार होता है। परंपरागत सत्ता की सारी अनुकूल स्थितियाँ होती हैं।

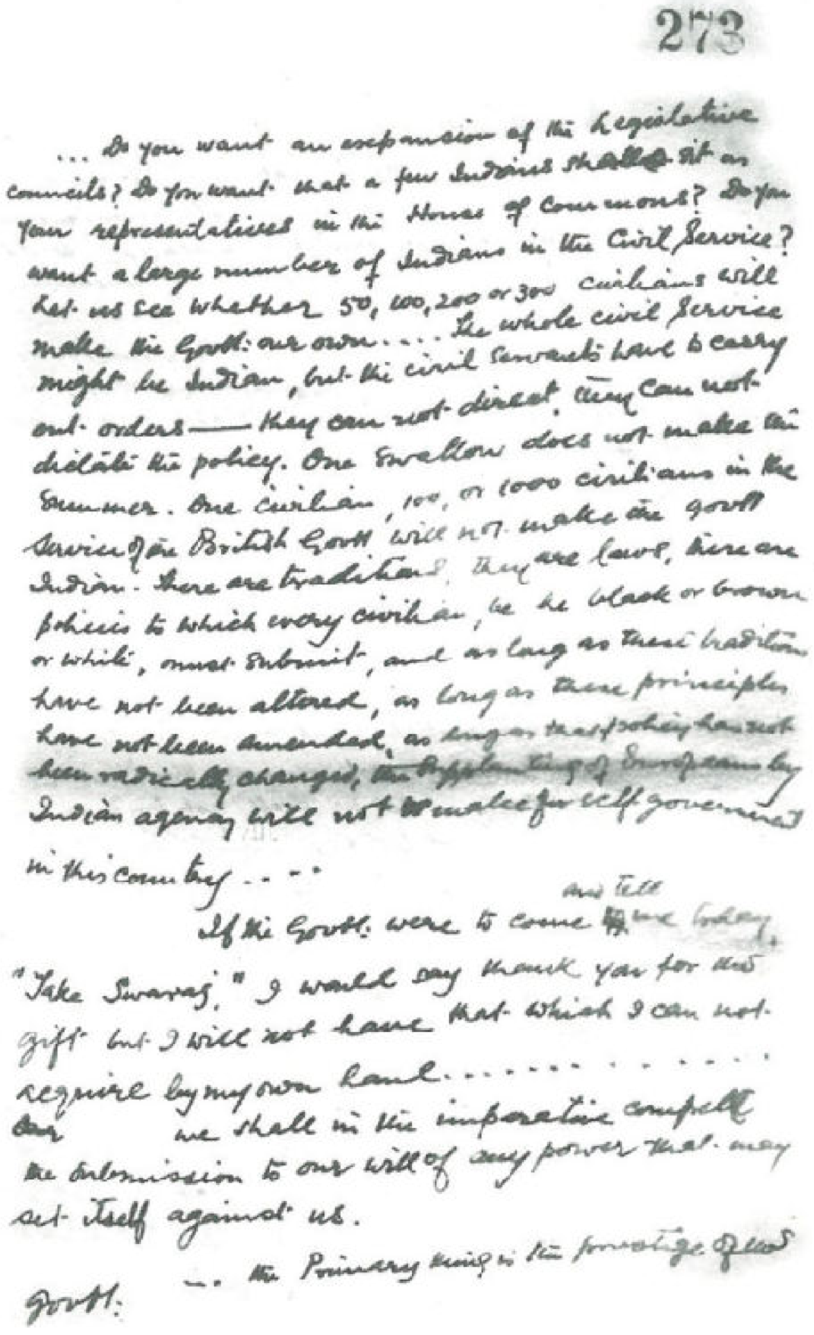
273

... Do you want an expansion of the Legislative councils? Do you want that a few Indians shall sit as your representatives in the House of Commons? Do you want a large number of Indians in the Civil Service? Let us see whether 50, 100, 200 or 300 civilians will make the Govt: our own.... The whole civil Service might be Indian, but the civil servants have to carry out orders — they can not direct, they can not dictate the policy. One swallow does not make the summer. One civilian, 100, or 1000 civilians in the Service of the British Govt. will not make the govt. Indian. There are traditions, they are laws, there are policies to which every civilian, be he black or brown or white, must submit, and as long as these traditions have not been altered, as long as these principles have not been amended, as long as that policy has not been radically changed, the supplanting of Europeans by Indian agency will not make for self government in this country . . .

If the Govt. were to come and tell me today, "Take Swaraj," I would say thank you for the gift but I will not have that which I can not acquire by my own hand. . . . .

. . . we shall in the imperative compel the submission to our will of any power that may set itself against us.

... the Primary thing is the prestige of the Govt:

Downloaded from www.PDFshala.com

अगर क्रांतिकारी अपने विरोधी के सामने बड़ी ताकत खड़ी नहीं कर सकते, तो वे मिट जाएँगे और कुचल दिए जाएँगे।

दूसरी बात, क्रांति एक बार शुरू हो जाने पर यह जरूरी है कि पूरे संकल्प के साथ काम कर हमले का मुँहतोड़ जवाब दिया जाए। बचाव करने से हर एक सशस्त्र विद्रोह की मौत हो जाती है। दुश्मन से पूरी तरह लोहा लेने से पहले ही यह खत्म हो जाती है। दुश्मन को उस वक्त चौंकाया जाए, जब उसके सैनिक बिखरे हुए हों, और रोजाना नई कामयाबियाँ, चाहे कितनी भी छोटी हों, हासिल की जानी चाहिए। पहली कामयाबी से जो हौसला बढ़ा है, उसे बरकरार रखा जाना चाहिए। डाँवाँडोल तत्त्वों को आम बगावत के पक्ष में लामबंद करना जरूरी है, जो हमेशा ही ताकतवर के पीछे हो लेते हैं, और हमेशा अधिक सुरक्षित पक्ष तलाशते रहते हैं। एक शब्द में डेंटन के कहे अनुसार काररवाई करो, जो क्रांतिकारी नीति का सबसे बड़ा गुरु है। उसका एक ही मंत्र है —दु:साहस ··· दु:साहस ··· और फिर दु:साहस!

** नोटबुक में अगली लिखावट पृ. सं. 273 पर है। पृ. 272 तक सादे हैं। पीछे कभी ऐसे ही सादे पृष्ठ या अंतराल आए हैं। हो सकता है कि भगतसिंह ने अपनी 404 पृष्ठों की नोटबुक में अपने अध्ययन के विभिन्न विषयों के अनुसार अलग-अलग हिस्से निर्धारित किए हों। यहाँ खत्म हुए हिस्से में पृ. 165 से 193 तक उनके नोट्स राज्य के विज्ञान पर स्वतंत्रता और संप्रभुत्ता की अवधारणाओं और उनके विकास पर तथा उसकी निरंतरता में फ्रांसीसी क्रांति और सोवियत पर केंद्रित रहे। अगले हिस्से में विभिन्न विविध विषयों पर उनकी टिप्पणियाँ और पुस्तकों के अवतरण दर्ज हैं, लेकिन इन सबसे एक सामान्य सूत्र यह है कि ज्यादातर तत्कालीन भारतीय स्थितियों और अन्य संबंधित मुद्दों के बारे में हैं। अगर समय या अवसर मिलता तो इनका विकास कैसा होता, यह सोचना अद्भुत है।*

** पेज 194 से 272 तक खाली पेज हैं।*

··· क्या तुम लेजिस्लेटिव काउंसिलों का विस्तार चाहते हो? क्या तुम चाहते हो कि कुछ भारतीय हाउस ऑफ कॉमंस में तुम्हारे प्रतिनिधि बनकर बैठें? क्या तुम सिविल सर्विसेज में बहुत अधिक संख्या में भारतीयों की उपस्थिति चाहते हो? आइए, देखें कि क्या 50, 100, 200 या 300 सिविलियन सरकार को हमारी अपनी बना देंगे—पूरी सिविल सर्विस भारतीय होनी चाहिए, लेकिन सिविल सर्वेंट्स को आदेशों का पालन करना होता है—वे आदेश नहीं दे सकते, वे नीति नहीं बना सकते। एक अबाबील से ग्रीष्म नहीं आती। ब्रिटिश सरकार की सेवा में एक सिविलियन, 100 अथवा 1000 सिविलियन सरकार को भारतीय नहीं बना सकते। परंपराएँ हैं, कानून हैं, नीतियाँ हैं, जिनका पालन प्रत्येक सिविलियन को करना पड़ता है, चाहे वह काला हो या गोरा; और जब तक ये परंपराएँ नहीं बदल जातीं, जब तक ये सिद्धांत नहीं बदल जाते, जब तक यह नीति आमूल रूप से नहीं बदल जाती, सिर्फ यूरोपियनों की जगह भारतीयों को बैठा देने से इस देश में स्वराज नहीं आ सकता।

अगर आज सरकार मेरे पास आकर कहे कि "स्वराज ले लो", तो मैं कहूँगा कि इस तोहफे के लिए शुक्रिया, लेकिन मैं उस चीज को कबूल नहीं करूँगा, जो मैंने अपने बल पर हासिल न की हो।

कोई भी सत्ता जो हमारे विरुद्ध जाती है, उसे हम बरबस अपनी मर्जी के आगे झुकने के लिए बुनियादी चीज सरकार की गरिमा है।

··· मुख्य चीज है सरकार की प्रतिष्ठा।

Downloaded from www.PDFshala.com

Is really self government within the Empire a practicable ideal? What would it mean? It would mean either no real self-government for us or no real over lordship for England. Would we be satisfied with the shadow of self-government? If not, would England be satisfied with the shadow of over lordship? In either case England would not be satisfied with a shadowy overlordship, and we refuse to be satisfied with a shadowy self-government. And therefore no ~~self-government~~ compromise is possible under such conditions between self-govt. in India and the overlordship of England. If self-govt. — (real) is conceded to us, what would be England's position not only in India, but in British Empire itself? Self-govt. means the right of self-taxation; it means the right of self-control; it means the right of the people to impose protective and prohibitive tariffs on foreign imports. The moment we have the right of self-taxation, what shall we do? We shall not try to be engaged in this uphill work of industrial boycott. But we shall do what every nation has done. Under the circumstances in which we live now we shall impose a heavy prohibitive protective tariff upon every inch of textile fabric from Manchester, upon every blade of knife that comes from Leeds. We shall refuse to grant admittance to a British soul into our territory. We would not allow British Capital to be engaged in the development of Indian resources, as it is now engaged. We would not ~~allow~~ grant any right to the British capitalists to dig up

Downloaded from www.PDFshala.com

क्या एंपायर के भीतर स्वराज सचमुच एक व्यावहारिक विचार है? इसका क्या मतलब होगा? यह न तो हमारे लिए वास्तविक स्वराज होगा और न इंग्लैंड में बैठे हमारे आकाओं के लिए। क्या हम स्वराज की छाया से संतुष्ट हो जाएँगे? यदि नहीं, तो क्या इंग्लैंड अपने स्वामित्व की छाया से संतुष्ट हो जाएगा? दोनों ही मामलों में इंग्लैंड स्वामित्व की छाया से संतुष्ट नहीं होगा। हम स्वराज की छाया से संतुष्ट होने से इनकार करते हैं। लिहाजा, भारत में स्वराज और इंग्लैंड के स्वामित्व के बीच की स्थिति में कोई समझौता मुमकिन नहीं है। यदि हमें स्वराज (वास्तविक) दे दिया जाए तो इंग्लैंड की न केवल भारत बल्कि संपूर्ण ब्रिटिश एंपायर में क्या स्थिति होगी? स्वराज का मतलब है—स्व-कराधान का अधिकार, स्व-नियंत्रण का अधिकार। इसका मतलब है—विदेशी आयात पर लोगों को रक्षात्मक और प्रतिबंधात्मक टैरिफ लगाने का अधिकार। हमें स्व-कराधान का अधिकार मिल जाए, तो हम क्या करेंगे? हम औद्योगिक बहिष्कार के इस कठिन काम के पचड़े में पड़ने की कोशिश नहीं करेंगे। लेकिन हम वो करेंगे, जो हर एक राष्ट्र ने किया है। जिन परिस्थितियों में हम रह रहे हैं, उनमें हम मैनचेस्टर से आनेवाले कपड़े के हर एक इंच पर, लीड्स से आनेवाले चाकू के प्रत्येक ब्लेड पर एक भारी-भरकम, प्रतिबंधात्मक, रक्षात्मक टैरिफ लगा देंगे। हम अपने क्षेत्र में किसी भी अंग्रेज को प्रवेश की अनुमति नहीं देंगे। हम भारतीय संसाधनों के विकास में ब्रिटिश पूँजी नहीं लगने देंगे, जो कि आज लगी है। हम ब्रिटिश पूँजीपतियों को खनिज संपदा का खनन कर अपने टापुओं में ले जाने का अधिकार नहीं देंगे। हमें विदेशी पूँजी की जरूरत होगी, लेकिन हम संपूर्ण विश्व के खुले बाजारों में विदेशी ऋण के लिए आवेदन करेंगे,

(शेष अगले पृष्ठ पर)

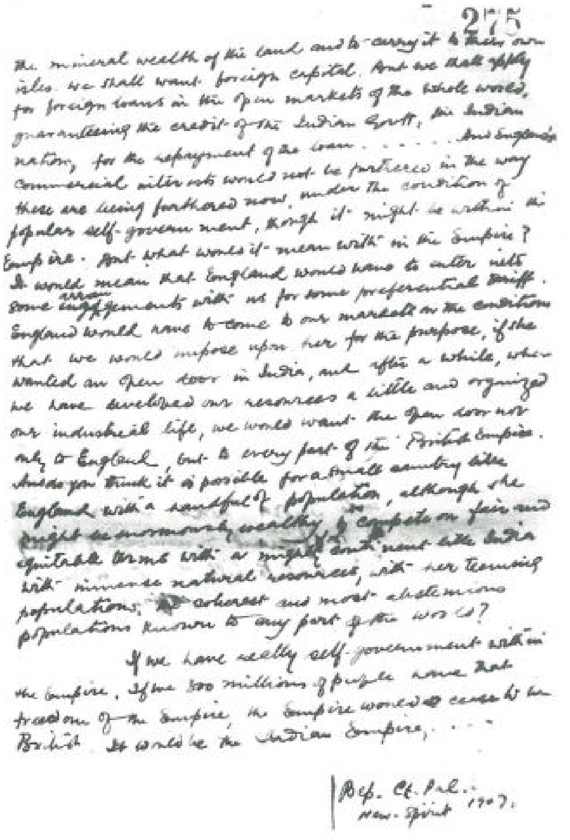
275

the mineral wealth of the land and to carry it to their own isles. We shall want foreign capital. And we shall apply for foreign loans in the open markets of the whole world, guaranteeing the credit of the Indian Govt., the Indian nation, for the repayment of the loan. . . . . . And England's commercial interests would not be furthered in the way these are being furthered now, under the condition of popular self-government, though it might be within the Empire. And what would it mean within the Empire? It would mean that England would have to enter into some arrangements with us for some preferential tariff. England would have to come to our markets on the conditions that we would impose upon her for the purpose, if she wanted an open door in India, and after a while, when we have developed our resources a little and organized our industrial life, we would want the open door not only to England, but to every part of the British Empire. And do you think it is possible for a small country like England with a handful of population, although she might be enormously wealthy, to compete on fair and equitable terms with a mighty continent like India with immense natural resources, with her teeming populations, the cheapest and most abstemious populations known to any part of the world?

If we have really self-government within the Empire, if the 300 millions of people have that freedom of the Empire, the Empire would cease to be British. It would be the Indian Empire. . . .

Bep. Ch. Pal.
New Spirit 1907.

Downloaded from www.PDFshala.com

जिसकी अदायगी के लिए भारत सरकार, भारतीय राष्ट्र की गारंटी होगी। लोकप्रिय स्वराज में इंग्लैंड के आर्थिक हितों का उस तरह संरक्षण नहीं होगा, जैसा कि अभी हो रहा है, भले ही यह एंपायर के भीतर ही क्यों न हो। परंतु एंपायर के भीतर इसका क्या मतलब होगा? इसका मतलब होगा कि कुछ वरीयता प्राप्त टेरिफ के लिए हमारे साथ कुछ समझौते। इंग्लैंड को हमारे बाजारों में उन शर्तों पर आना होगा, जो हम उस पर आरोपित करेंगे। यदि वह भारत में खुला दरवाजा चाहेगा और कुछ समय पश्चात्, जब हम अपने कुछ संसाधन बढ़ा लेंगे और अपने औद्योगिक जीवन को संगठित कर लेंगे, तब हम अपना दरवाजा सिर्फ इंग्लैंड के लिए ही क्यों, बल्कि संपूर्ण ब्रिटिश एंपायर के प्रत्येक अंग के लिए खुला रखेंगे। और क्या तुम यह समझते हो कि इंग्लैंड जैसे मुट्ठी भर आबादी वाले छोटे से देश, भले ही वह बहुत धनवान हो, के लिए भारत जैसे असीम प्राकृतिक संपदा वाले देश के साथ ईमानदारी और बराबरी से मुकाबला करना संभव होगा, जहाँ की आबादी बहुत ज्यादा है? यहाँ के लोग दुनिया के किसी भी भाग के लोगों की तुलना में सबसे ज्यादा सीधे-सच्चे और संयमी हैं।

यदि एंपायर के भीतर, वास्तविक रूप से हमारा स्वराज हो, यदि 30 करोड़ लोगों को एंपायर में वह आजादी मिल जाए, तो एंपायर ब्रिटिश नहीं रह जाएगा। यह भारतीय एंपायर हो जाएगा।

—बि.चं. पाल

न्यू स्पिरिट, 1907

** नोट : बिपिनचंद्र पाल (1858-1932) स्वाधीनता संग्राम के दौरान बंगाल में एवं अन्यत्र स्वदेशी एवं विदेशी वस्तुओं के बहिष्कार आंदोलन के प्रमुख नेता। बाल गंगाधर तिलक, लाला लाजपत राय और बिपिन चंद्र पाल, यानी 'लाल-बाल-पाल' की तिकड़ी ने कांग्रेस में गरम दल का नेतृत्व किया।*

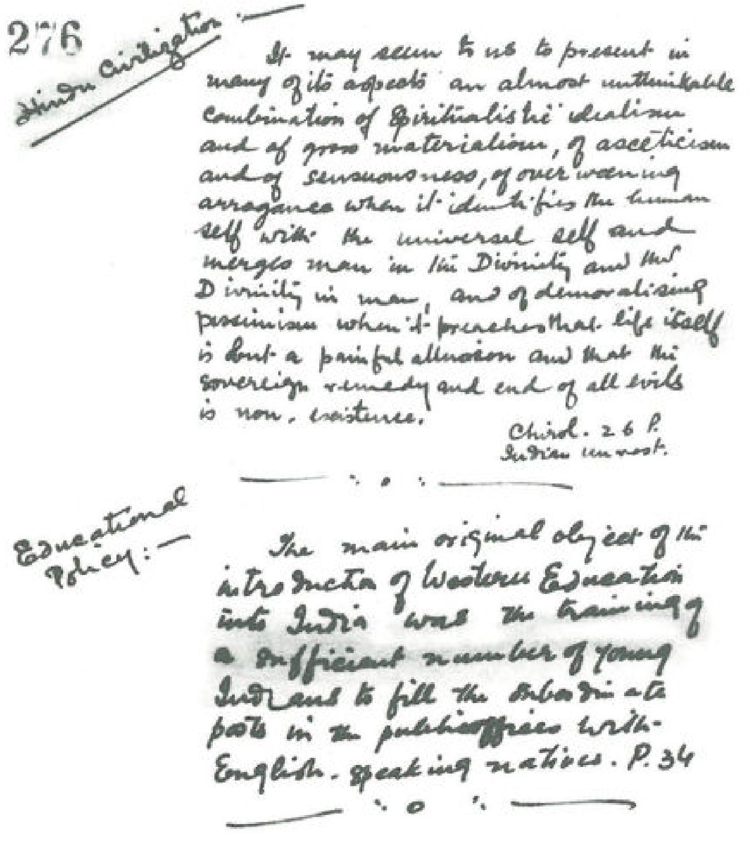
276

Hindu civilization :—

It may seem to us to present in many of its aspects an almost unthinkable combination of spiritualistic idealism and of gross materialism, of asceticism and of sensuousness, of over weening arrogance when it identifies the human self with the universal self and merges man in the Divinity and the Divinity in man, and of demoralising pessimism when it preaches that life itself is but a painful allusion and that the sovereign remedy and end of all evils is non-existence.

Chirol. 26 P.
Indian unrest.

Educational Policy :—

The main original object of the introduction of Western Education into India was the training of a sufficient number of young Indians to fill the subordinate posts in the public offices with English-speaking natives. P. 34

Downloaded from www.PDFshala.com

हिंदू सभ्यता

हमें ऐसा लग सकता है कि अपने कई पक्षों की दृष्टि से यह एक ऐसा लगभग अकल्पनीय सा समुच्चय है, जिसमें एक तरफ आदृश्यात्मिक भाववाद है, तो दूसरी तरफ स्थूल भौतिकवाद भी है, एक तरफ इंद्रियनिग्रह तो दूसरी तरफ इंद्रिय लिप्तता भी है, एक तरफ यहा मानवीय आत्मा को वैश्विक आत्मा के साथ एकाकार करने का दर्प भरा दावा करती है तथा मनुष्य की दैवीयता में और दैवीयता को मनुष्य में समाहित करती है, तो दूसरी तरफ वह हताश कर देने वाला निराशावाद भी है, जिसके तहत वह उपदेश देती है कि जीवन अपने आप में दु:खदायी प्रतीति के अलावा और कुछ नहीं है और इससे मुक्ति का एवं सभी बुराइयों के अंत का एकमात्र उपाय अस्तित्वहीन हो जाने में ही है।

शिरोल, पृ. 26
इंडियन अनरेस्ट

—————————— : ✻ : ——————————

शिक्षा नीति

भारत में पश्चिमी शिक्षा लाने का मुख्य मूल उद्देश्य यह था कि अंग्रेजी बोलने वाले पर्याप्त संख्या में देशी युवा लोग तैयार किए जाएँ, जो सरकारी दफ्तरों में मातहत के रूप में काम कर सकें।

** नोट : सर वैलेंटाइन शिरोल (1858-1929) एक मशहूर ब्रिटिश पत्रकार, जिसने भारत का 17 बार दौरा किया, उसने भारत में संबंधित दो प्रमुख पुस्तकें लिखीं—'इंडियन अनरेस्ट' और 'इंडिया : ओल्ड ऐंड न्यू'।*

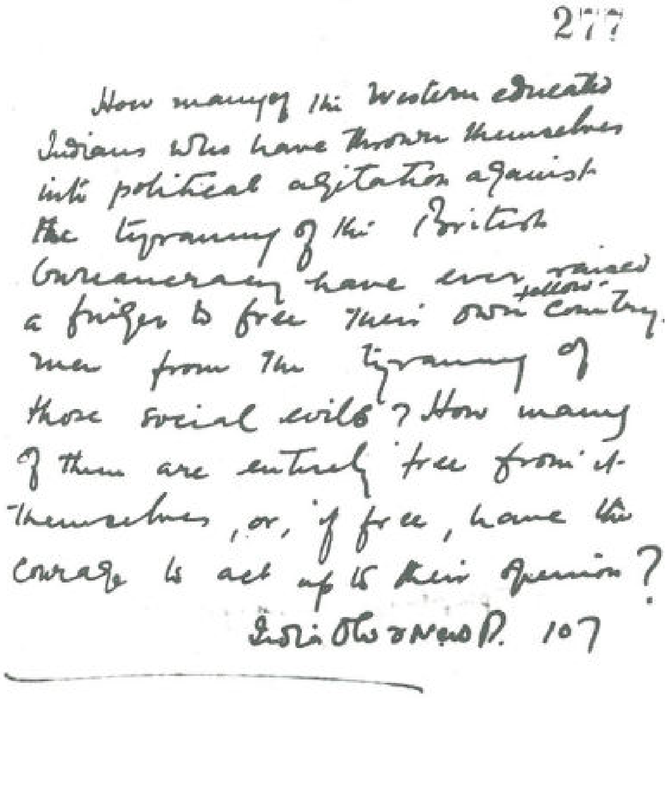
277
How many of the Western educated
Indians who have thrown themselves
into political agitation against
the tyranny of the British
bureaucracy have ever raised
a finger to free their own fellow-country
men from the tyranny of
those social evils? How many
of them are entirely free from it
themselves, or, if free, have the
courage to act up to their opinion?
India Old & New P. 107

Downloaded from www.PDFshala.com

ऐसे कितने पश्चिमी शिक्षा प्राप्त भारतीय हैं, जिन्होंने ब्रिटिश नौकरशाही के जुल्मों के खिलाफ राजनीतिक आंदोलन में भाग लिया हो और उन सामाजिक बुराइयों से अपने देशवासियों को मुक्त करने के लिए उँगली भी उठाई हो? उनमें से कितने लोग स्वयं इससे मुक्त हैं? अथवा, यदि मुक्त हैं तो क्या उनमें अपने अभिमत के अनुसार कार्य करने की हिम्मत है?

—इंडियन ओल्ड ऐंड न्यू *(पृ. 107)*

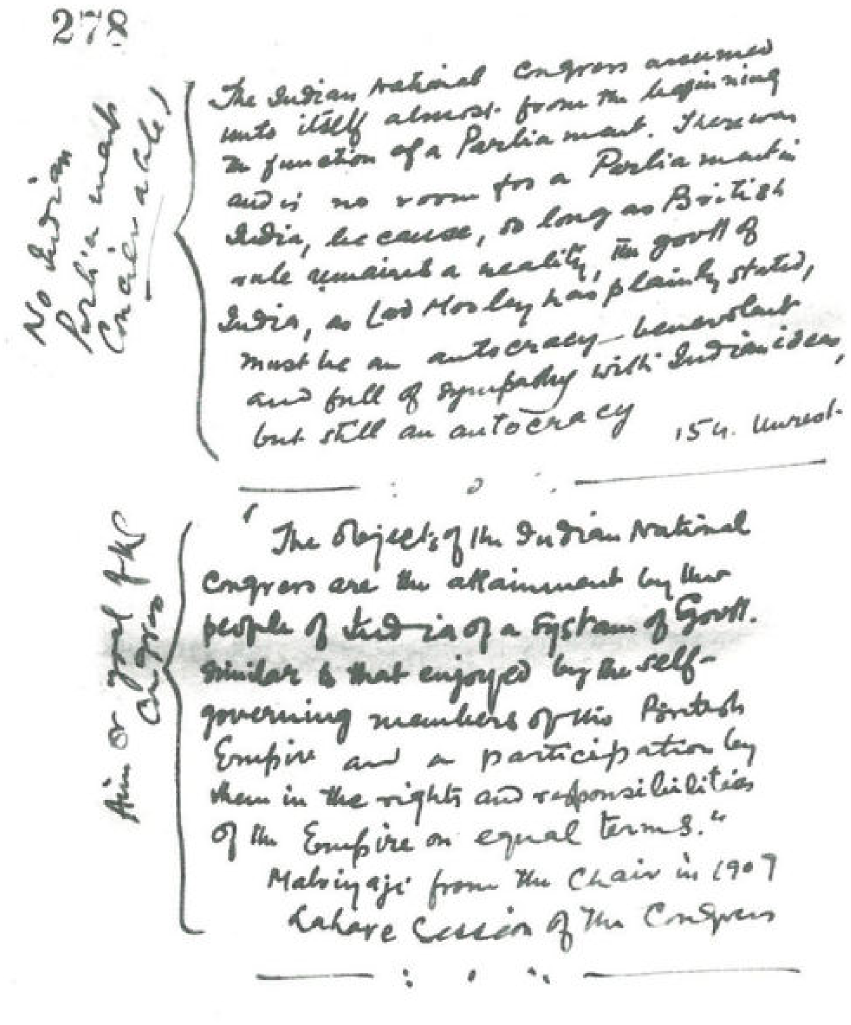
278

No Indian Parliament [illegible]

The Indian National Congress assumed unto itself almost from the beginning the function of a Parliament. There was and is no room for a Parliament in British India, because, so long as British rule remains a reality, the govt of India, as Lord Morley has plainly stated, must be an autocracy — benevolent and full of sympathy with Indian ideas, but still an autocracy 154. Unrest.

Aim or goal of the Congress

'The Objects of the Indian National Congress are the attainment by the people of India of a system of Govt. similar to that enjoyed by the self-governing members of the British Empire and a participation by them in the rights and responsibilities of the Empire on equal terms.'
Malviyaji from the Chair in 1909 Lahore Session of the Congress

Downloaded from www.PDFshala.com

किसी भारतीय संसद् की कल्पना नहीं

इंडियन नेशनल कांग्रेस ने प्राय: शुरू से ही संसद् का दायित्व अपने ऊपर मान लिया। भारत में संसद् के लिए न कोई गुंजाइश थी और न है, क्योंकि जब तक ब्रिटिश शासन एक हकीकत है, तब तक, जैसा कि लॉर्ड मोसली ने स्पष्ट कहा, भारत सरकार तानाशाही-परोपकारी रहेगी और भारतीय विचारों के साथ यह सहानुभूति से भरी रहेगी, लेकिन फिर भी यह स्वेच्छाचारी ही होगी।

—154, अनरेस्ट

——————————: * :——————————

कांग्रेस का लक्ष्य अथवा उद्देश्य

इंडियन नेशनल कांग्रेस का उद्देश्य है—भारत के लोगों द्वारा शासन की ऐसी व्यवस्था हासिल करना, जो ब्रिटिश एंपायर के स्वराज सदस्यों को प्राप्त है और जिसमें एंपायर के अधिकारों तथा दायित्वों में उनकी बराबरी की सहभागिता हो।

—अध्यक्षता करते हुए मालवीयजी
कांग्रेस का लाहौर सत्र, 1909

Downloaded from www.PDFshala.com

Re: Constitution of Free India

No one but the voice of the Mother herself will and can determine when once She comes to herself and stands free what constitution shall be adopted by Her for the guidance of Her life after the revolution is over .... Without going into detail we may mention this much, that whether the head of the Imperial Govt of the Indian nation be a President or a King depends upon how the revolution develops itself. ... The Mother must be free, must be one and united, must make her will supreme. Then it may be that She gives out this Her will either wearing a kingly crown on her head or a Republican mantle round her Sacred form.

Forget not, O Princes! that a strict account will be asked of your doings and non-doings, and a people newly born will not fail to pay in the coin you paid. Every one who shall have actively betrayed the trust of the people, disowned his fathers, and debased his blood by arraying himself against the Mother — he shall be crushed to dust and ashes .. Do you doubt our grim earnestness? If so hear the name of Dhingra and be dumb. In the name of that martyr, O Indian princes, we ask you to think solemnly and deeply upon these words. Choose as you will and you will reap what you sow. Choose whether you shall be the first of the nation's fathers or the last of nation's tyrants.

P. [illegible] Indian Harvest
"Choose O Princes"

Unconcealably: —

From the political point of view the conversion of so many millions of the population of India to the faith of their rulers would open the prospects of such [illegible] that I need not expatiate upon them.

P. 184

संदर्भ : स्वतंत्र भारत का संविधान

क्रांति संपन्न हो जाने के बाद कोई और नहीं बल्कि स्वयं माँ (भारत माँ) की आवाज ही यह निश्‍चित करेगी और कर सकती है कि आजाद होने के बाद उसके द्‍वारा अपने जीवन के मार्गदर्शन के लिए किस प्रकार का संविधान अपनाया जाए—विस्तार में जाए बिना हम इतना ही उल्लेख कर सकते हैं। इंपीरियल गवर्नमेंट ऑफ इंडियन नेशन का प्रमुख कोई राष्ट्रपति होगा अथवा राजा, यह इस बात पर निर्भर करता है कि क्रांति क्या स्वरूप लेती है—माँ को स्वतंत्र होना है, समन्वित और संगठित होना ही है, उसकी इच्छा ही सर्वोपरि होगी। उसके बाद यह हो सकता है कि वह इच्छा व्यक्त करे कि वह अपने सिर पर राजमुकुट पहनेगी अथवा अपने पवित्र शरीर पर गणतंत्र का बाना पहनेगी।

ओ राजाओ ! यह मत भूलो कि तुमने क्या किया और क्या नहीं किया, इसका सख्ती से हिसाब माँगा जाएगा, और नया जन्म लेने वाले लोग तुम्हारे साथ वही व्यवहार करने में चूक नहीं करेंगे, जो तुमने उनके साथ किया है। जिसने भी लोगों के साथ विश्‍वासघात किया है, अपने पिता को नकारा है, माँ के विरुद्‍ध जाकर अपने रक्त को कलंकित किया है—वह कुचला जाकर धूल और राख बन जाएगा—क्या हमारी सच्चाई में तुम्हें शक है? यदि हाँ, तो धींगरा का नाम सुनकर गूँगे हो जाओ। उस शहीद के नाम पर, ओ भारतीय राजाओ, हम तुमसे इस बात पर गंभीरता और गहराई से विचार करने का आग्रह करते हैं। तुमको जो अच्छा लगे, वह करो और तुम जो बोओगे, वही काटोगे। चुनाव करो कि तुम राष्ट्र के प्रथम जनक बनोगे या राष्ट्र के अंतिम अत्याचारी?

—इंडियन अर्नेस्ट
'चूज ओ' प्रिंसेज

: * :

अछूत

राजनीति दृष्‍टि से इतने लाखों भारतीयों द्‍वारा अपने शासकों का धर्म अपना लेने से ऐसे परिणामों की संभावनाएँ खुल जाएँगी कि जिसके बारे में मुझे विस्तार से बताने की जरूरत नहीं है।

(पृ. 114)

Downloaded from www.PDFshala.com

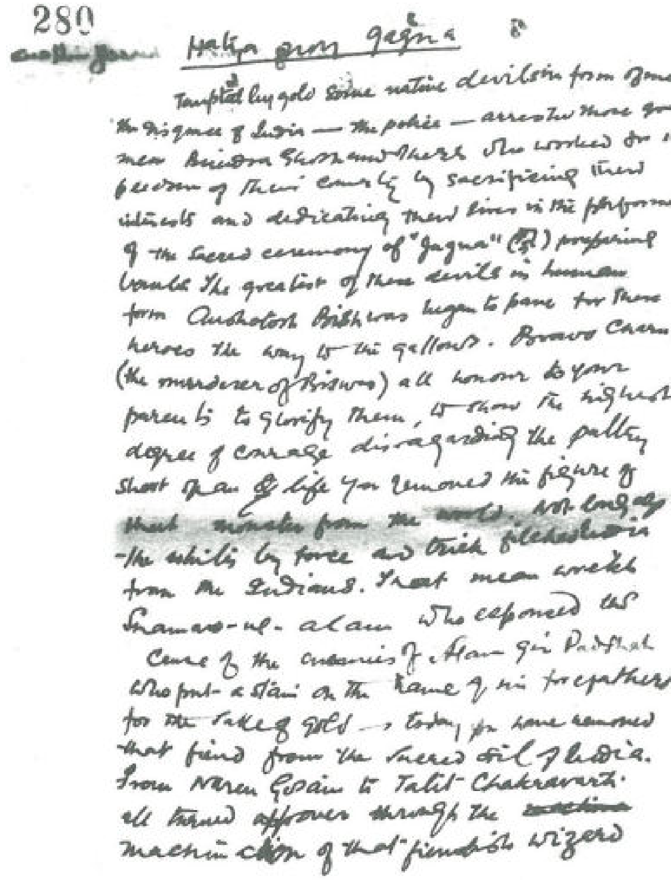

280

Hatya [illegible] Jagna

Tempted by gold some native devils in form of man the disgrace of India — the police — arrested those great men Barindra Ghose and others who worked for the freedom of their country by sacrificing their interests and dedicating their lives in the performance of the sacred ceremony of "Jagna" ([illegible]) preparing bombs. The greatest of those devils in human form Ashutosh Bishwas began to pave for those heroes the way to the gallows. Bravo Charu! (the murderer of Biswas) all honour to your parents to glorify them, to show the highest degree of courage disregarding the paltry short span of life you removed the figure of that monster from the world. Not long ago the whites by force and trick [illegible] from the Indians. That mean wretch Shams-ul-alam who espoused the cause of the [illegible] of Alamgir Padshah who put a stain on the name of his forefathers for the sake of gold — today you have removed that fiend from the sacred soil of India. From Naren Gosain to Talit Chakravarti all turned approvers through the machination of that fiendish wizard

हत्या नहीं यज्ञ

सोने के लालच में इनसान के रूप में कुछ देशी शैतान पुलिसवालों ने, जो भारत के कलंक थे, बीरेंद्र घोष और अन्य महान् लोगों को गिरफ्तार कर लिया, जो अपने देश की आजादी के लिए अपने हितों का बलिदान करते हुए बम बनाने के पवित्र यज्ञ को संपन्न करने में जीवन समर्पित किए थे। मनुष्य के रूप में सबसे बड़े शैतान और आशुतोष विश्वास ने इन नायकों का फाँसी के फंदे का रास्ता बनाना शुरू कर दिया। शाबाश चारु! (विश्वास की हत्या करनेवाला)। तुम्हारे माता-पिता की जय जयकार! वे धन्य हैं, जिन्होंने उच्चतम साहस का प्रदर्शन किया और छोटे से जीवनकाल की अवहेलना की। तुमने उस राक्षस को दुनिया से मिटा दिया। बहुत पुरानी बात नहीं है, जब गोरों ने ताकत और चालाकी से भारत को भारतीयों से हथिया लिया। उस नीच शैतान शम्स-उल-आलम को, जिसने उस आलमगीर पादशा का रास्ता अपनाया, जिसने सोने की मुद्रा पाने के लालच में पूर्वजों के नाम को कलंकित किया। आज उस दुराचारी को तुमने भारत की इस पवित्र धरती से मिटा दिया है, जो सोने का लोभी था —तुमने भारत की पवित्र भूमि से हटा दिया। नरेन गोसाईं से लेकर तलित चक्रवर्ती तक, सभी उन शैतानों की चालबाजियों के कारण सरकारी गवाह बन गए।

** नोट : (1) शम्स-अल-आलम की हत्या के तुरंत बाद निम्नलिखित अपील क्रांतिकारियों द्वारा कलकत्ते में जारी की गई—'हत्या नॉय यज्ञ' (हत्या नहीं यज्ञ)। नकद इनाम : एक यूरोपीय या दो भेदियों का सिर काटने पर 50वाँ अंक कलकत्ता, रविवार, चैत्र अष्टमी 1361।*

Downloaded from www.PDFshala.com

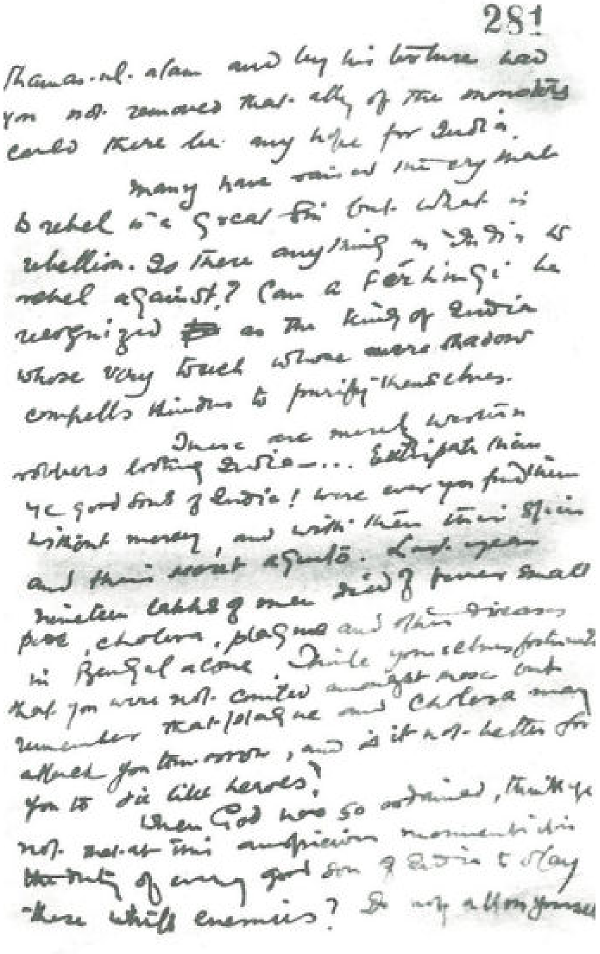
281
Shamas-ul-alam and by his torture had
you not removed that ally of the monsters
could there be any hope for India.
Many have raised the cry that
to rebel is a great sin but what is
rebellion. Is there anything in India to
rebel against? Can a Feringhi be
recognized as the King of India
whose very touch whose mere shadow
compells Hindus to purify themselves.
These are merely western
robbers looting India... Extirpate them
ye good sons of India! wherever you find them
without mercy, and with them their spies
and their secret agents. Last year
nineteen lakhs of men died of fever small
pox, cholera, plague and other diseases
in Bengal alone. Think yourselves fortunate
that you were not counted amongst those but
remember that plague and cholera may
attack you tomorrow, and is it not better for
you to die like heroes?
When God has so ordained, think ye
not that at this auspicious moment it is
the duty of every good son of India to slay
these white enemies? Do not allow yourselves

Shamas-ul-Alam and by his torture had you not removed that ally of monsters, could there be any hope for India.

Many have raised the cry that to rebel is a great sin, but what is rebellion? Is there anything in India to rebel against? Can a Feringhi be recognised as the King of India whose very touch, whose mere shadow compels Hindus to purifythemselves?

These are merely Western robbers looting India. . . . Extirpate them, ye good sons of India! wherever you find them, without mercy, and with them their spies and secret agents. Last year, 19 lakh men died of fever, small pox, cholera, plague and other diseases in Bengal alone. Think yourself fortunate that you were not counted amongst those, but remember that plague and cholera may attack you tomorrow, and is it not better for you to die as heroes?

When God has so ordained, think ye not that at this auspicious moment, it is the duty of every good son of India to slay these white enemies? Do not

Downloaded from www.PDFshala.com

allow yourselves.

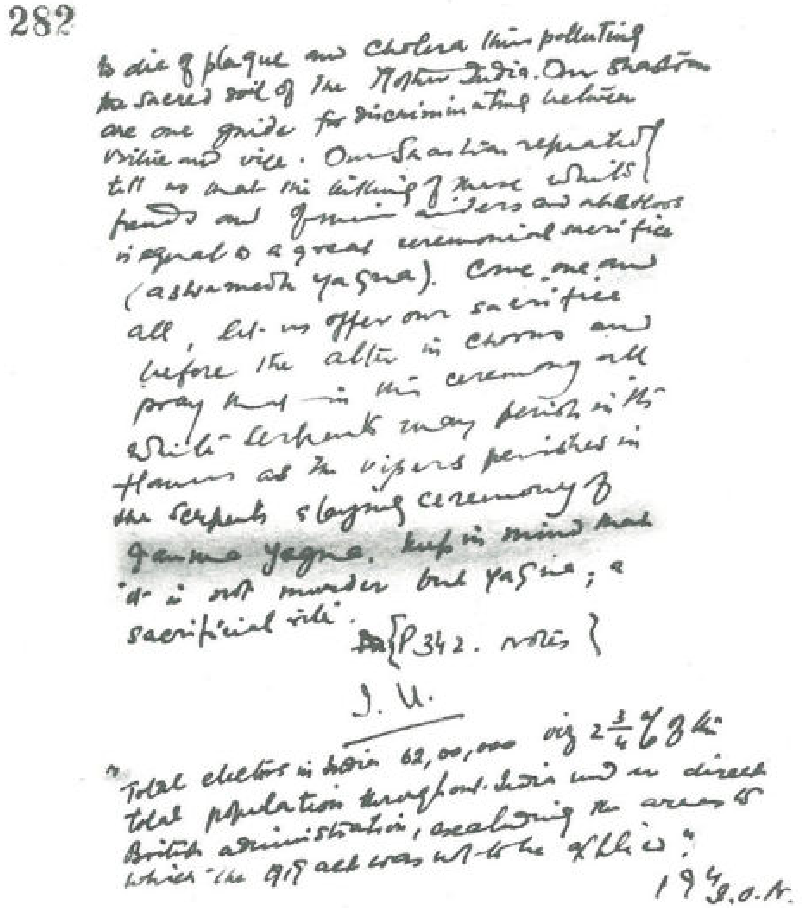
282

to die of plague and cholera thus polluting
the sacred soil of the Mother India. Our Shastras
are our guide for discriminating between
virtue and vice. Our Shastras repeatedly
tell us that the killing of these white
fiends and of their [illegible] and abettors
is equal to a great ceremonial sacrifice
(ashwamedh yagna). Come one and
all, let us offer our sacrifice
before the altar in chorus and
pray that in this ceremony all
white [illegible] may perish in the
flames as the vipers perished in
the serpents slaying ceremony of
Janmejaya yagna. Keep in mind that
"it is not murder but yagna; a
sacrificial rite."
{P342. notes}

J. U.

[illegible]

(2) **वीरेंद्र घोष :** *अरविंद घोष के छोटे भाई और क्रांतिकारियों के मानिकतला ग्रुप के एक नेता, जो अलीपुर षड्यंत्र केस मई 1909 के अभियुक्त थे। वे 'युगांतर' नामक क्रांतिकारी पत्र भी प्रकाशित करते थे।*

(3) **आशुतोष विश्वास :** *क्रांतिकारियों को सजा दिलाने के लिए तमाम गलत तरीके अपनाने वाला अंग्रेजपरस्त एक सरकारी वकील, जिसे अलीपुर पुलिस कोर्ट से बाहर क्रांतिकारी चारुचंद्र गुहा ने गोली मारकर मौत के घाट उतार दिया।*

(4) **चारुचंद्र गुहा :** *एक वीर तरुण, जिसने जन्म से ही दाएँ हाथ की हथेली न होने के बावजूद देशद्रोही सरकारी वकील आशुतोष विश्वास को गोली मार दी। उसे 10 मार्च, 1909 को अलीपुर सेंट्रल जेल में फाँसी दे दी गई।*

(5) **शम्स-अल-आलम :** *ब्रिटिश पुलिस का सी.आई.डी. इंस्पेक्टर, जो क्रांतिकारी की सुरागरशी करता था। उसे वीरेंद्रनाथ दत्त ने 24 जनवरी, 1910 को गोली से उड़ा दिया। इस नौजवान क्रांतिकारी को 21 फरवरी, 1910 को फाँसी दे दी गई।*

(6) **आलमगीर पादशा :** *मुगल बादशाह औरंगजेब, जिससे दिल्ली की बादशाहत पाने के लालच में अपने तीन भाइयों—दारा, शुजा और मुराद को मरवा डाला।।*

Downloaded from www.PDFshala.com

तुमने शम्स-उल-आलम और उसके जुल्म को मिटा दिया। अगर तुमने राक्षसों के उस साथी को नहीं मिटाया होता, तो क्या भारत के लिए कोई उम्मीद बची रह जाती?

अनेक लोग चिल्लाए कि बगावत करना बड़ा पाप है, लेकिन बगावत क्या है? क्या भारत में ऐसा कुछ है, जिसके खिलाफ बगावत की जाए? क्या किसी फिरंगी को भारत का राजा माना जा सकता है; जिसे छू लेने और उसकी छाया पड़ जाने भर से हिंदुओं को स्वयं को पवित्र करने के लिए नहाना पड़ता है?

ये सिर्फ पश्चिमी डाकू हैं, जो भारत को लूट रहे हैं—ओ भारत के सपूतो, इन्हें जड़ से मिटा दो! वे जहाँ भी मिलें, उन्हें बिना किसी दया के, उनके जासूसों सहित खत्म कर दो। पिछले साल अकेले बंगाल में 19 लाख लोग बुखार, चेचक, हेजा, प्लेग और अन्य बीमारियों से मर गए। तुम स्वयं को भाग्यशाली समझो कि उनमें तुम शामिल नहीं थे, लेकिन याद रखो कि प्लेग और हैजा तुम पर कल आक्रमण कर सकते हैं, और क्या तुम्हारे लिए यह बेहतर नहीं होगा कि तुम वीरों की मौत मरो?

अगर भगवान् की ऐसी इच्छा है, तो इस शुभ क्षण में तुम यह मानो कि भारत के प्रत्येक ईश्वर पुत्र का यह कर्तव्य है कि वह इन गोरे दुश्मनों को खत्म करे।

Downloaded from www.PDFshala.com

खुद को प्लेग और हैजा से मत मरने दो, जिससे भारत माता की पवित्र माटी दूषित हो जाएगी। गुण और अवगुण में भेद करने का विवेक हमारे शास्त्रों ने हमें दिया है। हमारे शास्त्र हमसे बार-बार कहते हैं कि इन गोरे शैतानों और उनके मददगारों तथा उन्हें उकसाने वालों को मारना एक महान् यज्ञ (अश्वमेध यज्ञ) के समान है। आओ, सभी आओ! हम सब मिलकर एक साथ यज्ञ करें, और इस समारोह में यह प्रार्थना करें कि सभी गोरे सर्प इसकी लपटों में उसी तरह जल जाएँ, जैसे जन्म (जय) यज्ञ में नाग जलकर भस्म हो गए थे। याद रखो कि यह हत्या नहीं यज्ञ है—एक अनुष्ठान!

—आई.यू. *(पृ. 342)*

"भारत में कुल निर्वाचक 62,00,000, अर्थात् भारत की कुल आबादी का 23/4 प्रतिशत , जो ब्रिटिश प्रशासन के सीधे अधीन है। इसमें वे क्षेत्र शामिल नहीं हैं, जहाँ 1919 का ऐक्ट लागू नहीं हुआ।"

—आई.ओ.एन. *(पृ. 194)*

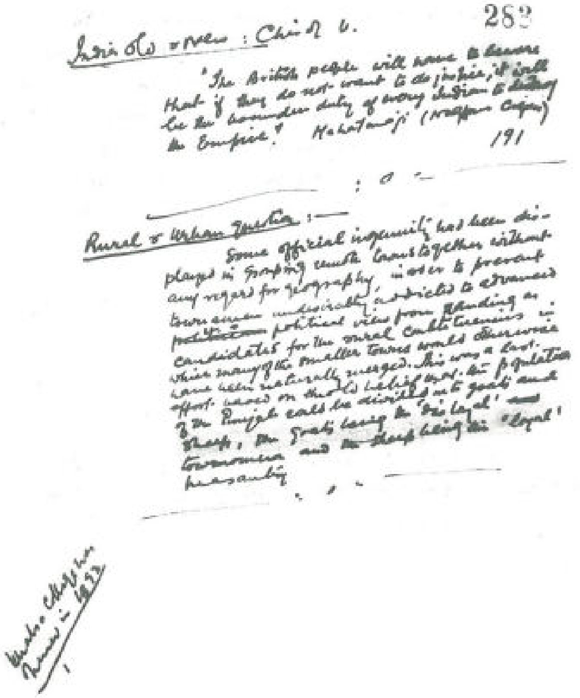
283

India Old & New: Chap 6.

'The British people will have to beware that if they do not want to do justice, it will be the bounden duty of every Indian to destroy the Empire.' Mahatmaji (Nagpur Congress) 191

Rural & Urban Question:— Some official ingenuity has been displayed in [illegible] towns together without any regard for geography, in order to prevent town areas [illegible] political views from standing as candidates for the rural constituencies [illegible] the smaller towns [illegible] This way a vast [illegible] population [illegible] Punjab [illegible] goats and sheep, the goats being the [illegible] Government and the sheep being the "loyal" peasantry

भारत पुराना और नया : शिरोल वी.

"ब्रिटिश लोगों को सावधान हो जाना चाहिए कि अगर वे इनसाफ करना नहीं चाहते, तो एंपायर को खत्म करना प्रत्येक भारतीय का लाजमी फर्ज होगा।"

—**महात्माजी** (नागपुर कांग्रेस) *(पृ. 191)*

———————————— : ✻ : ————————————

ग्रामीण और शहरी प्रश्न

सरकारी चालाकी से, भूगोल की अनदेखी कर दूर-दराज शहरों के एक साथ समूह बना दिए गए, ताकि अवांछित रूप से प्रगतिशील राजनीति विचार से जुड़े शहरी लोग ग्रामीण निर्वाचन क्षेत्र से चुनाव नहीं लड़ सकें, जिनमें अनेक छोटे कस्बे स्वाभाविक रूप से विलीन हो जाते। इस पुराने विश्वास पर आधारित यह अंतिम प्रयास था कि पंजाब की आबादी को बकरों और भेड़ों में विभाजित किया जा सकता है। बकरियाँ 'गद्दार' शहरवासी और भेड़ें 'वफादार' किसान होंगे।

———————————— : ✻ : ————————————

खालसा कॉलेज 1802 में खोला गया

————————————————————

** नोट : (1) शम्स-अल-आलम की हत्या के तुरंत*

Downloaded from www.PDFshala.com

India as I knew it!

"Truly the path of a 'Mahatma' is difficult, and it is not surprising that Gandhi has recently tried to repudiate the title — and its responsibilities. His influence in India is steadily waning, but his ascetic pose and the vague impracticable Tolstoyan theories which he so skilfully enunciates as great moral truths, seem to have deluded many well meaning but weakminded people in sentimental England and some even in logical France who are on the lookout for a new light from the east." P. 65

Informer:

The failure of the authorities in that case to conceal and protect the informer (or approver James Carey who betrayed the Invincible gang of the revolutionaries and due to whose evidence Brady, Fitzharris and Mullen were hanged for the Phoenix Park Double murder i.e. of Chief and under Secretaries, the informer was shot dead on board at Durban by a young revolutionary O'Donnell) even though his assassin was brought to justice, was I believe, one of the chief reasons why the supply of that contemptible but useful class, previously so common in Irish Conspiracies, ran dry at the source. As Lieut. Governor of Punjab, before and during the Great War, I had to deal with many revolutionary conspiracies, in unravelling which the ceaseless informer played a considerable role, and our precautions were so thorough that not in a single case did an informer come to any injury.

भारत को जैसा मैंने जाना

"सचमुच 'महात्मा' का रास्ता कठिन है, और इसमें आश्चर्य की कोई बात नहीं है कि गांधी ने हाल ही में इस पदवी और इसकी जिम्मेदारियों को अस्वीकार करने का प्रयास किया। भारत में उनका प्रभाव लगातार कम हो रहा है, परंतु उनका वैराग्यपूर्ण आचरण और अस्पष्ट अव्यावहारिक टॉलस्टायवादी सिद्धांत, जिन्हें वह महान् नैतिक मूल्य घोषित करते हैं, से लगता है भावुक इंग्लैंड में बहुत से भले लेकिन कमजोर दिमाग के लोग और फ्रांस में कुछ विवेकशील लोग भ्रमित हो गए हैं, जो पूरब से किसी नई रोशनी आने की उम्मीद रखते हैं।

(पृ. 65)

मुखबिर

उस मामले में मुखबिर (अथवा जेम्स केरी, जिसने क्रांतिकारियों के अजेय गिरोह को धोखा दिया और जिसकी गवाही के कारण ब्राडी, फिट्जहरबर्ट और मुलेन को फोनिक्स पार्क दोहरी हत्या, अर्थात् चीफ और अंडर-सेक्रेटरी की हत्या के लिए फाँसी दी गई। मुखबिर को डरबन में एक युवा क्रांतिकारी ओ' गोनेल ने गोली मार दी, को छुपाने और बचाने में अधिकारी असफल रहे, हालाँकि उसके हत्यारे को सजा मिली। मेरा मानना है कि इस तरह की अवहेलना करनेवाले लेकिन उपयोगी वर्ग की, जो पहले आइरिश षड्यंत्रों में बहुत सामान्य रूप से पाए जाते थे, आपूर्ति स्रोत से ही सूख गई। महायुद्ध के पहले और इसके दौरान पंजाब के लेफ्टिनेंट गवर्नर के रूप में मुझे अनेक क्रांतिकारी षड्यंत्रों का सामना करना पड़ा, जिनका पर्दाफाश करने में चतुर मुखबिरों की महत्त्वपूर्ण भूमिका थी। हमारे एहतियादी कदम इतने पक्के होते थे कि

(शेष अगले पृष्ठ पर)

: * :

Downloaded from www.PDFshala.com

One can imagine how thoroughly the Indian conspirator, with his low cunning, abnormal vanity, inborn aptitude for intrigue, and capacity for glossing over unpleasant facts, was at home in this atmosphere

P. 187
India as I knew it

Arya Samaj

In fact the Arya Samaj is a nationalist revival against Western influence: it urges its followers in the Satyarth Prakash, the authoritative work of Dayanand, who was the founder of the sect, to go back to the Vedas, and to seek the golden future in the imaginary golden past of the Aryas. The Satyarth Prakash also contains arguments against non-Hindu rule, and a leading organ of the sect a few years ago claimed Dayanand as the real author of the doctrine of Swaraj.

However, the Arya Samaj in 1907 thought it wise to publish a resolution to the effect that as mischievous people here and there spread rumours hostile to them, the organization in reiterating its old creed declared that it had no connection of any kind with any political body or with any political agitation in any shape. While accepting this declaration as dissociating the Samaj as a body ~~[illegible]~~ from extremist politics, it should be noted in fairness to the orthodox Hindus that while the Samaj does not include perhaps more than 5% of the Hindu population of the Punjab, an enormous ~~population~~ proportion of the Hindus convicted of sedition and other political offences from 1907 down to the present day are members of the Samaj.

P. 164 [illegible]

Downloaded from www.PDFshala.com

एक भी मामले में किसी मुखबिर को कोई नुकसान नहीं हुआ। कल्पना की जा सकती है कि भारतीय षड्यंत्रकारी ने अपनी घटिया धूर्तता, अहंकार, जन्मजात षड्यंत्रकारी प्रवृत्ति के कारण और अप्रिय तथ्यों पर परदा डाल कर किस तरह इस वातावरण में स्वयं को सुरक्षित रखा।

—इंडिया एज आई नो इट *(पृ. 187)*

: * :

आर्य समाज

वास्तव में आर्य समाज पश्चिमी प्रभाव के विरुद्ध एक राष्ट्रवादी पुनर्जागरण है। इसके संस्थापक दयानंद के प्रामाणिक ग्रंथ 'सत्यार्थ प्रकाश' में इसके अनुयायियों से वेदों की ओर लौटने तथा आर्यों के काल्पनिक स्वर्णिम अतीत में अपना भविष्य खोजने का आह्वान किया गया है। 'सत्यार्थ प्रकाश' में गैर-हिंदू शासन के विरुद्ध भी दलीलें दी गई हैं। कुछ वर्ष पहले इस पंथ के एक प्रमुख अंग ने दावा किया कि स्वराज सिद्धांत के मूल जनक दयानंद ही हैं।

बहरहाल, 1907 में आर्य समाज ने इस आशय का संकल्प पारित करना उचित समझा कि चूँकि उनके विरोधी शरारती लोग यहाँ-वहाँ अफवाहें फैला रहे हैं, लिहाजा यह संगठन अपने पुराने धर्ममत को दोहराते हुए घोषणा करता है कि इसका किसी भी तरह के राजनीति संगठन अथवा राजनीति आंदोलन से कोई संबंध नहीं है। इस घोषणा को गरमपंथी राजनीति से समाज के विच्छेद को स्वीकार करते हुए कट्टरपंथी हिंदुओं के साथ ईमानदारी बरतते हुए यह माना जाना चाहिए कि समाज में जहाँ पंजाब की हिंदू आबादी के 5 प्रतिशत से ज्यादा लोग शामिल नहीं है, 1907 से अब तक जिन हिंदुओं को देशद्रोह तथा अन्य राजनीति अपराधों में सजा दी गई, उनमें से बड़ी संख्या में लोग इस समाज के सदस्य हैं।

: * :

Downloaded from www.PDFshala.com

Statistical figures about India :—

In England & Wales 4/5 of people live in towns.

Standard of urban life begins when 1000 people live together. Only then Municipal drainage, lighting & water supply can be organized.

India (British)
Out of total 244000000, 226000000 live in villages.

England in normal times give to Industry 58% of people to Industry
8% to agriculture

India gives 71% to agriculture
12% to Industry
5% to trade
2% to domestic service
1½% to independent Professions
1½% to Govt Service including Army.

In whole of India 226 millions out of 315 millions are supported by soil
208 millions out of them live or depend directly upon the agriculture.

(Montford Report)

Downloaded from www.PDFshala.com

भारत के बारे में राजनीतिक आँकड़े

इंग्लैंड और वेल्स में 4/5 आबादी शहरों में रहती है। शहरी जीवन का मापदंड 1000 लोगों के साथ रहने से शुरू होता है। तभी म्यूनिसिपल डेनेज, बिजली और पानी की आपूर्ति की व्यवस्था हो सकती है।

भारत (ब्रिटिश) की कुल 244000,000 आबादी में से 226000,000 आबादी गाँवों में रहती है।

सामान्य समय में इंग्लैंड में आबादी का
58 % उद्योगों में संलग्न रहता है,
8 % कृषि क्षेत्र में,
भारत में 71 % लोग कृषि में,
12 % उद्योगों में,
5 % व्यापार में,
2 % घरेलू सेवा में,
1 ½ % स्वतंत्र व्यवसाय में,
सेना सहित 1 ½ % शासकीय सेवा में संलग्न है।

संपूर्ण भारत में, 315 मिलियन लोगों में से 226 मिलियन लोग अपना जीवन-यापन मिट्टी से जुड़े कामों से करते हैं। उनमें से 208 मिलियन कृषि करते हैं या सीधे उस पर निर्भर हैं।

—मेंटफोर्ड रिपोर्ट

Downloaded from www.PDFshala.com

Total Area 1,800,000 square miles
20 times of Great Britain
700,000 sq miles or more than $\frac{1}{3}$ are under
States' control. Indian States are 600 in number.
Burma is greater than France.
Madras & Bombay are greater than Italy
seperately.

Total population of India (1921 Census)
318,942,000
i.e. $\frac{1}{5}$ th of the whole human race.
247,000,000 are in British
India and 71,900,000 in States.

$2\frac{1}{2}$ million persons were literate in
English. 16 in every thousand males and 2
in every thousand female.
Total Number of vernaculars is 222
Total number of Villages 500,000

* नोट : मॉण्टफोर्ड रिपोर्ट : भारतीय संवैधानिक सुधारों पर तैयार की गई रिपोर्ट। इसे मॉण्टफोर्ड रिपोर्ट इसलिए कहा गया कि इसे सेक्रेटरी ऑफ स्टेट मॉण्टेग्यू और गवर्नर जनरल चेम्सफोर्ड ने मिलकर तैयार किया था। यह रिपोर्ट 8 जुलाई, 1918 को प्रस्तुत की गई।

Downloaded from www.PDFshala.com

कुल क्षेत्र—1,800,000 वर्ग मील
ग्रेट ब्रिटेन से 20 गुना अधिक
700,000 वर्गमील, अथवा 1/3 से अधिक राज्यों के नियंत्रण में।
भारत में राज्यों की संख्या 600 है। बर्मा फ्रांस से बड़ा है।
मद्रास और बॉम्बे इटली से भी बड़े हैं।

भारत की कुल आबादी (1921 की जनगणना)—
318, 942, 000 अर्थात् पूरी मानव जाति का 1/5वाँ हिस्सा
247,000,000 ब्रिटिश भारत में और 71,900,000 राज्यों में है।

इंग्लिश में 2 ½ मिलियन लोग साक्षर थे—
प्रति हजार में 16 पुरुष और प्रति हजार में दो महिलाएँ।
देशी भाषाओं की कुल संख्या—222
गाँवों की कुल संख्या—500,000

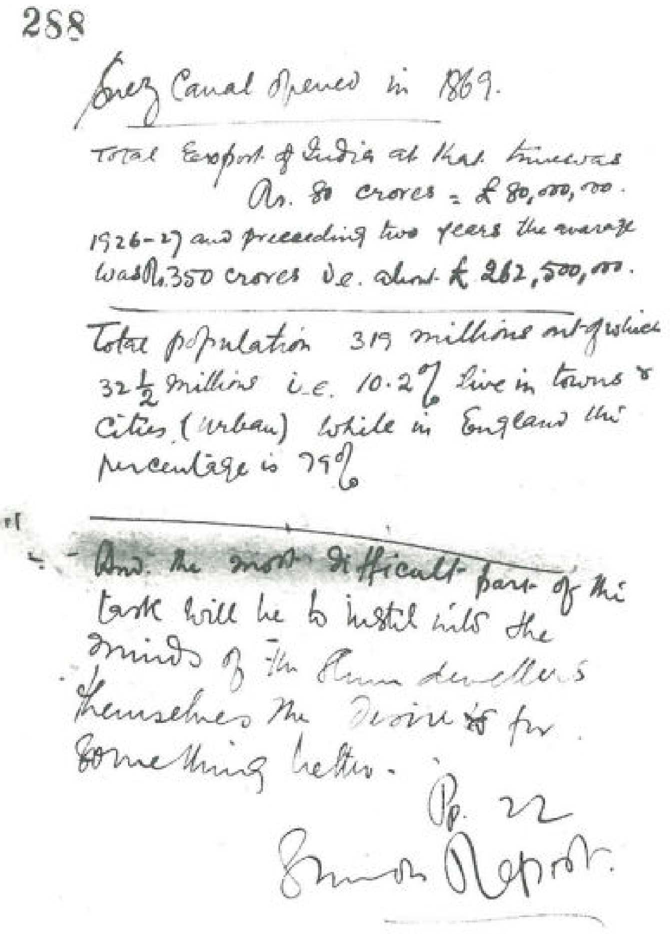
288

Suez Canal opened in 1869.

Total Export of India at that time was
Rs. 80 crores = £ 80,000,000.
1926-27 and preceding two years the average
was Rs. 350 crores i.e. about £ 262,500,000.

Total population 319 millions out of which
32½ millions i.e. 10.2% live in towns &
cities (urban) while in England the
percentage is 79%

And the most difficult part of the
task will be to instil into the
minds of the slum dwellers
themselves the desire for
something better.
Pp. 22
Simon Report.

Downloaded from www.PDFshala.com